हदीया किताब

फक्त

दुआ

ABDUL RAHMAN SAMSI Naqsbandi
KANTABANJI (ODISHA)
Mobile -09437034924 - 09668734924

फैज़ाने दुरुद

अब्दुल रहमान शम्सी नक़्शबन्दी

फैज़ाने दुरुद

गुफ्त चूँ ख्वानीम बर अहमद दुरुद
मय शवद शीरीं व तल्खी रा रूद

अब्दुल रहमान शम्सी नक़्शबन्दी

फैजाने दुरूद

मुरत्तीब

अब्दुल रहमान सम्सी नक्शबन्दी

नाशीर

अब्दुल रहमान शम्सी नक्शबन्दी
ओक्सीया फुड्स,
मेन रोड़,पोस्ट.कांटाबांजी- पीन- 767039
जिला. बलाँगीर (उड़ीशा),फोन
मोबाइल 09437034924 - 09668734924

किताब का हदीया -
कुल मोमीनीन वल मोमीनात को दुआ में याद रखें।

ABDUL RAHMAN SAMSI Naqsbandi
OXEIA FOODS
MAIN ROAD
P/o. KANTABANJI Pin - 767039
Dist. BALANGIR (ODISHA)
Ph. - 916657 221846
Mobile -09437034924 - 09668734924
Email -oxeiagroup@rediffmail.com
oxeiagroup@yahoomail.co.in

फहरिस्ते-मजामीन

विषय सूची

उनवान-विषय	नम्बर	सफहा-पेज
बाब १		
हुक्मे दुरूद शरीफ		
बाब २		
आदाबे दरुद शरीफ		
बाब ३		
फजाइले दरुद शरीफ अहादीसे करीमा		
की रोशनी में		
दरूद शरीफ के सवाबों पर एक नजर		
दरूद शरीफ पढ़ने के वक्त व अवकात		
खुसुसन जुमआ के दिन की फज़ीलत		
हीकायाते दरूद शरीफ		
बाब ४		
दुरूदे इब्राहीम		
दुरूदे खज़री		
दुरूदे हजारा		
दुरूदे निअमत अज्मा		
दुरूदे इमाम बुशैरी		
दुरूदे ताज		
दुरूदे नारियाह		
दुरूदे तुनज्जीना		
दुरूदे माही		
दुरूदे खम्शा		
दुरूदे गवसिया		
दुरूदे लख्खी		

दुरूदे मुकद्दस		
दुरूदे अकबर		
दुरूदे मुश्तगास		
दुरूदे किब्रीयत अहमर		
दुरूदे अकसीर आजम		
दुरूदे फाज़िल		
दुरूदे रिफाई		
दुरूदे जुम्आ		
दुरूदे हबीब		
दुरूदे मुस्तजाबुद्दावत		
दुरूदे अव्वल व आखिर		
दुरूदे मुस्तफा		
दुरूदे बातिन		
दुरूदे मुज्तबा		
दुरूदे तआल्लुक		
दुरूदे कश्फ		
दुरूदे हुसूले रहमत		
दुरूदे दिदार		
दुरूदे हलल मुश्किलात		
दुरूदे आली		
दुरूदे कुरआनी		
दुरूदे मुहम्मदी		
दुरूदे कमालिया		
दुरूदे सआदत		
दुरूदे कुतुब		
दुरूदे नूरी		
दुरूदे नक्शबन्दीया		
दुरूदे शाजली		
दुरूदे अफ़जल		

दुरूदे दवामी		
दुरूदे कौशर		
दुरूदे कब्रस्तान (रुही)		
दुरूदे हजरत गौशुल आजम		
दुरूदे अव्वल		
दुरूदे आबिदीन		
दुरूदे कल्बी		
दुरूदे शिफा-ए-कुलूब		
दुरूदे निजाते वबा		
दुरूदे महमूद		
दुरूदे हुब्बे रसूल		
दुरूदे तिरयाके अमराज		
दुरूदे तय्यब		
दुरूदे समरात		
दुरूदे इनआम		
दुरूदे इमाम शाफई		
दुरूदे अहमद बदवी		
दुरूदे सय्यद		
दुरूदे एजाज		
दुरूदे वसीला		
दुरूदे एतसाम		
दुरूदे फवाइदे कसीरा		
दुरूदे नुसरत		
दुरूदे सादिकीन		
दुरूदे हुसूले इज्जत		
दुरूदे अल-जाहिदीन		
दुरूदे अल्तालिबीन		
दुरूदे मदनी		
दुरूदे मुकर्रम		

दुरूदे बशारत		
दुरूदे नुरल-कियामीया		
दुरूदे मकीन		
दुरूदे हिफाजत		
दुरूदे बुल्दी-ए-दरजात		
दुरूदे मुनीर		
दुरूदे मुकाशिफा		
दुरूदे चिस्तीया		
दुरूदे नेअमल बदल		
दुरूदे रहमत व बरकत		
दुरूदे नबी करीम		
दुरूदे साहिबे लौलाक		
दुरूदे अहले बैत		
दुरूदे सरवरे काइनात		
दुरूदे हबीबे खुदा		
दुरूदे जामे इब्राहीमी		
दुरूदे सय्यदुल मुरसलीन		
दुरूदे आशिकीन		
दुरूदे दाफए शरारा		
दुरूदे अलफातेह		
दुरूदे हुजूरी		
दुरूदे मुकर्रब		
दुरूदे दुआ व दवा		
दुरूदे सवाब		
दुरूदे इब्ने कसीर		
दुरूदे बरकाते कसीरा		
दुरूदे शफाअत		
दुरूदे मुशाहिदा		
दुरूदे फकरी		
कसीदा बूरदा शरीफ		

नज़्र

जमी-ए-औलीशा-ए- सिलसिलतिल मुबारकह
अल-सिलसिलह मुस्तफवीयह सीद्दीकीयह
नक्शबन्दीयह मुजद्दीदीयह माअसुमियह
रदीअल्लाहु तआला अलयहिम अजमइन
व रहमतुल्लाहि तआला अलयहिम अज़मइन

जिनकी अज़मतों का परचम सुबहे कयामत तक लहराता रहेगा। जिनके तकवा व तहारत का चर्चा रहती दुनिया तक कायम व दायम रहेगा। जिनकी गुलामी अपने हक़ में सआदते-दारैन समझता हुँ और मैं अपनी इस हकीर कोशीश को आप तमाम की बारगाहे बा बरकत की तरफ मनसूब करते हुए सआदत महसूस करता हुँ।

हकीर व अदना गुलामे गुलामाने मुस्तफा
हाजी अब्दुल रहमान शम्सी नक़्शबन्दी
कांटाबांजी

हर चिरागे मजार पर कुद्सी, कैसे परवानावार फीरते हैं।
उस गली का गदा हुँ मैं जिसमें, मांगते ताजदार फीरते हैं।।

किसी ने हजरत अली रदीअल्लाहु अनहु से पुछा अजीब बात है अल्लाह नबी सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम को महबूब कहता है मगर कलाम में पहले अपना नाम रख दिया और बाद में अपने महबूब का।

हजरत अली रदीअल्लाहु अनहु ने फरमाया,

अल्लाह फरमाता है पहले मेरे नाम से नापाक जुबान पाक हो जाए फिर मेरे महबूब का नाम लिया जाए।

सुबहानल्लाह।

बिस्मील्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदोहु व नुसल्लि अला रसूलिहिल
करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम

अल-हम्दो लिल्लाह, अल्लाह तबारक व तआला का ये करोड़ों-करोड़ों एहसान है कि उसने मुझ जैसे हकिर लाइल्म और गुनाहगार बन्दे को हुजूर सरवरे कौनैन मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के नालैने पाक के सदके तुफैल ये तौफीक अता फरमाई।

हुजूर सरवरे कौनैन रहमते आलम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से ये रिवायत नकल हुई है कि जब आप शबे मे'राज़ आसमान, जन्नत, अर्श वगैरह की जियारत फरमाकर अल्लाह तबारक व तआला का कुर्ब हासिल किया तब अल्लाह तआला ने पुछा कि ऐ महबूब ये जमीं किसकी है? हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने जवाबन अर्ज किया या रब ! तेरे लिए। फिर सवाल हुआ ऐ महबूब ये हिजाबात किसके लिए हैं? हुजर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने जवाबन अर्ज किया ऐ मेरे रब ! तेरे लिए है। फिर अल्लाह तआला ने सवाल किया कि कुर्सी किसके लिए हैं? तब हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने अपने सर को सज़्दे में रख दिया और अदब के लिहाज से खामोश रहे। उस वक्त अल्लाह तआला ने इरसाद फरमाया ऐ महबूब तु उसके लिए है जो तुझपर दुरूद भेजता है और तेरी अजमत और बूजुर्गी को बढ़ाता है।

पस जो निस्बत रब्बे जलील को नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से है वही निस्बत खुदा की सुन्नत को रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की सुन्नत से होगी इससे जाहिर है कि तमाम तस्बीहात व अज़कार से दुरूद शरीफ का पढ़ना बेहतर है। दुसरी कोई इबादत ऐसी नहीं के उसके करने में अल्लाह तआला मुमिनीन के साथ शरीक हो।

ऐसे आला व इरफां उनवान पर मेरा ये कारेखैर का अंजाम दे पाना सिर्फ और सिर्फ अल्लाह अज्जवज्जल की करम नवाजी ही है। और यह भी कि दुरूद व सलाम भेजने और लिखने में जो लम्हात और साअतें गुजर जाएं वह हासिले हयात हैं।

ये बन्दा-ए-हकीर सरापा गुनाहगार अपने पालनहार मौला की बारगाहे में बेशुमार हदिया-ए-शुक्राना व इतमिनान पेश करते हुए बसद

ऐहतराम इल्तिजा करता है कि ऐ खताकारों और मुजरिमों पर अफ्व व करम के दरिया बहाने वाले सत्तार व गफ्फार मालिक व मौला अपने हबीबे मुअज्जम रसूले मुजतबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के सदके में बगैर किसी इस्तिहकाक के महज़ अपनी नवाजिसाते खुशरुवाना से इस किताब को सर्फे कबूलियत से नवाज़ दे और मेरे वालिदैन व असातिजा व अहलो अयाल के लिए जादे आखिरत व सामाने मग़्फिरत बना दे। आमीन।। बिजाहिन्नबीयील करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। कारेइन से इल्तिजा है की कोई खामी या गलती नज़र आये तो इस हकिर को आगाह करें। एहसाने-अज़ीम होगा।

खानकाहे समरकन्दीया दरभंगा शरीफ
व तरभा शरीफ का
एक अदना व हकीर भिखारी
हाजी अब्दुल रहमान शम्सी नक्शबन्दी
6 December 2014

लिहाजा इस जिम्न में कुछ बातें आदाब के मुताअल्लिक यहाँ दर्ज की जा रही है जिसे दुरूद शरीफ पढ़ते वक्त पेशे नजर रखना चाहिए।

दुरूद शरीफ पूरे जौक व शौक और लगन से पढ़ना चाहिए, दिल व दिमाग़ को पूरी तरह हाजिर रखना जरूरी है। दिल से हर तरह के खयालात निकाल कर अपनी पूरी तवज्जो दुरूद शरीफ पर रखनी चाहिए। अपने जहन में युँ खयाल करें कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की मजलिस में हाजिर है, इसलिए उनकी अजमत व रिफअत का नक्शा अपनी आँखों के सामने कायम करें।

दुरूद शरीफ पढ़ते वक्त अपना चेहरा हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के रौजए अकदस की तरफ करना चाहिए फिर आँखें बंद करके मुराकबा की सूरत दुरूद शरीफ पढ़ना शुरू करें और कोशीश करें जितना अरसा दुरूद पाक पढ़ा जाए मुराकबा रहे।

दुरूद शरीफ को हुक्मे इलाही की इत्तेबाअ तसव्वुर करना चाहिए, और दरूद शरीफ पढ़ने का मकसद रजा ए इलाही रखना चाहिए, बल्कि ये नियत पेशे नजर रहनी चाहिए कि दुरूद पढ़ना अल्लाह का हुक्म है इसलिए इस हुक्म की इत्तेबाअ कर रहा हुँ। अगर इस नियत के अलावा कोई और नियत जहन में रखेंगे तो दरूद शरीफ का अज्र कम होने का अन्देशा है।

दुरूद शरीफ पढ़ने वाले का जिस्म और लिबास पाक साफ होना चाहिए, क्युँकि हर इबादत के लिए पाकीज़गी और तहारत जरूरी है, लिहाजा दुरूद शरीफ बावुजू पढ़ें तो ज्यादा बेहतर है, वुजू से पहले मिसवाक या टुथपेस्ट करके मुँह साफ रखना चाहिए, खुश्बू लगाना भी बेहतर है और फिर जहन को भी तमाम तरह के दुन्यावी ख्यालातों से पाक करके दुरूद शरीफ पढ़ना चाहिए

दुरूद शरीफ पढ़ते हुए शोहरत और रियाकारी (दिखावा) से बचना चाहिए। दुन्यावी जाह व जलाल हासिल करने की नियत नहीं रखनी चाहिए। किसी के यहाँ इशाले सवाब कि खातिर दुरूद ख्वानी रखी गई हो तो दावत देने वाले या किसी और पर एहसान नहीं रखना चाहिए बल्कि पढ़ने में रजा ए इलाही का मकसद ही पेशे नजर रखना चाहिए।

☆☆☆

बिस्मीललाह् हिर्ररहमानिर्ररहीम

बाब 1

हुक्मे दुरुद शरीफ

तकाजा-ए-मुहब्बत यही है कि महबूब की हर दम तारीफ की जाए, हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम अल्लाह तआला के महबूब हैं सय्यिदुल अम्बीया हैं, हबीबे किब्रिया हैं, ताजदारे अरब व अजम हैं, शफीईल मुज़नबीन हैं, रहमतुल्लिल् आलमीन हैं, सिराजुंम्मुनीर हैं, साकी ए कौसर हैं और अल्लाह उनका मुहीब है, यानी अल्लाह तआला हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से मुहब्बत रखने वाला है, इसलिए अल्लाह तआला ने जब अपने महबूब के नूर की तखलिक कर ली तो फिर अपने महबूब की तारीफ में मशरुफ हो गया इसका मानी ये है कि अल्लाह तआला अपने महबूब पर दुरुद भेजने लगा। अल्लाह जब अपने महबूब की मुहब्बत में मुन्तहा तक पहुँचा तो फिर अपनी मखलूक यानी मलाइका और इन्सानों को भी हुक्म दे दिया की तुम भी मेरे महबूब की तारीफ करो जिस तरह मै कर रहा हुँ, इस हुक्म के तहत इन्सानों के लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दुरुद पढ़ना लाजिम हो गया। इसके अलावा हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जाते अकदस तमाम बनी आदम और मखलूक के लिए अल्लाह तआला का सबसे बड़ा इनाम है, क्युँकि अल्लाह तआला ने आपकी बदौलत नस्ले इन्सानी को हीदायत का रास्ता दिया जिसमें इन्सान की फलाह है, इन्सान को जो अजमत व इज़्ज़त मिली है वो हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के वास्ते ही से मिली है, नस्ले इन्सानी की अजमत का इससे बड़ा सबूत और क्या हो सकता है कि अल्लाह तआला ने उनके दरम्यान एक ऐसी अजीम हस्ती को जाहिर किया जो अपनी जात व सिफात के एतबार से अल्लाह तआला की बेहतरीन तखलीक और असरफुल अम्बीया, सय्यिदुल मुरसलीन हैं बेकसों का सहारा हैं इसलिए हर मोमीन मुसलमान के लिए ये जरुरी है कि वो अल्लाह तआला और हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के इस एहसान का ज्यादा से ज्यादा

शुक्र अदा करे और ऐसे तरीके से करे जो अल्लाह तआला के यहाँ मकबूल और पसंदीदा है, इसलिए शुक्रीया अदा करने और अल्लाह तआला को राजी करने का बेहतरीन तरीका हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दुरुद पाक का तोहफा भेजना है, इस लिहाज़ से भी हजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दुरुद भेजना जरुरी है।

अल्लाह तआला ने हर नबी को किसी ना किसी खुसूसी शान और अजमत से नवाजा है जैसे कि अल्लाह तआला ने हजरत आदम अलैहिस्सलाम को ये अजमत और इज़्ज़त अता फरमाई कि फरिश्तो को उनके सामने झुका दिया, हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अपनी दोस्ती से नवाजा (अपना खलील बनाया) और उनकी जाएअ सुकूनत को हज्ज का मरकज़ बना दिया, उनके बेटे हजरत इस्माईल अलयहिस्सलाम को जीबह के खिताब से नवाजा, हजरत इदरीस अलयहिस्सलाम के बारे में अल्लाह ने फरमाया है कि वो मेरा सच्चा नबी है जिनका मैने दर्जा बुलन्द किया, हजरत इसहाक अलयहिस्सलाम को असहाबे बसीरत में शुमार किया हजरत युसुफ अलयहिस्सलाम को बेमिश्ल हुश्न से नवाजा हजरत ईशा अलयहिस्सलाम की बाकमाल मोअज्जज़ात से ताईद की, हजरत मूसा अलयहिस्सलाम को हमकलामी का शर्फ बख्शा, गोया कि हर नबी को अल्लाह तआला ने अपनी कोई ना कोई खास नेअमत से सरफराज़ किया, मगर हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को सबसे आला ये ऐज़ाज़ दिया कि उनके जिक्र को अपना जिक्र करार दिया, अपने नाम के साथ अपना नाम शामिल किया, उनपर दुरुद पढ़ना अपना शिआर बनाया।

अल्लाह तबारक व तआला ने कूरआने पाक में बहुत से हुक्म अपने बंदो को फरमाये हैं, नमाज़, जकात, रोजा, हज वगैरह बहुत से अंबीया-ए-कराम अलयहिमुस्सलाम की तारीफ़ भी फ़रमाई है। हज़रत आदम अलैयहिस्सलाम को पैदा फरमाया तो फरिश्तों को हुक्म फरमाया कि इनको सज्दा करो मगर किसी भी हुक्म या ताजीम फरमाते हुए ये नही कहा कि ऐसा मैं भी करता हुं तुम भी करो या कहो, यह मरतबा तो फ़क़त सैय्यदे कौनैन, फख्रे दो आलम मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के लिए ही फरमाया है। अल्लाह जल्ल शानहु ने सलात (दुरुद) की निस्बत पहले खुद की तरफ, फिर अपने पाक फरिश्तों की तरफ करने के बाद मुसलमानो को हुक्म फरमाया के

अल्लाह और उसके फरिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं ऐ मोमीनो तुम भी उन पर दुरूद भेजो। इससे बढकर कौन सी फजिलत हो सकती है कि, दुरूद शरीफ पढने के अमल मे अल्लाह और फरिश्तों के साथ मोमीन बंदो की भी शिरकत है।

अल्लाह तआला ने कूरआने हकीम मे ईन अल्फाजो के साथ हुक्म फरमाया -

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

इन्नल्लाहा व मलायकतहु यूसल्लुना अलन्नबिय्यी या अय्युहल्लजीना आमनु सल्लु अलयहि वसल्लिमु तसलीमा (पारा २२ सुरह अहजाब)

तर्जुमा - (बेशक अल्लाह तआला और फरिश्ते उसके नबी पर दुरूद भेजते हैं, ऐ इमान वालों तुम भी उन पर दुरूद भेजो और खुब सलाम भेजो।)

ये आयाते करीमा मदीना मुनव्वरा में शाबान दो हीजरी में नाजिल हुई।

लफ्ज सलात के तीन माअनी अमुमन आलीमों ने लिए हैं पहला ये कि मुहब्बत की बिना पर रहमत करना या मेहरबान होना, दूसरा तारीफ व तौसीफ करना, तीसरा दुआ करना, लिहाजा ये लफ्ज अल्लाह की तरफ सलात के माअनों में इस्तेमाल किया जाएगा तो इससे पहला और दूसरा मतलब लिए जाएंगे लेकिन जब सलात का लफ्ज फरिश्तों और इन्सानों या दिगर मखलूक की तरफ से बोला जाएगा तो उसमें अल्लाह के हुजूर दुआ करना लिया जाएगा।

'सल्लिमू तस्लीमन्' का मतलब हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की खिदमतते अकदस में सलाम पेश करना है, हालांकि उपरोक्त आयत में हमें सलात व सलाम का हुक्म दिया गया है लेकिन एतराफ अजीज़ करते हुए अल्लाह तआला से अर्ज करते हैं कि 'अल्लाहुम्म सल्लि' यानी ए अल्लाह तु ही अपने महबूब की शान और कद्र व मन्ज़िलत को सही तरीके से जानता है इसलिए तु ही हमारी जानिब से अपने महबूब पर सलात भेज जो उनकी शाने शायान है। युँ भी हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शान व मरतबा सही तौर पर कह पाना किसी बंदे की बस की बात नहीं, तो फिर किस मुँह से बंदा

उनकी तारीफ व तौसीफ करेगा, इसलिए हम तो अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि 'अल्लाहुम्म सल्लि अला' ऐ अल्लाह तु रहमत नाजिल फरमा।

दुनियावी व अखलाकी तौर पर आप जानते हैं की जिन्हें जिनसे ज़्यादा मुहब्बत होती है वो उसका ज़िक्र भी ज़्यादा करते रहते हैं और ये मुहब्बत है। अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलयहि ने इमाम जैनुल आबेदीन रदीअल्लाहु तआला अन्हु से नकल करके फरमाया है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर कसरत से दुरूद शरीफ भेजना सुन्नी (अहले सुन्नत) होने की निशानी है।

बाब 2

आदाबे दुरूद शरीफ

हजार बार बशुयम दहन बा मुशको गुलाब
हनूज नामे तु गुफ्तन कमाल बे अदबी अस्त

अगर मुशक और गुलाब से हजारों बार भी मुँह धो लिया जाए तब भी आप हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का नाम लेने में बहुत बेअदबी होने का अंदेशा है।

इसलिए उस अजीमुल मरतबत हस्ती का नाम लेने के आदाब को खातीर में रखना निहायत जरूरी है। बारगाहे रिसालत माआब हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम में दुरूद शरीफ पढ़ते हुए जाहिरी और बातिनी आदाब व पाकिज़गी का खासतौर पर ख्याल रखना बेहद जरूरी है और यही तकाजा ए मुहब्बत भी है।

लिहाजा इस जिम्न में कुछ बातें आदाब के मुताअल्लिक यहाँ दर्ज की जा रही है जिसे दुरूद शरीफ पढ़ते वक्त पेशे नजर रखना चाहिए।

दुरूद शरीफ पूरे जौक व शौक और लगन से पढ़ना चाहिए, दिल व दिमाग़ को पूरी तरह हाजिर रखना जरूरी है। दिल से हर तरह के खयालात निकाल कर अपनी पूरी तवज्जो दुरूद शरीफ पर रखनी चाहिए। अपने जहन में युँ खयाल करें कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की मजलिस में हाजिर है, इसलिए उनकी अजमत व रिफअत का नक्शा अपनी आँखों के सामने कायम करें।

दुरूद शरीफ पढ़ते वक्त अपना चेहरा हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के रौजए अकदस की तरफ करना चाहिए फिर आँखें बंद करके मुराकबा की सूरत दुरूद शरीफ पढ़ना शुरू करें और कोशीश करें जितना अरसा दुरूद पाक पढ़ा जाए मुराकबा रहे।

दुरूद शरीफ को हुक्मे इलाही की इत्तेबाअ तसव्वुर करना चाहिए, और दरूद शरीफ पढ़ने का मकसद रजा ए इलाही रखना चाहिए, बल्कि ये नियत पेशे नजर रहनी चाहिए कि दुरूद पढ़ना

अल्लाह का हुक्म है इसलिए इस हुक्म की इत्तेबाअ कर रहा हुँ। अगर इस नियत के अलावा कोई और नियत जहन में रखेंगे तो दरूद शरीफ का अज्र कम होने का अन्देशा है।

दुरूद शरीफ पढ़ने वाले का जिस्म और लिबास पाक साफ होना चाहिए, क्युँकि हर इबादत के लिए पाकीज़गी और तहारत जरूरी है, लिहाजा दुरूद शरीफ बावुजू पढ़ें तो ज्यादा बेहतर है, वुजू से पहले मिसवाक या टुथपेस्ट करके मुँह साफ रखना चाहिए, खुश्बू लगाना भी बेहतर है और फिर जहन को भी तमाम तरह के दुन्यावी ख्यालातों से पाक करके दुरूद शरीफ पढ़ना चाहिए

दुरूद शरीफ पढ़ते हुए शोहरत और रियाकारी (दिखावा) से बचना चाहिए। दुन्यावी जाह व जलाल हासिल करने की नियत नहीं रखनी चाहिए। किसी के यहाँ इशाले सवाब कि खातिर दुरूद ख्वानी रखी गई हो तो दावत देने वाले या किसी और पर एहसान नहीं रखना चाहिए बल्कि पढ़ने में रजा ए इलाही का मकसद ही पेशे नजर रखना चाहिए।

बाब 3

फजाईले दुरूद शरीफ अहादीसे करीमा की रोशनी में

हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया है कि जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है अल्लाह त्आला उस पर दस बार दुरूद भेजता है, जो मुझ पर दस बार दरूद भेजता है अल्लाह त्आला उस पर सौ बार दुरूद भेजता है, जो मुझ पर सौ बार दुरूद भेजता है अल्लाह त्आला उस की पेशानी पर युँ लिख देता है, बराअतुम मिनन्नीफाके व बराअतुम मिनन्नार तर्जुमा - (ये शख्स नीफाक से भी आजाद है और जहन्नुम से भी आजाद है) और ईर्शाद फरमाते हैं कि उसका हश्र कयामत के दिन शहीदों के साथ होगा। सुब्हानल्लाह।

हुजुरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का फरमाने आलीशान है कि बेशक बरोजे कयामत लोगों मे से वो लोग मुझ से ज़्यादा करीब होंगें जो मुझ पर कसरत (ज़्यादा) से दरूद भेजते होंगे। एक और हदीस में है कि हुजुर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फ़रमाया 'मुझ पर कसरत से दुरूद भेजा करो कयुँकि कब्र मे पहले मेरे ही बारे मे सवाल किया जायेगा'।

दूसरी हदीसों पर भी एक नजर -:

☆ मुझ पर दुरूद भेजना कयामत के दिन पुलसिरात के अंधेरों में नूर है।

☆ जो ये चाहता हो कि उसके आमाल बड़े पल्ले में तौले जायें तो उसने मुझ पर ज्यादा से ज्यादा दुरूद भेजने चाहिये।

☆ जो मुझ पर ज्यादा दुरूद भेजेगा वो अर्श के साये मे होगा।

☆ तीन आदमी बरोजे कयामत अल्लाह के अर्श के साये में होंगें, एक वो जो कोई मुसीबत वाले की मुसीबत दुर करे, दुसरा वो जो मेरी

सुन्नत जिन्दा करे, तीसरा वो जो मुझ पर कसरत से दुरूद भेजता हो।

अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलयहि ने हजरत ईब्ने उमर से हुजुरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का ईर्शाद नक्ल किया है जिसमें आपने फरमाया है कि तुम्हारी मजलीसों को दुरूद शरीफ से सजाओ क्युँकि मुझ पर दुरूद भेजना तुम्हारे लिए कयामत मे नूर है।

हजरत तीबरानी से हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का ईर्शाद नक्ल है, आप फरमाते हैं जो शख्स मेरे नाम के साथ सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम लिखता है जब तक उस किताब में मेरा नाम मौजुद रहेगा फरिश्ते उसके गुनाहों कि मुआफी और रहमत की दुआ करते रहेंगें।

हजरत तीबरानी से हुजुरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का ये ईर्शाद नक्ल है कि जो शख्स सुबह दस बार और शाम को दस बार मुझ पर दुरूद भेजे तो उसे बरोजे कयामत मेरी शफाअत नसीब होगी।

हदीसे मुबारका है कि हुजुर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया जो शख्स मुझ पर सौ मरतबा दुरूद भेजेगा उसकी सौ हाजतें पूरी की जायेगी जिसमें तीस हाजतें दुनिया की और सत्तर हाजतें आखिरत की होंगी।

हजरत ईब्ने मसउद रदीअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुजुरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया 'अल्लाह के बहुत से फरिश्ते ऐसे हैं जो जमीन पर घुमते रहते हैं और मेरी उम्मत के सलाम मुझ तक पहुँचाते रहते हैं। और भी मुस्तनद सहाबा-ए-किराम से ये रिवायत है। हजरत अली करमल्लाहु वज्हुल करीम रदीअल्लाहु तआला अन्हु व हजरत अनस रदीअल्लाहु तआला अन्हु और हजरत हुरैराह रदीअल्लाहो तआला अन्हु वगैरह आली सहाबा-ए-किराम से ये हदीस शरीफ नक्ल है जिसमे आप हुजूरे अकदस, फख्रे दो आलम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया है 'मुझ पर दुरूद पढ़ा करो तुम्हारे दुरूद मुझ तक पहुचते हैं'।

कुछ और हदीसों में जो हजरत अनस व हजरत अम्मार बीन यासीर व हजरत अबु अमामा रदीअल्लाहु तआला अन्हुम अजमइन से

रिवायत हुइ है, युँ है कि हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया है कि 'अल्लाह जल्ल शानहु ने एक फरिश्ते को तमाम मख्लुक की बातें सुनने की ताकत अता की है, और उस फरिश्ते की कयामत तक मेरी कब्रशरीफ पर तैनाती की गयी है, जब कोई शख्स मुझ पर दुरुद भेजता है तो वो फरिश्ता उसका व उसके बाप का नाम लेके मुझ से कहता है कि फलाँ शख्स जो फलाँ शख्स का बेटा है उसने आप पर दुरुद भेजा है। अल्लाह तआला ने मुझसे वादा कीया है कि जो शख्स मुझ पर एक मर्तबा दुरुद भेजेगा तो अल्लाह तआला उस पर दस मर्तबा दुरुद (रहमत) भेजेगा।

सुलेमान बिन सहीम रहमतुल्लाह अलयहि नाम के एक बुजुर्ग हो गए जो फरमाते हैं कि 'मैने ख्वाब मे हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जियारत कि और मैने पुछा - या रसूलल्लाह ये जो लोग हाज़िर (कब्रे अतहर पर) होते हैं और सलाम कहते हैं तो क्या आप शमाअत करते हैं, आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया हाँ सुनता भी हुँ और उनके सलामो का जवाब भी देता हूँ'। (सुब्हानल्लाह)

इब्राहीम बिन शयबान रहमतुल्लाह अलयहि फरमाते हैं कि 'मैं हज से फ़ारिग हो कर मदीना मुनव्वरा पर हाज़िर हुआ और रोज-ए-अतहर के करीब जाकर मैने सलाम अर्ज़ किया तो हुजरे शरीफ के अन्दर से जवाब आया व अलयकुम अस्सलाम जो मैनै सुना'। (सुब्हानल्लाह)

यानी की ये बात वाजेह तौर पर साफ हो गई कि हमारे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम हमारे भेजे हुए दुरुदो-सलाम सुनते हैं और उनके जवाब भी देते हैं। तमाम ज़िन्दगी के भेजे हुए हज़ारों लाखों सलाम मे से फक्त एक भी सलाम का जवाब हुजूर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जानिब से मिल जाए तो ये क्या कम ईज्जत-ओ-फख्र की बात है?कोई भी बंदे की शराफत के लिए इतना तो काफी है कि हुजुरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की महफिल मे उसके नाम का चर्चा भलाई के साथ हो जाए।

जिक्र मेरा मुझसे बेहतर है
के उनकी महफिल मे है

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम अपने रौजे शरीफ मे हमारे दरुदो सलाम सुनते है और जवाब देते हैं इस मुद्दे पर शक की कोई गुंजाइश नहीं, और ये हमारा ईमान है। आपके मुकद्दस जिस्म को मिट्टी खा नहीं सकती। इमाम बयहकी रहमतुल्लाह अलयहि ने नबीयों की ज़िंदगी पर तफसील से एक किताब लिखी है। हज़रत अनास रदीअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि अंम्बीया-ए-किराम अपनी कब्रों में ज़िंदा हैं और नमाज़ पढ़ते हैं। इमाम मुस्लिम ने हुजुरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का इर्शाद नक्ल किया है कि 'मैं (यानी - मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) मेअराज की रात हज़रत मुसा अलयहीस्सलाम के करीब से गुजरा तो वो अपनी कब्र में खड़े होकर नमाज़ पढ़ रहे थे। मजीद हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया 'मैने अंम्बिया की एक जमात के साथ अपनी जात को देखा हजरत ईसा (अलयहीस्सलाम) और हजरत ईब्राहीम (अलयहीस्सलाम) को नमाज़ पढ़ते देखा। अल्लामा स्युती रहमतुल्लाह अलयहे ने 'हयाते अंम्बीया' में ईस मौजू पर तफसिली तज्किरा किया है 'इन्नल्लाहा हर्रमा अलल अर्दी अज सादल अम्बीया' यानी के अल्लाह तआला ने अंम्बिया अलयहीमुस्सलाम के जिस्मों को ज़मीन पर हराम फरमा दिया है।

जरुरी तंबीह

इस हदीस से मालूम हुआ कि तमाम हजरात अंम्बिया अलयहीमुस्सलाम के मुकद्दस अजसाम (जिस्म की जमा) उनकी कब्रों में सलामत रहते हैं। और अल्लाह जल्ल शानहु ने फरमा दिया है कि जमीन उनके जिस्मों पर किसी क़िस्म का तगय्युर या तबद्दूल पैदा ना करे। जब तमाम अंम्बिया अलयहीमुस्सलाम की ये शान है तो फिर हुजूर सैय्यदुल अंम्बिया व सय्यदुल मुरसलीन व ईमामुल अंम्बीया व खातिमुन्नबीय्यीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के मुकद्दस जिस्मे अनवर को ज़मीन क्यों कर खा सकती है? इसीलिए तमाम उलेमा-ए-उम्मत व औलीया-ए-मील्लत का यही अकीदा है कि हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम अपनी कब्रे अतहर मे जिन्दा है, और खुदा के हुक्म से बड़े बड़े तसर्रुफात फरमाते रहते हैं। अपनी खुदादाद पैगम्बराना कुव्वतों और मुअज्जीजाना ताकतों से अपनी उम्मत की मुश्किल कुशाई और उनकी फरयाद रसी फरमाते रहते हैं।

ख़ूब याद रखिए कि जो शख्स इसके ख़िलाफ़ अकीदा रखता हो वो यक़ीनन बारगाहे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का गुस्ताख, बदअकीदा, गुमराह और अहले सुन्नत के अकीदे से ख़ारिज है।

जुम्आ के दिन बकसरते दुरूदे पाक

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया की 'तुम्हारे दिनों में सबसे अफजल दिन जुम्आ का है, लिहाजा इस दिन मुझ पर बकसरत दुरूद पढ़ा करो'।

अक्सर ऊलेमा-ए-उम्मत ये फरमाते हैं कि जब मदीना मुनव्वरा के दरख्तों और मकानो पर तुम्हारी नजर पड़े, तब दुरूद शरीफ पढ़ने लगो, और जैसे जैसे नजदीक आने लगो तो दुरूद शरीफ में और इजाफा करते जाओ। वजह यह है कि इन सभी जगहों कि वहिय और कुर्आने पाक के साथ वाबस्तगी रही है। इन जगहों पर हजरते जिब्रईल अलयहीस्सलाम व हजरत मीकाइल अलयहीस्सलाम कि मुसलसल आवाजाही रही है। इस मिट्टी पर हुजूर मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के मुबारक कदमों की रफ्तगी रही है, यही वो जगह है जहाँ से अल्लाह जल्ल शानहु के दीन (मज़हब) की और उसके पाक रसूल की सुन्नतों की इशाअत हुई है।

जब किसी शख्स को मदीना मुनव्वरा जाना नसीब हो तो मस्जिदे नब्वी में क़िबला की तरफ से दाख़िल हो और रौज-ए-अकदस से चार हाथ के फासले पर खड़े हो कर निची निगाह और आजिज़ी के साथ ये सलाम ज़रूर पढ़े।

अस्सलामु अलयका या रसूलल्लाहि
अस्सलामु अलयका या नबीयअल्लाहि
अस्सलामु अलयका या खयरे खल्कील्लाह
अस्सलामु अलयका या हबीबल्लाहि
अस्सलामु अलयका या सैय्यदील मुरसलीन
अस्सलामु अलयका या खातीमुनन्नबीय्यीन
अस्सलामु अलयका या रसूल रब्बील आलमीन
अस्सलामु अलयका या कायदिल गुर्रील मुहज्जलीन
अस्सलामु अलयका या बसीरो
अस्सलामु अलयका या नजीरो

अस्सलामु अलयका व अला अहले बयते कत्ताहीरीन
अस्सलामु अलयका व अला अजवाजे कत्ताहिराते उम्महातील मोमीनीन
अस्सलामु अलयका व अला अस्हाबे अजमईन

अस्सलामु अलयका व अला साअरिल अंम्बीया-ए- मुरसलीन व साइरे ईबादील्लाहीस्सालिहीन जज़ाकल्लाहु अन्ना या रसूलल्लाह अफजल मा जज़ा नबीय्यन अन्कवमेही, व रसूलन अन्उम्मतेही व सल्लल्लाहु अलयक कुल्लमा ज़कर हुज्ज़ाकिरुना कुल्लमा गफलअन्ज़िकरि-कल गाफीलुना व सल्लि अलयक फील्अव्वलीन, व सल्लि अलयक फील्आखिरीन अफजलु अकमलु अत्यबा मा सल्लि अला अहदिम्मिनल्खल्कि अजमईन कमा अस्तन्कज़नाबिक मीनद्दलालति व बस्सरना बिका, मीनल्अमा वल्ज़िहालति, अश्हदु अंल्लाईलाहा ईल्लल्लाहु व अश्हदु अन्नका अब्दुहु व रसूलुहु व अमीनुहु व खयरतहु मिन्खल्किही व अश्हदु अन्नका कद बल्लगतिर्रिसालत व अद्दयतल्अमानत व नस्हत-ल-उम्मत व जहद्त फील्लाहि हक्का जीहादिही. अल्लाहुम्मा आ'तिही निहायत मायम्बगी अंय्यामलुहुल-आमिलुन।

ये सलाम और दुआ पढ़ लेने के बाद अपने नफ्स और मुसलमान औरतों और मर्दों के लिए दुआ करें फिर उसके बाद हजरत अबुबक्र सिद्दीक रदीअल्लाहु तआला अन्हु और हजरत उमर रदीअल्लाहु तआला अन्हो पर भी सलाम कहें और उनके लिए दुआ करें।

बहुत सी रिवायतों में ये कहा गया है कि, दुरुद और सलाम दोनो के अल्फाजों को मिला कर पढ़ें, मिसाल के तौर पर-:

अस्सलातु वस्सलामुअलयका या रसुलल्लाहि
अस्सलातु वस्सलामुअलयका या हबीबल्लाह.

ईस तरह दुरुद और सलाम को मिलाकर पढ़ना ज्यादा अफजल है। अहले सुन्नत व जमात का यही तरीकाकार है।

एक दफा हजरत उबई बीन कआब रदीअल्लाहु तआला अन्हु ने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के सामने अर्ज़ किया कि 'या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम मैं आप पर कसरत से दुरुद भेजना चाहता हूँ, तो मेरी दुआओं से कितना वक्त दरुद पढ़ने में सर्फ करूँ'?, आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया 'जितना तुम्हारा

दिल चाहे' मैने कहा एक चौथाई? आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया तुम्हें इख़्तियार है, जो इससे ज्यादा हो तो तुम्हारे लिए बेहतर है.' फिर मैने पुछा आधा वक्त (दुरूद के लिए) कर दूँ? आप ने फरमाया 'तुम्हें इख़्तियार है, जो उससे भी ज्यादा कर दो तो तुम्हारे लिए बेहतर है'. फिर मैने अर्ज़ किया कि, क्या दो तिहाई हिस्सा कर दूँ? आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने जवाब दिया 'तुम्हें इख़्तियार है, जो इसमें इज़ाफ़ा हो तो तुम्हारे लिए बेहतर है', उसके बाद मैने अर्ज़ किया 'या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम मै अपना सारा वक्त (दुआओं का) आपके दुरूद पढ़ा करुँ? आपने इर्शाद फरमाया 'ऐसे में तुम्हारी सारी फीक्रों कि किफायत की जाएगी और तुम्हारे गुनाह भी मुआफ कर दिये जाएँगे'। सुब्हानल्लाह।

हज़रत अबु दर्दा रदीअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि, हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया 'जो शख्स सुबह शाम दस दस मरतबा मुझ पर दुरूद पढ़ेगा कयामत के दिन उसे मेरी शफाअत वाजिब होगी।

दुरूद शरीफ पढ़ने वाले की हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम खुद शफाअत करेगें, इस मौजुअ पर बहुत सी हदीसें बयान की गई है उन सभी हदीसों का हवाला इस मुख्तसर सी किताब में देना नामुमकिन है।

'मवहीबे लद्दुनीयह' मे ये बयान है कि कयामत में अगर किसी मोमिन की नेकियाँ कम होंगी तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम खुद एक छोटा सा उँगली के शीरे जीतना काग़ज़ निकाल के पल्ले पर रखेंगें जिससे की पल्ला भारी हो जाएगा, ये देख कर वो मोमिन कहेगा ' मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों आप कौन हैं? आप की सूरत और सीरत भली है! आप हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम फरमाएँगें 'मैं तेरा नबी हूँ, और ये वो दुरूद है जो तूने मुझ पर पढ़ कर भेजा था तुम्हारी ज़रूरत के वक्त जिसे मैने अदा कर दिया'।

हज़रत अबु हुरैराह रदीअल्लाहो तआला अन्हु रिवायत कहते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया 'मुझ पर कसरत से दुरूद भेजते रहो ये तुम्हारे लिए ज़कात है'। हज़रत अली करमल्लाहु वजहुल करीम ने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का ईर्शादे मुबारक बयान किया है कि, तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारी

दुआओं का मुहाफ़िज़ है और तुम्हारे लिए परवर दिगार कि रज़ा का बायस है और तुम्हारे अआमाल की ज़कात है। (यानी अआमाल का इज़ाफ़ा करने वाला और पाक करने वाला)

दुरूद शरीफ के सवाबों पर एक नज़र

१. दुरूद पढ़ने वाले की खतायें माफ होती हैं।
२. उसके अआमाल पाकीज़ा होते हैं।
३. उसके दरज्जे बुलंद होते हैं।
४. उसके गुनाह मुआफ होते हैं।
५. खुद दुरूद शरीफ भी पढ़ने वाले कि मगफीरत तलब करता हैं।
६. जो शख्स सभी दुआओं को दुरूद बनादे, उसके दुनिया और आखिरत के सभी कामो में किफ़ायत होगी।
७. दुरूद शरीफ का सवाब गुलाम आजाद करने से ज्यादा है।
८. खतरों से निजात मिलती है।
९. बरोजे कयामत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम दुरुद पढ़ने वाले की शफाअत करेंगें।
१०. दुरूद शरीफ की बदौलत अल्लाह की रहमत नाज़िल होती है।
११. बरोजे कयामत अर्श के साये में होगा।
१२. जब अआमाल तौले जाएँगे तब नेक अआमाल का पल्ला दुरूद शरीफ की बरकत से वजन पकड़ेगा और झुक जाएगा।
१३. हौजे कौसर पर हाज़िरी नसीब होगी।
१४. क़यामत के दिन की प्यास से हिफ़ाज़त मिलेगी।
१५. जहन्नम की आग से हिफ़ाज़त मिलेगी।
१६. पुलसिरात पर से गुजरना आसान होगा।
१७. मरने से पहले जन्नत मे अपना मुनासिब ठिकाना देखोगा।
१८. जन्नत मे बहुत सी बीवियाँ मीलेगी।
१९. जिहाद से ज्यादा सवाब मीलेगा।
२०. जो गरीब हो और दुरूद शरीफ पढ़ता हो उसके लिए सदका होगा।
२१. दुरूद शरीफ जकात है और ईसमें पाकी है जिसकी वजह से

माल में बरकत होगी।

२२. दुरूद शरीफ से एक सौ बल्कि उससे भी ज्यादा हाजते पूरी होती है।

२३. तमाम अमल में ये (दुरूद) अल्लाह को ज्यादा अज़ीज है।

२४. मजलिसों की ज़िनत है।

२५. फकीरी और रोज़ी की तंगी दूर होती है।

२६. दुरूद शरीफ पढ़ने वाला कयामत के रोज़ हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के एकदम करीब होगा।

२७. दुरूद शरीफ पढ़ने वाला खुद, उसके बेटे और उनकी औलादें फायदा हासिल करती हैं।

२८. दुरूद शरीफ नूर है।

२९. दुरूद शरीफ दुस्मनो पर रौब गालीब करने का सामान है।

३०. दुरूद शरीफ दिलों को निफ़ाक और जंक से पाक करता है।

३१. दुरूद शरीफ की बरकत से हुजूरे अकरम, शाफए महशर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की ख्वाब मे जियारत नसीब होती है।

३२. दुरूद शरीफ पढ़ने वाले की लोग गीबत नही करेंगें।

३३. दीन और दुनिया दोनो मे दुरूद शरीफ सबसे ज्यादा नफा देने वाला अमल है।

३४. जब दो मोमिन आपस मे मुलाकात करते हैं और मुसाफाह करते वक्त सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनो के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

हज़रत अली करमल्लाहु वज्हुल करीम रदीअल्लाहु तआला अन्हु से **'कन्जुल उम्माल'** मे एक रिवायत नक्ल हुई है, जिसमें बयान किया गया है कि अल्लाह त्आला ने बहुत से नूरानी फ़रिश्तों को पैदा फरमाया है जो जुम्ए की रात और दिन को आसमान से निचे उतरते हैं, जिनके हाथों में सोने की कलम, चाँदी की दवात और नूरानी काग़ज़ होते हैं उन फ़रिश्तों का सिर्फ़ ये काम है कि जो दुरूद शरीफ नबी-ए-करीम मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर पढ़े जाते हैं उसे वो लिख लेते हैं।

दुरूद शरीफ पढ़ने के वक्त व अवकात

अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलयहि ने **'कौले बदिअ'** मे दरुद शरीफ पढ़ने के वक्त व औकात तहरीर फरमाये हैं यहाँ दिये जाते हैं।

दुरूद शरीफ एक ऐसा वजीफा है जो हर वक्त पढ़ा जा सकता है (अलावा चंद अवकात) यानी दुरूदे पाक पढ़ने की ना कोई तादाद मुकर्रर है और ना वक्त बल्कि जब चाहें पढ़ें जितना चाहें पढ़ें दिन के वक्त पढ़ें या रात के वक्त पढ़ें, नमाज़ से पहले पढ़ें या बाद नमाज़ के बाद, दुआ से पहले पढ़ें या बाद में, खड़े होकर पढ़ें या बैठकर पढ़ें गोया कि हर घड़ी पढ़ें और बाज खास मुकामात और अवकात में दुरूद पढ़ना ज्यादा अफजल है।

जैसे कि :- वजू करने के बाद, तयम्मुम के बाद, जनाबत के गुस्ल के बाद, नमाज़ के बाद और नमाज मे, ईकामत कहते वक्त, फज्र के बाद, मग़रिब के बाद, अत्तहीयात मे, कुनुत के बाद, तहज्जुद मे उठें तब, तहज्जुद के बाद, मस्जिद जाते वक्त, जब मस्जिद देखें, जब मस्जिद मे दाख़िल हों, जब मस्जिद से बाहर आएँ, अज़ान के जवाब में, दुआ से पहले व दुआ के दरम्यान और दुआके बाद, जुम्आ के दिन और रात में, जुम्आ के खुत्बे में, ईदैन के खुत्बे में, जनाजा ले जाते, मय्यत को कब्र में उतारते वक्त, रमजान शरीफ के महीने में, जब काबा शरीफ को देखें, सफा मरवह की शई के वक्त, हज़रे अस्वद को बोसा देते वक्त, मस्जिदे हनीफ में, जब मदिना मुनव्वरा को देखें, हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के रौज़े अतहर की ज़ियारत के वक्त, जब वसीय्यत करो, निकाह के खुत्बे में, सोते वक्त, जब नींद ना आती हो, जब आधी नींद से बेदार हों, बाजार जाते वक्त, दावत मे जाते वक्त, जब घर में दाख़िल हों, गम में, मुसीबत में, जब वक्त सख्त हो, मोहताजी और फ़क़ीरी में, जब डूब रहे हों, बीमारी में, जब कान बज रहे हों, जब पाँव सुन्न हो जाएँ, छींकते वक्त, जब कोई चीज भूल जाएँ तो उसके याद आने के लिए, मूली खाते वक्त, गुनाहों से तौबा करते वक्त, कोई हाजत आ ज़ाए तब, कुर्आन शरीफ जब पुरा पढ़ लो और जब हीफ्ज करो, जीस महफ़िल में अल्लाह और उसके रसूल के ज़िक्र के लिए जमा हों, बात करते वक्त, इल्म पढ़ते और पढ़ाते वक्त, वअज़ करते वक्त, फतवा

देते वक्त, जब हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का नाम मुबारक लिखो तब दुरूद शरीफ पढ़ा करो।

इतना जान लेने के बाद ये जान लें कि दुरूद शरीफ किन अल्फाजों में पढ़े जाएँ।

दुरूद शरीफ के अल्फाजों के बारे मे बहुत सी हदीसों मे सहाबा-ए-किराम से रिवायतें आई है, जिसमें हुजुरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ सवालों के जवाब में दरुद शरीफ के अल्फाज तज्वीज़ किए हैं। उसके अलावा दुरुदे इब्राहीम जो हर मुसलमान नमाज़ मे अत्तहियात के बाद पढ़ता है, आप सलल्लाहु अलयहि व सल्लम ने पसंद फरमाया है। और दुरूद शरीफ को इन अल्फाजो मे पढ़ने की नसीहत भी खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फ़रमाई है-: **'अल्लाहुम्मा सल्लि अला मोहम्मदीन नबीय्यील उम्मी व आलिहि व बारीक व सल्लीम'**

हजरत अली करमल्लाहु वज्हुल करीम से हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की हदीसे मुबारका है कि जो शख्स चाहता हो कि उसके दुरूद बड़े पैमाने पर मापे जाएँ, तो वो ऐसा दरुद पढ़े।

'अल्लाहुम्मज्अल्, सलवात क व बरकत क अला मोहम्मदिन, नबिय्यी व अज़वाजिही उम्महातील् मुमीनी न व ज़ुर्रियातिही, व अहलि बयतिही कमा सल्लय्ता अला आलि ईब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद'

खुशूसन जुम्आ के दिन कि फ़ज़ीलतें

हज़रत अबु दरदा रदीअल्लाहु तआला अन्हु हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का इर्शाद नक्ल करते हैं कि, 'मुझ पर बरोजे जुम्आ कसरत से दुरूद शरीफ भेजा करो, क्योंकि ये ऐसा मुबारक दिन है जिसमें फरिश्तों की आमद होती है, और इस रोज जो कोई मुझ पर दुरूद भेजता है वो मेरे हुजूर में पेश होता है'। मैने पुछा (यानी हज़रत अबु दरदा रदीअल्लाहु तआला अन्हु ने) आपके विसाल के बाद भी? हुजूरे कायनात सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया 'हाँ उसके बाद भी अल्लाह जल्ल शानहु ने जमीन पर हराम कर दिया है कि वो अंम्बीया अयहीमुस्सलाम के जिस्मों को खाये अल्लाह के नबी

ज़िंदा रहते हैं उन्हें रिज्क दी जाती है'।

जुम्आ के दिन दुरूद शरीफ ज्यादा से ज्यादा पढ़ने की हदीसें दूसरे सहाबाओं जैसे की हजरत अबु हुरैराह, हज़रत अनस, हजरत औस बीन औस, हज़रत अबु उमामा, अबु दरदा, हजरत अबु मसउद,हजरत उमर और उनके बेटे रदीअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन वगैरह से भी नक़ल हुई है।

हज़रत अबु हुरैरह रदीअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया 'मुझ पर दुरूद पढ़ना पुलसिरात पर से गुजरते वक्त नूर है, और जो शख्स जुम्आ के दिन मुझ पर ८० (अस्सी) मर्तबा दुरूद भेजे उसके ८० साल के गुनाह माफ किए जायेंगें।

एक और हदीस हज़रत अबु हुरैरह रदीअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि जो शख्स जुम्आ के दिन असर की नमाज़ के बाद अपनी जगह से उठे बगैर ये दुरूद शरीफ पढ़े तो उसके ८० साल के गुनाह माफ हो जाएँगे और ८० साल की इबादत का सवाब लिखा जाएगा'। आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने वो दुरूद यूँ बयान फरमाया -: **अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन अब्दि-क व नबिय्यी-क व रसुले-क-न्नबिय्यील् उम्मी।**

सभी दुरूद शरीफ उँगलियों पर गीन कर पढ़ने चाहिए क्योंकि हदीसों में बयान है कि क़यामत के दिन उँगलियों को जुबान अता की जाएगी।

हज़रत रोवयफह बिन साबीत अन्सारी रदीअल्लाहु तआला अन्हु हदीस बयान हुई है, जिसमें हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया है कि, जो शख्स ये दुरूद शरीफ पढ़े उसके लिए मेरी सफाअत वाजिब हो जाती है।

वो दुरुद शरीफ - **अल्लाहुम्म सल्ली अला मुहम्मदींव अनजील्हुल् -मकअदल् मुकर्रबा इन्द-क यौमल् कियामति**

दुन्यवी मुआमलात मे हम देखते है कि, किसी मुजरिम को ये मालूम हो ज़ाए कि फलाँ शख्स की हाकिम के पास अच्छी पहचान है, तो वो मुजरिम उस श्खस के पास से सिफ़ारिश हासिल करने के लिए दिन रात एक कर देगा मुसलमानों जरा सोचो हम मे से कौन है जो मुजरिम नहीं।

अब ग़ौर करें के हुजुरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम अल्लाह के मेहबूब जो हबीबे खुदा सब नबीयों के सरदार और हमारे आका व मौला हमें दुरुद शरीफ की सौगात तोहफे मे देते हैं कि तुम मुझ पर दरुद पढ़ कर भेजो मैं तुम्हारा शफीअ (शफाअत करने वाला) बनुँगा, बावजूद इस हकीकत के अगर कोई शख्स इसका इन्कारी हो और दुरुद शरीफ पढ़ना अपना रोज़ाना का माअमुल ना बना ले तो वो शख्स बदनसीब है और ये ही उसका अंजाम।

हम अक्सर बेकार की बातों में वक्त ज़ाया करते हैं, लोगों की ग़ीबत (चुग़ली) करने मे वक्त शर्फ करते हैं और गुनाह मौल लेते हैं। सिनेमा, नाटक, तमाशा, मुशायरा, टीवी वगैरह फ़िजूल कामों में हम अपनी मुख्तसर और छोटी ज़िन्दगानी का किमती मौका बरबाद कर लेते हैं। इसके बदले अपना सारा वक्त इबादत और दुरुदो सलाम पढ़ने मे और आखिरत का बेशकिमती खजाना हासिल करने में खर्च करें तो क्या ही अच्छा हो, अल्लाह त्आला हम सब को, हमारे बाल बच्चों को और हर मोमिन को हर बुराई से बचाए, नेक हिदायत और सही समझ अता फरमाये 'आमीन'।

अबु फजल कौमानी रहमतुल्लाह अलयहि कहते हैं कि, 'एक शख्स खुरासान से मेरे पास आया और उसने मुझे बताया कि मै मदीना शरीफ मे था वहाँ मुझे हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की ख्वाब मे ज़ियारत नसीब हुई और आपने (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) मुझे हुक्म दिया जब तुम हम्दान शहर जाओ तब वहाँ अबुल फ़ज़ल बिन जीरक को मेरा सलाम कहना मैने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ये क्या माजरा है, आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया वो मुझ पर रोज़ाना सौ मर्तबा या उससे भी ज्यादा ये दुरुदे पाक पढ़ा करता है'

अल्लाहुम्म सल्ली अला मुहम्मदीन नबीय्यील् उम्मी व अला आलि मुहम्मदीन जजा-अल्लाहु मोहम्मदीन अन्ना मा हुवा अहलोहु। सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम

अबु फ़ज़ल कहते हैं कि उस शख्स ने कसम ली कि हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने आप का नाम बताया उससे पहले मैं तुम्हें जानता नहीं था।

जलीलूल कद्र अल्लामा शेख अब्दुल ह्क्क मुहद्दीस देहलवी

रहमतुल्लाह अलयहे अपनी किताब 'तरगीब एहलुस्साआदात' मे लिखते हैं कि, जुम्आ की रात दो रक्अत नफ्ल नमाज़ पढ़े हर रक्अत मे ११ (ग्यारह) मर्तबा आयतल कुरसी, ११ (ग्यारह) मर्तबा सुरह ईखलास पढ़ें और सलाम फेरने के बाद १०० मर्तबा यहाँ बताया गया दुरुद शरीफ पढ़ें, तीन जुम्आ भी नहीं गुजरा होगा और उस शख्स को हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की ज़ियारत नसीब होगी। ईन्शाअल्लाह

वो दुरुद शरीफ - **अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदीन्न-नबिय्यील उम्मी व आलिही व असहाबिही व सल्लीम्** (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम)

ख्वाब ही मे सही हुजूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम कि ज़ियारत नसीब होना बहुत बड़ी शआदत (खुसनसीबी) है।

ईं शआदत ब-जोरे बाज़ू निस्त
ता न बख्शद खुदा-ए- बख्शीन्दह

तर्जुमा- ये खुशनसीबी बाजुओं के जोर से नही मिलती जब तक अल्लाह त्आला कि तरफ से अता और बख्शीस न हो।

हज़रत अबु हुरैरह, अबु उमामा व हज़रत अबु सइद खुदरी रदीयल्लाहो त्आला अन्हुम वगैरह सहाबा-ए-किराम से एक हदीस यूँ नक़ल हुई है कि कोई कौम मजलीस मे बैठी हो और वो मजलीस हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दुरुद पढ़ने से पहले बर्ख़ास्त हो जाए तो वो मजलीस उन के ऊपर बरोजे कयामत वबाल होगी।

हज़रत उमर रदीअल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि 'मुझे बताया गया है कि दुआ आसमान और जमीन के बीच लटकी रहती है (ऊपर) चढ़ती नहीं, जब तक हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दुरुद ना पढ़ा ज़ाए'। इसी हदीस को दीगर सहाबा-ए-किराम रीदवानुल्लाहि अन्हुम ने भी रिवायत की है।

जम्हुर उलेमाओं के नजदीक, दुरुद शरीफ का ज़िंदगी मे एक बार पढ़ना फर्ज है। मतलब ये हुआ की उलेमाओं कि जामेए राय यकसा है जिसमें कोई इख़्तिलाफ़ नहीं।

नबी-ए-करीम मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के नाम के आगे सैय्यदना पढ़ना मुस्तहब है, हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने बजाते खुद ये इर्शाद फरमाया है कि,

'अना सय्यिदुन्नासे यव् मल् कियामति' - यानी, मैं लोगों का सरदार हूँ कयामत के दिन।

और एक जगह आपने फरमाया - 'अना सय्यीदु वुल्दि आद-म यौमल् कियामति वला फख्र'-यानी- मै सरदार बनूँगा औलादे आदम का बरोजे कयामत और ये कोई फख्र की बात नही।

ईसी तरह मुख़्तलिफ़ हदीसों से ये हक़ीक़त भी साफ़ हो जाती है कि आप हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के मुबारक नाम के आगे 'मौलाना' कहा जा सकता है। लेकिन इस किताब का उनवान दुरुद शरीफ है लिहाज़ा सैय्यदना और मौलाना लफ़्ज़ों के कह सकने की इजाज़त देती हदीसों की गहराई में हम नहीं जा रहे।

बाब 4

हिकायाते दुरुद शरीफ व फजाइल

आलीमों का कहना है कि, जहाँ भी जब भी हुजुरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का मुबारक नामे गिरामी लिखा ज़ाए तो पूरे तौर पर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम लिखना चाहिए फ़क़्त सल. सलअम, या स.अ.व. लिखना मुनासिब नहीं क्युँकि यूँ लिखना कंजुसाई है, बुख्ल है एक शख्स कंजुसाई की वजह से हदीस शरीफ मे आपके नामे मुबारक के साथ दुरुद शरीफ लिखता न था तो उसका दाहिना बाज़ू सड़ गल गया। शेख इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाह अलयहे लिखते

हैं कि, एक शख्स आप के नाम के साथ साथ सिर्फ़ 'सल्लल्लाहु अलयहि' इतना ही लिखता था और 'व सल्लम' लिखता न था। हुजुरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने उसे ख्वाब में फरमाया 'तु अपनी जात को चालीस नेकियों से क्युँ महरुम रखता है'? इसका मतलब ये हुआ कि, लफ्ज़ व सल्लम मे चार हुरुफ आते हैं एक हुरुफ कि एक नेकी और हर नेकी पर दस गुना सवाब है।

'फजरे मुनीर' नामी किताब में एक नेक बुजुर्ग मुसा जरीर रहमतुल्लाह अलयहि का क़िस्सा बयान है। उस क़िस्से मे उन्होने फरमाया है कि, 'एक जहाज़ डूबने लगा मैं भी उसमें सवार था। उस वक्त मुझे जाने नींद सी तारी थी, ऐसी हालत में सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने मुझे एक दरुद शरीफ सीखाया और फ़रमाया के जहाज में जो लोग सवार हैं एक हजार मर्तबा पढ़ लें, अभी हमने महज़ तीन सौ मर्तबा ही पढ़ा था कि जहाज़ को डूबने से निजात मिल गई।

वो दुरुद शरीफ -

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا

مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُنَجِّيْنَ بِهَا مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّئَاتِ وَ

تَرْفَعُنَا بِهَا عِنْدَكَ اَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَ تُبَلِّغُنَا بِهَا

اَقْصَى الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرٰتِ فِى الْحَيَاتِ وَ

بَعْدَ الْمَمَاتِ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ 0

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिन सलातन्

तुनज्जीना बिहा मिन् जमीइस्साय्याती व तरफउना बिहा आ'लददरजाति तुबल्लिगुना बिहा अकसाल् गायाति मिन् जमीईल् खयराति फील् हयाती व बअदल् ममाति ईन्न-क अला कुल्ले शैइन कदीर।

मशहुरो मआरुफ किताब **'दलाइलुल खयरात'** को उसके मुसन्नीफ (लेखक) ने किन हालात में लिखी वो बात भी काबिले-जिक्र है। इस किताब के कतीब को दौराने सफ़र वजू के लिए पानी की ज़रूरत पेश आई, जिस कुएँ पर आप पहुँचे वहाँ पानी खिंचने को ना कोई रस्सी थी ना कोई बाल्टी थी, इस वजह से आप परेशान थे, इतने में एक लड़की आई हालात से वाक़िफ़ हुई और उसने कुएँ में थूक दिया और उसके थुँकने से कुएँ मे पानी ऊपर तक छलक आया आपने उसे हैरान होकर वजह दरयाफ्त की, उस लड़की ने जवाब दिया ये सब दुरुद शरीफ की बरकत है। इस वाक़ये से मुतास्सीर हो कर आपने **'दलायलुल खयरात'** नाम कि किताब लिखी।

'नुज़हतुल मजालीस' इस उनवान की मशहुर किताब मे एक किस्सा बयान है। एक बुजुर्ग ने कहा की मेरा एक पड़ोसी हुआ करता था जो बहुत ही गुनाहगार था। मैं उसे बारबार तौबा करने की ताकीद करता था लेकिन वो तौबा करता ना था। उसके गुजर जाने के बाद मैने उसे जन्नत मे देखा, मैने पुछा कि तु इस दरजे पर कैसे पहुँचा? उसने जवाब दिया कि मै एक मोहद्दीस की मजलीस में था, उन्होने फरमाया कि जो शख्स नबीये करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर बाआवाजे बुलंद दुरुद शरीफ पढ़े उस पर जन्नत वाजिब है, तो मैने बुलंद आवाज से दुरुद शरीफ पढ़ा और वहां हाजीरीन तमाम ने भी बाआवाजे बुलंद दुरुद शरीफ पढ़ा ईसकी बरकत से हम सब की मगफिरत हो गई। ये क़िस्सा 'रौज़ूल फाइक' में भी बतफसील तहरीरसुदा है।

सच पूछो तो हर लाइलाज मर्ज़ का सौ फ़िसदी कामयाब इलाज दुरुद शरीफ है। हक त्आला ने दरियाओं और समंदरों की तह मे बेशकिमती दौलत और नेअमतें छुपा रखी है, गोता मारने वाले इन क़िमती खजाने को हासिल कर लेते हैं।

अब दरुदख्वाँ की सोचिए जब वो दुरुद शरीफ पढ़ता है तो

तीन तरह के समंदरों मे गोता लगाता है, एक - तौहीद के नूर का समंदर, दो - नबुव्वत के नूर का समंदर, तीन - विलायत के अनवार का समंदर। बंदा अल्लाहुम्म कहता है उसी लम्हे रब त्आला के तमाम नामों की फजीलत हासिल कर लेता है। दुरुद शरीफ का पहला लफ्ज अल्लाहुम्म कहते ही अल्लाह त्आला के तमाम मुबारक अस्मा-ए-हुस्ना (मुबारक नामों) की तिलावत हो जाती है। सुब्हानल्लाह दुरुद शरीफ का पहला इब्तिदाई लफ़्ज़ कितना बरकत वाला है। इसमे ईस्मे-जात का नूर और ईस्मे-शिफात के अनवार जलवागर हैं। अल्लाह की रहमतों का ये लामहदुद दरिया है, जिसमें डूबने वाले को ये दोनों आलम मे निहाल कर देता है, इतना ही नहीं, ऐसा स्वाद मिलता है कि जिसे चखने के बाद मे पुरा वजूद व ईखलाक ही बदल जाता है।

ये है दुरुद शरीफ पढ़ने वाले कि शान

'अल्लाहुम्म' पढ़ कर नुरे तवहीद के दरिया मे गोता लगाया और जाकिर का मर्तबा पाया। दुरुद पढ़ने वाला जिक्रे इलाही करने वाले के रुतबे और सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की सुन्नत अदा करने के मर्तबे तक पहुँच जाता है। जब दरुद शरीफ पढ़ने वाला लफ़्ज़ 'सल्लि अला कहता है, तो याद रखो आका-ए-नामदार सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के नुरे रिसालत और फ़ज़ीलत के पाकीज़ा समंदर में डुबकी लगाता है उसकी ये डुबकी उसके लिए सलामती की बायस बनती है, उसके ये अल्फाज अदा करने से हमेशा के लिए रहमते इलाही उस पर साया फीगन होती है, उसका कल्ब रोशन हो जाता है और दिल व दिमाग़ खुश्बू से महक उठते हैं।

'अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिवं व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीवं व बारीक् व सल्लीम्'

रूए ज़मीन पर दुरुद शरीफ जैसी कोई चिज़ ना तो वजुद में आई ना आ सकेगी। हुजुरे अनवर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दुरुद शरीफ पढ़ने के फायदे बे गिनती, बेहिसाब हैं। इसीलिए आका-ए-नामदार सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर बेहिसाब दुरुद शरीफ पढ़ना चाहिए । अल्लाह त्आला हम सब को दुरुद शरीफ पढ़ने में और ईश्के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम में मुबतिला कर दे। आमीन।।

अय मुरादें देने वाले अस्सलाम
दोनों आलम के उजाले अस्सलाम

'काला रसूलल्लाहे (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) इन्ना अफजलन्नासी बी अकसरहुम अलय्य-सलात

हुजुरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया कि, मेरे नज़दीक वो शख्स सबसे अच्छा है जो मुझ पर सबसे ज्यादा दुरुद शरीफ भेजता है।

जिसने हुजुरे अनवर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर बेहिसाब दुरुद शरीफ पढ़े उसने हुजुरे अकरम मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम कि मुहब्बत खरीद ली और वो दिन व दुनिया का दौलतमंद इन्सान बन गया। बेशक उसे जो मिल सकता था वो सब मिल गया।

इमाम अल्लामा काज़ी अयाज रहमतुल्लाह अलयहि तफसीर मे फरमाते हैं कि हक त्आला ने अपने हबीब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से इर्शाद फरमाया कि, मैने आपको मेरी याद मे से एक याद बनाया जिसने आपका जिक्र किया उसने मेरा जिक्र किया।

ऐ दुनिया के सहराओं मे प्यासे भटकने वालों, उम्मीदों के चमन को हराभरा करने वाले गुलीस्ताने ईमान को महकाने वाले, दिल दिमाग को ताज़गी देने वाले, ईमान कि रूह को ताज़ा करने वाले, ऐसे ऐसे नुरानी समंदरों से तुम क्यों प्यासे व महरुम रहो आओ इन दरियाओं में डूब जाओ और सिदक दिल से पढ़ो।

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिवं व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीवं व बारीक् व सल्लीम्'

مَوْلَایَ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا

عَلٰی حَبِیْبِکَ خَیْرِ الْخَلْقِ کُلِّهِمِ

जिक्रे नबी

दुरुद शरीफ यानी सलात, दुरुद शरीफ हुजरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का ज़िक्र है, जो जिक्रे इलाही से जुदा नहीं बल्कि वो भी जीक्रे इलाही ही है। हुजूर पुरनूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दुरुद पढ़ना अल्लाह का ज़िक्र और अल्लाह कि याद है, इतना ही नहीं ये काम तो अल्लाह ने भी किया है।

हदीस शरीफ मे आया है कि, जिसके दिल मे हुजूर पुरनूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की मुहब्बत नहीं उसके दिल मे ईमान नही, मुहब्बत पैदा करने का सबसे अकसीर नुस्ख़ा दरुद शरीफ है। दुरुद शरीफ का सबसे बड़ा फायदा ये है कि, इससे हजुरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की मुहब्बत दिल मे पैदा होती है, और वो मुहब्बत अल्लाह त्आला तक बिजली की मानिंद पहुँचा देती है।

मशाइखे किराम फरमाते है। अगर मुरीद को कामिल पीर ना मिल सके तो उसे चाहिए कि दुरुद शरीफ कसरत से पढ़े बहुत ज्यादा पढ़े, दरुद उसे खुदा तक जल्द से जल्द पहुँचा देगा।

हज़रत अबुबकर् सीद्दीक रदीअल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया के हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दुरुद भेजना ऐसा है जैसे कि, ठंडे पानी को आग पर उड़ेंलने पर आग ठंडी हो जाती है उसी तरह दुरुद शरीफ गुनाहों को खत्म कर देता है।

'दुर्रे मुखतार' मे हज़रत ईसफहानी रहमतुल्लाह अलयहि रिवायत करते हैं की हुजूर मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया कि, कोई मुझ पर एक बार दरुद भेजे और वो कबूल हो ज़ाए तो अल्लाह उसके अस्सी साल के गुनाह (सगीरा) माफ फरमा देता है।

हज़रत अबु सुलेमान दुर्रानी फरमाते हैं कि, दुआओं कबुलीय्यत की जिसे तमन्ना हो उसे दुआओं मे ज्यादा से ज्यादा तादाद मे दरुद पढ़ना चाहिए। दुआ या हाजत माँगने के पहले और आख़िर मे दुरुद शरीफ पढ़ें।

अल्लाह त्आला दुरुद को तुरन्त कबूल फरमाता है। जब अल्लाह त्आला शुरु और आख़िर मे दुरुद कबूल करेगा तो हाजत या दुआ का बीच का हिस्सा ज़रुर कबूल फ़रमाएगा और काम हो जाएगा। ईन्शाअल्लाह।।

'दलाईलुल खयरात' मे एक लाजवाब हक़ीक़त का बयान है, हुजूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया कि, कोई मुझ पर ताजीम के ख़ातिर दुरुद शरीफ भेजता है तो अल्लाह त्आला एक ऐसे फ़रिश्ते को पैदा फरमाता है, जिसका एक हाथ पूर्व दूसरा हाथ पश्चिम में, पैर सातों ज़मीनों के बीच और गर्दन अर्श को छू रही होती है अल्लाह त्आला उस फ़रिश्ते से फरमाते हैं 'ए फरिशते ! दुरुद भेज उस बंदे पर जिसने ताजीम के लिए मेरे नबी पर दुरुद भेजा'। वो फरिश्ता उस बंदे पर कयामत तक दुरुद भेजता रहता है। सुब्हानल्लाह।।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का ईर्शाद है कि, किसी शख्स पर कोई मुसीबत आ पड़े या कोई हाजत हो तो उसे चाहिए कि, उस हाल मे वो मुझ पर कसरत से दुरुद शरिफ पढ़े, क्युँकि दुरुद शरीफ की बहुतायत रंज और गम दुर कर देती है, और उसी तरह रोजी मे इज़ाफ़ा करती है।

'अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिवं व अला आलि सय्यिदिन मुहम्मदीवं व बारीक् व सल्लीम्'

चार सौ हज्ज

हुजूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम एक बार हज्ज और जिहाद के फजाइल बयान फरमाये, आप ने फरमाया कि, जो शख्स हज्ज करके जिहाद के लिए ज़ाए उसे एक जिहाद और चार सौ हज्ज का सवाब मिलेगा। जिन लोगों मे जिहाद के लिए जाने की ताकत ना थी वो लोग ये बात सुनकर मायुश हो गए। हजुरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जो शख्स मुझ पर दरुद भेजेगा उसे चार सौ जिहाद का बदला मीलेगा। (हसन बरेलवी रहमतुल्लाह अलयहे)

हजरत अनस रदीअल्लाहु तआला अन्हु फरमाते है के जब दो मुसलमान भाई मुसाफह करें और उस वक्त दरुद शरीफ पढ़ें तो उनके जुदा होने से पहले ही रब्बुल आलमीन अज्ज व जल्ल उनके गुनाह माफ फरमा देता है।

सदका और दुरुद शरीफ

हदीस शरीफ मे आया है कि कोई चीज़ अल्लाह त्आला के जलाल को शांत नही करती, जितना के सदका करता है।

लेकिन सदका देने की ताकत ना हो तो क्या करना? हज़रत अबु सईद खुदरी रदीअल्लाहो तआला अन्हु रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि, आप ने इर्शाद फरमाया - कोई मुसलमान की सदका देने जितनी ताकत ना हो तो उसे अपनी दुआ मे ये दुरुद पढ़ना चाहिए। - **अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन अब्दीक व रसुलेक व सल्लि अलल् मुअमिनीना वल् मुअमिनाति वल् मुसलिमीन वले मुसलिमात ।**

सुब्हानल्लाह। कितनी आसान तरकीब है! इसकी बरकत से दोनों काम अदा हो जाते है, दुरुद भी अदा हो गया और सदका भी अदा हो गया।

मुफ़लिसी का ख़ातमा

'शरह अहयाए उलमुद्दीन' मे रिवायत है के हुजुरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ज्यादा मिक़दार मे दुरुद पढ़ने से भूख और मुफ़लिसी दोनों टल जाते हैं। ये अजमाया हुआ नुस्खा है और सौ फीसदी सच साबित हुआ है।

हदीस शरीफ मे आया है कि जो शख्स हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दुरुद शरीफ भेजता है हुजूर उसके करोबार के मुतवल्ली और वकील बनते है। हश्र, हिसाब और आमाल के तौल के वक्त उसी तरह पुल सीरात से गुजरते वक्त उसके तमाम गुनाह बख्शवा के हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम उस शख्स को जन्नत मे दाख़िल करवायेंगें। ईन्शाअल्लाह।। (तरतीबुस्सलात- सफा न. ३३)

'हीस्ने हसीन' दीने-ईस्लाम की एक बेजोड़ किताब है। उसके लेखक लिखते हैं कि, दुरुद शरीफ मे मीठे फल बेशुमार हैं, किसी भी तरह से जिनकी गिनती नहीं की जा सकती। खास करके तंगी और मुसीबत के वक्त और हाजत पुरी करने मैने कई बार ये तजुर्बा किया है, हत्ता के कभी डर और खतरे मे पड़ा तब रबत्आला ने मुझे दुरुद शरीफ

की बरकत से निजात दी। हज़रत शेख अब्दुल हक्क मुहद्दीस दहेलवी रहमतुल्लाह अलयहि भी फरमाते हैं कि दुनीया और आखीरत की तकलीफों से नीजात पाने के लिए दुरुद शरीफ से बढ़ कर कोई नेअमत नही।

दुरुद शरीफ का सही फलसफा

अफजलुल जिक्र - लाईलाहा ईल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम)

'लाईलाहा ईल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलल्लाह' अफजलुल जिक्र सबसे आला जिक्र - इसी लिए है कि, इस कलमा शरीफ मे अल्लाह और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम दोनो नाम एक साथ आए हैं, दुरुद शरीफ में भी ये दोनो इस्मे मुबारक आए है, लेकिन देखिए कि क्या रहश्य छुपा हुआ है एक से इल्तिजा की गई है और एक के लिए दुआ माँगी गई है मगर दोनों ही से सीधे मुख़ातिब हो रहे हैं। अल्लाह को यूँ अर्ज़ कर रहे हैं कि (हज़रत) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) पर और उनकी औलाद पर सलामती हो। ये अल्फाज खुद अल्लाह त्आला भी कहता है हम तो सिर्फ़ अल्लाह त्आला कि हाँ मे हाँ मिलाते है।

अल्लाहु अकबर। रब्बुल कायनात जो मालिक सारे जहानों का (कुफुवन अहद) जिसका कोई जोड़ नहीं, ऐसी हस्ती कि हाँ में हाँ मिलाना कम फख्र की बात है! बंदे के लिए ये कितना बड़ा मरतबा है। दरुद शरीफ की बदौलत एक तरफ तो बन्दा अल्लाह त्आला से मुख़ातिब है और दूसरी तरफ आका-ए-नामदार मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से भी मुख़ातिब है। इसी लिए लाईलाहा ईल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह अफजलुल ज़िक्र है तो 'अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिवं व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीवं व बारीक् व सल्लीम्' सबसे आलातरीन दुआ है। पहला आलातरीन जिक्र दूजा आलातरीन दुआ। ये दुआ माँगने से अल्लाह भी ख़ुश और अल्लाह के रसूल भी खुश, फरिश्ते भी खुश, जिस्मोज़ां भी खुश, रुह भी खुश, मतलब कि जमीन से लेकर आसमान तक तमाम कि तमाम मख्लुक अपने मालिक समेत खुश ही खुश, और इसकी बरकत से अल्लाह त्आला की रहमत की बारीश भी तुरंत होती है। सुबहानल्लाह।।

कलमा अफजलुल जिक्र है और दुरुद अफजलुद्दुआ है, इतना ही नही ये फलसफा भी सबसे अफ़ज़ल फलसफा है। पढ़िए।।

अल्लाहूमा सल्ली अला मुहम्मदीन नबिय्यील उम्मी व आलेही व असहाबेही व बारिक सल्लीम (सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम)

हजरत अल्लामा शहाब खाफ्फाजी ने शर्हे शफा शरीफ मे फरमाया है कि बहुत ज्यादा तादाद मे दुरुद शरिफ ना पढ़ सकें तो कम से कम ३१३ बार जरुर पढ़ें।

'मज़रउल हस्नात' मे फरमाया गया है कि अल्लाह त्आला ने ३१३ के अदद मे तासीर रखी है, जहाँ ये आँकड़ा हो वहाँ भलाई और तरक्की होती है।

अल्लाह ने एक लाख चौबीस हज़ार पैगम्बरों में से सिर्फ़ ३१३ को रसूल बनाया। बद्र कि लड़ाई मे हिस्सा लेने वाले सहाबा की तादाद भी ३१३ थी, जिन्होने हज़ारों को मार भगाया था। हज़रत ता'लुत के लश्कर कि तादाद भी ३१३ थी। इसी लिए ये अदद बाबरकत है (वल्लाहु आलमु बीस्सवाब)

हज़रत इमाम फखरुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाह अलयहि फरमाते हैं कि, 'इस्तीगफार' और 'दुरुद' मे से दुरुद शरीफ को बेहतर जानो आप दुरुद पढ़िए और ईस्तीगफार का काम हुजुरे अकदस मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर छोड़ दें, क्युँकि दुरुद शरीफ तो सरासर अमले इलाही है, उसके मन्जुर होने या ना होने का तो सवाल ही नही, लेकिन ईस्तिगफार दुआ की एक दरख्वास्त है, वो कबूल होगी ही ऐसी दलील दे नही सकते। अगर दुआ मे खुजूअ, खुशूअ व ईखलाश शामिल नहीं तो उसके नाकबुलीयत होने का शुब्हा रहता है इसलिए इस पर मुकम्मील तौर पर यकीन नहीं रख सकते, लेकिन दुरुद शरीफ के कबूल होने मे शक व शुब्हा की गुंजाइश नही।

इसलिए हमें ज्यादा से ज्यादा दुरुद शरीफ पढ़ते रहना चाहिए और ईस्तिगफार का काम हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर छोड़ देना चाहिए। हुजूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को अपनी उम्मत का इतना ज्यादा ख्याल रहता है कि, हर रोज़ अपनी उम्मत के लिए ईस्तीगफार करते रहते हैं, और हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की ईस्तिगफार और दुआ तो हमेंशा कबूल हो कर रहती है। यूँ एक तरफ हमारे दुरुद कबूल और दूसरी तरफ हुजूर

सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की दुआ और ईस्तीगफार कबूल। दोनों ही तरफ से कामयाबी ही कामयाबी।

कब्र मे बन्दा-ए-मोमीन से रूह के बारे मे सवाल किए जाएँगे, और रूह को पाक करने के लिए दुरुद शरीफ से बढ़कर कोई अमल नही। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया कि, मुझ पर बकसरत दरुद पढ़ो क्युँकि ये पाकीजगी देता है। हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने बजाते खुद ये एलान कर दिया है कि, पाकीजगी पाने का सबसे आला नुस्खा दुरुद शरीफ है।

दुरुद शरीफ ईन्सान को इस तरह पाक साफ कर देता है कि जिसकी कोई मिसाल नहीं, यहाँ तक कि जो बाअमल आलीम, मुहद्दीस और फकीर दुरुद पढ़ने को कमर कस लेते हैं उन्हें खुदा के फ़ज़लों करम से और हुजूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम कि रुहानीयत नुमा बरकत से लाखों गुनाहगारों की शफाअत् करने की बशारत मिल जाती है और मिल गई है।

इन फकीरों और मुहद्दीसों को ईन्शाअल्लाह व त्आला कयामत के दिन गुनाहगारों की शफाअत् करने का हक खुद हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम अता फरमायेंगे, जैसे आशिके रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम हजरत उवयस करनी रदीअल्लाहु तआला अन्हु को हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलयहे व सल्लम ने हजरत उमर रदीअल्लाहो तआला अन्हु और हज़रत अली रदीअल्लाहु तआला अन्हु के साथ ये पैगाम भेजा था कि, आप भी उम्मते मुहम्मदीया की बख्शिश की दुआ माँगे, जब कि शफाअत् के हक़दार तो खुद हुजरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम इकलौती हस्ती हैं, लेकिन हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के सदके और सिफ़ारीश से आपकी उम्मत के मख्शूस बंदों को ये रुत्बा मिलता है, और ये बहुत ही आला रुतबा है।

एक महान मुहद्दीस-आलिम हज़रत शाज़ली रहमतुल्लाह अलयहि की ये शान थी कि, पाँचों वक्त की नमाज़ें हज़रत रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के पीछे अदा करते थे। एक दिन हुजर पुर नूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने उनसे फरमाया, 'ए शाज़ली ! तुम बरोज कयामत एक लाख लोगों की शफाअत् करोगे, क्युँकि तुम मुहब्बत व ईखलास के साथ मुझ पर दुरुद भेजते हो।

दुरुद शरीफ पढ़ने की सबसे बड़ी नेअमत ये है कि, कयामत के दिन हुजूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का साथ नसीब होगा। आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का फरमान है कि सबसे ज्यादा दुरुद पढ़ने वाला बरोजे कयामत मेरे सबसे ज्यादा करीब होगा। सुब्हानल्लाह। हम महबुबे खुदा के साथ हों, क्या इससे बढ़कर कोई नेअमत हो सकती है?

'अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना व मवलाना मुहम्मदींव् व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदींव् व बारीक् व सल्लिम्'

हज़रत जिब्रईल का दरुद

एक रोज़ हजरत जिब्रईल अलयहिस्सलाम हुजूर सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर होकर ये अर्ज किया कि अल्लाह त्आला ने मुझे पैदा किया तब दस हजार साल तक मुझे ये पता ही ना था कि मुझे क्युँ पैदा किया गया और मुझे क्या करना है? दस हज़ार साल के बाद ये नीदा आई, 'ऐ जिब्रईल',तब मुझे मालूम हुआ के मेरा नाम जिब्रईल है, मैने फौरन जवाबन अर्ज़ किया कि 'लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक...' अल्लाह त्आला ने हुक्म फरमाया कि मेरी पाकी का बयान करो, मैने दस हज़ार साल तक ऐसा किया, फिर हुक्म हुआ मेरी बुजुर्गी बयान करो, दस हज़ार साल तक मैने ऐसा किया उसके बाद मुझ पर अर्श के अनवार ज़ाहिर हुए। अर्श पर मैने 'लाईलाहा ईल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसुलुल्लाह' लिखा देखा। मैने पुछा 'या बारी त्आला ! मुहम्मद रसूलुल्लाह कौन? हुक्म हुआ कि ऐ जिब्रईल अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) ना होते तो मैने तुझे भी ना पैदा किया होता इतना ही नहीं ये जन्नत, ये दोज़ख़, चाँद, सूरज कुछ भी ना पैदा किया होता ! जिब्रईल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) पर दरुद पढ़ो, और युँ मैं दस हज़ार साल तक आप (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) पर दुरुद पढ़ता रहा।

'जुब्दतुल वाएजीन' में है कि कयामत के दिन एक ऐसी जमात होगी जिनके चेहरे चाँद के मानिंद चमक रहे होंगे, और उनके बाल सच्चे मोतीयों से भरे होंगे वो इस हाल में नूर के मीम्बर पर बैठे होंगे,

जन्नत वाले पूछेंगे 'आप फ़रिश्ते हो के अंम्बीया?' वो लोग जवाब देंगे 'हम ना तो नबी हैं और ना ही फ़रिश्ते, हम तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के उम्मती हैं।'

फ़रिश्ते ताअज्जुब से पूछेंगे ' तो फिर तुम्हें ये मरतबा कैसे मिला' वो कहेंगे 'पाँच वक्त की नमाज़ें हमने आदाब व सुन्नतों के साथ बाजमाअत् पढ़ीं और उसके साथ जहाँ जहाँ हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का नामे मुबारक आता वहाँ वहाँ हम उनकी मुहब्बत व इश्क में तहेदिल से सलात (दुरुद) पढ़ते थे।

शहद की मक्खी का दुरुद

गुफ्त चूं ख्वानीम बर अहमद दुरुद
मय शवद शीरीं व तल्खी रा रबूद

(हम जब फुलों से रस चुसते हैं तब हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दुरुद पढ़ते जिससे रस की तल्खी दुर होती है और शहद मीठा हो जाता है - मौलाना रुम रहमतुल्लाहि अलयहि)

एक दिन आका ए दो जहाँ सल्लल्लाहु अलयहि आलिही व सल्लम इस्लामी लश्कर के साथ जिहाद के लिए तशरिफ ले जा रहे थे। ऐसे में एक जगह पड़ाव किया और हुक्म दिया यहीं पर जो कुछ खाना चाहो खा लो।

खाने में रोटी मौजूद थी मगर सालन ना था, ठीक उस वक्त एक मधुमक्खी वहाँ आयी और बड़े जोर जोर से भीन भीनाने लगी सहाबा इकराम ने दरयाफ्त किया 'या रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ये क्युँ शोर मचा रही है' आपने फरमाया 'ये कह रही है, मक्खीयां बेकरार है इस वजह से कि सहाबाकिराम के पास सालन नही है हालांकि यहाँ करीब ही गार में हमने शहद का छत्ता लगा रखा है लेकिन हम उसे यहाँ तक ला नहीं सकती' फिर फरमाया 'प्यारे अली इस मक्खी के पीछे पीछे जाओ और शहद ले आओ' चुनान्चे हजरत अली रदीअल्लाहु तआला अन्हु उस मक्खी के पीछे पीछे प्याला हाथ में लेकर उस गार तक पहुँचे और शहद निचोड़ कर ले आये। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने वो शहद तक्सीम फरमाया,

जब खाना खाने लगे तो वो मक्खी फिर बारगाहे रिसालत मआब में हाजिर हुई और भीन भीनाने लगी, उसी तरह फिर सहाबा इकराम ने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से दरयाफ्त किया, आपने फरमाया 'मैनें इनसे पूछा तुम्हारी खुराक क्या है तो उसने जवाद दिया कि पहाड़ों, बियाबानों और जंगलों में जो फूल होते हैं वो हमारी खुराक है। मैने कहा कि फूल तो कड़वे भी होते हैं और फिके भी और बदमजा भी होते हैं तो ये तेरे मुँह में जाकर निहायत शीरीं और साफ कैसे हो जाता है ? तो मक्खी ने जवाब दिया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम हमारा एक अमीर और सरदार है जब फूलों का रस चुसती हैं तो वो आपकी जाते अकदस पर दुरुद पाक पढ़ना शुरू कर देता है और हम भी उसके साथ साथ दोहराती हैं तो ये बदमजा और कड़वा फूलों का रस दुरुद शरीफ की बरकत से मीठा हो जाता है और इसी बरकत से वो शहद शिफा बन जाता है।' (मुकासिदुल सालिकीन - सफा ५३, मसनवी शरीफ / मौलाना रुम)

अगर दरूद शरीफ की बरकत से कड़वा और बदमजा फूलों का रस निहायत मीठा शहद बन सकता है, तल्खी शीरीनी में बदल सकती है तो दुरुद पाक की बरकत से हमारे गुनाह भी नेकियों में बदल सकते हैं। और हमारी रूखी फिकी जिन्दगी में दुरुद की बरकत से मीठास पैदा हो सकती है और गुनाहरुपी रोग का अकसिर इलाज हो सकता है।

مَوْلَایَ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا

عَلٰی حَبِیْبِکَ خَیْرِ الْخَلْقِ کُلِّهِمِ

बाब 5

दुरुद शरीफ अपनी तरतीब और अलफाज़ के लिहाज़ से अनगिनत हैं मगर कुछ एक दुरुद शरीफ अपनी अपनी फज़ीलत और खुशूशियात के एतबार से बहुत अहम है, चंद दुरुद शरीफ ऐसे भी हैं जिन्हें बहुत शोहरत हासिल है और जिनका पढ़ना दीनी व दुनियावी हाजात और आखिरत की भलाई के लिए बहुत ही नफा बख्श। इस बाब में सौ दरुद शरीफ के फज़ाइल, बरकात और पढ़ने का तरीका दर्ज़ है।

1. दुरुद-ए-इब्राहिम

यह दुरुद शरीफ नमाज़ में पढ़ा जाता है, इसमें हज़रत इब्राहिम अलयहीस्सलाम का नाम आता है इसलिए इसे दरुदे इब्राहिम कहा जाता है। इसकी वजह-तस्मीया ये बयान की जाती है कि हज़रत इब्राहिम अलयहीस्सलाम जब तअमिर-ए-बयतुल्लाह (construction of kaaba sharif) से फारिग हुए तो आपने अपनी दुआ में ये कहा कि 'या अल्लाह नबी आखरज्जमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की उम्मत से जो बुढ़ा इस घर की तरफ मुंह करके दो रकअत पढ़े, तु उसके हक में मेरी सफाअत कबुल फरमा', इसपर हज़रत इस्माईल अलयहिस्सलाम, हज़रत हाज़रह, हज़रत सारह और हज़रत इस्हाक अलयहिमुस्सलाम ने 'आमीन' कहा। इसके बाद हज़रत इस्माईल अलयहिस्सलाम ने अपनी दुआ में ये कहा कि 'ऐ अल्लाह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की उम्मत से जो नौजवान इस घर की तरफ मुंह करके दो रकअत नमाज़ पढ़े उसके हक में मेरी सफाअत

कबुल फरमा', इसपर हज़रत इब्राहिम अलयहिस्सलाम, हज़रत इस्हाक अलयहिस्सलाम और बीबी हाज़रह व बीबी सारह रदीयअल्लाहु अन्हुम अजमइन ने आमीन कहा, फिर हज़रत इस्हाक अलयहिस्सलाम ने दुआ मांगी,'या अल्लाह नबी आखरुज्जमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की उम्मत से जो अधेड़ उम्र शख्स इस घर की तरफ मुंह करके दो रकअत नमाज़ पढ़े, तु उसके हक में मेरी सफाअत कबुल फरमा' इसपर खानदान के बाकी तमाम लोगों ने आमीन कहा, फिर बीबी सारह रदीयअल्लाहु तआला अन्हा ने दुआ मांगी कि 'या अल्लाह नबी आखरुज्जमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की उम्मत से जो औरत इस घर की तरफ मुंह करके दो रकअत नमाज़ पढ़े उसके हक में मेरी सफाअत कबुल फरमा' सब ने 'आमीन' कहा, आखिर मां बीबी हाज़रह ने यु दुआ की 'या अल्लाह उम्मते- मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से जो लड़की इस घर की तरफ मुंह करके दो रकअत पढ़े उसके हक में मेरी सफाअत कबुल फरमा' इसपर सबने 'आमीन' कहा।

हज़रत इब्राहिम अलयहिस्सलाम और उनके अहलो-अयाल का ये बेश-बहा तोहफा उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के हक में पेश किया गया उसके बदले में उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को ये हुक्म दिया गया के खानदाने-इब्राहिम अलयहीस्सलाम के हक में हर नमाज़ में दुआ किया करो और इस दुआ को हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलेही व सल्लम ने दुरुदे-इब्राहिमी की सुरत में बवजाहत बयान फरमाया। इस दुरुदे-पाक से हुजूर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व आलेही व सल्लम की खानदाने-इब्राहीम अलयहिस्सलाम से मुहब्बत का इज़हार होता है, और इसी मुहब्बत की बिना पर हुजूर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम ने अपने एक बेटे का नाम इब्राहिम (रदीयअल्लाहो अन्हो) रखा, इसके अलावा शबे-मेअराज़ में हज़रत इब्राहिम अलयहिस्सलाम ने हुजूरे-अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व आलेही व सल्लम से कहा था कि अपनी उम्मत को मेरा सलाम कह दिजीएगा उस सलाम के जवाब में आप सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम ने दुरुदे-इब्राहिमी में उनपर सलाम पेश किया।

यह दुरुद तमाम दुरुद के शीगुल से अफज़ल है, क्योंकि इस

दुरुद शरीफ के अल्फाज़ बजाते-खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम के फरमाये हुए हैं। इसलिए इस दुरुदे-पाक को नमाज़ के अलावा कसरत से पढ़ना दीनी व दुनियावी फयुज़ो-बरकात हासिल करने का बेहतरीन जरीयाअ है, और अल्लाह की खूशनूदी हासिल होती है, दुनिया के तमाम कामों में आसानी पैदा हो जाती है, कदम कदम पर अल्लाह की मदद शामिले-हाल होती है और हाजात पुरी हो जाती है। हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम की शफाअत वाजिब हो जाती है, रिज़्क की तंगी दूर हो जाती है, माल व असबाब में बरकत पैदा होती है, खात्मा बिल्इमान होता है, इसके अलावा आखिरत की जिन्दगी से मुताअल्लिक तमाम मन्ज़िलें आसान हो जाती है, और इस दुरुदे-पाक को माअमुल से पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह जन्नत में जाएगा।

इस दुरुद शरीफ की सनद बुखारी शरीफ की ये रिवायत है कि हज़रत अब्दुल रहमान बीन अबी लयला रदीयअल्लाहु अन्हु ने कहा है कि हम कआब अज़रह रदीयअल्लाहु अन्हु से मिले उन्होने कहा कि क्या मैं तुम्हें हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम की हदीस सुनाऊँ, हमने कहा फरमाइये तो उन्होने बयान किया के एक मरतबा ऐसा हुआ के हमने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम से इल्तिजा की कि या रसुलल्लाह (सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम) आप पर दुरुद भेजना तो हमें मालूम हो चुका है मगर दरूद किस तरह भेजें तो हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम ने फरमाया के इन अल्फाज़ में मुझ पर दुरुद भेजो। (फिर दुरूदे-इब्राहिम की तलकीन फरमाई।)

۱ درُودِ ابراہیمی

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ

کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَ عَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ

اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ ○ اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ

وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَ

عَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ ☆

1. दुरुदे-इब्राहिमी

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींव्-व-अला आलि मुहम्मदीन कमा सल्लय्ता अला इब्राहिम व अला आलि इब्राहिम इन्न-क हमीदुन-मजीद। अल्लाहुम्म बारिक् अला मुहम्मदींव्-व-अला आलि मुहम्मदीन कमा बारक्-त अला इब्राहिम व अला आलि इब्राहिम इन्न-कहमीदुन-मजीद।

तर्जूमा - अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरुद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की आल (औलाद) पर जिस तरह तुने रहमत नाजिल फरमाई हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम और हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम की आल पर बेशक तु तारीफ किया गया बुजूर्ग है। ऐ अल्लाह बरकत नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की आल पर जिस तरह तुने बरकत नाजिल फरमाई हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम और हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम की आल पर बेशक तु तारीफ किया गया बुजूर्ग है।

2. दरूदे-खज़री

ये दुरुद शरीफ अवलिया अल्लाह के अक्सर माअमुल में रहा

है। बेशुमार अवलिया ने इसे पढ़ा है खासकर हज़रत शेर मुहम्मद शरकपुरी आरिफ कामिल रहमतुल्लाह अलयहे के बारे में ये बयान किया जाता है कि आप ये दुरुद शरीफ कसरत (अधीक परिमाण) से पढ़ा करते थे और अपने मुरिदैन को भी यही दुरुद शरीफ पढ़ने की तलकिन फरमाया करते थे। क्योंकि ये दुरुद शरीफ अल्फाज़ के लिहाज से मुख्तसर है मगर माअनी के लिहाज से जामेअ है। इस दुरुदे-पाक के फायदे बेपनाह हैं, सबसे बड़ा फायदा ये है कि इस दरूद शरीफ को पढ़नेवाला हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलेही व सल्लम का महबूब गुलाम बन जाता है, दीन-व-दुनिया में उसे किसी चीज की कमी नहीं रहती और सुकूने-कल्ब की दौलत से मालामाल हो जाता है। बुजूर्गाने चौरह शरीफ हजरत बाबा फकीर मुहम्मद चोराही रहमतुल्लाह अलयहि और उनके सज्जादा-नशीन हजरात के माअमूल में यही दुरूद शरीफ कसरत से पढ़ा जाता है।

۲ درود خضری

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى حَبِيْبِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمْ

☆

2. दुरुदे-खज़री

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

सल्लल्लाहो अला हबीबिही मुहम्मदींव-व-आलिही व असहाबिहीव सल्लीम्।

तर्जूमा - अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह अपने महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और उनकी आल (वंशज) पर और उनके असहाब (साथीयों) पर

सलाम और दुरुद भेज।

3. दुरुदे-हजारा

दुरुदे-हजारा तालिबाने-रुहानीयत (रुहानीयत का इल्म सीखनेवाले, students of spiritualism) का महबूब दुरुद शरीफ है, क्योंकि इस दुरुद से सालिकीन (सालिक - जो खुदा का कुर्ब (नज़दिकी / करीब होना) भी चाहे और शुग्ले मआश (दम्पत्त्य जीवन, रोज़गार, सामाजिक जिन्दगी) भी रखता हो) को रुहानी मंजिलें तय करने में बहुत आसानी हो जाती है और रसुले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की खास सफकत (मेहरबानी, मुहब्बत) इनायत और तवज्जोह हासिल होती है। आम मोमिन के वास्ते भी ये दुरूद शरीफ जियारते-नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के लिए बहुत पुर-असर है। लिहाजा जो शख्स हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जियारत का ख्वाहिशमन्द हो तो उसे चाहिए कि रमज़ानुल मुबारक के महिने में रोजाना तहज्जुद के वक्त यह दुरुद शरीफ एक हजार बार पढ़े इन्शाअल्लाह बहुत जल्द जियारत से सर्फयाब होगा। इसे एक बार पढ़ने से हजार नेकीयों का सवाब मिलता है और एक सौ हाजतें पुरी होती है। दुन्यावी फयूज़ व बरकात हासिल करने के लिए इसे हर नमाज़ के बाद ग्यारह बार पढ़ना बहुत बेहतर है। गम व फिक्र और मुश्किलात से निजात हासिल करने के लिए बाद नमाज़े फज्र इस दुरुद शरीफ को सौ बार पढ़ना चाहिए, इन्शाअल्लाह तमाम मुश्किलात दुर हो जाएगी और दिल को शुकून हासिल होगा।

वुसअते (फैलाव, बढ़ोतरी) रिज़्क और कर्जे की अदायगी के लिए बाद नमाज़े इशा ३१३ बार पढ़ना बहुत मुज़र्रब (आज़माया हुआ) है, लिहाज़ा जो शख्स कर्ज़ में डूबा हुआ हो तो उसके लिए इस दुरुदे-पाक का पढ़ना निहायत ही मुफीद है। जो शख्स जुम्आ के दिन इस दुरुद शरीफ को हजार बार पढ़े वह शख्स जन्नत में दाखिल होगा। ये दुरुद शरीफ सिलसिला-ए-चिश्तीया के अक्सर बुजूर्गों के माअमूल में से है।

۳ درود ہزارہ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوۡلٰینَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ

سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ کُلِّ ذَرَّۃٍ مِّائَتَ اَلۡفِ اَلۡفِ مَرَّۃٍ

وَّبَارِکۡ وَسَلِّمۡ ☆

3. दुरुदे-हजारा

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिंव-व अला आले मुहम्मदिंन बेअददे कुल्लि जर्रतीम-मेअता अल्फि अल्फि मर्रतींव-व-बारीक व सल्लीम।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। या अल्लाह दुरुद भेज हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल (वंशज) पर हर एक कण के बदले दस करोड़ बार और बरकत दे और सलाम भेज।

4. दरूदे-नेअमत अजमा

यह दुरुद शरीफ एक तरह का दरिया-ए-रहमत है और इसे पढ़नेवाला दरिया-ए-रहमत में गोताजन हो जाता है। लिहाजा इस दुरुद शरीफ के बारे में कहा जाता है कि, जब पढ़नेवाला अल्लाहुम्मा सल्लि कहता है तो वह अल्लाह के फज़्ल व करम के समन्दर में कदम रख देता है, जब नबी-अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का नाम लेता है तो वह दरिया-ए-रिसालत की मौजों में आ जाता है, जिस वक्त वह व-अला आलिही कहता है तो उसपर अहले-बैयत जैसी इनायात होने लगती है और जब अला अस्हाबे कहता है तो उसे सहाबा जैसी

खैरो-बरकत मिलना शुरु हो जाती है। इस दुरुद के पढ़ने से गुनाह मिट जाते हैं, दिल की तमन्नाएँ पूरी होती है, रूह और दिल को तरो-ताज़गी मिलती है। लिहाजा जो शख्स इस दुरुद शरीफ के फुयूज़ व बरकात से शुर्खरू होना चाहे तो उसे चाहिए कि इस दुरुद शरीफ को हर नमाज़ के बाद कसरत से पढ़े, अगर ऐसा ना कर सके तो एक बार जरूर पढ़े।

۴ دُرُودِ نعمت عظمیٰ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ

عَلٰی اَصۡحَابِہٖ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِکۡ وَ سَلِّمۡ ☆

4. दुरुदे-निअमत अजमा

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यदिना मुहम्मदींव-व-अला आले सय्यदिना मुहम्मदींव-व-अला अस्हाबि सय्यदिना मुहम्मदींव-व-बारिक व सल्लिम।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के अस्हाब पर दुरुद, बरकत और सलाम भेज।

5. दुरुदे-इमाम बूशैरी

हज़रत इमाम सरफुद्दीन बुशैरी रहमतुल्लाह अलयहि का लिखीत

कसीदा-बुरदा शरीफ के दीबाचे का सेर है जो दुरुदे-बूशैरी के नाम से मशहूर है। दरअसल ये सेर कसीदा-बुरदा शरीफ का निचोड़ है और बेपनाह दीनी व दुनियावी फायदे का हामिल है। जो शख्स ये दुरुद शरीफ रोजाना सौ बार सुबह और सौ बार शाम को पढ़े उसका दिल ईश्के रसुल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से मौजज़न (दरिया में मौजों का ठाठें मारना) हो जाएगा, अगर जियारते-रसुल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को हज्जे नज़र रखेगा तो इन्शाअल्लाह जियारत से नवाजा जाएगा। दरअसल इस दुरुद शरीफ को दाएमी तौर पर पढ़नेवाला अल्लाह अज्ज़ व जल्ल और उसके रसुल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का महबूब बन्दा बन जाता है और मरने के बाद उसे हुजूर की सफाअत से जन्नत मिलेगी।

अगर कोई हाज़त दरपेश हो तो एक सौ बीस (१२०) दिन तक पन्द्रह सौ (१५००) बार रोजाना बाद नमाज़े-फज्र या बाद नमाज़े-इशा पढ़ें, इन्शाअल्लाह नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के सदके हाज़त पूरी होगी। अगर कोई माली दुश्वारी दरपेश हो या किसी का कर्ज़ देना हो या किसी से कर्ज़ वसूल करना हो और उसकी अदायगी या वसूली की कोई सुरत बनती हुई नज़र ना आती हो तो चालीस (४०) दिन तक इस दुरूद-पाक को तीन हजार एक सौ पच्चीस (३१२५) बार पढ़ें, इन्शाअल्लाह मसअला हल हो जाएगा और रिज़्क में फौरन इजाफा होगा। नमाज़े-फज्र के बाद रोजाना ११ (ग्यारह) मरतबा पढ़ने से ईज्जत और शोहरत में इजाफा होगा। बारह (१२) साल तक रोजाना ग्यारह हजार (११०००) बार से दर्ज़ा-ए-विलायत हासिल होगा।

۵ درود امام بوصیری

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

مَوْلَایَ صَلِّ وَسَلِّم دَائِمًا اَبَدًا عَلٰی حَبِيْبِکَ

خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِم يَارَبِّ صَلِّ وَ سَلِّم دَائِمًا اَبَدًا

عَلٰی حَبِيْبِکَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِم ☆

5. दुरुदे-इमाम बूशैरी

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

मौला-या सल्लि व सल्लिम् दाइमन् अबदन् अला हबीबिका खयरिल-खल्कि कुल्लिहिमी, या रब्बि सल्लि व सल्लिम् दाइमन् अबदन् अला हबीबिका खयरिल-खल्कि कुल्लिहिमी।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ मेरे मौला तु अपने हबीब पर हमेंशा हमेंशा दुरुद व सलाम भेज जो तेरी मख्लूक में सबसे बेहतर है। ऐ मेरे परवरदिगार तु अपने हबीब सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर हमेंशा हमेंशा दुरुद व सलाम भेज जो तेरी मख्लूक में सबसे बेहतर है।

6. दुरुदे ताज

दुरुदे ताज बेपनाह फैजो-बरकत का मम्बा (स्रोत, उदगम स्थान) है। ये आशिकाने रसुल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम कामहबूब वजीफा है, बेशुमार सुफिया और औलिया अल्लाह ने ये दुरुद पाक खुद पढ़ा और अपने सिलसिल-ए-तरीकत में इरादतमंदों को पढ़ने की तलकीन की। इस दुरुद शरीफ में पढ़नेवाले को साहिबे-कश्फ (वह शख्स जो भेदों रहस्यों को जाननेवाला हो) बना देने की खुशूसीयत बहुत नुमाया है, लिहाजा अगर कोई शख्स-साहिबे कश्फ बनना चाहे तो उसे चाहिए कि इस दुरुद शरीफ को रोजाना सौ बार पढ़े और तीन साल तक यही माअमूल जारी रखे इन्शाअल्लाह वह इस अरसे में साहिबे-कश्फ बन जाएगा और अगर वह इस सिलसिले को ताहयात (रहती जिन्दगी तक) जारी रखे तो साहिबे-रुहानियत बन जाएगा, क्योंकि यह दुरुद शरीफ सफाई-ए-कल्ब के लिए निहायत ही अकसीर का दरजा रखता है, इसलिए जो शख्स इस दुरुदे-पाक को रोजाना कम से कम बार भी पढ़ता है तो उसका दिल गुनाहों से पाकिज़ा हो जाता है

और नेक रास्ते पर गामजन हो जाता है।

कोई शख्स हुजूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की पाक ज़ियारत का मुंतज़िर हो तो जुम्आ की रात को बाद नमाज़ें ईशा बावजु पाक ख़ुशबूदार लिबास पहनकर १७० बार ये दुरूद शरीफ पढ़ कर सो ज़ाए, इस तरह ग्यारह रातें ये अमल करे। इन्शाअल्लाह उसे ज़ियारत कि खुशनसीबी हासिल होगी।

बाद नमाज़े-फज्र सात (७) बार रोजाना वजीफा के तौर पर यह दुरूद शरीफ पढ़ना रोजी में ईजाफे का सबब बनता है। दुश्मनों, जालिमों, हासिदों और हाकिमों की ज्यादतीयों से बचने के लिए इस दुरूद शरीफ को रोजाना एक बार पढ़ना ही काफी है। किसी नेक मकसद या हाज़त के लिए निस्फ शब (आधी रात) के बाद चालीस (४०) बार सिदक दिल से (सच्चे, साफ दिल से) पढ़ना बहुत अकसीर है। बीमारीयों से शिफा के लिए पानी पर ग्यारह बार पढ़कर दम करके पीने से बीमारीयों से शिफायाबी मिलती है। अगर कोई शख्स तसख्खीर-ए-खुल्क (मखलुक को ताबेअ, अधिन करना) के लिए इसका आमिल बनना चाहे तो उसे चाहिए कि चालीस रात खिलवत (एकान्त) में बैठकर इसे रोजाना एक सौ ग्यारह (१११) बार पढ़े इन्शाअल्लाह चिल्ला मुकम्मिल होने पर जिस की तरफ तवज्जोह करेगा वही कायल होकर असीर हो जाएगा।

बाँझ औरत के वास्ते इक्कीस (२१) खुरमों (खारक, छुआरा, सुखी खजुर) पर सात (७) बार दरूदे-ताज़ पढ़कर दम करें और हर रोज एक खुरमा उस बाँझ औरत को खिलाएँ, इक्कीस रोज पुरे होने पर बाद गुस्ले-तहारत (पाक नहाना) उससे हमबिस्तर हों, खुदा के फज़्ल से नेक स्वालेह फरजंद पैदा होगा। अगर हामिला औरत (पेट में बच्चे का होना, pragnent) को किसी भी किस्म का खलल हो तो सात (७) दिन तक सात बार दुरुदे-ताज़ पढ़कर पानी में दम करके उसे पिलाएं, अल्लाह के फज़्ल से खैर होगा।

٦ درُودِ تاج

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوۡلٰنَا مُحَمَّدٍ صَاحِبِ
التَّاجِ وَالۡمِعۡرَاجِ وَالۡبُرَاقِ وَالۡعَلَمِ ط دَافِعِ الۡبَلَآءِ
وَالۡوَبَآءِ وَالۡقَحۡطِ وَالۡمَرَضِ وَالۡاَلَمِ ط اِسۡمُہٗ
مَکۡتُوۡبٌ مَّرۡفُوۡعٌ مَّشۡفُوۡعٌ مَّنۡقُوۡشٌ فِی اللَّوۡحِ
وَالۡقَلَمِ ط سَیِّدِ الۡعَرَبِ وَالۡعَجَمِ ط جِسۡمُہٗ
مُقَدَّسٌ مُّعَطَّرٌ مُّطَھَّرٌ مُّنَوَّرٌ فِی الۡبَیۡتِ وَالۡحَرَمِ ط
شَمۡسِ الضُّحٰی بَدۡرِ الدُّجٰی صَدۡرِ الۡعُلٰی نُوۡرِ الۡھُدٰی
کَھۡفِ الۡوَرٰی مِصۡبَاحِ الظُّلَمِ ط جَمِیۡلِ الشِّیَمِ ط
شَفِیۡعِ الۡاُمَمِ ط صَاحِبِ الۡجُوۡدِ وَالۡکَرَمِ ط وَاللّٰہُ
عَاصِمُہٗ وَجِبۡرِیۡلُ خَادِمُہٗ وَالۡبُرَاقُ مَرۡکَبُہٗ
وَالۡمِعۡرَاجُ سَفَرُہٗ وَسِدۡرَۃُ الۡمُنۡتَھٰی مَقَامُہٗ وَقَابَ
قَوۡسَیۡنِ مَطۡلُوۡبُہٗ وَالۡمَطۡلُوۡبُ مَقۡصُوۡدُہٗ
وَالۡمَقۡصُوۡدُ مَوۡجُوۡدُہٗ سَیِّدِ الۡمُرۡ

سَلِيْنَ خَاتَمِ النَّبِيِّنَ شَفِيْعِ الْمُذْنِبِيْنَ اَنِيْسِ الْغَرِيْبِيْنَ

رَحْمَةٍلِّلْعٰلَمِيْنَ رَاحَةِالْعَاشِقِيْنَ مُرَادِالْمُشْتَاقِيْنَ

شَمْسِ الْعَارِفِيْنَ سِرَاجِ السّٰلِكِيْنَ مِصْبَاحِ

الْمُقَرَّبِيْنَ مُحِبِّ الْفُقَرَآءِ وَالْغُرَبَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ

نَبِيِّ الْحَرَمَيْنِ صَاحِبِ قَابَ قَوْسَيْنِ مَحْبُوْبِ رَبِّ

الْمَشْرِقَيْنِ وَ رَبِّ الْمَغْرِبَيْنِ جَدِّ الْحَسَنِ

وَالْحُسَيْنِ مَوْلٰيْنَا وَمَوْلَى الثَّقَلَيْنِ اَبِى الْقَاسِمِ

مُحَمَّدِبْنِ عَبْدِاللّٰهِ نُوْرٍمِّنْ نُّوْرِاللّٰهِ ط

يٰٓاَيُّهَاالْمُشْتَاقُوْنَ بِنُوْرِجَمَالِهٖ صَلُّوْاعَلَيْهِ

وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمُوْاتَسْلِيْمًا☆

6. दुरूदे ताज

बिस्मीललाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिन साहीबीत्ताजे वल मिअराजि वल बुराके वल अलम. दाफिईल बलाए वल वबाए वल कहति वल मर्जे वल अलम. ईस्मुहु मत्तु बुन मरफुउम-मशफुउ-मन्कुशुन फील्लवहि वल कलम. सय्यिदील अरबि वल अजम. जिस्मुहु मुकद्दसुम मुअत्तरुम मुतह्हरुन मुनव्वरुन फिलबयति वल हरम. शम्सीद्दुहा बदरीद्दुजा सदरिल उला नुरील हुदा कहफील वरा मिस्बाहीज्जुलम. जमीलीश्शियम शफीइल उमम्.

साहीबील जुदि वल करम. वल्लाहु आसिमुहु व जिब्रीलु खादीमुहु वल बुराकु मरकबुहु वल मिअराजि साफरुहु व सिदरतुल मुन्तहा मकामुहु व काबा कवसयनि मतलुबुहु वल मतलुबु मक्सुदुहु वल मक्सुदु मवजुदुहु. सय्यिदील मुरसली.न खातीमीन्नबीय्यी.न शफीयील मुजनबी.न अनीसिल गरीबीय.न, रहमतीललील आलमी.न. राहतील आशेकी.न मुरादिल मुश्ताकी.न शम्सील आरिफी.न सिराजीस्सालिकी.न मिस्बाहील मुकर्रबी.न मुहीब्बील फुकराए वल गुरबाए वल मसाकीन. सय्यिदिस्सकलयनि नबीय्यील हरमयनि ईमामील कीब्लतयनि वसीलातिना फीद्दारयनि. साहिबि काबा कवसयनि महबुबि रब्बील मशरीकैनि व रब्बील मगरीबैनि. जद्दील हसनि वल हुसयनि मवलाना व मवलस्सकलयनि अबील कासीमि मुहम्मदिबनि अब्दिल्लाहि नुरीम मीन नुरील्लाहि. या अय्योहल मुश्ताकुना बिनुरि जमालिही सल्लु अलयहि व आलिही व असहाबिही व सल्लिमु तस्लीमा.

तर्जुमा दुरूदे ताज - अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है।या अल्लाह रहमत नाज़िल फरमा हमारे सरदार और मालिक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो साहिबे-ताज, मेअराज, बुराक और अलमवाले (जिसके हाथ पर झन्डा है) हैं और बला, वबा दुकाल(कहत), बीमारियों और दुःखों को दुर करने वाले हैं उनका मुबारक नाम ऊँची शफाअतवाले के शक्ल मे लवह ओर कलम के बीच लिखा हुआ है। जो अरब और अजम के सरदार हैं और जिनका जिस्म मुक़द्दस, मुअत्तर (खुश्बूदार) मुतह्हर (पाकिज़ा) और मुनव्वर है जो सुबह के आफताब और अँधेरी रातों के चाँद, ऊँचाइयों पर सदारत फरमानेवाले, हिदायत के नूर, अँधेरों से हिफ़ाज़त फ़रमाने वाले हैं। जो सारी ख़सलतों वाले उम्मतीयों कि शफाअत करने वाले और महेरबानी व रहम करने वाले हैं और अल्लाह त्आला उनका निगहबान है और जिब्रईल उनके ख़ादिम हैं और बुरॉक उनकी सवारी और मेअराज उनका सफर है व सिद्रतुल मुन्तहा उनका मुकाम है। काबा कवसयन उनकी आरज़ू है और मतलुब उनका मक़सूद है व मक़सूद उनका मौजूद है (उनको हासिल है)। तमाम नबीयों के सरदार हैं। खतीमुन्नबी हैं (सीलसीला-ए-नबी जीन पर खत्म है), गुनाहगारों की शफाअत करनेवाले

गरीबों के गमख्वार, तमाम दुनिया के लिए रहमत, आशिक़ों की राहत, चाहने वालों की मुराद, आरीफों के आफताब, सालीकों (राहे-खुदा पर चलनेवाले) के लिए हिदायत के चिराग़, अल्लाह वालों के लिए शमा, फ़क़ीरों और मिस्कीनो को दोस्त रखने वाले, जिन्नात और इंसानों के सरदार, दोनों हरम शरीफ के पेशवा, दोनों किब्लाओं (बयतुल मुकद्दस और मक्का मुअज्जमा) के पेशवा, हमारे दोनों जहान (दुनिया व आखिरत) के वसीला, काबा कवसैन पर फायज़ (मालीक) हैं, मालिक-ए-मशरीकों और मग़रिबों के महबूब, इमाम हसन(रदीअल्लाहो तआला अन्हो) और इमाम हुसैन(रदीअल्लाहो तआला अन्हो) के नानाजान, हमारे मौला और जिन्नातों व इंसानों के आका जनाब अबुल कासीम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम) ईब्ने अब्दुल्लाह, नूर अल्लाह के नूर से। अय उनके जमाले नूर के मुस्ताक दुरूद पढ़ो उनकी आल पर उनके असहाब पर और सलाम भेजो मुकम्मील।

7. दुरूदे नारियाह

यह दुरूद शरीफ तरह तरह की रुहानी असरार (भेद, रहस्य) का खजाना है, बल्कि इसमें हुसूले-मआरिफत (अल्लाह की पहचान हासिल करना) का राज़ छुपा है, जिसे खासुल खास वलीयों और अहले माअरिफत के अलावा कोई समझ नहीं पाया है। इसलिए अहले-मआरिफत और अहले-रुहानियत में इस दुरूद शरीफ को बहुत अहमीयत हासिल है। लिहाजा जो शख्स इस दुरूद शरीफ के रहस्य जानना चाहे उसे चाहिए कि कामिल मुर्शिद से इजाजत लेकर इस दुरूद पाक की दावत पढ़े, इसकी दावत पढ़ने का यह तरीका है कि किसी तन्हाई वाली जगह पर चालीस (४०) दिन के लिए गोशा नशीनी (एकान्तवास) अख्तियार करे, दिन के वक्त रोजा रखे और चील्ला के दौरान (यानी इन दिनों में) रात दिन यही दुरूद शरीफ पढ़े फिर देखे गैब के पर्दों से कैसे अजीबो-गरीब रहस्य उसपर जाहिर होंगे। इसके अलावा रमज़ानूल मुबारक में ईत्तेकाफ के दौरान भी अगर यही दुरूद शरीफ पढ़ा जाए तो अल्लाह तआला पढ़नेवाले को बेशुमार रुहानी असरार से नवाजेगा।

इस दुरूद शरीफ का एक बड़ा दुनियावी फायदा ये है की रंज, मुसीबत और गम मे इसे पढ़ें तो ईन्शाअल्लाह पलक झपकते ही सारी मुसीबतें टल ज़ाए, अँधेरा रोशनी में बदल ज़ाए, ज़हमत रहमत मे बदल ज़ाए।

---

۷ درُود ناریہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ صَلٰوةً كَامِلَةً وَّسَلِّمْ سَلَامًا تَآمًّا عَلٰى

سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدِ نِ الَّذِىْ تَنْحَلُّ بِهٖ الْعُقَدُ

وَتَنْفَرِجُ بِهِ الْكُرَبُ وَ تُقْضٰى بِهٖ الْحَوَآئِجُ وَتُنَالُ بِهِ

الْرَّغَآئِبُ وَحُسْنُ الْخَوَاتِيْمِ ط وَيُسْتَسْقَى الْغَمَامُ

بِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ فِىْ كُلِّ لَمْحَةٍ

وَّ نَفْسٍ م بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ يَآ اَللّٰهُ يَآ اَللّٰهُ يَآاَللّٰهُ

☆

7. दुरूदे नारियाह

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

अल्लाहुम्म सल्लि सलातन् कामिलतन् व सल्लीम् सलामन्

ताम्मन् अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिनील्लजी तनहल्लु बिहील् उकदु व तन्फरजु बिहील् करबो ल तक्दा बेहील हवाईजो व तोनालो बेहीर्रगाईबो व हुस्नुल ख्वातेमे व युसतकल गमाम. बिवजहील-करीमे व अला आलिही व अस्हाबिही फी कुल्लि लम्हतंव व नफसीम् बिअददि मअलुमील् लका या अल्लाहु या अल्लाहु या अल्लाहु।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। अय अल्लाह दुरूदे कामिल और सलामे ताम(मुकम्मिल) नाज़िल फरमा हमारे सरदार और मौला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जिनके तुफैल गाँठ खुल जाती है, बेचैनियाँ खत्म हो जाती है और जिनके तुफैल तमाम मकासीद हासील होते हैं। बीलखैर खात्मा नसीब होता है। उनके करम से बादल सयराब होते हैं(उसकी ताजगी से), और आल पर अस्हाब पर अपने हर एक लम्हें, हर एक श्वास में, अपने इल्म के बराबर अदद में अय अल्लाह, अय अल्लाह, अय अल्लाह।

8. सलाति तुनज्जीना

इस दुरूद शरीफ का नाम तोनज्जी या तोनज्जीना रखा गया, इसके बेपनाह फज़ाइल हैं। बुजूर्गाने दीन ने अनेकों बार अजमाया है। हजरत गौस पाक अब्दुल कादिर जीलानी रदीयअल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया के एक शख्स निहायत मुश्किल में गिरफ्तार हो गया। उसने वुजू करके मुअत्तर होकर ये दुरूदे पाक पढ़ना शुरु किया तो मुश्किल हल हो गई। इस दुरूद शरीफ को जो शख्स अदब व अहतराम से किब्ला रुख होकर हर रोज तीन सौ (३००) बार पढ़ेगा, अल्लाह के फज़ल से उसकी सख्त से सख्त मुश्किल हल हो जाएगी।

जिसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जियारत का शौक हो वह खालिश नीयत से यह दुरूद शरीफ पढ़े और बाद नमाज़े ईशा एक हजार (१०००) बार पुरा करे फिर बिस्तर को मुअत्तर करके बावुजू ही सो जाए इन्शाअल्लाह चालीस रोज के अन्दर अन्दर ही हुजूरे-अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जियारत से सर्फयाब होगा, अगर अल्लाह करम करे तो हो सकता है एक हफ्ते के भीतर ही

जियारत नसीब हो जाए। (दलाएलुल-खैरात, मज़रउल हस्नात)

ख़ौफ़ और गम में हर रोज़ ७० मर्तबा ये दुरूद शरीफ पढ़ने पर अजाब से निजात मीलती है। औलिया अल्लाह का ये एक पसन्दीदा वज़ीफ़ा है और ये बहुत फ़ायदे वाला अमल है। किसी भी गम या तकलीफ मे इसे ज्यादा पढ़ें तो वो गम और तकलीफ दुर हो जाती है। इस दुरूद शरीफ की एक खुशूसीयत ये भी है कि जो शख्स बीमारी से तंग आकर तबीबों, डाक्टरों से मायुस हो गया हो उसे चाहिए कि इस दरुद शरीफ को कसरत (ज्यादा) से पढ़े इन्शाअल्लाह बीमारी की तकलीफ से निजात मिलेगी।

٨ درود تنجینا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا

مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُنَجِّيْنَ بِهَا مِنْ جَمِيْعِ الْاَهْوَالِ

وَالْاٰفَاتِ وَتَقْضِىْ لَنَا بِهَا جَمِيْعَ الْحَاجَاتِ

وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّئَاتِ وَتَرْفَعُنَا بِهَا

عِنْدَكَ اَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا اَقْصَى

الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرٰتِ فِى الْحَيَاتِ وَبَعْدَ

الْـمَـمَـاتِ اِنَّکَ مُـجِیْـبُ الـدَّعْوَاتِ وَرَافِعُ الدَّ

رَجَـاتِ وَیَـاقَـاضِـیَ الْـحَـاجَـاتِ وَیَـاکَـافِـی

الْـمُهِـمَّـاتِ وَیَا دَافِعَ الْبَلِیَّاتِ وَیَاحَلَّ الْمُشْکِلَاتِ

اَغِثْنِیْ اَغِثْنِیْ اَغِثْنِیْ یَا اِلٰهِیْ اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ

شَیْءٍ قَدِیْرٌ☆

8. सलाति तुनज्जीना

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव अला आलि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन् सलातन् तुनज्जीना बिहा मीन जमीईल अहवालि वल आफाति. व तक्दी लना बिहा मीन जमीईल हाजाति तुताह्हीरुना बिहा मीन जमीईस्सय्यिआति. व तरफउना बिहा ईन्दक अअलद्दरजाति व तुबल्लिगुना बिहा अक्सल् गायाति मीन जमीईल खयराति फील हयाति व बअद्दल ममाति. ईन्नका मुजीबुद्दा-अ-वाति व राफिउद्दरजाति व या काज़ियल-हाजाति व या काफी-अल मुहिम्माति व या दाफि-अल-बलीय्याति व या हल्ल-ल्-मुश्किलाति अगिश्नी अगिश्नी अगिश्नी या इलाही इन्नका अला कुल्लि शैईन कदीर्.

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। अय परवरदिगार हमारे सरदार व मौला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और हमारे सरदार व मौला हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर ऐसा दुरूद नाज़िल फरमा जिसके वसीले और बरकत, हमें तमाम खौफ की चिज़ों, आफतों से निजात बख्से दुरूदे तोनज्जीना। और उसके वसीले व बरकत हमारी

तमाम हाजत पूरी कर दे और उसके वसीले व बरकत से हमें हमारी सभी बुराइयों से पाक व साफ कर दे। और उसके वसीले व बरकत से हयात के और वफात के बाद के तमाम मकसदों तक पहुँचा दे। बेशक तू हमारी दुआओं को कबूल फरमाने वाला है और हमारे दरजात को बुलन्द करनेवाला और हमारी हाजतों को पूरी करनेवाला और हमारी बलाओं को दूर करनेवाला और हमारी सख्त मुश्किलातों को हल करनेवाला मेरी मदद फरमा, मेरी मदद फरमा, मेरी मदद फरमा या इलाही, बेशक तु हर चीज़ पर कादिर है।

9. दुरूदे माही

दुरूदे माही अल्लाह तआला के फज़्ल व करम और रहमत से हर मुसीबत और आफत से हिफाजत में रखता है। इसे कसरत से पढ़नेवाला दुश्मन के हमले, हासिद की हसद, जिन्नात और आसेब के तंग करने से हमेंशा अल्लाह की पनाह में रहता है। यह दुरूद शरीफ शैतान के वसवसों को दूर करता है। जो शख्स रोजाना इस दुरूद शरीफ को बाद नमाज़े-फज्र एक सौ ग्यारह (१११) बार पढ़े, अल्लाह तआला उसकी हिफाज़त और इज्जत अफजाई के लिए गैबी मखलुक से एक फरिश्ते को मुकर्रर कर देता है जो हर लिहाज़ से दुरूद पढ़नेवाले की हिफाजत पर मामुर (duty) रहता है।

जो शख्स हर नमाज़ के बाद चार माह तक इस दुरूद शरीफ को एक बार पढ़े वो हमेंशा के लिए लोगों में बाइज्जत हो जाएगा, हर शख्स उसकी इज्जत करेगा। जो शख्स इस दुरूद शरीफ को रमज़ानुल मुबारक में बाद नमाज़े-तरावीह इकतालीस (४१) बार पूरा महीना पढ़े उसे रसुले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व आलेही व सल्लम की जियारत नसीब होगी। कैदी इसे पढ़े तो कैद से रिहाई पाये और जो ता हयात इसे रोजाना कसरत से पढ़े उसपर दोज़ख की आग हराम हो जाएगी।

इस दुरूद शरीफ की सनद यह है कि एक रोज हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलेही व सल्लम मस्जिदे-नबवी में तशरीफ फरमा थे, उस वक्त आपके पास एक अअराबी (देहाती) आया उसके पाश एक बड़ा बरतन था, जिसे उसने कपड़े से ढ़ाँप रखा था। उस

अअराबी ने वह बरतन आप की खिदमते अकदस में पेश किया, हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलेही व सल्लम ने पुछा कि 'इस बरतन में क्या है' उसने अर्ज़ किया 'या रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व आलेही व सल्लम इसमें मछली है, तीन दिन से इसे पका रहा हुँ मगर ये बिलकुल पक नही रही इसपर आग का कुछ असर नहीं होता अब आप के पास लाया हुँ।' हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलेही व सल्लम ने मछली से दरयाफ्त किया तो मछली को अल्लाह तआला ने गोयाई (बोलने की शक्ती) अता फरमा दी और वह बोलने लगी, उसने अर्ज़ किया कि 'मैं पानी में सतह पर थी तो एक आदमी आया वो एक दुरूद शरीफ पढ़ रहा था मैने पूरा दुरूद शरीफ सुना।' हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलेही व सल्लम ने फरमाया कि 'ऐ मछली वो दुरूद शरीफ पढ़कर सुना।' चुनान्चे उसने पढ़कर सुनाया। रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व आलेही व सल्लम ने हज़रत अली रदीयअल्लाहो तआला अन्हो से फरमाया के 'ऐ अली (रदीयअल्लाहु तआला अन्हु) इसे लिख लो और लोगों को सिखाओ इन्शाअल्लाह इस दुरूद शरीफ के पढ़ने वाले पर दोज़ख की आग हराम हो जाएगी। माही का माना होता है मछली।।

۹ درود ماہی

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ خَيۡرِ الۡخَلَآئِقِ وَ اَفۡضَلِ الۡبَشَرِ وَ شَفِيۡعِ
الۡاُمَمِ يَوۡمَ الۡحَشۡرِ وَ النَّشۡرِ وَ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ مَعۡلُوۡمٍ

لَّكَ وَ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكۡ وَ سَلِّمۡ وَ صَلِّ عَلٰى جَمِيۡعِ
الۡاَنۡبِيَآءِ وَالۡمُرۡسَلِيۡنَ وَ صَلِّ عَلٰى كُلِّ الۡمَلٰٓئِكَةِ
الۡمُقَرَّبِيۡنَ وَ عَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيۡنَ وَ سَلِّمۡ
تَسۡلِيۡمًا كَثِيۡرًا كَثِيۡرًا ط بِرَحۡمَتِكَ وَ بِفَضۡلِكَ
وَ بِكَرَمِكَ يَآ اَكۡرَمَ الۡاَكۡرَمِيۡنَ بِرَحۡمَتِكَ يَآ
اَرۡحَمَ الرَّاحِمِيۡنَ ط يَا قَدِيۡمُ يَا دَآئِمُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوۡمُ
يَا وِتۡرُ يَا اَحَدُ يَا صَمَدُ يَا مَنۡ لَّمۡ يَلِدۡ وَ لَمۡ يُوۡلَدۡ وَ
لَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ط بِرَحۡمَتِكَ يَآ اَرۡحَمَ الرَّا
حِمِيۡنَ ط

9. दुरूदे माही

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींव-व-अला आले मुहम्मदीन् खयरिल-खलाइकि व अफज़लि-ल-बसरि व शफीईल-उममि यवमल-हसरि व-न्नसरि व सल्लि अला सय्येदिना मुहम्मदींव-व-अला आले सय्येदिना मुहम्मदीन बेअददि कुल्लि मअलूमिल्लक व सल्लि

अला मुहम्मदींव-व-अला आलि मुहम्मदींव-वबारिक व सल्लिम व सल्लि अला जमीईल-अंबीयाए वलमुरसलीन व सल्लि अला कुल्लि-ल-मलाएकति-ल-मुकर्रिबी -न व अला इबादील्लाहि-स्सवालेही -न व सल्लिम तसलीमन कसीरन कसीरा। बिरहमति -क व बिफज़लि -क व बिकरमि -क या अकरम-ल-अकरमी -न बिरहमति -क या-अरहमररांहिमीन। या कदीमो या दाइमो या हय्यो या कय्युमो या वितरो या अहदो या समदो या मंलम यलिद व लम युलद वलम यकुनंल्लहू कुफूवन अहद बिरहमति -क या-अरहम-रराहिमीन।

तर्जुमा -अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और उनकी औलाद पर जो मखलूक में सबसे बेहतर हैं और अफ्ज़लुल बशर हैं और उम्मत की सफाअत करने वाले हैं रोजे हस्र और नस्र और दुरूद भेज हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर और दुरूद भेज हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की औलाद पर मालुम अदद की हद तक और दुरूद भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और उनकी औलाद पर और बरकत व सलामती हो तमाम अम्बीया और रसुलों पर दुरूद भेज और तमाम मलाईका मुकर्रब और ऐ अल्लाह तेरे तमाम सालेह बन्दों पर ज्यादा से ज्यादा सलामती भेज, साथ अपनी रहमत के व फजल व करम से ऐ सब से ज्यादा करम फरमानेवाले करम फरमानेवालों में, साथ अपनी रहमत के ऐ सबसे ज्यादा रहम करनेवाले, ऐ कदीम, ऐ हमेंशा रहने वाले ऐ हमेंशा जिन्दा और ऐ हमेंशा कायम रहनेवाले ऐ वित्र ऐ अहद ऐ बेनियाज ऐ जिसे किसी ने जना नहीं और ना जिसकी कोई औलाद और नहीं उसके जोड़ का कोई जो अकेला है, साथ अपनी रहमत के ऐ रहम करनेवाले रहम फरमा।

10. दरूदे-खम्सा

बाइज्जत जिन्दगी बसर करने और हर किस्म के मसायब व मुश्किलात से अमन व अमान में रहने के लिए दुरूदे खाम्सा का विर्द

सबसे आअला और मुअस्सिर (असरदार) है। इस दुरूद शरीफ को कसरत से पढ़ना हर मुहिम में यकीनन कामयाबी की दलील है। हाजात (हाजतों) के पूरा होने के लिए इस दुरूद पाक को हर रोज़ बाद नमाज़े इशा सौ (१००) बार पढ़ना बहुत मुजर्रब है। इस दुरूद शरीफ को हर रोज़ हर नमाज़ के बाद तीन (३) बार पढ़ना मरने के बाद कब्र में सवाल जवाब में आसानी, राहत और मग़फिरत का सबब बनेगा। 'तोहफा-अल-मकासिद' में है कि ये दुरूद शरीफ हज़रत इमाम शाफई रदीयअल्लाहो तआला अन्हो के माअमुलात में शामिल था और आप इसे कसरत से पढ़ा करते थे।

۱۰ درود خمسہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ صَلّٰى عَلَيْهِ

وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰى اَنْ تُصَلِّىَ

عَلَيْهِ وَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَآ اَمَرْتَنَا بِصَّلٰوةِ عَلَيْهِ وَ

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تَنْبَغِى الصَّلٰوةُ عَلَيْهِ ☆

10. दरूदे-खम्सा

बिस्मीलाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदींम-बिअददि मन सल्ला अलयहि व

सल्लि अला मुहम्मदीन कमा तुहिब्बु व तरदा अन तुसल्लि अलयहि व सल्लि अला मुहम्मदीन कमा अमरतना बिस्स्वलाति अलयहि व सल्लि अला मुहम्मदीन कमा तंम्बगी-स्वलातु अलयहि।

तर्जुमा -अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर उतना कि जितना भेजा जा चुका और दुरूद भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर तेरी चाहत जितना और तेरी रज़ा के मुताबिक रहमत नाजिल फरमा जैसी कि तुने नाजिल फरमाई है और रहमत नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम जैसा कि तुने हमें उनपर दुरूद भेजने का हुक्म दिया है और दुरूद भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जैसा उनपर दुरूद भेजने का हक है।

11 दरूदे गवशिया

ये दुरूद शरीफ खानदाने कादरीया के मा'मुलात में से है। अकसर कादरी बुजूर्ग अपने मुरीदों को इसे रोजाना पाँच सौ ग्यारह (५११) बार या एक सौ ग्यारह (१११) बार पढ़ने की तलकीन करते हैं। ये दुरूद रहमते खुदावन्दी का खजाना है। एक अल्लाह के बन्दे का कहना है कि जो शख्स रोजाना इस दुरूद शरीफ को कम से कम एक बार जरुर पढ़े उसे सात नेअमतें हासिल होगी, १) रिज़्क में बरकत। २) तमाम काम आसान हो जाएंगें। ३) नज़अ के वक्त कलमा नसीब होगा। ४) जाँकनी (जब रुह जिस्म से निकाली जाती है) की सख्ती से महफुज़ रहेगा। ५) कब्र में वुसअत (चौड़ाई, फैलाव) होगी। ६) किसी की मोहताजी ना होगी। ७) मखलुके खुदा उससे मुहब्बत करेगी। रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के कुर्ब और जियारत के लिए भी ये दुरूद शरीफ मुअस्सिर (असरदार) है।

١١ درود غوثیہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ

الْجُوْدِ وَ الْكَرَمِ وَ اٰلِهٖ وَ بَارِكْ وَ سَلِّمْ ☆

11 दरुदे गवशिया

बिस्मीललाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यीदिना व मौलाना मुहम्मदीं -म्मअदिनी-लजुदि वलकरमि व आलिही व बारिक व सल्लिम।

तर्जुमा -अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार व आका मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सखावत और करम के खजीना हैं और उनकी औलाद पर बरकत व सलामती भेज।

12 दुरूदे-लख्खी

सुलतानुल मशाईख, सच्चे रहस्यों के जानकार सुलतान महमुद गजनवी रहमतुल्लाह अलयहि का रोज़ाना का माअमुल था कि वज़ीफ़े के तौर पर सिद्क नीयत और गहरी मुहब्बत के साथ एक लाख दुरूद शरीफ पढ़ा करते और उसका सवाब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश करते। इतनी ज्यादा तादाद मे दुरूद शरीफ पढ़ने मे उनका पुरा दिन सर्फ हो जाता और हुकूमत के कामों के लिए ज्यादा वक्त ना मिल पाता था।

एक रात ख्वाब में रिसालतमआब सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने अपने नुरानी दीदार से सरफ़राज़ किया और इर्शाद फरमाया कि, 'अय महमुद ! इस दुरूद शरीफ को हर रोज़ फज्र कि नमाज़ के बाद एक मर्तबा पढ़ लिया करो, तुम्हें एक लाख दुरूद का सवाब मिलेगा- और इसकी बरकत से मेरी (हुजूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की) मुहब्बत भी पुख्ता होगी और जितनी बार पढ़ोगे उतनी बार एक एक लाख दुरूद शरीफ का सवाब मिलेगा'।

सुलतान महमुद रहमतुल्लाह अलयहे ने सुबह उठते ही सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के इर्शाद पर अमल शुरु कर दिया और ये खुशखबरी सभी खास-ओ-आम को सुना दी।

इस दुरूद शरीफ को एक बार पढ़ने का सवाब एक लाख दुरूद शरीफ के जितना सवाब मीलने की वजह से इस का नाम 'दुरूदे लख्खी' पड़ा।

ये दुरूद शरीफ मग़फिरत और गुनाहों की मुआफी के लिए बहुत अकसीर है। अगर कोई शख्स ये चाहे के उसके मरहूम सुदा आबा व अज़दाद (पूर्वज) की मग़फिरत हो जाए और आलमे बरजख (मरने के बाद कयामत तक का जमाना) में इन्हें राहत हो जाए, तो उसे चाहिए कि यह दुरूदे पाक (११) बार रोजना चालीस (४०) दिन तक पढ़े और फिर अल्लाह के हुजूर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और इस दुरूद शरीफ के वसीले से मरहुमीन की बख्शीस और मग़फिरत की दुआ करे, इन्शाअल्लाह अल्लाह ग़फुर्रुरहीम उन्हें मुआफ करके उनकी कब्र को मिस्ले जन्नत बना देगा। इस दुरूद शरीफ को रोजना एक बार पढ़ने से फलाहे दारैन (दुनिया और आखिरत की फलाह) होती है। इस दुरूदे पाक का एक और बहुत ही कारआमद फायदा ये है कि अगर किसी घर में बेसुलूकी और आपस में झगड़ा रहता हो तो इसे पढ़ने से घर में अमन व अमान कायम होता है, आपस में हमदर्दी पैदा होती है, इत्तिफाक रहता है और घर में बरकतों का नुजूल होता है।

۱۲ دُرُود لکھِیْ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى
اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍم بِعَدَدِ رَحْمَةِاللّٰهِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ
وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍم بِعَدَدِ فَضْلِ اللّٰهِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ م
بِعَدَدِ خَلْقِ اللّٰهِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا
وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍم بِعَدَدِ عِلْمِ
اللّٰهِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍم بِعَدَدِ كَلِمٰتِ اللّٰهِ
ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍم بِعَدَدِ كَرَمِ اللّٰهِ ط اَللّٰهُمَّ

صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ م بِعَدَدِ حُرُوْفِ كَلٰمِ اللّٰهِ ط اَللّٰهُمَّ
صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ م بِعَدَدِ قَطَرَاتِ الْاَمْطَارِ ط اَللّٰهُمَّ
صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ م بِعَدَدِ اَوْرَاقِ الْاَشْجَارِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ
وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ م بِعَدَدِ رَمْلِ الْقِفَارِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ م
بِعَدَدِ مَا خُلِقَ فِى الْبِحَارِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ
وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ م بِعَدَدِ الْحُبُوْبِ وَالشِّمَارِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ
وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا

مُحَمَّدٍ م بِعَدَدِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ م
بِعَدَدِ مَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِ الَّيْلُ وَ اَشْرَقَ عَلَيْهِ النَّهَارُ ط
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ م بِعَدَدِ مَنْ صَلّٰى عَلَيْهِ ط
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ م بِعَدَدِ مَنْ لَّمْ يُصَلِّ عَلَيْهِ
ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ م بِعَدَدِ اَنْفَاسِ الْخَلَآئِقِ ط
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ
وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ م بِعَدَدِ نُجُوْمِ السَّمٰوٰتِ ط
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ
وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ م بِعَدَدِ كُلِّ شَيْءٍ فِى

الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ہ صَلٰوتُ اللّٰهِ تَعَالٰى وَمَلٰٓئِكَتِهٖ

وَاَنْبِيَآئِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجَمِيْعِ الْخَلَآئِقِ عَلٰى

سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ وَاِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ

وَقَآئِدِالْغُرِّالْمُحَجَّلِيْنَ وَشَفِيْعِ الْمُذْنِبِيْنَ سَيِّدِنَا

وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ

وَذُرِّيّٰتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَاَهْلِ طَاعَتِكَ اَجْمَعِيْنَ مِنْ

اَهْلِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَضِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَآاَرْحَمَ

الرَّاحِمِيْنَ ط وَيَآاَكْرَمَ الْاَكْرَمِيْنَ ط وَصَلَّى اللّٰهُ

تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّاٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ اَجْمَعِنَ ط

وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا دَآئِمًا اَبَدًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا ط

وَالْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ☆

12 'दुरूदे लख्खी'

बिस्मीललाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अला सय्यिदिना व मवलाना

मुहम्मदिंव व अला आले सय्यिदिना मुहम्मदिंव बिअददि रहमतील्लाह. अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंव बिअददि फद्दलिल्लाह. अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंव बिअददि खलकील्लाह.अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंव बिअददि ईल्मील्लाह. अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लीम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंव बिअददि कलिमातील्लाह अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंव बिअददि करमील्लाह।

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंव बिअददि हुरुफि कलामील्लाह। अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंव बेअददे कतरातील् अम्तार्। अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंम् बिअददि अव्राकिल अश्जार् अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अला सय्यदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंम् बिअददि रम्लील् किफार् अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंम् बिअददि मा खुलि्-क फील बिहार।

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंम् बिअददिल्- हबूबि वस्सिमार्। अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लिम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंम् बिअददिल्-लय्लि वन्नहार। अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आले सय्यिदिना मुहम्मदिंम् बिअददि मा अज्ल्-म अलयहिल्लय्लु व अश्र्-क अय्लहीन्नहार। अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंम् बिअददि मन् सल्ला अलयहि।

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव् व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंम् बिअददि मंल्लाम् युसल्लि अलयहि। अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव् व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंम् बिअददि अन्फासील्-खलाईक।

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंम् बिअददि नुजूमीस्समावाति। अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अला सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंन् व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिंम् बिअददि कुल्लि शय्ईन् फीद्दुन्या वल्- आखिरह। सल्वातुल्लाहि तआला व मलाइकतिही व अंम्बीयाइही रुसूलिही व जमीईल् खलाईकि अला सय्यिदिल् मुर्सलीन व ईमामील् मुत्तकी्-न व काइदिल् गुर्रील् मुहज्जिली्-न व शफीईल् मुज़निबी्-न सय्यिदिना व मवलाना मुहम्मदिंव् व अला आलिही व अस्हाबिही व अज़्वाजिहि व जुर्रीयातिही व अह्लि बयतिही व अहलि ताअति-क अजमईन मिन् अहलिस्समावाति वल् अर्दि-न। बिरह्मतिक या अर्हमर्राहिमीन, व या अक्रमल् अक्रमी-न व सल्लल्लाहु त्आला अला सय्यिदिना मुहम्मदिंव व आलिही व अस्हाबिही अजमइ-न, व सल्लम तस्लीमन् दाइमन् अब्दन् कसीरन् कसीरा, वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बील् आलमीन।

तर्जुमा -अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो तेरे फजाईल के तादाद के मुताबीक। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो अपनी खलकत की

तादाद जीतना। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो अपने ईल्म की मिकदार जीतना। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो अपने कल्मे के तादाद जीतना। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो अपने करम के तादाद जीतना। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दरुद और सलाम हो अपने कलाम के हुरुफों की तादाद जितना। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो बारीश की बुन्दों के जीतना। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो दरख्तों के पत्तों जितना। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दरुद और सलाम हो रेगिस्तान के मैदान की रेत के दानो के जीतना। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो समन्दरों में पैदा की गई मखलूक की तादाद के जितना। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो दानों और फलों की

तादाद जितना। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो दिन और रात के अदद जितना। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो उस अदद जितना जिस पर रात का अन्धेरा छाया है और दिन का उजाला छाया हुआ है। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो उन लोगों की अदद जितना जो उन पर दुरूद भेजते है। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो उन लोगों कि अदद जितना जो उन पर दुरूद नही भेजते, दुरूद और सलाम भेजै। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाह अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो तमाम मख्लुक की साँसों जितना। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो आसमानों के सितारों की तादाद जितना। या अल्लाह ! हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आले पाक पर तेरी रहमत से दुरूद और सलाम हो दुनिया और आखिरत की तमाम चिजों की अदद जितना। अल्लाह त्आला सलामती नाजिल फरमा, फरीश्तों, नबीयों, रसुलों, तमाम मख्लुक के, तमाम रसुलों के सरदार पर, मुत्तकीयों के ईमाम, नेकों के पेशवा और गुनाहगारों की शफाअत करने वाले हमारे सरदार और आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और उनकी आल पर व उनके अस्हाब पर व उनकी

पाकीजा बीबीयों पर और उनकी औलाद पर और तेरी ईताअत करने वालों पर और तमाम आसमान व जमीनवालों पर तेरी रहमत के तुफैल। अय सब पर रहम करनेवालों से ज्यादा रहम करनेवाले और सब बुजुर्गों से ज्यादा बुजुर्गीवाले और रहमतवाले अल्लाह, हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और उनकी आल पर व उनके अस्हाब पर सलाम भेज (सलाम भेजते रह) हमेंशा आखिरत तक बडे पैमाने पर और अल्लाह के लिए हम्द है जो तमाम जहाँनों का परवरदिगार है।

13 दुरूदे मुकद्दस

दुरूदे मुकद्दस पढ़ने का सवाब बेपनाह है। यह दोनों जहान के फैज व बरकतों का खजाना है। बा'ज बुजूर्गों का कहना है कि उम्र भर में इसे एक बार पढ़ना राहे खुदा में कई हज़ और नफली रोजे रखने के बराबर है। और जो शख्स इसे दिन रात कसरत से पढ़ेगा वो वली, कुतूब, अब्दाल और गौस जैसा मुकाम पाएगा। इस दुरूद की बदौलत जिन्दगी भर के सगीराह गुनाह मुआफ हो जाते हैं, चाहे समन्दर के झाग के बराबर क्यों ना हों। इस दुरूदे पाक को रोजना एक बार बाद नमाज़े फज्र पढ़ना आलमे सकरात (मौत का वक्त, जांकनी का वक्त) में आसानी होगी और कब्र में मुन्कर नकीर के सवाल जवाब में आसानी होगी। उसकी कब्र मिस्ले जन्नत होगी और हमेंशा राहत में रहेगा। कयामत के रोज़ उसका चेहेरा चौदहवीं के चाँद की तरह चमक रहा होगा। दुसरे लोग उसे देखकर हैरान होंगे, वो सोचेंगे क्या ये कोई नबी है? तो अल्लाह तआला की तरफ से जवाब मिलेगा ये नबी नहीं बल्कि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का एक अदना उम्मती है, और क्योंकि ये उन पर सच्चे दिल से दरूदे मुकद्दस पढ़ा करता था इसलिए उसे ये मुकाम मिला है। फिर जब हिसाबो-किताब होगा तो इस दरूद शरीफ के पढ़ने वालों को फरिश्ते सीधे हाथ में आअमाल नामा देंगे और मीज़ान पर इस दुरूद पाक की बरकत से उसकी नेकियों का पलड़ा भारी रहेगा। इस दुरूद सरीफ के पढ़नेवालों को हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की खुसूसी शफाअत नसीब होगी और बगैर हिसाब जन्नत में दाखिल होगा।

दुरूदे मुकद्दस पढ़नेवालों की दुआ कुबूल होती है। खाश मकसद के लिए दुआ करनी हो तो तहज्जुद के वक्त सात (७) बार दुरूदे मुकद्दस पढ़ें फिर सज़्दा रेज़ होकर सज़्दे में दुआ करें इन्शाअल्लाह दुआ कुबूल होगी और जायज़ हाज़त इन्शाअल्लाह पूरी होगी। जिस औरत को औलाद ना हो उसे दुरूदे मुकद्दस चालीस (४०) दिन तक रोजना तीन (३) बार दुरूदे मकद्दस पढ़कर पानी में दम करके पिलाया जाये तो इन्शाअल्लाह अल्लाह के फज़्लो-करम से औलाद नसीब होगी। जुमेरात और जुम्आ की दरम्यानी रात को ये दरूद शरीफ पढ़ने का माअमुल बना ले उसे अल्लाह की जानिब से चार चीज़ें इनायत होगी, १) अल्लाह की खुशनूदी. २) नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की खुशनूदी. ३) बगैर हिसाब जन्नत में दाखिला. ४) रिज़्क में फराखी।

इस दुरूद शरीफ को पढ़ने की बदौलत अहले रुहानीयत को बहुत जल्द दरजात में बुलंदी नसीब होती है। जियारते हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के लिए चालीस (४०) रातों तक रोजाना रात को सोते वक्त इस दुरूदे पाक को पढ़ें इन्शाअल्लाह जियारत नसीब होगी।

۱۳ درود مقدس

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

يَآ اِلٰهِىۡ بِحُرۡمَتِ مَقۡوَالِ مُحَمَّدٍ وَّاَفۡعَالِ مُحَمَّدٍ وَّ
اَحۡوَالِ مُحَمَّدٍ وَّ اَصۡحٰبِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ
وَسَلَّمۡ ط يَآ اِلٰهِىۡ بِحُرۡمَةِ بَدَنِ مُحَمَّدٍ وَّ بَطۡنِ

مُحَمَّدٍ وَّ بَرَكَةِ مُحَمَّدٍ وَّ بَيۡعَةِ مُحَمَّدٍ وَّ بُرَاقِ
مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمۡ ط يَآ اِلٰهِىۡ بِحُرۡمَةِ
تَوَلُّدِ مُحَمَّدٍ وَّ تَعَيُّدِ مُحَمَّدٍ وَّ تَهَجُّلِ مُحَمَّدٍ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمۡ ط يَآ اِلٰهِىۡ بِحُرۡمَةِ ثَنَآءِ مُحَمَّدٍ وَّ
ثَوَابِ مُحَمَّدٍ وَّ ثَمَاتِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ
وَسَلَّمۡ ط يَآ اِلٰهِىۡ بِحُرۡمَةِ جَلَالِ مُحَمَّدٍ وَّ جَمَالِ
مُحَمَّدٍ وَ جَلِّ مُحَمَّدٍ وَوَجۡهَةِ مُحَمَّدٍ وَّ جَعۡدِ
مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمۡ ط يَآ اِلٰهِىۡ بِحُرۡمَةِ
حُسۡنِ مُحَمَّدٍ وَّ حَسَنٰتِ مُحَمَّدٍ وَّ حُرۡمَةِ
مُحَمَّدٍ وَّحَالِ مُحَمَّدٍ وَّ حُلۡيَةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ
عَلَيۡهِ وَسَلَّمۡ ط يَآ اِلٰهِىۡ بِحُرۡمَةِ خِلۡقَةِ مُحَمَّدٍ وَّ
خُلُقِ مُحَمَّدٍ وَّ خُطۡبَةِ مُحَمَّدٍ وَّ خَيۡرَاةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمۡ ط يَآ اِلٰهِىۡ بِحُرۡمَةِ دِيۡنِ مُحَمَّدٍ وَّ

دِيَانَةِ مُحَمَّدٍ وَّ دَوْلَةِ مُحَمَّدٍ وَّ دَرَجَاتِ مُحَمَّدٍ وَّ
دُعَآءِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ ☆ يَآ اِلٰهِىْ
بِحُرْمَةِ ذَاتِ مُحَمَّدٍ وَّ ذِكْرِ مُحَمَّدٍ وَّ ذَوْقِ مُحَمَّدٍ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ ط يَآ اِلٰهِىْ بِحُرْمَةِ رُوْحِ
مُحَمَّدٍ وَّرَاْسِ مُحَمَّدٍ وَّرِزْقِ مُحَمَّدٍ وَّ رَفِيْقِ
مُحَمَّدٍ وَّرَضَآءِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ ط يَآ
اِلٰهِىْ بِحُرْمَةِ زُهْدِ مُحَمَّدٍ وَّ زَهَادَتِ مُحَمَّدٍ وَّ
زَارِىْ مُحَمَّدٍ وَّ زِيْنَةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمْ ط يَآ اِلٰهِىْ بِحُرْمَةِ سِيَادَةِ مُحَمَّدٍ وَّ سَعَادَةِ
مُحَمَّدٍ وَّ سُنَّةِ مُحَمَّدٍ وَّ سِرِّ مُحَمَّدٍ وَّ سَلَامِ
مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ ط يَآ اِلٰهِىْ بِحُرْمَةِ
شَرْعِ مُحَمَّدٍ وَّ شَرْفِ مُحَمَّدٍ وَّ شَوْقِ مُحَمَّدٍ وَّ
شَادِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ ط يَآ اِلٰهِىْ

بِحُرْمَةِ صِدْقِ مُحَمَّدٍ وَّ صَوْمِ مُحَمَّدٍ وَّ صَلٰوةِ
مُحَمَّدٍ وَّ صَفَآءِ مُحَمَّدٍ وَّ صَبْرِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمْ ط يَآ اِلٰهِىْ بِحُرْمَةِ ضِيَآءِ مُحَمَّدٍ وَّ
ضَمِيْرِ مُحَمَّدٍ وَّ ضَآحَآءِ مُحَمَّدٍ وَّ ضُعْفِ مُحَمَّدٍ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ ط يَآ اِلٰهِىْ بِحُرْمَةِ طَلْعَةِ
مُحَمَّدٍ وَّ طَهَارَةِ مُحَمَّدٍ وَّ طُهْرِ مُحَمَّدٍ وَّ طَرِيْقِ
مُحَمَّدٍ وَّطَوَافِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ ط
يَآ اِلٰهِىْ بِحُرْمَةِ ظَاهِرِ مُحَمَّدٍ وَّ ظُهْرِ مُحَمَّدٍ وَّ ظِلِّ
مُحَمَّدٍ وَّ ظُهُوْرِ مُحَمَّدٍ وَّ ظُفْرِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمْ ط يَآ اِلٰهِىْ بِحُرْمَةِ عِشْقِ مُحَمَّدٍ وَّ
عَرَفَاتِ مُحَمَّدٍ وَّ عِلْمِ مُحَمَّدٍ وَّ عُلُوِّ مُحَمَّدٍ وَّ
عَلِيْمِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ ط يَآ اِلٰهِىْ
بِحُرْمَةِ غُرْبَتِ مُحَمَّدٍ وَّ غَارِ مُحَمَّدٍ وَّ غُرَّةِ مُحَمَّدٍ

وَّ غَیْـرَتِ مُـحَـمَّـدٍ صَـلَّـی الـلّٰـہُ عَـلَیْـہِ وَسَلَّمْ

ط یَـآ اِلٰهِـیْ بِـحُـرْمَةِ قُـلِّ مُـحَمَّدٍ وَّ قَدْرِ مُحَمَّدٍ وَّ

قَـنَـاعَـتِ مُـحَـمَّدٍ وَّ قُوَّتِ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ

وَسَـلَّمْ ط یَآ اِلٰهِیْ بِحُرْمَةِ فَخْرِمُحَمَّدٍ وَّفَقْرِمُحَمَّدٍ

وَّ فِـرَاقِ مُـحَـمَّـدٍ وَّ فَضْلِ مُحَمَّدٍ وَّ فَضِیْلَةِ مُحَمَّدٍ

صَـلَّـی الـلّٰـهُ عَـلَیْهِ وَسَلَّمْ ط یَآ اِلٰهِیْ بِحُرْمَةِ کَلَامِ

مُـحَـمَّـدٍ وَّ کَشْفِ مُـحَـمَّـدٍ وَّ کُوْشِشِ مُحَمَّدٍ وَّ

کِتَابَةِ مُحَمَّدٍ وَّ کِیْنَةِ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمْ

ط یَـآ اِلٰهِـیْ بِـحُـرْمَةِ لَیْـلِ مُـحَمَّدٍ وَّ لِقَآءِ مُحَمَّدٍ وَّ

لِیَـاقَةِ مُـحَـمَّـدٍ وَّ مُـجَـاهِـدَاةِ مُحَمَّدٍ وَّ مُشَاهِدَاةِ

مُـحَـمَّـدٍ وَّ مُلَاحِـظِ مُـحَـمَّـدٍ وَّ مَسَـاحَةِ

مُـحَـمَّـدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمْ ط یَآ اِلٰهِیْ بِحُرْمَةِ

نَـازِ مُـحَـمَّدٍ وَّ نَمَازِ مُحَمَّدٍ وَ نَصِیْرِ مُحَمَّدٍ وَّ نَقِیْرِ

مُـحَـمَّـدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمْ ط یَـآ اِلٰهِیْ بِحُرْمَةِ

وَرُوْدِ مُـحَـمَّـدٍ وَّ وَقَـآءِ مُـحَمَّدٍ وَّ وُجُوْدِ مُحَمَّدٍ وَّ

وَدِیْـعَةِ مُـحَـمَّـدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمْ ط یَآ اِلٰهِیْ

بِحُرْمَةِهِمَّةِ مُحَمَّدٍ وَّ هَدَایَةِ مُحَمَّدٍ وَّ هَدْیَةِ مُحَمَّدٍ

صَـلَّـی الـلّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمْ ط یَـآ اِلٰهِـیْ یَارِیْ مُحَمَّدٍ

وَیَـگَـانِـکِـیْ مُـحَـمَّـدٍ صَـلَّـی الـلّٰـهُ عَـلَیْـهِ

وَسَلَّمْ ط لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ مُحَمَّدٌرَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ

عَـلَـیْـهِ وَعَـلٰـی اٰلِـهٖ وَاَصْحٰبِـهٖ وَسَـلَّـمْ ط بِـعَـدَدِ

مَاهُوَالْمَکْتُوْبُ فِیْ لَوْحِ وَالْقَلَمِ فِیْ کُلِّ یَوْمٍ وَّ لَیْلَةٍ

وَّ سَـاعَةٍ نَـفَـسٍ وَّالْـمُحَیَّةِ اَلْفِ مِائَةِ اَلْفِ مَرَّةٍ اِلٰی

یَـوْمِ الْـعِلْمِ اَلَآ اِنَّآ وَلِیَآءَ اللّٰهِ لَاخَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَاهُمْ

یَحْزَنُوْنَ ☆ بِرَحْمَتِکَ یَآرَحَمَ الرَّاحِمِیْنَ ☆

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

या इलाही बिहुरमति अकवालि मुहम्मदींव-व अफआलि मुहम्मदींव-व अहवालि मुहम्मदींव-व असहाबि मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति बदनि मुहम्मदींव-व बतनि मुहम्मदींव-व बरकति मुहम्मदींव-व बयअति मुहम्मदींव-व बुराकि मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति तवल्लुदि मुहम्मदींव-व तअब्बुदि मुहम्मदींव-व तहज्जुलि मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति सनाए मुहम्मदींव-व सवाबि मुहम्मदींव-व समाति मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमती ज़लालि मुहम्मदींव-व जमालि मुहम्मदींव-व जल्लि मुहम्मदींव-व वज्हति मुहम्मदींव-व जअदि मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति हुस्ने मुहम्मदींव-व हसनाति मुहम्मदींव-व हुरमति मुहम्मदींव-व हालि मुहम्मदींव-व हुलयति मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमती खिलकति मुहम्मदींव-व खुल्कि महम्मदींव-व खुतबति मुहम्मदींव-व खयराति मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति दीनि मुहम्मदींव-व दियानति मुहम्मदींव-व दवलति मुहम्मदींव-व दरजाति मुहम्मदींव-व दुआ-ए मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति जाति मुहम्मदींव-व जिक्रि मुहम्मदींव-व ज़वकि मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति रूहि मुहम्मदींव-व राअसि मुहम्मदींव-व रिज़्कि मुहम्मदींव-व रफीकि मुहम्मदींव-व रजाए मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति जुहदि मुहम्मदींव-व ज़हादति मुहम्मदींव-व ज़ारी मुहम्मदींव-व ज़ीनति मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति सियादति मुहम्मदींव-व सआदति मुहम्मदींव-व सुन्नति मुहम्मदींव-व सिर्रि मुहम्मदींव-व सलामि मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति सरए मुहम्मदींव-व सरफि मुहम्मदींव-व सवकि मुहम्मदींव-व शादि मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बीहुरमति सिदकि मुहम्मदींव-व सवमि मुहम्मदींव-व सलाति मुहम्मदींव-व सफाए मुहम्मदींव- सब्रे मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम।

या इलाही बिहुरमति ज़ियाए मुहम्मदींव-व जमीरि मुहम्मदीन व जहाए मुहम्मदींव-व जुअफि मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति तलअति मुहम्मदींव-व ताहारति मुहम्मदींव-व तुहरे मुहम्मदींव-व तरीकि मुहम्मदींव-व तवाफि मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति जाहिरि मुहम्मदींव-व जुहरि मुहम्मदींव-व जिल्लि मुहम्मदींव-व जुहूरे मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति इश्कि मुहम्मदींव-व अरफाति मुहम्मदींव-व इलमि मुहम्मदींव-व उलुव्वि मुहम्मदींव-व अलीमि मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति गुरबति मुहम्मदींव-व गारे मुहम्मदींव-व गुर्रति मुहम्मदींव-व गयरति मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति कुल्लि मुहम्मदींव-व कद्रि मुहम्मदींव-व कनाअति मुहम्मदींव-व कुव्वति मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति फख्रि मुहम्मदींव-व फक्रि मुहम्मदींव-व फिराके मुहम्मदींव-व फज़्लि मुहम्मदींव-व फज़ीलति मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति कलामि मुहम्मदींव-व कश्फि मुहम्मदींव-व कुशिशि मुहम्मदींव-व किताबति मुहम्मदींव-व कीनति मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति लयलि मुहम्मदींव-व लिकाइ मुहम्मदींव-व लियाकति मुहम्मदींव-व मुजाहिदाति मुहम्मदींव-व मुशाहिदाति मुहम्मदींव-व मुलाहिजि मुहम्मदींव-व मसाहति मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति नाज़ि मुहम्मदींव-व नमाज़ि मुहम्मदीन व नसीरि मुहम्मदींव-व नकीरि मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति वरूदि मुहम्मदींव-व वकाइ मुहम्मदींव-व वजूदि मुहम्मदींव-व वदीअति मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही बिहुरमति हिम्मति मुहम्मदींव-व हदायति मुहम्मदींव-व हदयति मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। या इलाही यारी मुहम्मदीन व यकानिकी मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। ला इला-ह इल्ल-ल्ललाहो मुहम्मदुर्रसुलूल्लाहि सल्लल्लाहु अलयहि व अला आलिही व असहाबिही व सल्लम। बिअददी मा हुव-ल-मकतूबु फी-लवहे वल-कलमि फी कुल्लि यवमीं-व-लयलतींव-व साअतींव-व

नफसींव-वलमुहय्यति अलफि मिआतीन अलफि मर्रतिन इला यवमील-इलमि अला इन्ना अवलियाअ-अल्लाहे लाखवफुन अलयहिम वला हुम यहज़नून। बिरहमतिक याअरहमर्राहिमीन।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। या इलाही बिहुरमते अकवाले मुहम्मद (यानी उनके बोल या बातें) और अफआले मुहम्मद (यानी उनके काम) और अहवाले मुहम्मद (यानी उनके हालात) और असहाबे मुहम्मद (उनके सहाबा) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम (उतना दुरूद नाज़िल फरमा और सलामती फरमा)। या इलाही बिहुरमते बदने मुहम्मद (शरीर) और बतने मुहम्मद (जिस्म का अन्दरुनी हीस्सा) और बरकते मुहम्मद और बैयअते मुहम्मद (उनकी इताअत का अहद) और बुराके मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते पैदाइशे मुहम्मद और इबादते मुहम्मद और तहज्जुले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमति तारीफे मुहम्मद और सवाबे मुहम्मद और समाते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते जलाले (दबदबा) मुहम्मद और जमाले (हुशन, खुबसुरती) मुहम्मद और जल्लि मुहम्मद और वजहते मुहम्मद और जअदे (बालों की लटें) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते हुश्ने मुहम्मद और हसनाते (नेकीयाँ, भलाईयाँ) मुहम्मद और हुरमते (अजमत, बडाई) मुहम्मद और हाले मुहम्मद और हुलयते (सरापा) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते खिलकते (फितरत) मुहम्मद और खुल्के (खसलत) मुहम्मद और खुतबाते (तकरीर) मुहम्मद और खैराते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते दीने मुहम्मद (मजहब, धर्म) और दीयानते मुहम्मद (इमानदारी) और दौलते मुहम्मद और दरजाते मुहम्मद और दुआए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम।

या इलाही बिहुरमते जाते मुहम्मद (सख्शीयत) और जिक्रे मुहम्मद और जौके मुहम्मद (शौक) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते रुहे मुहम्मद और रासे मुहम्मद (साजगार) और रिज़्के मुहम्मद और रफीके मुहम्मद (साथी, हमनशीं, यार) और रजाए मुहम्मद (मरजी, खुशनुदी) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते जुहदे मुहम्मद (तकवा, परहेज़गारी) और ज़हादते मुहम्मद (मशक्कत,

खिलाफवर्जी, मुकाबला) और जारी मुहम्मद (गिरया, रोना) और ज़ीनते मुहम्मद (जेबाइस, खुबशुरती, सजावट) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही ब्हुरमते सियादते मुहम्मद (सरदारी, इमामत) और सआदते मुहम्मद (नेकी, भलाई) और सुन्नते मुहम्मद (दस्तुर, आदत) और सिर्रे मुहम्मद (असरार भेद) और सलामे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते सरए मुहम्मद (कानुन) और सर्फे मुहम्मद (बरतरी, बुलन्दी, बुजूर्गी) शौके मुहम्मद (आरजु, तमन्ना, इश्तियाक) और सादे मुहम्मद (गम ना होना, मशरुर) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते सिदके मुहम्मद (सच, खुलूस) और सवमे मुहम्मद (रोजा, ढट्ठद्मद्यत्दढ़, व्रत) और सलाते मुहम्मद (नमाज़) और सफा-ए-मुहम्मद (पाकी) और सब्रे मुहम्मद (बरदाश्त) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते जीया-ए-मुहम्मद (रौनक) और जमीरे मुहम्मद और जहा-ए-मुहम्मद और जुअफे मुहम्मद (नातवानी) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते रुखे मुहम्मद और तहारते (पाकीज़गी) मुहम्मद और तुहरे मुहम्मद (इन्तहाई पाकीज़गी) और तरीके मुहम्मद और तवाफे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते जाहिरे मुहम्मद और जुहरे मुहम्मद (भेद, पुश्त) और जिल्ले मुहम्मद (साया, छाँव, पनाह,) और जुहुरे मुहम्मद और (जो नुमाया है) और जफ्रे मुहम्मद (जीत, फतहमन्दी) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते इश्के मुहम्मद और अरफाते मुहम्मद और इल्मे मुहम्मद और उलुवे मुहम्मद (बरतरी) और अलीमे मुहम्मद (दानाइ, वाकफीयत,जानकारी) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते गुरबते मुहम्मद (बेवतनी) और गारे मुहम्मद (पहाड़ी की खोह) और गुर्रे मुहम्मद (फख्र) और गयरते मुहम्मद (हया) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते कुल्ले मुहम्मद और कद्रे (प्रतिष्ठा) मुहम्मद और कनाअते मुहम्मद (सब्र, संतोष) और कुव्वते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते फख्रे मुहम्मद और फक्रे मुहम्मद (कलन्दरी, दरवेशी) और फिराके मुहम्मद (जुदाई) और फज़्ले मुहम्मद फज़ीलते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते कलामे मुहम्मद और कश्फे मुहम्मद (गैब की बातों का इज़हार) और कोशीशे मुहम्मद और किताबते मुहम्मद और कीनते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते लयले

मुहम्मद (रात) और लिका-ए-मुहम्मद (दिदार, सूरत) और लीयाकते मुहम्मद (काबिलीयत) और मुज़ाहीदाते मुहम्मद (जद्दो ज़हद) और मुसाहिदाते मुहम्मद (देखना, सुफीयों इस्तिलाह में नूरे इलाही का नजारा) और मुलाहिजा-ए-मुहम्मद (मुआइना) और मसाहते मुहम्मद (पैमाइश, नापना) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते नाज़-ए-मुहम्मद और नमाज़े मुहम्मद और नशिरे मुहम्मद (मदद) और नकिरे मुहम्मद (खालिश) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते वरुदे मुहम्मद (वारिद होना, मौजूदगी) और वका-ए-मुहम्मद (धावा करना, हमला) और वज़ूदे मुहम्मद और वदीअते मुहम्मद (अमानत) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते हिम्मते मुहम्मद और हिदायते मुहम्मद (सीधी राह चलना) और हदिया-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। या इलाही बिहुरमते यारी मुहम्मद और यकानगी मुहम्मद (इत्तेफाक, यकबयक) सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। नहीं है कोई इबादत के लायक अल्लाह के सिवा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं, दुरुद नाजिल फरमा उनकी औलाद पर और उनके सहाबा पर और सलामती हो। इस तादाद के मुताबिक जो लौह और कलम में लिखी हुई है हर दिन और रात हर लम्हा में और साँस में दस करोड़ मर्तबा, कयामत तक आगाह हो कि अल्लाह के दोस्तों पर ना तो खौफ तारी होगा और ना ही वो गम जदा होंगे। तेरी रहमत के से रहम फरमा ऐ सब से ज़्यादा रहम करनेवाले।

14 दुरूदे अकबर

दुरूदे अकबर एक माअरुफ दुरूद शरीफ है। इसे दुरूदे अकबर इसलिए कहा जाता है कि इसमें हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की तमाम सिफाते ज़मीला का जिक्र बहुत ही जामेअ तौर पर किया गया है और ये दुरूद शरीफ तवील (लम्बा) होने की निसबत से दुरूदे अकबर कहलाता है। इस दुरूद शरीफ के आगाज़ में लफ्जे-निदा (पुकार) ज़्यादातर इस्तेमाल किया गया है, इसलिए जो शख्स इस दुरूद शरीफ को नमाज़े फज्र के पहले या बाद में रोजाना एक बार पढ़ने की आदत बना ले तो उसके दिल में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की

बेपनाह मुहब्बत पैदा हो जाएगी, और ज़्यारते नबी सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से मुसर्रफ होगा और पढ़ने की तादाद में इजाफा कर दे तो उसकी मुलाकात नफ्से नफीस (आमने सामने) हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की रूह मुबारक से होगी। ये दुरूद शरीफ दरअस्ल आशिकाने रसूल की दिली ज़ज्बात का तर्जुमान है इसलिए इसे पढ़नेवाला सआदत-दारैन से मालामाल हो जाता है। अगर कोई दरबारे रिसालत में मकबूल बंदा बनना चाहे और अपनी जात से दुसरों को फायदा पहुँचाना चाहे तो उसे चाहिए कि इस दरूद शरीफ का आमिल (अमल करनेवाला) बन जाए फिर जिस काम की तरफ भी तवज्जोह करेगा तो वो होता चला जाएगा। आमिल बनने के लिए जरुरी है कि चालिस रात खिलवत (अकेले में) में इस दुरूद शरीफ को रोजाना इक्किस (२१) बार पढ़े इन्शाअल्लाह उस के दिल की हर ख्वाहिश पूरी होगी।

दिल की सफाई के लिए बाद नमाज़े इशा एक बार ये दुरूद शरीफ पढ़ना बहुत असरदार। बिमारी से सिफा के लिए भी ये दरूद पाक बहुत अच्छा है। आसेब और दफा-ए-बला के लिए सात बार पढ़कर पानी पर फुँक कर दम करके आसेबजदा को पिलाने से आसेब दफा हो जाता है। अगर किसी मुकाम पर जिन्नात का साया हो तो उस जगह रोजाना इक्तालीस (४१) दिन तक एक बार ये दुरूद शरीफ पढ़ें जिन्नात भाग जाऐंगे। जालिम हाकिम के खुले जुल्म से बचने के लिए ग्यारह (११) रात इसे मुसलसल (लगातार) एक बार पढ़ें इन्शाअल्लाह बेहतर सुरते हाल पैदा हो जाएगी। इस दुरूद शरीफ के पढ़नेवाले पर कोई गालिब ना होगा। बाद नमाज़े फज्र इसे रोजाना एक बार पढ़ने से रिज़्क में इज़ाफा होता है। अकसर बुजूर्गाने सुल्फा रहमतुल्लाह तआला अजमईन ने वज़ाइफ की किताबों में बरिवायत सहीह ये लिखा कि जो शख्स इस दुरूदे पाक का वज़ीफा करे तो नामा-ए-आमाल लिखने वाले फरिश्तों को अल्लाह तआला का ये हुक्म होता है कि इस दुरूद शरीफ के हर एक हुरूफ (अक्षर) के एवज़ एक हज और एक उमरह का सवाब इसके नामा-ए-आमाल में लिखे और अल्लाह तआला उसकी तरफ तीन सौ साठ बार नज़्रे रहमत फरमाएगा और उसके लिए हजार महल याकूत (माणीक) के बनाएगा और वो शख्स मरने से पहले ही अपनी जगह जन्नत में देख लेगा और जब वो मरेगा तो तमाम मलाइका जमीनों, आसमानों, अर्श व कुर्सी के इसके जनाजा पर आएंगें और

कयामत तक फरिश्ते उसकी कब्र पर आया करेंगे और उसके वास्ते बख्शीश मांगा करेंगे।

तरीके-जकाते दुरूदे अकबर बुजूर्गाने सुल्फा रहमतुल्लाह अलयहीम अज़मईन ने यूँ तहरीर फरमाया है कि जुमेरात की रात को शुरू करें लिबास पाक व साफ और सफेद पहने और खुश्बू भी लगाएं और पाक व साफ जगह पर निहायत अदब व एहतराम के साथ दो रकअत नफ्ल नमाज़ अदा करें और फिर तीन बार ये दुरूद शरीफ पढ़ें और हदिया हुजूर सरवरे काएनात सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को पेश करें और सिदक दिल से व इखलासे नीयत से जियारते जमाले बेमिशाल महबूबे खुदा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की हक तआला की जाते करीमा से आरजू करें और उसी जगह सो जाएं। मुसलसल ग्यारह (११) रातें इसी तरह वजीफा करें, ज़कात अदा हो जाएगी और हक तआला जल्ल शानहु जियारते आंहुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से मुशर्रफ फरमाएगा। दौराने वजिफा नमाज़े पंजगाना की पाबन्दी लाज़मी है। और फिर आइन्दा दिनों में बाद नमाज़े फज्र एक बार पढ़ते रहें, दिदारे महबूबे हक तआला से भी मुशर्रफ होते रहेंगे और दीनी व दुनियावी नेअमतों और सआदतों से मालामल होंगे।

۱۴ درود اکبر

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا خَلِیْلَ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا صَفِیَّ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا خَیْرَ خَلْقِ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا مَکِّیَّ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا قُرَیْشِیَّ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا مَدَنِیَّ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا مَنِ اخْتَارَہُ اللّٰہُ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا مَنْ عَظَّمَہُ اللّٰہُ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا خَلِیْفَۃَ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا حَضْرَۃَ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا صَفْوَۃَ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا حُجَّۃَ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَحْمَۃَ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نُوْرَ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَامُحَمَّدًارَّسُوْلَ اللّٰہِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا صَاحِبِ لتَّجِ وَالْمِعْرَاجِ ط

اَصَّلٰوۃُوَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَاصَاحِبِالْحَوْضِ وَالْکَوْثَرِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَاصَاحِبَ الشَّفَاعَۃِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَاصَاحِبَ النِّعْمَۃِ ط

اَصَّلٰوۃُوَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَاخَاتَمَ النُّبُوَّۃِ وَالرِّسَالَۃِ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ الْمَدَنِیِّ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَانَبِیَّ الْحَرَمِیِّ ط

اَصَّلٰوۃُوَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ الْعَرَبِیِّ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَانَبِیَّ الْحِجَازِیِّ ط

اَصَّلٰوۃُوَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَانَبِیَّ التِّھَامِیِّ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ الْھَاشِمِیِّ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ الْقَرَشِیِّ ط

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ الزَّکِیِّ ط

اَصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ الْاُمِّیِّ ☆

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِالْمُرْسَلِیْنَ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍسَیِّدِالنَّبِیِّیْنَ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍسَیِّدِالْمُؤْمِنِیْنَ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِالْمُتَّقِیْنَ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِالصَّالِحِیْنَ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْمُصْلِحِیْنَ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِالصِّدِّیْقِیْنَ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍسَیِّدِالْمُصَدِّقِیْنَ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍسَیِّدِالصِّبِرِیْنَ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِالشُّھَدِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمَشْهُوْدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُرَابِطِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُنَجِّيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُفْلِحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِالْمُجِيْبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالزَّاهِدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِالتَّآئِبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْخَآئِفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِالْعَاطِفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْبَاكِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْقَآئِمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِالرَّاكِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِالسّٰجِدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُصَلِّيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْقَارِئِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْقَاعِدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْاَزْهَدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُوْقِنِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُنَاجِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْقَانِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْحٰفِظِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْجَآئِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْحَامِدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُرْشِدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالنّٰظِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُبَارِكِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُوَحِّدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْقَآئِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمَنْصُوْرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ النّٰصِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الظّٰفِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْوٰرِثِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُظَفَّرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمَرْزُوْقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الرّٰغِبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُشْفِقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ السّٰئِحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ التَّوَّابِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمَالُوْفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُنِيْبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْعٰبِدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمَسٰكِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُوَافِقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرَافِقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْفَآئِزِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْعٰمِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْعَآئِزِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ النَّاجِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الطّٰهِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الظّٰهِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالتّٰبِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْفَاضِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالشّٰكِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُتَطَهِّرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُطِيْعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَرْحُوْمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَغْفُوْرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْفٰضِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالطَّالِبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَطْلُوْبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُطَهَّرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالصَّوَّامِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْقَوَّامِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْاَوَّابِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْوَاصِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُحِبِّيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَحْبُوْبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَوْرُدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَقْبُوْلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُشْتَاقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْعَاشِقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَعْشُوْقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْعَارِفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْوَاعِظِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَذْكُوْرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُنْعَمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُعَظَّمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُبَلِّغِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُنَادِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُؤَدِّبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُفَسِّرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُعَلِّمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْعٰقِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْبَاذِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْاَجْوَدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُتَعَبِّدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُسْتَمِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُقَرَّبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُحَرِّضِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُفَرِّحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُقْتَرِبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُتَقَابِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُسَبِّحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُقَدَّسِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُرَتِّلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَامُوْلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُحَقِّقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُدَقِّقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالدَّاعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالصَّآئِمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُحْسِنِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالزَّاكِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْكَامِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالسَّابِقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَسْبُوْقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَعْصُوْمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَحْفُوْظِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالشَّفِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُسَفَّعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُتَعَظِّمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُؤَلِّفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْاَظْهَرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُتَصَدِّقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُوَفَّقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْعَافِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَحْزُوْنِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَسْرُوْرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُنَزِّلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُتَبَتِّلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْاٰمِنِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُتَوَاضِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُتَفَكِّرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَبْتُوْلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُبَجَّلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُمَجَّدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُتَفَاخِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُتَحَمِّلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُتَوَسِّمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْقَاسِمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُقِيْمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُسَافِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُهَاجِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُظْهِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْغَافِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُبَرْهِنِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ السَّابِحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْعَالَمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْقَانِتِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُنْفِقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الرَّاضِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الرَّءُوْفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُتَهَجِّدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُسْتَغْفِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُتَعَفِّفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْحَامِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُذْنِبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُتَدَيِّنِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرْضِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمَادِحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِالْاَرْفَعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُبَشِّرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُنْذِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُتَدَبِّرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُنْشِئِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُخْلِصِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الذَّاكِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْخَاضِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْخَاشِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالرَّاجِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُؤَمِّلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِالْاَوْرَعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْخَالِصِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِالْمُتَوَرِّعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِالْاَطْهَرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِالْاَكْرَمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْاَنْجَبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُكَرَّمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْاَشْجَعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْاَفْضَلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْاَنْوَرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَعْرُوْفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالسَّالِكِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمُعَاهِدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْهَادِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍسَيِّدِالْمَهْدِيِّيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُقْتَبِسِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُمَكِّنِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْفَآئِقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْفَاتِحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الْاَرْضِ اِذَا بُدِّلَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الصُّدُوْرِ اِذَا حُصِّلَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الْحَسَنَاتِ اِذَآ اُظْهِرَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ السَّيِّاٰتِ اِذَآ اُبْدِلَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ السَّيِّاٰتِ اِذَآ اُنْزِلَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الْحَاجَاتِ اِذَا قُضِيَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الْجَنَّةِ اِذَآ اُزْلِفَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ النُّفُوْسِ اِذَا زُوِّجَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ الْاَمِيْنِ

عَلٰى وَ وَحْيِكَ صَلٰوةً لَّا حَدَّ لَهَا وَ لَا مُنْتَهٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ م بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ

وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ اَضْعَافَ مَا صَلّٰى عَلَيْهِ

جَمِيْعُ الْمُصَلِّيْنَ مِنَ السَّابِقِيْنَ وَ الْمُؤَخَّرِيْنَ

اَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً اَلْفَ اَلْفِ اَلْفٍ فِيْ اَلْفِ اَلْفٍ

وَّصَلِّ كَذٰلِكَ عَلٰى جَمِيْعِ الْاَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ

وَعَلٰى الْمَلٰٓئِكَةِ الْمُكَرَّبِيْنَ وَعَلٰى اَهْلِ طَاعَتِكَ

اَجْمَعِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ

مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ شَيْءٍ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

صَلَوَاتُ اللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَاَنْبِيَآئِهٖ وَرُسُلِهٖ

وَجَمِيْعِ خَلْقِهٖ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

وَ اِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ وَخَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَقَآئِدِ

الْغُرِّالْمُحَجَّلِيْنَ وَشَفِيْعِ الْمُذْنِبِيْنَ وَرَسُوْلِ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَ ذُرِّيّٰتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ
وَاَحْفَادِهٖ اَجْمَعِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّعَلٰى جِبْرِيْلَ وَمِيْكَآئِيْلَ
وَ اِسْرَافِيْلَ وَعِزْرَآئِيْلَ وَ مُنْكَرٍ وَّنَكِيْرٍ وَّ
اَلْمَلٰٓئِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَعَلٰى حَمَلَةِالْعَرْشِ وَالْكِرَامِ
الْكَاتِبِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّ عَلٰى اٰلِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّمْ صَلٰوةً تُنَجِّيْنَا بِهَامِنْ
جَمِيْعِ الْاَهْوَالِ وَالْاٰفَاتِ وَتَقْضِىْ لَنَا بِهَا جَمِيْعَ
الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَابِهَا مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّاٰتِ وَتَرْفَعُنَا
بِهَاعِنْدَكَ اَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَآ اَقْصَى
الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرَاتِ فِى الْحَيٰوةِ وَبَعْدَ
الْمَمَاتِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ
مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّمْ وَصَلِّ عَلٰى جَمِيْعِ الْاَنْبِيَآءِ

وَالْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ
وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا ط اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ
بِحَقِّ هٰذِهِ الصَّلٰوةِ اَنْ تُكْرِمَنِىْ بِرُؤْيَةِ مُحَمَّدٍ
خَاتَمِ النَّبِيِّنَ فِى الْمَنَامِ وَاَنْتَغْفِرَلِىْ وَلِوَالِدَىَّ
وَلِاُسْتَاذِىَّ وَلِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ اَلْاَحْيَآءِ مِنْهُمْ
وَالْاَمْوَاتِ وَتُجِيْرَنِىْ مِنْ عَذَابِكَ وَتُوْجِبَ لِىْ
رِضْوَانَكَ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا ط
بِرَحْمَتِكَ يَآاَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ☆

14 दुरूदे अकबर

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अस्सलातु व-स्सलामु अलय -क या रसूलल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय्क या नबीय-अल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या हबीब-अल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या खली-लल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-्क या सफीय-ल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या खयर खलकिल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या मक्कीयल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु

अलय-क या कुरयसीयल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या मदनीयल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या मनिखतारहुल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलयक या मनअजमतुल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या खलीफतुल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलयक या हजरतल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलयक या सफवतल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय्-क या हुज्ज़तल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय्-क या रहमतल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय्-क या नूरल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या मुहम्मदर्रसूलल्लाह। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या साहिबित्ताज़े वलमेअराज़े। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या साहिबिल हवजे वलकवसरे। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-्क या साहिब-श्शफाअति। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-्क या साहिब-न्निअमति। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या खातम-न्नुबूव्वति वलर्रिसालति। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-्क या नबीय्य-लमदनीय्यी। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या नबीय्यल-हरमीय्यी। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-्क या नबीय्यल-अरबीय्यी। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-्क या नबीय्यल-हिजाज़ीय्यी। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या नबीय्यत्तिहामीय्यी। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-्क या नबीय्यलहासिमीय्यी। अस्सलातु व-स्सलामु अलय-क या नबीय्यालकरसीय्यी। अस्सलातु व-स्सलामु अलय्क या नबीय्याज़्ज़ाकीय्यी। अस्सलातु व-स्सलाम अलय्-क या नबीय्यलउम्मीय्यी।

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुरसली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीन्नबीय्यीय -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुअमिनी-न।अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुत्तकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीस्सालिहीन। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुसलिहीन। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीस्सादिकी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुसद्दिकी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन

सय्यिदीस्साबिरी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीश्शाहिदी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमशहूदी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुराबिती -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुनज्जी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुफलिही -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुजीबी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीज़्ज़ाहिदी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीत्ताइबी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलखाइफीन। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलआतिफी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलबाकी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलकाइमी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीर्राकिई -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीस्साजिदी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुसल्ली -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलकारिई -न।अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलकाइदी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलअज़हदी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुअकिनी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुनाजी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलकानिइ -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलहाफिजि -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलजाइई -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलहामिदी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुरशिदी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीन्नाजिरीशन। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुबारिकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलकाईली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमनसूरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीन्नासिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीज्जाफिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन

सय्यिदीलवारिसी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुज़फ्फरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमरज़ूकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीरांगिबी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमशफिकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीस्साईही-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीत्तव्वाबी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमालूफी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुनीबी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलआबिदी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमसाकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुवाफिकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुराफिकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलफाईज़ी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदील्आमेलि-न अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलआइज़ी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीन्नाजी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीत्ताहिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीज्जाहिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीत्ताबिइ-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलफाजिली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीश्शाकिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुतताहिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुतीई-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमरहूमी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमग़फूरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलफाजिली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीत्तालिबी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमतलूबी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुतहहरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीस्सव्वामी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलकव्वामी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन

सय्यिदीलअव्वाबी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलवासिलि-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुहीब्बी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमहबूबी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमवरूदी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमकबूली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुश्ताकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलआशिकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमअशूकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलआरिफी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलवाइजी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमज़कूरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुनअमी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुअज्जमी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुबल्लिग़ी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुनादी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुअद्दिबी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुफस्सिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुअल्लिमी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलआकिली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलबाज़िली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलअज़वदी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुतअब्बिदी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुसतमिई-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुकर्रबी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुहरिंजी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुफरिंही-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुक्तरिबी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुतकाबिली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुसब्बिही-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुकद्दसी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन
सय्यिदीलमुरत्तिली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन

सय्यिदील्माअमूली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुहक्किकी-न।अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुदक्किकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीद्दाई -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीस्साईमी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुहसिनी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीज़्ज़ाकी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्कामिली -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीस्साबिकी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मस्बूकी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मअसूमी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमहफूजी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीश्शाफिई -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुशफ्फई-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील मुताअज्जिमी -न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुअल्लिफी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्अजहरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील् मुतासद्दिकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुवफ्फकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्आफी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मह्ज़ूनी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्म्शरूरि-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुनज़्ज़िली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुतबत्तिली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्आमिनी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील् मुतवाजिई-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुतफक्किरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमबतूली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुबज्जली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुमज्जदी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील मुतफाखिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुतहम्मिली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुतवस्सिमी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन

सय्यिदीलकासिमी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील मुकीमी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मु साफिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुहाजिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुजहरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्ग़ाफिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुबरहिनी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीस्साबिही-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्आलमी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलकानिती-न।अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्-मुनफिकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलर्राजी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीर्रऊफी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील् मुतहज्जिदी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुस्तग़फिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील् मुतअफ्फिफी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्हामिली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन शफीईल्मुज़निबी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुतदय्यिनी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुरजी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मादिही-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्अरफइ-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुबश्शिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुन्ज़िरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुतदब्बिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुनशिई-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुखलिसी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीज़्ज़ाकिरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलखाजिई-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्खाशिई-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीर्राजी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुअम्मिली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन

सय्यिदील्अवरई-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्खालिसी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीमुतवरिंई-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्अताहरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्अकरमी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्अनजबी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीमुकर्रमी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्अशजइ-'न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्अफजली-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्अनवरी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मअरूफी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीस्सालिकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीलमुआहिदी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्हादी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्महदीय्यी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदीमुकतबिसी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्मुमक्किनी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील्फाइकी-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन सय्यिदील् फातिही-न। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींम्मअलअरजि इज़ा बुद्दिलत, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींम्मअस्सुदूरि इज़ा हुस्सिलत, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींम्म अलहसनाति इज़ा उजहिरत, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींम्म अस्सय्यिआति इज़ा उबदिलत, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींम्म अस्सय्यिआति इज़ा उनज़िलत, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन मअलहाजाति इज़ा कुजियत, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींम्मअलजन्नति इज़ा उज़लिफत, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींम्म अन्नुफूसि इज़ा ज़ूव्विजत, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीनिल्अमीनि अला वहयिक सलातंल्ला हद्दलहा वला मुनतहा, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींम बिअददि कुल्लि मअलूमींल्लक व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदींव-वबारिक व सल्लिम, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन अजआफ मा सल्ला अलयहि जमीउल्मुसल्ली-न मिन-स्साबिकी-न वल मुअख्खरी-न अजआफं-म्मुजा अफतन अल्फ अल्फि अल्फिन फीअलफि अलफिंव-व

सल्लि कज़ालिका अला जमीइल अंम्बियाइ वल मुरसली-न व अलल मलाइकतिल मुकर्रबी-न व अला अहलि ताअतिक अजमई-न, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींव-व अला आलि मुहम्मदींम बिअददि कुल्लि सयइन फीद्दुनया वल आखिरति सलवातु-ल्लाहि व मलाइकतिही व अंमबीयाइही व रसूलिही वजमीइ खलकिही अला मुहम्मदीन सय्यिदिल् मुरसली-न व इमामिल मुत्तकी-न व खातमिन्नबीय्यी-न व काइदील् गुर्रीलमुहज्जली-न व सफीईल्-मुज़निबी-न व रसूलि रब्बील् आलमी-न व अला आलिही व अस्हाबिही व ज़ुर्रीयातिही व अहलि बयतिही व अहफादिही अजमई-न, अल्लाहुम्म सल्लि अला जीबरी-ल व मीकाइ-'ल व इस्राफी-ल व इज़राई-ल् व मुनकरिंव-वल् मलाइकतिल् मुकर्रबी-न व अला हमलतिल-अर्शि वल किरामील-कातिबी-न, अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदींव-व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदींव-व बारिक् व सल्लीम सलातन तुनज्जीना बिहा मीन जमीईल् अहवालि वल आफाति व तु-त-हहिरुना बिहा मीन जमीई-स्सय्यिआति व तरफउना बिहा इन्दक अअल-द्दरजाति व तुबल्लिगुना बिहा अक्सल-ग़ायाति मीन जमीईल खयराति फील हयाति व बअदल ममाति। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींव-व अला आलि मुहम्मदींव-व बारिक व सल्लीम व सल्लि अला जमीईल अंम्बीयाइ वल मुरसली-न व अला ईबादिक-स्सालिही-न व सल्लीम तसलीमन कसीर्न कसीरा। अल्लाहुम्म इन्नी असअलुक बिहक्की हाज़िहीस्सलाति अन तुकरिमनी बिरूयति मुहम्मदीन खातमिन्नबीय्यीन फील मनामि व अनतग़्फिरली वलीवालिदय्य वलिउस्ताज़िय्य वलिजमीईल मुअमिनी-न वल मुअमिनाति वल मुस्लिमी-न वल मुस्लिमातिल-अहयाइ मीनहुम वल अमवाति तुजीबनी मीन अज़ाबि-क वतूजिब लीरीजवान-क व सल्लीम तस्लीमन कशीरन कशीरा। बिरहमतिक याअरहमररांहिमी-न।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है।दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ रसूल अल्लाह के। दुरूद ओर सलाम हो तुम पर ऐ नबी अल्लाह के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ खलील (दोस्त) अल्लाह के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ बरग़ुज़ीदा (पसंद किये हुए) अल्लाह के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ सबसे

बेहतर मखलूक अल्लाह के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ मक्की अल्लाह के। दरूद और सलाम हो तुम पर ऐ कुरयशी अल्लाह के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ मदनी अल्लाह के।दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ कि जो हैं पसन्द किए हुए अल्लाह के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ कि जिसे अजमत दी अल्लाह ने। दरूद और सलाम हो तुम पर ऐ खलीफा अल्लाह के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ हाजिर होनेवाले हुजूर अल्लाह के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ बरग़ूजीदा अल्लाह के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ बुरहान (दलील, प्रमाण) अल्लाह के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ रहमत अल्लाह के। दरूद और सलाम हो तुम पर ऐ नूर अल्लाह के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) रसूल अल्लाह के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ साहिब ताज ओर मे'राज के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ साहिब हौज व कौशर के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ साहिब शफाअत के। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ नबी मदीना वाले। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ नबी हरम वाले। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ नबी अरब के रहने वाले। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ हिजाज़ वाले। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ नबी तहामा वाले। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ नबी हाशिमी। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ नबी कुरयशी। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ नबी पाक। दुरूद और सलाम हो तुम पर ऐ नबी उम्मी

अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रसूलों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाह अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं नबीयों के। या इलाही दरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मोमीनों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं परहेज़गारों के। या इलाही दरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं नेकोकारों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं इसलाह करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो

सरदार हैं सच्चों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तसदीक करनेवालों के। या इलाही दरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं सब्र करनेवालों के। या इलाही दरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं गवाहों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार है हाज़िर किए हुओं के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाह अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं जोड़नेवालों क। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं निजात दिलानेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं फलाह वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं कबूल करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं परहेज़गारों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तौबा करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं डरनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं नरमी करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं (खौफे खुदा से) रोने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं कयाम करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रुकूअ करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं सज्दा करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं नमाज़ीयों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं कारीयों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर

जो सरदार हैं बैठनेवालों (नमाज़ में का'दा की हालत) के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाह अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं ज़ाहिदों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं यकीन दिलानेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं हमरोज़ों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं कनाअत करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं हाफिज़ों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं भूखों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं हम्द करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुरशिदों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं देखने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं बरकत वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुवह्हीदों (खुदा को एक माननेवालों) के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं बोलने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मदद दिए गयों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मदद करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं फतहमंदों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं फलाह वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं वारिशों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं फतह दिये गयों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रिज़्क दिये गयों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रग़बत वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं शफकत करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रोज़ा रखनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं ताईबों (जिन्होंने तौबा की) के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं उलफत करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रुजूअ करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं आबिदों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाह अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मिशकीनों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मवाफिकों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं नरमी करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुराद को पहुँचने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं अमल करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं पनाह लेनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं निज़ात पानेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं पाकों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं ग़ालिब होनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं ताबेदारों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं फजीलत वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं शुक्र करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं पाकीज़गी पसंद करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं फरमाँबरदारों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रहम किए हुओं के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मग़फुरों (वो जो बख्शे गये) के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तालिबों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मतलूबों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाह अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं पाक किये गयों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रोज़ादरों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं कियाम करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रुजूअ करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं जोड़ने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुहब्बत करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं दोस्तों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं वारिद होनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मकबुलों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुस्ताकों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं आशिकों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मा'शूकों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व

सल्लम पर जो सरदार हैं आरिफों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं वाअज करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं ज़िक्र किये गयों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तवंगरों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं अजमत वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तबलिग़ करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुनादी करने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं अदब करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तफसीर करने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं सिखाने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं अक्लमंदों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं खर्च करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं शखियों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं इबादत करनेवालों के। या इलाही दरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं सुनने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुकर्रबों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रग़बत दिलाने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार है खूश करने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं नज़दिकी वालों (अल्लाह से) के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रुबरू बैठने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तस्बीह पढ़ने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं लोगों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं आहिस्ता कुरआन पढ़ने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं उम्मीद दिलाए गयों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तहकिक करने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं बारिकबीनों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं बुलाने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रोज़ादारों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं नेकों वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं पाकों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं कामिलों वालों के। या इलाही दरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं पहलों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं पिछलों वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं बेगुनाहों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं हिफाजत किये गयों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं शफाअत करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाह अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं शफाअत किये गयों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं अज़मत वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं उलफत करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं ग़ालिबों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तसदिक करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तौफिक दिये गयों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुआफ करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं गमनाकों वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं खुश किये गयों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं उतारने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुमताज़ों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं अमन वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मेहमान नवाज़ों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं फिक्र करने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं आलिमों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं इज्जत किये गयों वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं आली शान वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं फख्र करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तहम्मुल (बरदास्त) करने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं दाग़ लगाने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तकसीम करनेवालों के। या इलाही दुरूद

नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुकीमों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुसाफिरों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुहाजिरों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं ग़लबा पाये गयों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं बख्शने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं हुज्जत करने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तस्बीह पढ़नेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं जहांनों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं फरमाबरदारों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं खर्च करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं राजी होने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मेहरबानी करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तहज्जुद पढ़ने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं बख्शिश मांगने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं सवाल से बचने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं बोझ उठाने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सिफारिश करने वाले हैं गुनाहगारों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं दीनदारों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं राजी करनेवालों के।

या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं सफात करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं बुलन्द मरतबा वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं खुश खबरी देनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं डराने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तदबीर करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं परवरिश करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुखलिशों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं जिक्र करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं बोझ आजिज़ी करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं खुशूअ करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं उम्मीदवारों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तामिल करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं परहेज़गारों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं खालिशों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं परहेज़गारों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं पाकों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं इज़्ज़त वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं शरीफों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो

सरदार हैं निजात पानेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं बहादुरों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं फजीलत वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं नूर वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं नेकोकारों वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं सालिकों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं अहद करनेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं हिदायत वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं राह पाने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रोशनी पकड़ने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मरतबा पानेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं फौकियत पानेवालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं खोलने वालों के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर साथ जमीन के जब बदली जाये। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर साथ सीनों के जब खोले जायें। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर साथ नेकीयों के जब जाहिर की जावें। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर साथ बुराईयों के जब बदली जावें। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जब छोड़ दी जावे। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर साथ हाजतों के जब कजा की जावें। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर साथ

बहिश्त के जब करीब की जावे। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर साथ नफ्सों के जब मिलाए जावें। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो अमानतदार हैं उनपर वह्यी तेरी, उनपर दरुद बेहद और बेइन्तहा। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर साथ अदद के जो मालूम है तुझको और औलाद पर हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की और बरकत व सलाम भेज। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर कई गुना उस चीज का कि दुरूद पढ़ें उनपर सब दरूदख्वाँ अगले और पीछले दोगुना कई लाख और दुरूद नाजिल फरमा इस तरह उपर तमाम अम्बीया व रसूलों पर और मुकर्रब फरिश्तों पर और तमाम उनपर जो अहले ताअत हैं। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और औलादे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर इतनी गिनती के साथ जो हर चीज है दुनिया व आखिरत में हैं रहमतें अल्लाह की और फरिश्तों पर और अम्बीया पर और रसूलों पर और उपर तमाम खिलकत के, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो हैं सरदार रसूलों के पेशवा हैं परहेज़गारों के और जो हैं नबूव्वत को (सीलसीला) खत्म करने वाले और खींचने वाले हैं रौशन पेशानी और हाथ पाँव वालों के और शफाअत करने वाले गुनाहगारों के और रसूल हैं सारे जहाँनों के परवरदिगार के और उनकी औलाद पर और उनके सहाबा पर और उनके खानदान पर और उनके घर वालों पर और उनके नवासों सब पर, या इलाही दुरूद नाजिल फरमा जिब्रईल अलयहिस्सलाम पर और मीकाईल अलयहिस्सलाम पर और इसराफील अलयहिस्सलाम पर और इज़राईल अलयहिस्सलाम पर और मुनकिर व नकीर और मुकर्रब फरिश्तों पर और उपर हामिलीने-अर्श के और किरामिन कातेबीन पर या इलाही दुरूद नाजिल फरमा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और औलादे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और बरकत व सलामती फरमा ,ऐसा दुरूद के खलासी दे हमको साथ उसके तमाम अहवाल और आफतों से और पूरा करे तु हमारे वास्ते तमाम हाजतों को और पाक कर हम को तमाम बूराइयों से और बूलन्दी अता फरमा हमको अपने नज़दीक आ'ला

दरज्जों पर और पहुँचा दे हमको मन्ज़िले मकसूद पर तमाम नेकियों के साथ जिन्दगानी के और बाद मरने के। या इलाही दुरूद नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और उनकी औलाद पर और बरकत नाजिल फरमा व सलामती और दुरूद नाजिल फरमा तमाम अंम्बीया पर व रसूलों पर और तेरे नेक बन्दों पर और सलामती फरमा सलाम बहुत बहुत। या इलाही मैं मांगता हुँ तुझसे बतुफैल इस दुरूद के ये कि इज़्ज़त दे तु मुझे नवाज दीदारे-मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से जो खतमुन्नबूव्वत हैं ख्वाब ही में और बख्श दे तु मुझे, मेरे माँ बाप को और मेरे उस्तादों को और तमाम मोमिन पर मर्दों व मोमिन औरतों और मुसलमान मर्दों व मुसलमान औरतों को जो जिन्दा हैं और जो मुर्दा हैं और बचा तु मुझको तेरे अज़ाब से और वाजिब कर दे मेरे वास्ते तेरी रजामन्दी और सलामती अता कर और सलाम बहुत बहुत। तेरी रहमत के साथ ऐ रहम करने वालों से भी बड़े रहम करने वाले।

15 दुरूदे मुस्तगास

मुस्तगास का मतलब इल्तिजा और फरयादरसी है, और क्युँकि इस दुरूद शरीफ में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की सिफाते जमीला की बीना पर बारगाहे इलाही में हुजूर पर दुरूद नाजिल करने यानी नुजूले रहमत की बार बार फरयाद की गयी है इसलिए इसे दुरूदे मुस्तगास कहा जाता है

ये मुकर्रम व मुअज्जम दुरूद शरीफ हुजूर महबूबे सरवरे काएनात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम उम्मुल मो'मीनीन सय्यदा आयशा सिद्दीका रदीअल्लाहु अन्हा कि जबाने हक तर्जमान से बयानसुद है। ये तमाम अवरादे वजाइफ का सरताज है और अफजल तरीन विर्द व वजीफा है। ये दुरूद शरीफ बड़ी बरकत और फजीलत का हामिल है। इसका हर लफ्ज हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की सिफतों से भरा हुआ है इसलिए हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को चाहने वालों के लिए निहायत ही आ'ला वजीफा है। इसके फजाइल व फवायद (फायदे) बेशुमार और बयान से बाहर हैं। इसका विर्द सहाबा किराम, ताबेईन, तबेताबेईन रदीअल्लाहु अयलहीम अजमईन और तमाम औलिया-ए-कामिलिन, मुतकद्दमीन व मुतआख्खरीन से चला आ रहा है।

ये दुरूद पाक सिलसिला-ए-चिशतीया के सालिकीन और

ख्वाजगान में बहुत पढ़ा जाता है, और अकसर सिलसिला-ए-चिश्तीया के बुजूर्गों ने इस दुरूद शरीफ की अपने मुरीदों को इजाजत दी। हजरत ख्वाजा नूर मुहम्मद महारवी, हजरत ख्वाजा शाह सुलेमान तौंसवी, हजरत ख्वाजा शमसुद्दीन सियालवी और उनके खुलफा-ए-इजाम में ये दुरूद शरीफ बड़ा मुस्तअमल रहा है। हजरत ख्वाजा-ए-ख्वाजगान शेख शम्सुद्दीन रहमतुल्लाहि अलयहि फरमाते हैं किये दुरूद मुस्तगास शरीफ वाकई उम्मुल मो'मीनीन आयशा सिद्दीका रदीअल्लाहो अन्हा से मनसूब है। जब हुजूर सरवरे काएनात सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम गज़्वाए बनी मुस्तलक पर तशरीफ ले गये थे तब उस सफर में उम्मुल मो'मीनीन हजरते आयशा सिद्दीका रदीअल्लाहु अन्हा भी हमराह थी। वापसी में मदीना मुनव्वरा से करीब एक जगह पर पड़ाव किया तो उम्मुल मो'मीनीन हजरत आयशा सिद्दीका रदीअल्लाहो अन्हा हौद्ज से नीकल कर कजा-ए-हाजत के लिए जंगल की तरफ तशरीफ ले गईं, वहाँ कहीं आप के गले का हार गुम हो गया, जिसको तलाश करते कुछ देर हो गई और काफिला रवां हो गया जब आप वापस पड़ाव के मुकाम पर आईं तो वहाँ किसी को ना पाया चुनान्चे आपने सोचकर ये राय कायम की कि यहीं ठहरी रहुं , क्युँकि आगे जाकर काफिले वाले हौद्ज में मुझे ना पायेंगे तो फिर यहीं ढुंढ़ने आयेंगे । युँ आपने रात भर वहीं कयाम फरमाया। अल सुबह हजरत सफवान बीन मुअतल रदीअल्लाहु तआला अन्हु जो लश्कर की गिरी पड़ी चीजों को तलाश करने की खिदमत पर माअमूर थे वहाँ पहुँचे और उँट की मुहार पकड़ कर हजरते आयशा सिद्दीका रदीअल्लाहु तआला अन्हा को उँट पर बीठा दिया, आप उँट पर सवार हो गयीं तो मुहार थामकर आगे हो लिए और दोपहर तक काफिले से जा मिले।

इस वीकिये को लेकर अब्दुल्लाह इब्ने उबई ने झुठी अफवाह फैलाना शुरू कर दी और कुछ भोले भाले मुसलमान मर्द व औरतें भी इसके मुताअल्लिक गुमराहकुन सुनी सुनाई बातों से मुताअसिर होकर इस तरह की बातें बनाने लगे और शुब्हात का चर्चा करने लगे। आं हजरत सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया कि जब तक इस हकीकत पर बजरिया वह्यी इत्तला ना होगी, कुछ ना फरमायेंगे। मगर जब उम्मुल मो'मीनीन हजरत आयशा सिद्दीका रदीअल्लाहु अन्हा को इस बात खबर हुई तो वो रात दिन रोती रहीं, बीमार कुछ पहले ही थीं

शिद्दते गम से और ज्यादा निढाल हो गईं और इजाजत लेकर मायके चली गईं। उस वक्त इस परेशानी के आलम में सिद्दते गम हिज्र व फिराके महबूबे खुदा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम में इस पाक दामन आशिका व महबूबा-ए-रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने ये मख्शूस दुरूदे मुस्तगास शरीफ तरतीब फरमाया जो कयामत तक के मुसलमानों के लिए हर मुश्किल का हल ओर हर दर्द की दवा है, और इस दुरूद पाक का विर्द करती रहीं या'नी इस तरह हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जाते-बाबरकात पर दुरूद व सलाम पढ़ते हुए अल्लाह तआला व जाते मेहबूबे बारी तआला के हुजूर में इस तरह अपना इस्तगासा (इन्साफ चाहना) व फरियाद करती रहीं, आखिर अल्लाह तआला ने उन्हें आ'ला दरजा इस्तिजाब (इल्तिजा सुनकर कबूल करना) अता फरमाया और सूरह नूर आप रदीअल्लाहो अन्हा के हक में बरा'त (बख्शिस) नाजिल फरमाते हुए दस आयतें आपकी पाक दामनी, शान व अजमत में नाजिल फरमाई। इस तरह हुजूर शहंशाहे कौनैन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की हुजूर में आप का दरजा व मुकाम और ज्यादा बुलंद हो गया।

ये दुरूद शरीफ जो उम्मुल मो'मीनीना हजरत आयशा सिद्दीका रदीअल्लाहु अन्हा जैसी बुलंद शान हस्ती-ए-मुकद्दस की जबाने हक तरजुमान से बयानसुद है, इसके फजाइलो-बरकात कैसे किसी के तहरीर की जद में आ सकते हैं। बादशाहों का कलाम भी कलामों का बादशाह होता है, लिहाजा इससे बढ़कर और कोई वजीफा भला क्या होगा।

ये दुरूद मुकर्रम व मुअज्जम उम्मुल मो'मीनीन हजरत आयशा सिद्दीका रदीअल्लाहु अन्हा से खासुल खास में सीना-ब-सीना चला आ रहा था। ताज़दारे फक्रे विलायत हजरत सय्यदिना अहमद कबीर रिफाई रहमतुल्लाहि अलयहि ने जो हुजूर शहंशाहे गौसुल-शकलैन अब्दुल कादीर जिलानी रदीअल्लाहु तआला अन्हु के हम जमाना और हुजूर से ही फैजयाफ्ता हैं, आपने इसके बिखरे मोतीयों को चुन कर पीरोकर किताबत की शक्ल में तहरीर फरमाकर अकसर अहलुल्लाह अहले मा'रिफत को बख्शे और इस तरह नेअमते बेबहा को आम कर दिया, इस दुरूद शरीफ में उम्मुल मो'मीनीन हजरत आयशा सिद्दीका रदीअल्लाहु अन्हा का नाम मुबारक भी और दीगर कुछ इजाफा आपने

ही किया है जो सोने पे सुहागा के मिस्ल ही है।

अगर किसी घर में एक हफ्ते रोज ये दुरूद शरीफ पढ़ा जाये तो उस घर में इत्तिफाक और आपस में मुहब्बत रहती है और घर के हर काम में खैर व बरकत कायम रहती है। अगर औलाद ना फरमान हो तो सात दिन तक दुरूदे मुस्तगासा पढ़कर पानी में दम करके पीला दें इन्शाअल्लाह औलाद फरमाबरदार हो जाएगी। कारोबार के मुकाम पर बैठकर इसे रोजाना एक बार पढ़ने से रिज़्क में इजाफा होता है। गम, दुख, मुसीबत या आफत में मुब्तिला शख्स ४१(इक्तालीस) दिन तक बाद नमाज़े फज्र मस्जिद में बैठकर ये दुरूद शरीफ पढ़े, इन्शाअल्लाह हर गम व आफत और परेशानी से निजात मिलेगी। अगर किसी खास जायज दुनियावी काम के लिए दुआ करनी हो और ख्वाहिश हो के वो दुआ जरूर कबूल हो तो नमाज़े जुम्आ के बाद मस्जिद में बैठकर ये दुरूद शरीफ ग्यारह (११) बार पढ़ें और सज्दा रेज़ होकर अल्लाह के हुजूर दुआ करें इन्शाअल्लाह दुआ जरूर कबूल होगी, और जब तक दुआ कबूल ना हो ये अमल जुम्आ दर जुम्आ जारी रखें। अगर किसी फरीक (समुह, पक्ष) में लड़ाई झगड़ा रहता हो तो उन्हें दुरूदे मुश्तगास का दम सुदा पानी पिला दें दोनों फरीकों में प्यार की फिज़ा कायम हो जायेगी।

इस दुरूद शरीफ के खैरो-बरकत में दो कामों का होना बहुत नुमाया है, एक तो ये कि जो शख्स इसे रोजाना या जब मौका मिले तब पढ़ता रहे, उसे दुनिया में इज्जत मिलेगी, और दुसरा ये कि जो हाजत जहन में रखकर पढ़ा जाये वो अल्लाह की रहमत से पूरी हो जाती है। रूहानीयत हासिल करने के लिए भी ये दुरूद शरीफ बहुत अकसीर है, लिहाजा जो शख्स ये चाहे कि वो अल्लाह के रूहानी रास्तों पर गामजन हो जाए और उसपर असरारे मा'रिफत जाहिर हों तो उसे चाहिए कि गाहे-बगाहे इस दुरूद शरीफ की दा'वत पढ़ता रहे। दा'वत पढ़ने का तरीका ये है कि बुध और जुमेरात की दरम्यानी रात में तहज्जुद के वक्त बेदार होकर नमाज़े तहज्जुद पढ़कर एक बार ये दुरूद शरीफ पढ़े अगले रोज़ दो बार पढ़े इस तरह हर रोज़ एक एक का इजाफा करता रहे ग्यारहवें दिन ग्यारह बार ये दुरूद शरीफ पढ़े फिर अगले रोज़ से यानी बारहवें दिन से एक एक कम करता जाये, बारहवें दिन दस तेरहवें दिन नौ बार युँ इक्कीस दिन तक पढ़े इक्कीसवें दिन एक बार पढ़कर एक

दा'वत खत्म करे। इस तरह रूहानी असरार खुलना शुरू हो जायेंगे, ज्यों ज्यों दा'वतों की कसरत होगी रुहानी मुशाहिदात की दौलत से मालामाल होता चला जाएगा।

۱۵ درود مستغاث

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ زَیَّنَ النَّبِیّنَ بِحَبِیْبِهِ الْمُصْطَفٰی
وَمَنَّ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ بِنَبِیِّهِ الْمُجْتَبٰی الصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِهٖ مُحَمَّدٍ خَیْرِ الْوَرٰی ط
اَلْمُسَیَّرِبِهٖ مِنْ فَوْقِ الْعَرْشِ اِلٰی تَحْتِثَّرٰی ط
اَلْحَمْدُلِلّٰهِ عَلٰی مَامَضٰی وَالْحَمْدُلِلّٰهِ عَلٰی مَابَقٰی
وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُلِهٖ مُحَمَّدٍ خَیْرِالْوَرٰی
مَدَحْتُکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ
عَلَی النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ اَنْتَ خِیَارُاللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی

حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ
یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط وَارِثُ الْاَنْبِیَآءِ رَسُوْلٌ صَاحِبُ
الْوَحْیِ اَحْمَدُ شَفِیْعُ اللّٰهِ اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ
اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ
ط رَسُوْلٌ سَیِّدُالْکَوْنَیْنِ وَ الثَّقَلَیْنِ وَاِمَامُ الْقِبْلَتَیْنِ
شَفِیْعُ الْاُمَمِ فِی الدَّارَیْنِ فَتَّاحُ فَاتِحُ اللّٰهِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلنَّبِیُّ
اَلْمُصْطَفٰی رَسُلٌ سِرَاجُ الْعٰلَمِیْنَ مَحْمُوْدٌمُّطَیَّبُ
اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَسَّیِّدُ الْمُعَلّٰی
رَسُوْلٌنَبِیُّ الْخَافِقَیْنِ قَاسِمٌ خَیْرُ خَلْقِ اللّٰهِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ

وَالسَّلَامُ عَلَيْکَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَعَانُ يَا
رَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلشَّفَاعَاتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْخَلَاصُ
يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَوْلٰى مِنْ عِبَادِاللّٰهِ اَفْضَلُنَارَسُوْلُ نَبِيٌّ
صَاحِبُ الدَّارَيْنِ خَادِمُ طَيِّبُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ
اِلٰى حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْکَ
يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلنَّبِيُّ الْمُزَكّٰى رَسُوْلُ تَاجُ
الْحَرَمَيْنِ اٰمِرُنَّاهِ نَّاجٍ طَاهِرُاللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى
حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْکَ
يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط هٰذَانَارَسُوْلُ جَدُّ الطَّيِّبَيْنِ الْحَسَنِ
وَالْحُسَيْنِ دَاعٍ مُّطَهَّرُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى
حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْکَ
يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
اَلْمُسْتَعَانُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلشَّفَاعَاتُ يَارَسُوْلَ

اللّٰهِ ط اَلْخَلَاصُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط نَبِيٌّ مُّخْتَارٌ مُّرْتَضٰى
اِمَامٌ رَّسُوْلٌ مُّقْتَدٰى الْاَئِمَّةِ الْمَهْدِيِّيْنَ هَادٍ مُّبِيْنُ اللّٰهِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ عَلَيْکَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط هٰذَانَارَسُوْلٌ
بِهِدَايَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى مُهْدِى الْاُمَّةِ مِنَ الضَّلَالَةِ
مُهْتَدٍ مُّطِيْعُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى حَضْرَةِ اللّٰهِ
تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْکَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
حَبِيْبُنَارَسُوْلٌ مُّهْدِى الْاُمَّهِ مُحَمَّدٌ وَّرَسُوْلٌ صَفِيٌّ
حُجَّةُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْکَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط ۵
اَلْمُسْتَغَاثُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْ مُسْتَعَانُ
يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلشَّفَاعَاتُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
اَلْخَلَاصُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ مُحَمَّدٌ اَحْمَدُ

حَامِدٌ مَّحْمُوْدٌ مَّحْبُوْبٌ مُّحِبُّ اللّٰهِ وَمُحِبُّنَا رَسُوْلٌ

كَرِيْمُ اللّٰهِ مَرْضِيٌّ حَبِيْبُنَا رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ مُّرْتَضٰى

خَلِيْفَةُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط رَسُوْلُنَا

رَسُوْلٌ عَلَى الدَّوَامِ نَبِيٌّ طٰهٰ يٰسٓ قَآئِمٌ حَامِدُاللّٰهِ ط

اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ

وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط

اَمِيْرُنَا رَسُوْلٌ وَّنَبِيٌّ كَرِيْمٌ مُّحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ اِسْمُهٗ

اَحْمَدُ نَاصِرٌ كَلِيْمُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ

اِلٰى حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ

يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط

اَلْمُسْتَعَانُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَشْفَاعَاتُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ

ط اَلْخَلَاصُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط مُعِيْنُنَا رَسُوْلٌ وَّدُرِّنَبِيٌّ

الْيَاسِيْنُ اِمَامٌ اَمِيْنُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى حَضْرَةِ

اللّٰهِ تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ

ط مُصَدِّقُنَا رَسُوْلٌ وَّ حَبِيْبٌ نَّبِيٌّ مُّزَّمِّلٌ م بَيَانٌ رَّسُوْلُ

اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ

وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط شَاهِدُنَا شَافِعُنَا

رَسُوْلٌ وَّنَبِيٌّ مُّدَّثِّرٌ صَاحِبُ الْقُرْاٰنِ نُوْرُ اللّٰهِ ط

اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ

وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ

يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَعَانُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط

اَشْفَاعَاتُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْخَلَاصُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ

ط مُذَكِّرُنَا رَسُوْلٌ مُّعَطَّرُالرُّوْحِ مُطَهَّرُالْجِسْمِ

بَآرٌجَوَادُاللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط سُلْطَانِ
الْاَنْبِیَآءِ وَبُرْھَانُ الْاَصْفِیَآءِ مُفَخَّرُنَا رَسُوْلٌ صَاحِبِ
الْفُرْقَانِ عَلِیٌّ مَّکِّیٌّ شَکُوْرُ اللّٰہِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی
حَضْرَۃِ اللّٰہِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ
یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط اِمَامُ الْاَتْقِیَآءِ نَاصِرُنَا رَسُوْلٌ
صَاحِبُ الْکَوْثَرِ مُرَبِّ مَّدَنِیٌّ مُّنِیْرُ اللّٰہِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَۃِ اللّٰہِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوۃُ
وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ
یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط اَلْمُسْتَعَانُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط
اَشَّفَاعَاتُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط اَلْخَلَاصُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ
سِرَاجُ الْاَوْلِیَآءِ ضِیَآؤُنَا رَسُوْلٌ صَاحِبُ الْمِیْزَانِ
اَبْطَحِیٌّ قَرِیْبُ اللّٰہِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَۃِ اللّٰہِ
تَعَالٰی اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط

بُرْھَانُ الْاَصْفِیَآءِ رَسُوْلٌ صَاحِبُ الْبُرَاقِ سَیِّدُالْقَوْمِ
عَرَبِیٌّ یَّتِیْمُ اللّٰہِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَۃِ اللّٰہِ تَعَالٰی
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط شَفِیْعُنَا
رَسُوْلٌ مُّجْزِیٌّ مَّھْدِیٌّ قُرَیْشِیٌّ شَھِیْدُاللّٰہِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَۃِ اللّٰہِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوۃُ
وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ
یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط اَلْمُسْتَعَانُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط
اَشَّفَاعَاتُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط اَلْخَلَاصُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ
ط اِمَامُ الْمُؤْمِنِیْنَ وَزِیْنَۃُالْاَنْبِیَآءِ وَالْمُرْسَلِیْنَ
وَوَسِیْلَتُنَا رَسُوْلٌ خَادِمُ الْفُقَرَآءِ حِجَازِیٌّ نَّذِرُاللّٰہِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَۃِ اللّٰہِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوۃُ
وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط خَتْمُ الْاَنْبِیَآءِ
اَحْمَدُوَخَاتِمُ النَّبِیِّیْنَ رَسُوْلٌ مَّاحِیَ الْکُفْرِوَالْبِدْعَۃِ

مُحَمَّدُبْنُ عَبْدِاللهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ
تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
صَدَقَ رَسُوْلُنَا مُرْسَلٌ مُّتَوَسِّطٌ رَّسُوْلٌ رَّحِیْمُ اللهِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ
یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَعَانُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
اَشَّفَاعَاتُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْخَلَاصُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ
ط سَیِّدُنَا رَسُوْلٌ مُّسْتَغِیْثٌ مُّقْتَصِدٌ حَلِیْمُ اللهِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَغِثْنَا یَا رَسُوْلَ
الثَّقَلَیْنِ اَنْتَ حَقٌّ مُّبِیْنُ اللهِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ
عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط مندرجہ ہر کلمہ ۳ بار پڑھا جائے

اَلْمُسْتَغَاثُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَعَانُ یَارَسُوْلَ
اللّٰهِ ط اَشَّفَاعَاتُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُشَفَّعُ یَا رَسُوْلَ
اللّٰهِ ط

وَاعِظُنَا رَسُوْلٌ وَّرَسُوْلُهُ الْمُجْتَبٰی صَاحِبُ الرِّسَالَةِ
اَوَّلُ قَدِیْمٌ حَبِیْبُ اللهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ
اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ
ط اَلْمُسْتَغَاثُ یَا رَسُوْلَ اللهِ ط اَلْمُسْتَعَانُ
یَارَسُوْلَ اللهِ ط اَشَّفَاعَاتُ یَارَسُوْلَ اللهِ ط
اَلْخَلَاصُ یَارَسُوْلَ اللهِ ط اَکْرَمُنَا رَسُوْلٌ صَاحِبُ
الشَّرِیْعَةِ وَکَاشِفُ الْغُمَّةِ اٰخِرٌ عَزِیْزُ اللهِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ
عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَهْلُ التَّقْوٰی وَبُرْهَانُ
الْاَتْقِیَآءِ رَشِیْدُنَا رَسُوْلٌ صَاحِبُ الطَّرِیْقَةِ

شِفَآءٌفَصِحُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ
تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
اٰمَنَّابِکَ اَنْتَ نَبِیُّنَا رَسُوْلٌ صَاحِبُ الْحَقِیْقَةِ
مُضَرِّیٌّم بَشِیْرٌنَّذِیْرُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ
اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ
ط اَلْمُسْتَغَاثُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَعَانُ
یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَشَّفَاعَاتُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
اَلْخَلَاصُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اِمَامُ الْاُمَمِ مُقَدِّمُنَا
رَسُوْلٌ صَاحِبُ الْمَعْرِفَةِ بُرْهَانُ رَحْمَةُاللّٰهِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُوَالسَّلَامُ
عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط کَبِیْرُنَارَسُوْلٌ صَاحِبُ
الْمِنَّةِ ظَاهِرٌ کَرِیْمُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ
اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ

ط سَنَدُالْعَاصِیْنَ رَسُوْلٌ صَاحِبُ الْجَنَّةِ فَارِغُ
جَهَنَّمَ سُلْطَانٌ تِهَامِیٌّ مُّؤْمِنُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی
حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ
یَارَسُوْلَ اللّٰهِط اَلْمُسْتَغَاثُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ط
اَلْمُسْتَعَانُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَشَّفَاعَاتُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
اَلْخَلَاصُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط فَقِیْهُنَارَسُوْلٌ صَاحِبُ
الصِّرَاطِ مُبَلِّغٌ عَاقِبُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی
حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ
یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَنْتَ وَلِیُّنَا رَسُوْلٌ صَاحِبُ
الشَّفَاعَاتُ بَاذِلٌم بَاطِنٌ خَلِیْلُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ
اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ
عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط شَفِیْعُ عَوَامِنَا رَسُوْلٌ
صَاحِبُ التَّاجِ وَالْمِعْرَاجِ مُحَلِّلُ بِاِذْنِ اللّٰهِ ط

اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ
عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ یَارَسُوْلَ
اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَعَانُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَشَّفَاعَاتُ
یَارَسُوْلَ لاللّٰهِ ط اَلْخَلَاصُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
وَمِنَالنَّارِ مُخَلِّصُنَا رسُوْلٌ صَاحِبُ الْمِحْرَابِ
حَاشِرُنَّبِیُّ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ
تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
اَفْضَلُ مِنَ النَّبِیّٖنَ وَالصِّدِّیْقِیْنَ وَالشُّهَدَآءِ
وَالصّٰلِحِیْنَ مَحْبُوْبُنَا رسُوْلٌ صَاحِبُ الْمِنْبَرِ
خَطِیْبُ رَحْمَةِ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ
تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
مُبَشِّرُنَا رسُوْلٌ صَاحِبُ الْبَیْتِ عَامِرُ کَعْبَةِ اللّٰهِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ

وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ
یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَعَانُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
اَشَّفَاعَاتُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْخَلَاصُ یَارَسُوْلَ
اللّٰهِ ط اَکْبَرُنَارَسُوْلٌ صَاحِبُ الْمِعْرَاجِ عَالِمٌ غَنِیٌّ
اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط نَبِیُّ اٰخِرِالزَّمَان
رَسُوْلٌ صَحِبُ الْاِجْتِهَادِ مُنْتَقِمُ مُکَرَّمُ اللّٰهِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی اَلصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط وَفِی الدِّیْنِ
صَادِقُنَا رَسُوْلٌ صَاحِبُ الْقِیٰمَةِنَا طِقٌ م بِالْحَقِّ
شَفِیْعُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰی حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
اَلْمُسْتَغَاثُ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَعَانُ یَارَسُوْلَ

اللّٰهِ ط اَشَّفَاعَاتُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلْخَلَاصُ
يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط مُشَفَّعُ الْاُمَّةِ يُعِيْنُنَا بِاشَّفَاعَةِ رَسُوْلٌ
صَاحِبُ النُّبُوَّةِ مُحَرَّمٌ نَّبِيُّ اللّٰهِ اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى
حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ
يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط نَبِيُّ الرَّحْمَةِ سَابِقُنَا رَسُوْلٌ
صَاحِبُ الدَّارَيْنِ حَرِيْصٌ عَلَى الطَّاعَةِ رَئُوْفُ اللّٰهِ
ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط سَيِّدُالْجِنِّ
وَالْاِنْسِ نَاهٍ نَّبِيُّنَا رَسُوْلٌ صَاحِبُ الْاُمَّةِ
هَاشِمِيٌّ كِرَامَةُاللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ اِلٰى حَضْرَةِ اللّٰهِ
تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط
خَادِمُ الْحَرَمَيْنِ وَجَدُّالْحَسَنَيْنِ وَصَاحِبُقَابَ
قَوْسَيْنِ رَسُوْلٌ حَبِيْبٌ قَرِيْبُ اللّٰهِ ط اَلْمُسْتَغَاثُ

اِلٰى حَضْرَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ
يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ط مُقَرِّبُنَا رَسُوْلٌ اِلٰى رَحْمَةِاللّٰهِ تَعَالٰى
مِائَةُ اَلْفِ اَلْفِ صَلٰوةٍوَّسَلَامٍ وَّرَحْمَةٍوَّ بَرَكَةٍ عَلٰى
اَكْرَمِ الْاَنْبِيَآءِ رَالْاَصْفِيَآءِ خَاتِمِ رَسُلِ اللّٰهِ
مُحَمَّدٍرَّسُوْلِ اللّٰهِ الْمُصْطَفٰى وَحَبِيْبِهِ الْمُرْتَضٰى
رَصَفِيِّهِ الْمُجْتَبٰى صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ
تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا م بِرَحْمَتِكَ يَااَرْحَمَ
الرَّاحِمِيْنَ ط اَللّٰهُمَّ ارْحَمْ اَبَابَكْرِنِ التَّقِيَّ
رَعُمَرَالنَّقِيَّ وَعُثْمَانَ الزَّكِيَّ وَعَلِيًّاالْوَفِيًّاسَدَ اللّٰهِ
الْمُرْتَضٰى وَفَاطِمَةَ الزَّهْرَآءَ وَخَدِيْجَةَالْكُبْرٰى
وَاُمَّ الْمُؤْمِنِيْنَ عَآئِشَةَ الصِّدِّيْقَةَ رَضِيَ اللّٰهُ

عَنْهَا الْحَسَنَ الرِّضَا وَالْحُسَيْنَ الشَّهِيْدَ الْمُجْتَبٰى

وَشُهَدَآءَ الْكَرْبَلَا وَسَعْدَ وَلسَّعِيْدَ وَاطَلْحَةَ

وَالزُّبَيْرَ وَعَبْدَ الرَّحْمٰنِ بْنَ عَوْفٍ وَّاَبَا عُبَيْدَةَبْنَ

الْجَرَّاحِ وَالْعَشَرَةَ الْمُبَشَّرَةِ وَسَآئِرَ الصَّحَابَةِ

وَالْخُلَفَآءَ الرّٰشِدِيْنَ وَالتَّابِعِيْنَ مِنْ اَهْلِ لْاَرْضِيْنَ

رِضْوَانُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ ط٥ اَسْئَلُكَ اَنْ تَغْفِرَ

لِيْ وَلِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِرَحْمَتِكَ

يَآاَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ

تَوَالَدَ وَارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِيْ صَغِيْرًا وَّاغْفِرْ

لِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ

وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْاَحْيَآءِ مِنْهُمْ وَالْاَمْوَاتِ اِنَّكَ

مُجِيْبُ الدَّعَوَاتِ وَمُنَزِّلُ الْبَرَكٰتِ وَرَافِعُ

الدَّرَجٰتِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ

وَاَصْحٰبِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَآاَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ط٥

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ

الطَّاهِرِ الزَّكِيِّ صَلٰوةً تَحُلُّ بِهَا الْعُقَدُ

وَتَفُكُّ بِهَا الْكُرَبُ صَلٰوةً تَكُوْنُ لَكَ رِضًا

وَّلِحَقِّهٖ اَدَآءً وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ

وَاَصْحٰبِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ ☆

15 दुरूदे मुस्तगास

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अलहम्दु लील्लाहिल्लाज़ी ज़य्यान-नबीय्यीन बिहबीबिहील-मुस्ताफा व मन्न अलल-मुअमीनीन बिनबीय्यीहील-मुज़तबा अस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिही मुहम्मदीन खयरील-वरा। अलमुसय्यरि बिही मीन फ वकील-अरशि इला तहतीत्तरा। अलहमदु लील्लाही अला मा मजा वलहमदु लील्लाहि अला माबका। वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिही मुहम्मदीन खयरील-वरा मदहतुक या रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलनबीय्यील-उम्मीय्यी अन्त खियारुल्लाह। अलमुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। वारिसुल-अम्बीयाइ रसूलुन साहिबूल-वह्यी अहमदुन शफीउल्लाहि अलमुश्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु

अलयक या रसूलल्लाह। रसूलुन सय्यिदुल-कवनयनि वस्सकलयनि
व इमामुल-कीबलतायनि शफीउल-उममी फीद्दारयनि फत्ताहुन
फातिहु-ल्लाह। अलमुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु
वस्सालामु अलयक या रसूलल्लाह। अन्नबीय्युल-मुस्तफा रसूलुन
सिराजुल- आलमीन महमूदुम्मु-तय्यबुल्लाह। अलमुस्तगासु इला
हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह।
अस्सय्यिदुल-मुअल्ला रसूलुन नबीय्युल-खाफिकयनि कासिमुन खयरु
खल्किल्लाह। अलमुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु
वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अलमुश्तगासु या रसूलल्लाह।
अलमुस्तआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या रसूलल्लाह। अल
खलासु या रसूलल्लाह। अवला मीन इबादिल्लाहि अफजलुना
रसूलुन-नबीय्युन साहिबुद्दारयनि खादिमुन तय्यिबुल्लाह।
अलमुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु
अलयक या रसूलल्लाह। अन्नबीय्यूल-मुज़कय्या रसूलुन ताजुल-
हरमयनी आमिरुन्नाहीन-नाजीन ताहिरुल्लाह। अलमुस्तगासु इला
हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह।
हदाना रसूलुन जद्दु-त्तय्यिबयनील- हसनी वल हुसैनी
दाईम्मुतह्हरुल्लाह। अलमस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला
अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अलमुश्तगासु या
रसूलल्लाह। अलमुस्ताआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या
रसूलल्लाह। अल-खलासु या रसूलल्लाह। नबीय्युंम्मुख्तारुंम्मुरतजा
इमामुं-र्रसूलुंम- मुकतदल-अइम्मतिल- महदीय्यीन हादींम-
मुबीनुल्लाह। अलमस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु
वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। हदाना रसूलुन बिहिदायतिल्लाहि
तआला मुहदील- उम्मति मिनद्दलालति मुहतदीम्मुतीउल्लाह।
अलमुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु
अलयक या रसूलल्लाह। हबीबुना रसूलुंम्मुहदील- उम्मति मुहम्मदुंव-
वरसूलुन सफीय्युन हुज्जतुल्लाह। अलमुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि
तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अलमुश्तगासु
या रसूलल्लाह। अलमुस्तआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या
रसूलल्लाह। अल-खलासु या रसूलल्लाहि मुहम्मदुन अहमदु
हामिदुंम- महमूदुंम- महबूबुंम- मुहिब्बुल्लाहि व मुहिब्बूना रसूलुन

करीमुल्लाहि मरदीय्युन हबीबुना रसूलुन करीमुंम- मुरतदन
खलीफतुल्लाह। अलमुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु
वस्सालामु अलयक या रसूलल्लाह। रसूलुना रसूलुन अलद्दवामि
नबीय्युन ताहा यासीन काइमुन हामिदुल्लाह। अलमुस्तगासु इला
हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह।
आमीरुना रसूलुंव-व-नबीय्युन करीमुंम- मुहम्मदुंर- रसूलुल्लाहि ईस्मुहू
अहमदुन नासिरुन कलीमुल्लाह। अलमुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि
तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अलमुश्तगासु
या रसूलल्लाह। अलमुस्तआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या
रसूलल्लाह। अल-खलासु या रसूलल्लाह। मुईनुना रसूलुंव-व
दुर्रुन्नबीय्युल- यासीनु इमामुन अमीनुल्लाह। अलमुस्तगासु इला
हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह।
मुसद्दिकुना रसूलुंव- व हबीबुन्न- नबीय्युंम- मुजम्मिलुंम- बयानुंर-
रसूलुल्लाह। अलमुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु
वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। शाहिदुना शाफिउना रसूलुंव- व
नबीय्युंम- मुद्दस्सिरुन साहिबुल- कुरआनि नूरुल्लाह। अलमुस्तगासु
इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या
रसूलल्लाह। अल्मुस्तगासु या रसूलल्लाह। अल्मुस्ताआनु या
रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या रसूलल्लाह। अल्-खलासु या
रसूलल्लाह। मुज़क्किरुना रसूलुंम- मुअत्तरुर्रुहि मुतह्हरुल- जिस्मि
बारुन जवादुल्लाह। अलमुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला
अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। सुलतानुल- अंम्बियाइ
व बूरहानुल- अस्फियाइ मुफख्खरुना रसूलुन साहिबुल- फुरकानि
अलीय्युंम- मकक्कीय्यन शकूरुल्लाह। अलमुस्तगासु इला
हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह।
इमामुल- अतकियाइ नासिरुना रसूलुन साहिबुल- कवसरि मुरब्बींम-
मदनीय्युंम- मुनीरुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला
अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अल्मुस्तगासु या
रसूलल्लाह। अलमुस्ताआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या
रसूलल्लाह। अल-खलासु या रसूलल्लाहि सिराजुल- अवलियाई
दियाउना रसूलुम साहिबुल- मीजानि अबतहीय्युन करीबुल्लाह।
अल्मस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु,

अलयक या रसूलल्लाह। बूरहानुल- अस्फीयाइ रसूलुन साहिबुल-बुराकि सय्यिदुल- कवमि अरबीय्युंय- यतीमुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सालामु अलयक या रसूलल्लाह। शफीउना रसूलुंम- मुजज़ीय्युंम- महदीय्युन कुरयशीय्युन शहीदुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अल्मुश्तगासु या रसूलल्लाह। अल्मुस्तआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या रसूलल्लाह। अल्-खलासु या रसूलल्लाह। इमामुल- मूअमिनीन व ज़ीनतुल-अंम्बियाइ वल- मुरसलीन व वसीलतुना रसूलुन खादिमुल- फुकराइ हिजाज़ीय्युन-नज़ीरुल्लाह। अल्मुश्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। खतमुल्- अंम्बियाइ अहमदु व खातिमुन- नबीय्यीन रसूलुंम- माहियल- कुफरि वल-बिदअति मुहम्मदुबनु अब्दिल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। सदक रसूलुना मूरसलुंम- मुतवस्सितुर्रसूलुं- रहीमुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अल्मुश्तगासु या रसूलल्लाह। अल्मुस्तआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या रसूलल्लाह। अल्-खलासु या रसूलल्लाह। सय्यिदुना रसूलुंम- मुस्तग़ीसुंम- मुकतसिदुन हलीमुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अग़ीस्ना या रसूलस्सकलयानि अन्त हक्कुं म- मुबीनुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सालामु अलयक या रसूलल्लाह। (सेह बार हर कलमा ख्वानदा सूद यानी इटालिक किये हुए कलेमात तीन बार दोहराये) *अल्मुस्तगासु या रसूलल्लाह। अल्मुस्तआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या रसूलल्लाह। अल्-मुश्शफ्फउ या रसूलल्लाह।* वाइजुना रसूलुंव- व रसूलुहुल- मुजतबा साहिबुर्रिसालति अव्वलु कदीमुन हबीबुल्लाह। अल्मुस्तगासु या रसूलल्लाह। अल्मुस्तआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या रसूलल्लाह। अल्मुश्तगासु या रसूलल्लाह। अल्मुस्तआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या रसूलल्लाह। अल्-खलासु या रसूलल्लाह। अकरमुना रसूलुन साहिबुश्शरीअति व काशिफुल- गुम्मति आखिरुन अज़ीज़ुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला

हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अहलुत्तकवा व बूरहानुल- अतकियाइ रशीदुना रसूलुन साहिबुत्तरीकति शिफाउन फसीहुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अमन्नाबिक अन्त नबीय्युना रसूलुन साहिबुल- हकीकति मुदर्रीय्युम बशीरुन्नज़ीरुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अल्मुश्तगासु या रसूलल्लाह। अल्मुस्तआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या रसूलल्लाह। अल्-खलासु या रसूलल्लाह। इमामुल उममि मुकद्दिमुना रसूलुन साहिबुल- मअरिफति बुरहानु रहमतुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। कबीरुना रसूलुन साहिबुल- मिन्नति जाहिरुन करीमुल्लाह। अल्मुश्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। सनदुल- आसीन रसूलुन साहिबुल- जन्नति फारिगु जहन्नम सुल्तानुन तिहामीय्युंम-मुअमिनुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अल्मुस्तगासु या रसूलल्लाह। अल्मुस्तआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या रसूलल्लाह। अल्-खलासु या रसूलल्लाह। फकीहुना रसूलुन साहिबुस्सिरातिमुबल्लिगुन आकिबुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अन्त वलीय्युना रसूलुन साहिबुश्शफाआतु बाज़िलुन बातिनुन खलीलुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। शफीउ अवामिना रसूलुन साहिबुत्- ताजि वल मेअराजि मुहल्लिलु बिइज़निल्लाह। अल्मुश्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अल्मुस्तगासु या रसूलल्लाह। अल्मुस्तआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या रसूलल्लाह। अल्-खलासु या रसूलल्लाह। व मिन-न्नारि मुखल्लिसुना रसूलुन साहिबुल-मीहराबि हाशिरुन्नबीय्युल्लाह। अल्मुश्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अफ़जलु मिनन्नबीय्यीन वस्सिद्दीकीन वश्शुहदाइ वस्सालिहीन महबूबुना रसूलुन साहिबुल- मिम्बरि खतीबु रहमतील्लाह। अल्मुस्तगासु इला

हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। मुबश्शिरुना रसूलुन साहिबुल- बय्ति आमिरु कअबतील्लाह। अल्मुश्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सालामु अलयक या रसूलल्लाह। अल्मुस्तगासु या रसूलल्लाह। अल्मुस्तआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या रसूलल्लाह। अल्-खलासु या रसूलल्लाह। अकबरुना रसूलुन साहिबुल- मीअराजि आलिमुन गनीय्युल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। नबीय्यु आखिरीज़्ज़मानि रसूलुन साहिबुल- ईजतिहादि मुनतकिमुम्मुकर्रमुल्लाह। अल्मुश्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। व फीद्दीनि सादिकुना रसूलुन साहिबुल- कियामति नातिकुम् बिल्हक्कि शफीउल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। अल्मुस्तगासु या रसूलल्लाह। अल्मुस्तआनु या रसूलल्लाह। अश्शफाआतु या रसूलल्लाह। अल्-खलासु या रसूलल्लाह। मुशफ्फउल- उम्मति युईनुना बिश्शफाअति रसूलुन साहिबुन्नुबूव्वति मुहर्रमुन्नबीय्युल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सालामु अलयक या रसूलल्लाह। नबीय्युर्रहमति साबिकुना रसूलुन साहिबुद्दारयनि हरीसुन अलत्ताअति रऊफुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाहि सय्यिदुल- जिन्नि वल- इन्सि नाहिन्नबीय्युना रसूलुन साहिबुल- इम्मति वन्निअमति हाशिमीय्युन किरामतुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। खादिमुल- हरमयनि व जद्दुल- हसनयनि व सीहिबु काब कवसयनि रसूलुन हबीबुन करीबुल्लाह। अल्मुस्तगासु इला हजरतिल्लाहि तआला अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह। मुकर्रिबुना रसूलुन इला रहमतिल्लाहि तआला मिअतु अल्फि अल्फि सलातीव- व सलामीव- व रहमतीव- व बरकतिन अला अक्रमील- अंम्बीयाइ वल- अस्फियाइ खातिमि रसूलील्लाहि मुहम्मदीर्रसूलील्लाहील- मुस्तफा व हबीबिहिल- मुरतजा व सफीय्यहील- मुज्तबा सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम तस्लीमन कसीरन कसीरम- बिरह्मतिक या अरहमर्राहिमीन। अल्लाहुम्म-रहम

अबाबक्रि-नित्तकीय्य व उमर-न्नकीय्य व उसामान- ज़्ज़कीय्य व अलीय्या- नीलवफीय्य असदल्लाहिल- मुरतजा व फातिमत- ज़्ज़हराअ व खदीजतल- कुब्रा व उम्मल- मुअमिनीन आईशत- स्सिद्दिकत रजियल्लाहु अन्हा वल हसनरिंजा वल- हुसयन- श्शहीदल- मुजतबा व शुहदाअल- करबला व स्सअद वस्सईद व तलहत व ज्जुबय्र व अब्दर्रहमानीबन अवफीव- व अबा उबयदताब्नल- जर्राहि वल- अशरतल- मुबस्सरति व साईर- स्सहाबति वल- खुलफाअ- र्राशिदीन व-त्ताबिईन मीन् अहलीस्सामावाति व अहलील- अरदीन रीद्वानुल्लाहि अलयहीम् अजमईन। असअलुक अन्तग़फिरली - व लिजमीईल- मुअमिनीन वल- मुअमिनाति बिरह्मतिक या अर- हमर्राहिमीन अल्लाहुम्- मगफिर्ली व-लिवालिदय्य व- लिमन् तवलद वरहम्हुमा कमा- रब्बयानी सगीरंव्-वग़फिर् लिजमीइल- मुअमिनीन वल- मुअमिनाति वल- मुस्लिमीन वल- मुस्लिमातिल- अहयाइ मीनहुम वल- अमवाति इन्नक मुजीबुद्दअवाति व मुनज़्ज़िलुल- बरकाति व राफिउद्दरजाति व सल्लल्लाहु अला खयरि खल्किही मुहम्मदींव- व आलिही व असहाबिही अजमईन बिरहमतिक या अरहमर्राहिमीन। अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिनिन्नबीय्यील उम्मीय्यित्ताहिरिज़्ज़किय्यि सलातन तहुल्लु बिहाल-उकदु व तफुक्कु बिहाल-कुरबु सलातन तकूनु लक रिदंव-वलिहकिही अदाअंव- व अला आलिही व अज़वाजिही व अहलि बयतिही व असहाबिहि व बारिक् व सल्लिम।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। सब तारिफें अल्लाह के लिए, जिसने जीनत दी नबीयों को अपने हबीब को पसंदीदा पयगंम्बरों को और अहसान किया मोमिनों पर नबीयों बरग़ुजीदा पर दुरूद और सलाम हो उपर रसूल के मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) खैर ख्वां हैं जो खल्क के। वो जिन्हें सैर करायी गयी अर्शे-मजीद से तहतुस्सरा (जमीन के नीचे की तह) तक। सब तारिफें अल्लाह के लिए, उस चीज पर जो गुजरी और सब तारिफें अल्लाह के लिए, उस चीज पर जो बाकी है दुरूद नाजिल फरमा और सलाम हो उपर रसूल के मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) खैर ख्वां हैं जो खल्क के, तारिफ की मैने आपकी ऐ रसूल अल्लाह के, दुरूद नाजिल फरमा ऐ अल्लाह नबी करीम उम्मी पर आप ही हैं खैर

पाये हुए अल्लाह के। फरियाद है! हजूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। जो वारिश हैं अंम्बीया के रसूल हैं साहिबे वह्यि आप अहमद (अत्यन्त प्रशंसीत, बेइन्तिहा तारीफ किये हुए) हैं जो शफाअत करनेवाले हैं फरियाद है! हजूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। ऐ रसूल आप सरदार हैं दोनो जहानों के और दोनों गिरोह जिन्न व इन्स के और इमाम हैं दोनों किब्लों के शफाअत करने वाले हैं उम्मत के दोनों जहानों में हल करनेवाले मुशकिलों के जारी करनेवाले अन्न अल्लाह के। फरियाद है! हजूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। ऐ नबी बरग़ुजीदा रसूल चिराग़ तमाम जहानों के तारीफ़ किये गये पाक किये गये अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। सरदार बुलंद मरतबा वाले रसूल नबी अहले मश्रिक व मग़रिब के बाँटने वाले बेहतर खुल्क (अच्छी आदत, अच्छे आचरण) अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल अल्लाह के। मदद फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। रिहाई फरमांए ! ऐ रसूल अल्लाह के। बेहतर हैं तमाम अल्लाह के बन्दों से अफजल हमारे रसूल, नबी, साथी दोनों जहानों के ख़ादिम पाकीजा अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। नबी पाक किये गये ऐ रसूल, जो ताज हैं दोनों हरम मक्का मुअज्जमा व मदीना मुनव्वरा के हुक्म देने वाले नेकी करने का और बदी से बचने का पाकीजा अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। हीदायत करी हमको रसूल ने जो नानाजान हैं दो पाकों इमाम हसन और इमाम हुसैन (रदीअल्लाहु तआला अलयहीम अजमईन) के, दाइमी पाकीजा हैं अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल अल्लाह के। मदद फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। रिहाई फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। नबी सरबराह (अधिकार प्राप्त) बरग़ुजीदा (पसंदीदा) इमाम रसूल मुक्तदों (जिनकी पैरवी की गई) के उन इमामों के जो हिदायत

याफ़्ता हैं रौशन (साफ ज़ाहिर) हिदायत देने वाले अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। हिदायत की हमको (सीधा रास्ता दिखाया) वो जो बमुताबीक है अल्लाह तआला की तरफ से, उम्मतीयों को राहेरास्त पर लानेवाले गुमराहियों से निकाल कर, हिदायत पाए हुए फ़रमाँबरदार अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। महबूब हमारे ऐसे रसूल जो हिदायत करने वाले हैं उम्मत को मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) रसूल हैं खालिस दलील अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल अल्लाह के। मदद फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। रिहाई फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) आप अहमद हैं हामिद हैं महमूद हैं महबूब हैं मुहीब हैं अल्लाह के और हमसे मुहब्बत करनेवाले रसूल करीम हैं अल्लाह के, पसंदीदा हमारे महबूब रसूले करीम मक़बूल ख़लीफ़ा हैं अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। रसूल हमारे रसूल दवामी (हमेंशगी के) नबी जो हैं ताहा यासीन कायम करने वाले हम्द (तारीफ़) करने वाले अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। अमीर हमारे हैं रसूल व नबी-ए-करीम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) रसूल हैं अल्लाह के नाम आपका अहमद है मददगार हमारे कलाम करने वाले अल्लाह से। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल अल्लाह के। मदद फरमांए ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांए ! ऐ रसूल अल्लाह के। रिहाई फरमांए ! ऐ रसूल अल्लाह के। मददगार हमारे रसूल मोती जैसे चमकदार नबी जिनका नामे मुबारक यासीन है इमाम हैं उनके जो अमानतदार हैं अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। तस्दीक करने वाले हमारे रसूल और महबूब नबी जिसे मुज़म्मिल (चादर ओढ़नेवाले) कहा गया ऐसे रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के।

इमाम परहेज़गारों के मददगार हमारे रसूल साहिबे हौजे-कौसर, मुरब्बी (सरपरस्त) मदीना वाले मुनव्वर बंदे (नूरानी) अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल अल्लाह के। मदद फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। रिहाई फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के, चिराग़ वलीयों के रोशनी हमारे रसूल साहिबे-मीज़ान मक्का मुअज्जमा वाले मुकर्रब अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। बुरहान (रौशन दलील) हैं पाक बातिन वालों के, रसूल साहिबे-बुराक सरदार कौम के अरब वाले यतीम अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। शफीअ हमारे रसूल नेक बदला देने वाले हिदायतयाफ़्ता कुरैशी शहीद (वो जिसके इल्म से कोई चीज छुपी नही, अल्लाह की राह में कुरबान होना) अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल अल्लाह के। मदद फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। रिहाई फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। इमाम मो'मिनों के और जीनत अंम्बीयाओं के व पैग़म्बरों के और वसीला हैं हमारे रसूल ख़िदमत करने वाले फकीरों के हिजाज (वादी-ए-मक्का शरीफ) वाले अल्लाह के कहर से डराने वाले। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। खत्मुलअंम्बीया (आखिरी अंम्बीया) जो अहमद हैं व खातिमुन्नबी (नबीयो में आख़िरी) रसूल हैं मिटाने वाले कुफ़्र के और बिदअत के मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम बेटे हैं अब्दुल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दरुद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। सच फ़रमाया हमारे रसूल ने, पैयगम्बर म्याना रू रसूल रहम करने वाले अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल अल्लाह के। मदद फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। रिहाई फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। सरदार हमारे रसूल फ़रियाद रवाँ म्याना रवी करने वाले सहनशील बंदे अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर

ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद को पहुँचिए ऐ रसूल इन्सानों और जीन्नों के आप बरहक हैं रोशन दलील हैं अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल अल्लाह के। मदद फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शिफारिश फरमांएँ ऐ रसूल अल्लाह के। हमें नसीहत करने वाले रसूल और ऐसे रसूल जो अल्लाह के बरगुजीदा हैं साहिबे रिसालत अव्वल हैं हमेंशा से, महबूब हैं अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल अल्लाह के। मदद फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। रिहाई फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। सबसे ज़्यादा हम पर करम फरमाने वाले रसूल, साहिबे शरीअत और गमों को दुर करने वाले आख़िरी नबी, अज़ीज़ अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। तकवा वालों में से और बुरहान परहेज़गारों के हमको सीधी राह दिखलाने वाले रसूल, साहिबे तरीकत शिफा देने वाले (ज़ाहिर व बातिन के अमराज से) शीरीं कलाम वाले अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। इमान लाए हम आप पर आप हमारे नबी हैं, रसूल हैं साहिबे सदाकत नसूब तरफ नुकसान की बशारत देने वाले ख़ौफ़ दिलाने वाले अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल अल्लाह के। मदद फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। रिहाई फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। इमाम उम्मतों के हमेंशगी के हमारे रसूल, साहिबे माअरिफत की दलील, रहमत अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। बुज़ुर्ग हमारे रसूल साहिबे एहसान के आशकार करीम अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। भरोसा हैं गुनाहगारों के, रसूल साहिबे जन्नत, निजात दिलाने वाले जहन्नम से, बादशाह तहामी (मक्का मुअज्जमा के) ईमान लाने वाले अल्लाह पर। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल

अल्लाह के। मदद फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। रिहाई फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। दाना हमारे रसूल साहिबे राहेरास्त, आख़िरी नही अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। हमारे वली (दोस्त) हैं, रसूल हैं साहिब हैं शफाअतों के शखी हैं बातिनों के दोस्त हैं अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत करले वाले हम सब अवाम के रसूल हैं ताज और मेअराज के हलाल करने वाले इजाज़त से अल्लाह की। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल अल्लाह के। मदद फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। रिहाई फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। और दोज़ख़ से रिहाई दिलाने वाले रसूल साहिब हैं मेहराब के जमा करने वाले नबी अल्लाह के।फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दरुद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। अफजल सब नबीयों से और सिद्दीकों से और शहीदों के और नेकों कारों से महबूब हमारे रसूल साहिबे मिम्बर और खुत्बा देने वाले रहमत वाले अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दरुद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। बशारत देने वाले हमको रसूल साहिबे बयतुल्लाह आबाद करने वाले का बातुल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल अल्लाह के। मदद फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। रिहाई फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। बुज़ुर्ग हमारे साहिबे मेअराज आलिम गनी बन्दे अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। नबी आख़िरी जमाने के रसूल साहिबे इज्तिहाद (जद्दोजहद), बदला लेने (मुन्तकिम, अल्लाह तआला का एक सिफ़ाती नाम) मुकर्रम (मोहतरम) अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। और दिन में रास्तगो रसूल, साहिबे क्यामत, कतई (द्रुढ़, पक्का) बोलने वाले हक के (सच्चाई के) सफाअत करने वाले अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। फ़रियाद है ! ऐ रसूल

अल्लाह के। मदद फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। रिहाई फरमांएं ! ऐ रसूल अल्लाह के। शफाअत किए गये वास्ते उम्मत के मदद करने वाले हमारे साथ सफाअत के, रसूल साहिबे नुबूव्वत के हुरमत किए गए नबी अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। नबी रहमत के नेक काम की तरफ़ हम से सबकत करने वाले रसूल साहिबे दोनों जहान के चाहने वाले, ताअत पर मेहरबान बंदे अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के सरदार जिन्नो और इंसानों के मना करने वाले बुराई से नबी हमारे रसूल, साहिबे उम्मत और साहिबे नेअमत हाशिमी किराम (रुतबा वाले, बरगुज़िदा, बुज़ुर्ग) अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। ख़िदमत करने वाले दोनों हरम के और नाना इमाम हसन और इमाम हुसैन (रदीअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन) और साहिबे काबा कवसैन रसूल, महबूब करीब अल्लाह के। फ़रियाद है! हज़ूर में अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह के। नज़दीक करने वाले हमको रसूल अल्लाह की रहमत की तरफ़ हज़ारों गुना दुरूद और सलाम और रहमत और बरकत नाज़िल फरमा बुज़ूर्गतरीन नबीयों के और अहले सिफा के आख़िर रसूल अल्लाह के मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलयहि व सल्लम) रसूल अल्लाह के जो बरगूजीदा हैं और महबूब और अल्लाह के पसंदीदा पर और खुदा के पाक बातिन मक़बूल बंदे पर रहमत नाज़िल फ़रमा ऐ अल्लाह दुरूद नाज़िल फ़रमा आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और आप की औलाद पर और सलाम भेज बहुत बहुत अपनी रहमत से ऐ रहम फरमाने वालों से भी ज़्यादा रहम फरमाने वाले। ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल फ़रमा हज़रत अबूबक्र (रदीअल्लाहु तआला अन्हु) पर जो साहिबे तकवा हैं और हज़रत उमर (रदीअल्लाहु तआला अन्हु) पर जो पाक हैं और हज़रत उस्मान (रदीअल्लाहु तआला अन्हु) नेक (जकात देने वाले) हैं और हज़रत अली (रदीअल्लाहु तआला अन्हु) पर जो वफ़ा करने वाले खुदा के शेर, बरगुजिदा हैं और हज़रत फातिमा अज्जहरा (रदीअल्लाहु तआला अन्हा) पर और हज़रत खदिजा कुबरा (रदीअल्लाहु तआला अन्हा) पर और उम्मुल मुअमीनीन (मुसलमानों की माँ) हज़रत आइशा

सिद्दीका पर राज़ी हुआ अल्लाह उनसे और इमाम हसन साहिबे रजा (रदीअल्लाहु तआला अन्हु) पर और इमाम हुसैन शहीद बरगुजीदा (रदीअल्लाहु तआला अन्हु) पर और तमाम शोहदा-ए-करबला पर और हज़रत साअद पर और हज़रत सईद पर और हज़रत तल्हा पर और हज़रत जुबैर पर और अब्दुर्रहमान बीन औफ पर और हज़रत अबू उबैद बीन जराह पर और वो दस सहाबा पर (रदीअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन) के जिन्हें खुशखबरी दी गई जन्नत की और खुल्फा-ए-राशिदीन (रदीअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन) और ताबेईन पर और तमाम आसमान वालों पर और तमाम जमीन वालों पर रजा-ए-इलाही उन सब पर कायम रहे। मैं आप से सवाल करता हुँ बख़्शिश दीजिए मुझको और तमाम मुसलमान मर्दों और तमाम मुसलमान औरतों को अपनी रहमत से ऐ रहम फरमाने वालों से भी ज़्यादा रहम फ़रमाने वाले। ऐ अल्लाह बख़्शिश अताकर मुझे और मेरे वलिदैन (माँ बाप) को और मेरी औलाद को और रहम फ़रमा उन दोनों पर (माँ बाप) जैसी परवरिश की उन्होंने मेरी बचपन में और बख़्शिश दे तमाम ईमान वालों को और ईमान वालीयों को और मुसलमान मर्दों को और मुसलमान औरतों को जो ज़िंदा हैं उनमें से और जो फ़ौत हो चुके (गुज़र चुके) हैं, बेशक आप दुआएँ कबूल करने वाले हैं और नाज़िल करने वाले हैं हरकतों के और बुलंद करने वाले हैं दर्जों के और रहमत नाज़िल फ़रमा उनपर जो बेहतरीन खुल्क वाले हैं कि नाम आपका मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) है और उनकी औलाद पर उनके सहाबा तमाम पर अपनी रहमत से ऐ रहम फ़रमाने वालों से भी ज़्यादा रहम फ़रमाने वाले। ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो नबी-ए-उम्मी हैं पाकीजा और पाक (नेक) हैं, ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जिसकी बरकत से हमारे बातिन की गिरहें (गाँठें) खुल जाएँ और बेचैनीयाँ दुर हो जाएँ ऐसी रहमत जो तेरी रज़ामंदी का और उनके हक़ की अदायगी का सबब (ज़रिया) हो और आप (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) की औलाद पर और आप (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) की बीवियों पर आपके (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) घर वालों पर और आपके सहाबा पर और बरकत व सलाम नाज़िल फ़रमा।

16 दुरूदे किब्रीयत अहमर

दुरूदे किब्रियत अहमर में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की बेपनाह तारीफ़ की गई है। ये दुरूद शरीफ सिलसिला आलीया कादरीया में बहुत मारुफ है। अक्सर सिलसिला कादरीया के बुज़ुर्ग हजरात इसे पढ़ते हैं क्युँकि ये दुरूद शरीफ़ गौस पाक हज़रत सय्यद अब्दुल कादिर जिलानी रदीअल्लाहु तआला अन्हु की जाते गिरामी की तरफ मन्सुब है और उन्होंने ताहयात इसे अपने मामूल में रखा। इस दुरूद शरीफ़ की सबसे बड़ी खुशूसीयत ये है कि इसे सच्चे दिल और तड़प से पढ़ने वाला नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के इश्क और मुहब्बत की दौलत से मालामाल हो जाता है। हुजूर के आशिक का दिल ये दुरूद शरीफ़ पढ़ने से बहुत तस्कीन पाता है, ऐसा शख़्स जिसका दिल हुब्बे (मुहब्बत) रसूल से ख़ाली हो अगर वो इसे पढ़े तो उसके दिल में हुब्बे रसूल की तड़प जाग जाएगी और ज्यों ज्यों पढ़ने में कसरत (ज़्यादा) करेगा उसके दिल में इश्के रसूल का समंदर उंमड़ता चला जाएगा।

जिसने ज़िंदगी में एक बार ये दुरूद शरीफ़ पढ़ा उसे रोज़े क़यामत हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की शफाअत नसीब होगी। जो शख़्स रोज-ए-रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के करीब रियाजुल जन्ना में बैठकर ये दुरूद शरीफ़ ग्यारह (११) बार रोज़ाना सात दिन तक पढ़े उसे इन्शाअल्लाह हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की ज्यारत नसीब होगी।

'गुलजारे सरवरी' में है कि ये दुरूद शरीफ़ हज़रत महबूबे सुब्हानी कुतूबे रब्बानी गौशे समदानी सय्यिदिना मौलाना गौशूल आज़म शेख़ सय्यद अब्दुल कादिर जिलानी रदीय अल्लाहु तआला अन्हु का खासूल-खास महबूबतरीन विर्द है जिसे आप रदीय अल्लाहु तआला अन्हु ने इश्के महबूबे खुदा सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के निहायत अरफाअ व आ'ला मकाम पर जज्ब-ए-इश्क में अपने कलम मुअज्जज रकम से मुरत्तब फ़रमाया और इसका बहुत ज़्यादा विर्द फ़रमाया यहाँ तक कि आप कुर्ब व विसाले हबीबे किब्रीया सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के मकामे बुलंद व बाला व दर्जा-ए-आ'ला से सरफ़राज़ फरमाये गये और फिर उस मक़ाम पर इसके फज़ाइल व बरकात का इज़हार फ़रमाते हुए

अकसीर सिफ़त मुकर्रम व मुअज्जम दुरूद शरीफ़ का नाम किब्रयते अहमर (अकसीर उ पारस) रखा है - किब्रीयत अहमर अकसीर यानी पारस को कहते हैं (कहावत है कि पारस से छूकर लोहा भी सोना बन जाता है) और औलिया-ए-कामिलीन रहमतुल्लाहि अलयहीम के इरशादात के मुताबिक़ इस दुरूद शरीफ़ का नाम किब्रयते अहमर इस वजह से है क्योंकि जिस तरह किब्रयते अहमर (अकसीर उ पारस) धातु को सोना बना देता है ऐन उसी तरह ये दरूद शरीफ़ भी अपने आमिल के ज़ाहिर को नूरानी और बातिन को रोशन कर देता है, या'नी उसके दिल में हुब्बे इलाही व इश्के मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के नूरानी शोले पैदा कर देता है। सीना नूरे-माअरिफत से मुनव्वर और दिल जिक्रे इलाही से माअमूर हो जाता है। गर्ज़ ये कि दीनी व दुनियावी, जाहिरी व बातिनी इनामात से मालामाल होने के लिए, हर काम में कामयाबी, हर मैदान में फतहयाबी हासिल करने के लिए और हर मुराद के हुसूल के लिए मुफ़ीद व मुजर्रब माअमूले औलिया-अल्लाह है। हर सिलसिले से अहलुल्लाह, तालिबाने हक़ और मशाइखे-ईजाम ने इसे अपना विर्द व वज़ीफ़ा बनाया और इसके फुयूज व बरकाते-जाहिरी व बातिनी से मुस्तफीद (फ़ायदेमंद) हुए, उन्हें रब तआला ने रुहानीय्यत की नेअमते-अज़्मा से नवाजा और दुनियावी नेअमतों और सआदतों से भी नवाजा। शेखे कामिल की इजाज़त शौक़ व मुहब्बत, सिद्के दिल और खुलूसे नीयत से पढ़ा जाए तो हुजूर सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की ज़ियारत नसीब होती है।

١٦ درود کبریت احمر

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ اَفْضَلَ صَلَوَاتِكَ عَدَدَ مَا اَنْمٰى

بَرَكَاتِكَ سَرْمَدًا وَاَزْكٰى تَحِيَّاتِكَ فَضْلًا وَّمَدَدًا

عَلٰى اَشْرَفِ الْحَقَآئِقِ الْاِنْسَانِيَّةِ وَمَعْدَنِ الدَّقَآئِقِ

الْاَيْمَانِيَّةِ وَطُوْرِ التَّجَلِّيَاتِ الْاِنْسَانِيَّةِ وَمَهْبَطِ

الْاَسْرَارِ الرَّحْمَانِيَّةِ وَوَاسِطَةِ عَقْدِ النَّبِيِّيْنَ وَمُقَدَّمَةِ

جَيْشِ الْمُرْسَلِيْنَ وَاَفْضَلِ الْخَلَآئِقِ اَجْمَعِيْنَ حَامِلِ

لِوَآءِ الْاَعْلٰى وَمَلِكِ اَزِمَّةِ الشَّرَفِ الْاَسْنٰى

شَاهِدِ اَسْرَارِ الْاَزَلِّ وَمُشَاهِدِ الْاَنْوَارِ السَّابِقِ الْاُوَلِ

وَتَرْجُمَانِ لِسَانِ الْقِدَمِ وَمَنْبَعِ الْعِلْمِ وَالْحِلْمِ

وَالْحِكَمِ وَمَظْهَرِ سِرِّ الْجُوْدِ الْجُزْئِيِّ وَالْكُلِّيِّ وَ

اِنْسَانِ عَيْنِ الْوُجُوْدِ الْعُلْوِيِّ وَالسُّفْلِيِّ

وَرُوْحِ جَسَدِ الْكَوْنَيْنِ وَعَيْنِ حَيَاتِ الدَّارَيْنِ

الْمُتَخَلِّقِ بِاَعْلٰى رُتْبَةِ الْعُبُوْدِيَّةِ الْمُتَحَقِّقِ بِاَسْرَارِ

الرُّبُوْبِيَّةِ صَاحِبِ الْمَقَاتِ الْاِصْطِفَآئِيَّةِ

وَالْكَرَامَاتِ الْاِرْتِضَائِيَّةِ سَيِّدِ الْاَشْرَافِ وَجَامِعِ

اَلْاَوْصَافِ الْخَلِيْلِ الْاَعْظَمِ وَالْحَبِيْبِ الْاَكْرَمِ

الْمَخْصُوْصِ بِاَعْلَى الْمَرَاتِبِ وَالْمَقَامَاتِ

وَالْمُؤَيَّدِ بِاَوْضَحِ الْبَرَاهِيْنِ وَالدَّلَالَاتِ

الْمَنْصُوْرِ بِالرُّعْبِ وَالْمُعْجِزَاتِ وَالْجَوْهَرِ الشَّرِيْفِ

الْاَبَدِيِّ وَالنُّوْرِ الْقَدِيْمِ الْمُحَمَّدِيِّ السَّرْمَدِيِّ

سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ الْمَحْمُوْدِ فِي الْاِيْجَادِ

وَالْوُجُوْدِ الْفَاتِحِ لِكُلِّ شَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ وَّحَضْرَةِ

الْمَشَاهِدِ وَالشُّهُوْدِ نُوْرِ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدَاهُ وَسِرِّ كُلِّ

سِرٍّ وَّ سَنَاهُ الَّذِيْ شُقِّقَتْ مِنْهُ الْاَسْرَارُ وَانْفَلَقَتْ مِنْهُ

الْاَنْوَارُ السِّرِّ الْبَاطِنِ وَالنُّوْرِ الظَّاهِرِ السَّيِّدِ الْكَامِلِ

الْفَاتِحِ الْخَاتِمِ الْاَوَّلِ الْاٰخِرِ الْبَاطِنِ الظَّاهِرِ الْعَاقِبِ

الْحَاشِرِ النَّاهِيَ الْاٰمِرِ النَّاصِحِ النَّاصِرِ الصَّابِرِ

الشَّاكِرِ الْقَانِتِ الذَّاكِرِ الْمَاحِيَ الْمَاجِدِ الْعَزِيْزِ

الْحَامِدِ الْمُؤْمِنِ الْعَابِدِ الْمُتَوَكِّلِ الزَّاهِدِ الْقَآئِمِ

الْقَاعِدِ الرَّاكِعِ السَّاجِدِ التَّابِعِ الشَّهِيْدِ الْوَلِيِّ

الْحَمِيْدِ الْبُرْهَانِ الْحُجَّةِ الْمُطَاعِ الْمُخْتَارِ الْخَاضِعِ

الْخَاشِعِ الْبَرِّ الْمُسْتَنْصِرِ الْحَقِّ الْمُبِيْنِ طٰهٰ يٰسٓ

اَلْمُزَّمِّلِ الْمُدَّثِّرِ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَاِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ

وَخَاتِمِ النَّبِيِّيْنَ وَحَبِيْبِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ النَّبِيِّ

الْمُصْطَفٰى وَالرَّسُوْلِ الْمُجْتَبٰى وَالْحَكَمِ الْعَدْلِ

اللَّطِيْفِ الْخَبِيْرِ الْحَكِيْمِ الْعَلِيْمِ الْعَزِيْزِ الرَّءُوْفِ

الرَّحِيْمِ الْغَفُوْرِ الشَّكُوْرِ الْعَلِيِّ الْكَرِيْمِ نُوْرِكَ

الْقَدِيْمِ وَصِرَاطِكَ الْمُسْتَقِيْمِ مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ

وَرَسُوْلِکَ وَصَفِیِّکَ وَخَلِیْلِکَ وَحَبِیْبِکَ

وَوَلِیِّ کَوَنَبِیِّکَ وَاَمِیْنِکَ وَدَلِیْلِکَ وَنَجِیِّکَ

وَنُخْبَتِکَ وَذَخِیْرَتِکَ وَخِیَرَتِکَ وَاِمَامِ الْخَیْرِ

وَقَآئِدِ الْخَیْرِ وَرَسُوْلِ الرَّحْمَةِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْعَرَبِیِّ

الْقَرَشِیِّ الْهَاشِمِیِّ الْاَبْطَحِیِّ الْمَکِّیِّ الْمَدَنِیِّ

التِّهَامِیِّ الشَّاهِدِالْمَشْهُوْدِ الْوَلِیِّ الْمُقَرَّبِ الْعَبْدِ

الْمَسْعُوْدِ الْحَبِیْبِ الشَّفِیْعِ الْحَسِیْبِ الرَّفِیْعِ

الْمَلِیْحِ الْبَدِیْعِ الْوَاعِظِ الْبَشِیْرِ النَّذِیْرِ الْعَطُوْفِ

الْحَلِیْمِ الْجَوَادِالْکَرِیْمِ الطَّیِّبِ الْمُبَارَکِ الْمَکِیْنِ

الصَّادِقِ الْمَصْدُوْقِ الْاَمِیْنِ الدَّاعِیْ اِلَیْکَ

بِاِذْنِکَ السِّرَاجِ الْمُنِیْرِالَّذِیْ اَدْرَکَ الْحَقَآئِقَ

بِجُمَّتِهَا وَفَازَ وَفَاقَ الْخَلَآئِقَ بِرُمَّتِهَا وَجَعَلْتَهُ حَبِیْبًا

وَّنَاجَیْتَهُ قَرِیْبًاوَّ اَدْنَیْتَهُ رَقِیْبًا وَّخَتَمْتَ بِهِ الرِّسَالَةَ

وَالدَّلَالَةَ وَالْبَشَارَةَ وَالنَّذَارَةَ وَنُبُوَّةَ وَنَصَرْتَهُ

بِالرُّعْبِ وَظَلَلْتَهُ بِالسُّحْبِ وَرَدَدْتَّلَهُ الشَّمْسَ

وَشَقَقْتَ لَهُ الْقَمَرَوَ انْطَقْتَ لَهُ الضَّبَّ وَالظَّبْیَ

وَالذِّئْبَ وَالْجِذْعَ وَالذِّرَاعَ وَالْجَمَلَ وَالْجَبَلَ

وَالْمَدَرَ وَالشَّجَرَ وَالْحَجَرَ وَ اَنْبَعْتَّ مِنْ اَصَابِعِهِ

الْمَآءَ الزُّلَالَ وَاَنْزَلْتَ مِنَ الْمُزْنِ بِدَعْوَتِهٖ فِیْ عَامِ

الْمَحْلِ وَالْجَدْبِ وَابِلَ الْغَیْثِ اَلْمَطَرِفَاعْشَوْشَبَ

مِنْهُ الْفَقْرُ وَالصَّخْرُ وَالْوَعْرُوَالسَّهْلُ وَالرَّمْلُ

وَالْحَجَرُ وَالْمَدَرُ وَاَسْرَیْتَ بِهٖ لَیْلًا مِّنَ

الْمَسْجِدِحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِالْاَقْصٰ اِلَى السَّمٰوٰتِ
الْعُلٰى اِلٰى سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْاَدْنٰى
وَاَرَيْتَهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى وَاَنَلْتَهُ الْغَيَةَ الْقُصْوٰى
وَاَكْرَمْتَهُ بِالْمُخَاطَبَةِ وَالْمُرَاقَبَةِ وَالْمُشَافَنَةِ
وَالْمُشَاهَدَةِ وَالْمُعَايَنَةِ بِالْبَصَرِ وَخَصَّصْتَهُ
بِالْوَسِيْلَةِ الْعُظْمٰى وَالشَّفَاعَةِ الْكُبْرٰى يَوْمَ الْفَزَعِ
الْاَكْبَرِ فِيالْمَحْشَرِوَ جَمَعْتَ لَهُ جَوَامِعَ الْكَلِمِ وَ
جَوَاهِرِالْحِكَمِ وَ جَعَلْتَ اُمَّتَهُ خَيْرَالْاُمَمِ وَغَفَرْتَ
لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَاتَاَخَّرَالَّذِى بَلَّغَ الرِّسَالَةَ
وَاَدَّى الْاَمَانَةَ وَنَصَحَ الْاُمَّةَ وَكَشَفَ الْغُمَّةَ وَجَلَى
الظُّلْمَةَ وَجَاهَدَ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ وَعَبَدَ رَبَّهُ حَتّٰى اَتٰهُ

الْيَقِيْنُ ط ه اَللّٰهُمَّ ابْعَثْهُ مَقَامًامَّحْمُوْدًا يَّغْبِطُهُ فِيْهِ
الْاَوَّلُوْنَ وَالْاٰخِرُوْنَ اَللّٰهُمَّ عَظِّمْهُ فِى الدُّنْيَا
بِاِعْلَآئِذِكْرِهٖ وَاِظْهَارِدِيْنِهٖ وَاِبْقَآءِ شَرِيْعَتِهٖ وَ فِى
الْاٰخِرَةِ بِشَفَاعَتِهٖ فِىْ اُمَّتِهٖ وَاَجْزِلْ اَجْرَهٗ وَمَثُوْبَتَهٗ
وَاَبْدِفَضْلَهٗ لِلْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ بِالْمَقَامِ الْمَحْمُوْدِ
وَتَقْدِيْمِهٖ عَلٰى كَآفَّةِ الْمُقَرَّبِيْنَ بِالشُّهُوْدِ ط اَللّٰهُمَّ
تَقَبَّلْ شَفَاعَتَهُ الْكُبْرٰى وَارْفَعْدَرَجَتَهُ الْعُلْيَاوَ اَعْطِهٖ
سُؤْلَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى كَمَآاٰتَيْتَ اِبْرٰهِيْمَ
وَمُوْسٰى ط ه اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ مِنْ اَكْرَمِ عِبَادِكَ
عَلَيْكَ شَرَفًا وَّكَرَامَةً وَّمِنْ اَرْفَعِهِمْ عِنْدَكَ
دَرَجَةً وَّ اَعْظَمِهِمْ خَطَرًا وَّاَمْكَنِهِمْ عِنْدَكَ شَفَاعَةً

ط٥ اَللّٰهُمَّ عَظِّمْ بُرْهَانَهٗ وَاَفْلِجْ حُجَّتَهٗ وَاَبْلِغْهُ مَاْمُوْلَهٗ

فِیْٓ اَهْلِ بَیْتِهٖ وَذُرِّیَّتِهٖ ط٥ اَللّٰهُمَّ اَتْبِعْهُ مِنْ ذُرِّیَّتِهٖ وَاُمَّتِهٖ

مَا بِهٖ عَیْنُهٗ وَاَجْزِهٖ عَنَّا خَیْرَ مَا جَزَیْتَ بِهٖ نَبِیًّا عَنْ

اُمَّتِهٖ وَاَجْزِ الْاَنْبِیَآءَ كُلَّهُمْ خَیْرًا ط٥ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ

عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا شَاهَدَتْهُ

الْاَبْصَارُ وَسَمِعَتْهُ الْاٰذَانُ وَصَلِّ وَسَلِّمْ عَلَیْهِ عَدَدَ مَنْ

صَلّٰی عَلَیْهِ وَصَلِّ وَسَلِّمْ عَلَیْهِ عَدَدَ مَنْ لَّمْ یُصَلِّ

عَلَیْهِ وَصَلِّ وَسَلِّمْ عَلَیْهِ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی اَنْ

یُّصَلّٰی عَلَیْهِ وَصَلِّ وَسَلِّمْ عَلَیْهِ كَمَا اَمَرْتَنَا اَنْ

تُصَلِّیَ عَلَیْهِ وَصَلِّ وَسَلِّمْ عَلَیْهِ كَمَا یَنْبَغِیْ اَنْ

یُّصَلّٰی عَلَیْهِ ط٥ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَیْهِ وَعَلٰی اٰلِهٖ

عَدَدَ نَعْمَآءِ اللّٰهِ تَعَالٰی وَاَفْضَالِهٖ ط٥ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

وَسَلِّمْ عَلَیْهِ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ وَاَوْلَادِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ

وَذُرِّیَّتِهٖ وَاَهْلِ بَیْتِهٖ وَعِتْرَتِهٖ وَعَشِیْرَتِهٖ وَاَصْهَارِهٖ

وَاَخْتَانِهٖ وَاَحْبَابِهٖ وَاَتْبَاعِهٖ وَاَشْیَاعِهٖ وَاَنْصَارِهٖ خَزَنَةِ

اَسْرَارِهٖ وَمَعَادِنِ اَنْوَارِهٖ وَكُنُوْزِ الْحَقَآئِقِ وَهُدَاةِ

الْخَلَآئِقِ وَنُجُوْمِ الْاِهْتِدَآءِ لِمَنِ اقْتَدٰی بِهِمْ وَسَلِّمْ

تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا دَآئِمًا اَبَدًا وَّارْضَ عَنْ كُلِّ

الصَّحَابَةِ رِضًی سَرْمَدًا عَدَدَ خَلْقِكَ وَزِنَةَ

عَرْشِكَ وَرِضَا نَفْسِكَ وَمِدَادَ كَلِمَاتِكَ كُلَّمَا

ذَكَرَكَ ذَاكِرٌ وَّكُلَّمَا سَهٰی عَنْ ذِكْرِكَ غَافِلٌ

صَلٰوةً تَكُوْنُ لَكَ رِضًی وَّلِحَقِّهٖ اَدَآءً وَّلَنَا

صَلَاحًا وَّ اٰتِهِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ

الْعَالِيَةَ الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ الْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ وَاللِّوَآءَ

الْمَعْقُوْدَ وَالْحَوْضَ الْمَوْرُوْدَ وَصَلِّ يَارَبِّ عَلٰى

جَمِيْعِ اِخْوَانِهٖ مِنَ الْاَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَالْاَوْلِيَآءِ

وَالصّٰلِحِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَ مَلٰٓئِكَتِكَ

الْمُكَرَّبِيْنَ وَعَلٰى سَيِّدِنَا الشَّيْخِ مُحِيِّ الدِّيْنِ اَبِىْ

مُحَمَّدٍ عَبْدِ الْقَادِرِ الْمَكِيْنِ الْاَمِيْنِ صَلَوَاتُ اللّٰهِ

عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا

مُحَمَّدٍ وَعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ السَّابِقِ لِلْخَلْقِ

نُوْرُهٗ الرَّحْمَةِ لِلْعٰلَمِيْنَ ظُهُوْرُهٗ عَدَدَمَا مَضٰى مِنْ

خَلْقِكَ وَمَابَقِىَ وَمَنْ سَعِدَ مِنْهُمْ وَمَنْ شَقِىَ صَلٰوةً

تَسْتَغْرِقُ الْعَدَّ وَ تُحِيْطُ بِالْحَدِّ صَلٰوةً لَّاغَايَةَ لَهَا

وَلَا انْتِهَآءَ وَلَآ اَمَدَ لَهَا وَلَا انْقِضَآءَ صَلٰوتِكَ الَّتِىْ

صَلَّيْتَ عَلَيْهِ صَلٰوةً مَّعْرُوْضَةً عَلَيْهِ مَقْبُوْلَةً لَّدَيْهِ

مَحْبُوْبَةً اِلَيْهِ صَلٰوةً دَآئِمَةً بِدَوَامِكَ بَاقِيَةً م

بِبَقَآئِكَ لَامُنْتَهٰى لَهَا دُوْنَ عِلْمِكَ صَلٰوةً

تُرْضِيْكَ وَتُرْضِيْهِ وَتَرْضٰى بِهَا اَنَّ صَلٰوةً

تَمْلَاُ الْاَرْضَ وَالسَّمَآءَ (مقام سجدہ اوّل) صَلٰوةً

تَسْتَجِيْبُ بِهَا دُعَآءَنَا وَتُزَكِّىْ بِهَا نُفُوْسَنَا وَ تُحْيِىْ

بِهَا قُلُوْبَنَا وَتُحِلُّ بِهَا الْعُقَدَ وَتُفَرِّجُ بِهَا الْكُرَبَ

(مقام سجدہ دوم)

وَيَجْرِىْ بِهَا لُطْفُكَ فِىْٓ اَمْرِىْ وَاُمُوْرِ الْمُسْلِمِيْنَ

(مقام سجدہ سوم) وَبَارِکْ لَنَا عَلَى الدَّوَامِ وَعَافِنَا

وَاهْدِنَا وَامْدُدْنَا وَاجْعَلْنَآ اٰمِنِيْنَ وَيَسِّرْ لَنَآ اُمُوْرَنَا

مَعَ الرَّاحَةِ لِقُلُوْبِنَا وَاَبْدَانِنَا وَالسَّلَامَةِ وَالْعَافِيَةِ فِيْ

دِيْنِنَا وَاٰخِرَتِنَا وَتَوَفَّنَا عَلَى الْكِتَابِ وَالسُّنَّةِ

وَاجْمَعْنَا مَعَهٗ فِي الْجَنَّةِ مِنْ غَيْرِ عَذَابٍ يَّسْبِقُ بِنَا

وَاَنْتَ رَاضٍ عَنَّا غَيْرَ غَضْبَانَ وَلَا تَمْكُرْبِنَا وَاخْتِمْ

لَنَا مِنْكَ بِخَيْرٍوَّ عَافِيَةٍ بِلَامِحْنَةٍ اَجْمَعِيْنَ ط

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ

عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ٥ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ٥

بِرَحْمَتِكَ يَآرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ☆

16 दुरूदे किब्रीयत अहमर

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म-जअल अफ़ज़ल सलवातिक अददंव-व अनमा बरकातिक सरमदन व अज़का तहीय्यातिक फदलंव-व मददन अला असरफिल हकाइकिल इनसानीय्यति व मअदनिद्दकाइकिल इमानीय्यति व तुरित्तजल्लीय्यातिल् इनसानीय्यति व महबतिल् असरारिर्रहमानीय्यति व वासिततिअक्दिन्नबीय्यीन व मुकद्दमति जयशिल मुरसलीन व अफजलिल् खलाइकि अजमइन हामिलि लिवाइल् इज़्ज़िल् अअला व मालिकि अज़िम्मतिश्शरफिल असना शाहिदि असरारिल अज़ल्लि व मुशाहिदिल अनवारिस्साबिकिल उवले व तरजुमानि लिसानिल कदमि व मम्बइल इल्मि वल हिलमि वल हिकमि व मज़हरिसिर्रिल जूदिल जुजइय्यी वल कुल्लीय्यी वल इनसानि अयनिल वुजूदिल उलवीय्यी वस्सुफ्लीय्यी व रुहि जसदिल कवनयनि हयातिद्दारयनिल मुतखल्लिकि बिअअला रतबतिल ऊबूदीय्यतिल मुताहक्किकि बिअसरारि- र्रबूबीय्यति साहिबिल मकातिल इस्तिफाईय्यति वल करामातिल इरतिदाईय्यति सय्यिदिल अश्राफि व जामिइल अवसाफिल खलीलिल अअजमि वल हबीबिल अकरमिल मख्शुशि बिअअलल मरातिबि वल मकामाति वल मुअय्यदि बिअवदहिल बराहीनि वद्दलालतिल मनशूरि बिर्रुअबि वल मुअजिज़ाति वल जवहरिश्शरीफिल अबदीय्यी वन्नूरिल कदीमिल मुहम्मदीय्यी -स्सरमदीय्यी सय्यिदिना मुहम्मदिनिल महमूदि फील ईजादि वल वुजूदीलफातिहि लिकुल्ली साहिदींव -वमसहूदींव -व हजरतील मशाहिदि वश्शुहूदि नूरि कुल्लि सायईंव -वहुदाहु वासिरिं कुल्लि सिर्रिंव -वसनाहुल्लज़ी शुक्किकत मीनहुल -असरारु वनफलकत मीनहुल अनवारु -स्सिर्रील -बातिनि वन्नुरीज्जा -हिरिस्सय्यिदील कामिलील फातिहील खातिमील -अव्वलील आखिरील बातिनीज्जाहिरील -आकिबील हाशिरीन्नाहियल -आमिरीन्नासीहीन्नासीरी -साबिरीश्शाकिरील -कानितीज्जाकिरील -माहियल माजिदील अज़ीज़ील -हामिदील मुअमिनील आबिदील मुताबक्किलीज़्ज़ाहिदील काइमील काइदील -किईस्साजिदीत्ताबिईश्शहीदील -वलीय्यील हमीदील बुरहानील हुज्जतील मुताईल मुख्तारील खादिईल खाशिईल बर्रील

मुस्तनशिरील हक्कील मुबीनि ताहा यासीन अल मुज़म्मिलील मुदस्सिरि सय्यिदील मुरसली-न व इमामील मुत्तकी-न व खातिमीन्नबीय्यीय-न हबीबि रब्बील आलमीनन्नबीय्यील मुस्तफा वर्रसुलील मुजतबा वलहकमील अददलील तीफील खबीरील हकीमील अलीमील अज़ीज़ीर्रऊफीर्रहीमील गफूरीश्शकूरील अलीय्यील करीमि नूरिकल -कदीमि वसिरातिकल मुस्तकीमि मुहम्मदीन अब्दि-क व रसूलि-क व सफीयि-क व खलीलि-क व हबीबि-क व वलीयी-क व नबीयी-क व अमीनि-क व दलीलि-क व नजीयि-क नुखबति-क ज़खीरति-क व खियरति-क व इमामील खयरि व काइदील खयरि व रसूलीर्रहमति -न्नबीयील उम्मीय्यील अरबीय्यील करशीय्यील हीशिमीय्यील अबातहीय्यील मक्कीय्यील मदनीय्यीत्तिहामीयीश्शाहिदील मशहूदील वलीय्यील मुकर्रबील अबदील मसऊदील हबीबीश्शफीईल हसीबीर्रफीईल मलीहील बदीईल वाइजील बशीरीन्नजीरील अतूफील हलीमील जवादील करीमीत्तय्यीबील मुबारकील मकीनीस्सादिकील मसदूकील अमीनीद्दाई इलयक बिइज़निकस्सिराजील मुनीरील्लजी अदरकल हकाइ-क बिजुम्मतिहा व फाज़ व फाकल खलाइ-क बिरुम्मतिहा व जअलतहू हबीबंव -वनाजयतहू करीबंव -वअद्नयतहू रकीबंव -व खतमत बिहीर्रिसाल-त वद्दलालत-ा वलबशार-त वन्नज़ार-त वन्नूबूव्व-त व नसारतहू बीर्रुअबि व जललतहू बिस्सुहबि व रदद्त्तालहूश्शम्सा व शककू-त लहुल कमर वन्तक्-त लहुद्दब्बा वज्जब-य वज़्ज़ीअ-ब वलजीज़अ वज़्ज़िराअ वल जम-ल वल जब-ल वल मद-र व अश्शज-र वल हज-र व अम्बअत्त मीन असाबिइहील माअज़्जुला-ल व अनज़ल्-त मिनल मुज़्नि बिदअवतिही फी आमील महलि वलजद्बि वाबिलल गयसि मतरि फाअशवश-ब मीनहुल फकरु वस्सखरु वल वअरु वस्साहलु वर्रमलु वल हजरु वल मदरु व असरयताबिही लयलंम्मिनल मस्जिदील हरामि इलल मस्जिदील अक्सा इलस्समावातील उला इला सीदरतील मुन्तहा इला का-ब कवसैनि अवअदना व अरयतहुल आयतल कूबरा व अनलतहुल गायतल कूस्वा व अक्रम्तहू बिल मुखातबति वल मुराकबति वल मुशाफहति वल मुशाहदति वल मआयनति बीलबसरि व खस्सस्तहू बील वसीलतील उजमा वश्शफाअतील कूबरा यवमल फज़्ज़िल अकबरि फील महशरि

व जमअतलहू जवामिअल कलिमि व जवाहिरील हिकमि व जअलत उम्मतहू खयरल उममि व गफर्तलहू मा तकद्द-म मीन जम्बिही व मा तअख्खरल्लजी बल्लगर्रिसाल्-त व अद्दल अमान्-त व नसाहल उम्म्-त व कशफल गुम्म्-त व जलज्जूलम्-त व जाहद फी सबीलील्लाहि व अब्-द रब्बहू हत्ता अताहुल याकीनु। अल्लाहुम्मबअसहु मकाममम्-महमूदंय -यगबितुहू फीहील अव्वल्-न वल आखिरू-न अल्लाहुम्म अज्जीमहु फीद्दुनया बिईअलाइ ज़ीकरिही व ईजहारि दीनिही व इबकाइ शरीअतिही व फील-आखिरतीन बिशफाअतिही फी-उम्मतिही व अजज़ील अजरहू व मशूबतहू व अबदि फद्लहू लील-अव्वली्-न वल आखिरी्-न बीलमकामील -महमूदि व तकदीमिही अला काफ्फतील मुकर्रबी्-न बीश्शुहूदि। अल्लाहुम्म तकब्बल् शफाअतहूल -कूबरा वरफअ-दरजतहुल -उलया व अअतिही सूअलहू फील आखिरति वल ऊला कमा आताय-त ईबराही-म व मूसा। अल्लाहुम्मज्-अल्हु मीन अकरमि इबादि-क अलय-क शरफं व-व करामतंव -व मीन अरफइहीम इन्द-क दरजतंव-व अअजमिहीम खतरंव-व अमकनिहीम इन्द-क शफाअतन। अल्लाहुम्म अज्जीम बूरहानहू व अफ्लीज हूज्जतहु व अब्लीग्हु मा'अमूलहू फी अहलि बयतिही व जूर्रीयातिही। अल्लाहुम्म अतबीअहु मीन जुर्रीयतिही व उम्मतिही मा तुकीर्रुबिही अयनोहू अजज़िही अन्ना खय-र मा जज़य-त बिही नबीय्यन अन उम्मतिही व अजज़ील -अम्बियाअ कुल्लहूम खयरन। अल्लहुम्म सल्ली व सल्लीम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन अद-द माशाहदतहूल -अबसारु व समीअतहूल आजानु व सल्लि व सल्लीम अलयहि अद-द मन सल्ला अलयहि व सल्लि व सल्लीम अलयहि अदद मंल्लम युसल्लि अलयहि व सल्लि वसल्लिम अलयहि कमा तुहीब्बु वतरदा अंय्युसल्ला अलयहि व सल्लि व सल्लीम अलयहि कमा यंम्बगी अंय्युसल्ला अलयहि।

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अलयहि व अला आलिही अद-द नअमाइ-ल्लाहि तआला वअफदालिही। अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अलयहि व अला आलिही व असहाबिही व अवलादिही व अजवाजिही व जूर्रिय्यातिही व अहलि बयतिही व इतरतिही व अशीरतिही व असहारिही व अखतानिही व अहबाबिही व अतबाइही व अश्याइही व अनसारिही खजनति असरारिही व मआदिनि अनवारिही व कुनूज़ील

हकाइकि व हुदातील खलाइकी व नुजूमील ईहतिदाइ लिमनीकतदा बिहीम व सल्लीम तस्लीमन कसीरन दाइमन अबदंव-वर-द अन कुल्लीस्साहाबति रिदन सरमदन अद-द खलकि-क व जिनति अर्शि-क व रिदा नफ्सि-क व मिदाद कलिमाति-क कुल्लमा जकर-क जाकिरुंव-व कुल्लामा साहा अन जीकरि-क गाफिलुन सलातन तकूनुल-क रिदंव-व लिहक्किही अदाअंव-व लना सलाहंव-व आतिहील- वसील-त वल फजील-त वद्दरजतल -आलिय-तर्फीअ-त वबअसहुल- मकामल -महमू-द वल्लिवाअल -मअकू-द वल हवजल -मवरू-द व सल्लि या रब्बि अला जमीई ईखवानिही मिनल अम्बियाइ वल मुरसली-न वल अवलियाइ वस्सालिही-न वश्शुहदाइ वस्सिद्दीकी-न व मलाइकतिकल -मुकर्रबी-न व अला सय्यिदिन-श्शयखि मुहीय्यीद्दीनि अबी मुहम्मदीन अब्दील कादिरील मकीनील अमीनि सलवातुल्लाहि अलयहीम अजमई-न। अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन व अला आले सय्यिदिना मुहम्मदीन्नीस्साबिकि लील खलकि नूरुहू अर्रहमतिलील आलमी-न जुहूरुहू अददमा मदा मीन खलकिक वमा बकि-य वमन सइ-द मीनहुम व मन शकि-य सलातन तसतगरिकुल अद्द व तुहितु बील हद्दि सलातंल्ला -गाय-त लहा व ला ईन्तिहाअ व ला अम-द लहा वलन-किदाअ सलातिकल्लती सल्लय-त अलयहि सलातन दाइमतम् मअरुदतन अलयहि मनकुबूलतंल्लदयहि महबुबतन इलयहि सलातनदाइमतंम बिदवामि-क बाकीयतम बिबकाइक ला मुन्तहा लहादु-न ईलमि-क सलातन तुरदि-क व तुरदीहि वतुरदा बिहा अन्न सलातन तमलउल अरद वस्समाअ (मकामे सज़्दा अव्वल) सलातन तस्तजीबु बिहा दुआओना व तुजक्की बिहा नुफूसुना व तूहयी बिहा कुलूबना व तुहील्लु बिहल् ऊकु-द व तुफरिंजु बिहल कुरु-ब (मकामे सज़्दा दोम) व यजरी बिहा लूतफु-क फीअमरी व उमूरील मुस्लिमीन (मकामे सज़्दा सौम) व बारीक लना अलद्दवामि व आफिना व अहदिना वमदूदना वजअलना आमिनीन व यस्सीर लना उमूरना मअर्राहति लिकुलूबना व अबदानिना वस्सलामति वल आफियति फी दीनिना व दुन्याना व आखिरतिना व तवफ्फना अलल किताबि वस्सुन्नति वज्मअना मअहू फील जन्नति मीन गय्रि अजाबीय्यस्बिकु बिना व अन्त रादीन अन्ना गयर गदबानु-न वला

तम्कुर्बिना व अख्तिम्लना मीनु-क बिखयरीव -वआफियतीम् बिला मीहनतीन अजमई्-न। सुबहानु-न रब्बि-क रब्बील ईज्जति अम्मा यसीफू न व सलामुन अलल मूरसलीन। वलहम्दु लिल्लाहि रब्बील आलमीन बिरहमति-क या अरहमर्राहिमीन।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। ऐ अल्लाह नाज़िल फ़रमा अपनी रहमतों में से बेहतरीन रहमत बाऐतबार अदद के और अपनी ज्यादातर बरकतों को बाऐतबार दवाम के और अपने सलामों में से पाकीजातर को बाऐतबार फज्ल और मदद के उनपर जो हैं बुजूर्गतरीन हकीकतों ईन्सानीयत में से अशरफतरीन ईमान की लताफतों का मअदन (खान सोने चाँदी वगैरह की) तजल्लीयाते ईहसानीया का कोहे तुर (तुर पहाड़) तजल्लीयाते ईन्सानी का असरारे रहमानीया के नुजूल का मक़ाम जो अंम्बिया के हार का दरम्यानी मोती और रसूलों के लश्कर का पेशरू और हर नौ की तमाम मखलुक से अफ़ज़ल हैं। जो आ'ला इज़्ज़त के अलमबरदार हैं जो बुलंदतरीन बुज़ुर्गी की बागों के मालिक हैं अज़ल के असरार (भेद) के गवाह और अव्वलीन अनवार का मुशाहिदा (देखने वाले) करने वाले है। जो किदम (हमेंशगी) व दवाम की जबान के सच्चे तर्ज़मान (बयान करने वाले) हैं। इल्म, हिल्म और हिकमतों का सर चश्मा है जो जुजइ और कुल्ली शखावतों के राज़ के मज़हर हैं, जो अलवी और सुफली मौजुदात की आँख की पुतली है, जो कौनैन के वजूद की रूह है, जो दारैन की ज़िंदगी का सर चश्मा है, बन्दगी के आ'लातरीन मरातिब से मतशिफ (शिफ़्त रखने वाला) हैं, जो रबूबीय्यत के असरार (भेद) से मुज़य्यन (सजाया हुआ) है, जो मुन्तखबशुदा मकामात और पसंदीदा इज़्ज़त अफजाईयों के मालिक हैं, जो सारे बुज़ुर्गों के सरदार और जुमला अवसाफे कमाल के जामेअ है, जो (अपने रब के) खलीले-आ'ज़म और महबूबे मुकर्रम है, बुलंदतरीन मरातिब और मकामात जिनके लिए मख्शुस कर दिये गये है, जिनकी ताइद रोशन दलाइल और शवाहिद (साबित, गवाह का बहुवचन) से की गई है, जिनको रौब और मो'ज्जीजात से गालिब और मनशूर बनाया गया है। सारे दरूद व सलाम हों इज्जत व शरफवाले अबदी मोती और नूरे कदीम महम्मदी पर जो सरमदी (या'नी) हमारे सरदार और आका मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर जो मकामे ईजाद व वजूद में

महमूद (या'नी सताइश किये गये, सराहना किये गये) हैं, हर शाहिद और मशहुद के लिए दरे रहमत खोलने वाले हैं, मुशाहिदह और शहूद की बारगाह हैं, हर शय (चीज) की हक़ीक़त और उसके लिए नूरे हिदायत हैं हर राज का सिर्रे निहाँ (छुपा हुआ) और उसकी ऐसी चमक जिनसे राजों के पर्दे चाक किये गये हैं जिससे हर किस्म के अनवार जहूर पजीर हुए हैं राजे-निहाँ, नूरे-अयाँ सबके आका हर लिहाज़ से कामिल गंजे-नेअमत खोलने वाले, सिलसील-ए-नबूव्वत ख़त्म करने वाले, खल्क में सब से अव्वल, जुहूर में सबसे आख़िर (निगाहे खिरद से) पोशीदा (निगाहें इश्क पर) आश्कार सबसे पीछे, मुरदा सलाहियतों पर हश्र बरपाने वाले, बुराईयों से मना करने वाले, नेकियों के हुक्म देने वाले, नसीहत करने मदद फ़रमाने वाले, सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले, फर्ते-नियाज़ से झुकने वाले, हर लहज़ा अपने रब को याद करने वाले, हर बातिल को मिटाने वाले, बहुत बुज़ुर्ग बड़ी इज़्ज़त वाले अपने रब्ब की हम्द करने वाले, इस पर ईमान लाने वाले, इबादत गुजार, अपने रब्ब पर भरोशा करने वाले, लज्जाते दुनिया से दुर रहने वाले, बारगाहे इलाही में खड़े होने वाले, बैठने वाले, रुकूअ करने वाले और सज़्दा करने वाले, उसका हर हुक्म मानने वाले, गवाही देने वाले, मददगार, खूबियों सराहा, तवहीदे बारी की बुरहान, दलीले-कातअ (तराशा हुआ), सारी काएनात के मखदुम (जिसकी खिदमत की गइ), साहिबे इख्तियार, बारगाहे इलाही में आजिज़ी करने वाले, सर झुकाने वाले, नेकोकार, नुशरत तलब करने वाले, सरापा हक़, सच जाहिर करने वाले, चौंदहवीं के चाँद, रसूलों के सरदार, कम्बलपोश, चादर ओढ़ने वाले, सब रसूलों के सरदार, तमाम मुत्तकीयों के इमाम, खातमीन्नबीय्यीन, हबीबे रब्बुल आलमीन, चुने हुए नबी, चुने हुए रसूल, फैसला करने वाले, अदल करने वाले, लुत्फ फ़रमाने वाले, बाखबर (असरारे हयात से) फरजाना, वसीअ इल्म वाले, दाएमी इज़्ज़त वाले, बड़े मेहरबान, हमेशा रहम फ़रमाने वाले, बहुत परदापोश, बड़े क़द्र दान, बहुत बुलंद, बड़े करीम, आपका नूर कदीम, तेरी (अल्लाह की तरफ़) तरफ़ ले जाने वाले, सीधा रास्ता चलाने वाले, जिनका नामे नामी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) है, तेरे बंदे, तेरे रसूल, तेरे चुने हुए, तेरे खलील (दोस्त), तेरे हबीब, तेरे दोस्त, तेरे नबी, तेरे (असरार के) अमीन, तेरी तरफ़ रहनुमा, तेरे हमराज़, तेरे पसंदीदा, तेरी

रहमत का सरमाया, तेरे बरगुज़ीदा, हर कारे खैर में पेशवा, हर कारे खैर में रहनुमा, रहमत वाले रसूल, नबी, उम्मी, अरबी, करसी, हाशमी, अबतिही, मक्की, मदनी, तहामी, हर सच्चाई के गवाह, जिसकी गवाही की तूने तस्दीक की, तेरे दोस्त, मुकर्रब, तेरे बंदे, सआदतमंद, तेरे हबीब, गुनाहगारों के शफीअ, आली हसब, बहुत ऊँचे, दिलरुबा, बेमिशाल हसीन, वअज फ़रमाने वाले, खुशख़बरी देने वाले, हर वक्त मुतनब्बा (होशियार) करने वाले, बहुत मेहरबान, बुर्दबार, सखी, करीम, पाक, सरापा बरकत, राहे हक़ पर साबित कदम, सच्चा, जिसकी सच्चाई तसलीम (स्वीकार) की गई, अमीन, तेरी तौफीक से तेरी तरफ़ बुलाने वाले, वो रोशन आफ़ताब जिसने इहाता कर लिया जुमला हकाइक का और कामयाब हो गये, और हर नौअ की मखलुक पर फौवकीय्यत (श्रेष्ठता, बढ़कर होना) ले गये और जिसको तूने अपना हबीब बनाया, जिसको अपने करीब बुलाकर राज की बातें की, जिसे अपने नज़दीक करके निगहबान बनाया जिसकी आमद पर तूने रिसालत, दलालत, बशारत, नज़ारत और नबुव्वत का खत्म कर दिया, रौब अता करके तूने उनकी नुसरत फरमाई, बादलों से तूने उनपर साया किया, डूबे हुए सूरज को तूने उसके लिए लौटाया, उसके लिए चाँद का सीना सक (फाड़ना या टुकड़े करना) किया, उनके लिए गोह (छीपकली की तरह का ज़मीन पर रेंगने वाला जानवर), हिरन, भेड़ीये, खुश्क खजूर के तने, बकरी के भुने हुए बाज़ू, ऊँट, पहाड़, मिट्टी के ढेले, दरख़्त, और पत्थर को बोलता कर दिया, जिनकी उँगलियों से तूने मीठा पानी जारी किया, खुश्क साली और क़हत (अकाल) के जमाना में जिसकी दुआ से तूने बादलों से मूशलाधार मेह बरसाया पस चटयल मैदान चट्टानें, पथरीले इलाके, हमवार मैदान रेगिस्तान पत्थर और मिट्टी के टीले सरसब्ज़ व सादाब हो गये। और तूने रात के वक्त उसे मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा तक सैर कराई, वहाँ से बुलंद आसमानों तक वहाँ से सिद्रतुल मुन्तहा तक, वहाँ से मकामे काबा कवसयन तक बल्कि उससे भी करीबतर किया और तूने उन्हें अपनी सबसे बड़ी निशानी दिखाई, और इन्तहाई बुलंद मरतबा पर फाइज़ फ़रमाया, नीज़ अपने ख़िताब, मुराकबा, रूबरू गुफ़्तगू, मुशाहिदा और चश्मे जाहिर से अपने दीदार का सरफ बख्शा। तूने उनके लिए वसीला, आज़मा (बुज़ूर्गतरीन), सफाअते-कुब्रा के मन्शबे-जलील को महशर के दिन के लिए मख्शुस

फरमा दिया जो बड़ी घबराहट और इज़्तिराब (बेचैनी, बेक़रारी) का दिन होगा और तूने उनके लिए कलाम की जामिइय्यत (जिसमें सब कुछ आजाए), व बलागत के साथ मआनी के ताबिन्दा (चमकता हुआ, नूरानी) मोतीयों को भी जमा दिया उनकी उम्मत को तूने खैरुल-उमम बनाया और उन्हें उनके अगले पिछले गुनाहों से अपनी हिफाजत में ले लिया, वो जिसने तेरा पैगाम पहुँचाया, अमानत का हक़ अदा कर दिया, उम्मत को नसीहत की, तकलीफ को दुर किया, तारीकी (अन्धेरे) को रोशन किया और राहे खुदा में जमाव किया और तादमे वापस अपने रब की इबादत करते रहे। ऐ अल्लाह उन्हें मकामे महमूद पर फाइज फरमा ताकि अगले और पिछले सारे उनके साथ रश्क करें। ऐ अल्लाह ! तू उनके ज़िक्र को बुलंद करके उनके दीन (धर्म) को ग़लबा दे कर और उनकी सरीअत को ताअबद बाकी रख कर उन्हें दुनिया में अज़मतें अरजानी फरमा और आखिरत में उम्मत के बारे में उनकी सफाअत कबूल करके उनकी शान को बुलंद कर, उनको बेहतरीन अज्र और सवाब मरहमत फरमा, मकामे महमूद पर उनके फज़्ल को अव्वलीन और आखिरीन के लिए आसकार कर दे नीज तमाम मुकर्रबीन बिलशहुद पर उनको मुकद्दम कर। ऐ अल्लाह! उनकी शफाअते कुब्रा को कबूल फरमा और उनके दर्जे को मजीद (और अधिक) बुलंद फरमा नीज आखिरत और दुनिया में जो कुछ उन्होंने माँगा है उन्हें अता फरमा जिस तरह तूने (अपने खलील) इब्राहीम (अलयहीस्सलाम) और मुसा (अलयहीस्सलाम) को अता फ़रमाया था। ऐ अल्लाह! तू उन्हें उन बंदों में से कर जो सरफ व करामत के लिहाज़ से तेरी बारगाह में बड़े मुअज़्ज़िज और मुकर्रम हैं और जिन का दर्जा तेरी जनाब में बहुत उँचा है और जिनकी तेरे नज़दीक बड़ी कद्र व मन्जिलत है और जिनकी सफाअत तेरी बारगाह में बड़ी कवी (ज़बरदस्त) है। ऐ अल्लाह! उनकी दलील को अज़मत बख्श और उनकी हुज्जत को रोशन फरमा और अपने अहले बैत व औलाद के बारे में उनकी आरजू को पूरा फरमा। ऐ अल्लाह! आपकी औलाद आपकी उम्मत को आपकी पैरवी नसीब फरमा जिससे आपकी आँखें ठन्डी हों, हर नबी को अपनी उम्मत की तरफ़ से जो जज़ा (बदला, सीला) तूने दी है, हम ग़ुलामों की तरफ़ से हमारे आका को उससे भी बेहतरीन जज़ा अता फरमा और जुमला अम्बिया को ज़जा-ए-खैर दे। ऐ अल्लाह! सलात व सलाम भेज हमारे आका मुहम्मद (सल्लल्लाहु

अलयहि व सल्लम) पर इतनी तादाद में जितनी आँखों ने आपको (आपके रुखे अनवार को) देखा और जितने कानों ने (आपका कलाम) सुना, और आप पर सलात व सलाम भेज इतनी तादाद में जितने लोगों ने आप पर दुरूद नहीं भेजा, आप पर सलात व सलाम भेज जिस तरह तुझे पसंद हो और जिस पर तू राज़ी हो, कि ऐसा आप पर दुरूद भेजा जाये और दुरूद व सलाम भेज उनपर जिस तरह तूने हुक्म दिया है कि हम उनपर दुरूद भेजें, और सलात व सलाम भेज उनपर जिस तरह आप पर दुरूद भेजना आपकी शयाने शान के लायक है। ऐ अल्लाह! सलात व सलाम भेज आप पर और आपकी आल (औलाद) पर जितनी तादाद में तूने उनपर इनाम फ़रमाया और फज़्ल व करम किया। ऐ अल्लाह! सलात व सलाम भेज हमारे आका मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) पर, आपकी आल पर, आपके सहाबा पर, आपकी औलाद पर, आपके नवासों पर आपकी अज़वाज (बीवियाँ) पर की जुर्रीयात (नस्ल) पर, आपके अहले बैते-अतहार पर, आपकी इतरत पर, आपके कबीले के पाक नुफूसों (नफ्स की जमा) पर, आपके ससूराल वालों पर, आपके दामादों पर, आपके अहबाब पर, आपके मुत्तबईन (पैरवी करने वाले) पर, आपके ताबेअ फ़रमानों पर, आपके मददगारों पर, आपके असरार के मखाजन (ख़ज़ाने) और आपके अनवार के मआदन (खान) थे (और हैं) जो हकाइक के ख़ज़ाने, मखलुक के रहबर और अपकी पैरवी करने वालों के लिए हिदायत के सितारे थे और उनपर हमेंशा हमेंशा कसरत से सलाम भेज, (इलाही) तमाम सहाबा किराम से हमेंशा के लिए इतना राज़ी हो जा जितनी तेरी मखलूक की तादाद है जिस कद्र तेरे अर्श का वजन है, इतना जितना तू ख़ुश हो जाए और इस कद्र राज़ी हो जितनी कद्र तेरे कलमात के लिखने के लिए स्याही की मिक़दार है, सलात व सलाम का सिलसिला जारी रहे जब तक तेरा ज़िक्र करने वाले तेरा ज़िक्र करते रहें और जब तक ग़ाफ़िल तेरे ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहें ऐसा दुरूद भेज जो तेरी रज़ा, तेरे नबी के हकूक की अदायगी और हमारी सलाह व फलाह का सबब बने उन्हें मकामे-वसीला और फ़ज़ीलत और बुलंद व अरफाअ दरजा पर फाइज़ फरमा, इलाही! आप को मकामे-महमूद पर मबउश फरमा आपको वह झन्डा (लवाइल-हम्द) जो तूने बाँधा है और वह हौज़ जिस पर सारे प्यासे जमा होंगे मरहमत फरमा, ऐ मेरे परवरदिगार दुरूद भेज आपके

जुमला बिरादरान (भाइयों), नबीयों और रसूलों पर नीज औलीया-ए-उम्मत, सालिहीन और मुकर्रब फ़रिश्तों और हमारे सरदार शेख़ मुहयुद्दीन अबू मुहम्मद अब्दुल कादिर (रदीय अल्लाहु तआला अन्हु) पर जो मकामे-कुर्ब पर मतमक्कीन (क़ायम रहने वाले) और असरारे इलाहीया के अमीन हैं उन सब पर अल्लाह तआला के दरूद हो। ऐ अल्लाह! दुरूद भेज हमारे आका मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) पर और हमारे आका मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) की आल पर जिनका नूर सब मखलुक से पहले पैदा हुआ और जिसका जुहूर सारे जहानों के लिए रहमत है इतनी तादाद में जितनी तेरी मखलुक गुज़र चुकी है और अभी जितनी (गुज़रनी) बाकी है जिस कद्र उनमें से सईद (खुश नसीब, नेकोकार) हुए हैं और जितने बदबख्त हुए हैं ऐसा दुरूद जो सारी गिनतियों का इहाता (घेरना, चारदीवारी) कर ले और सारी हदों को घेरे मे ले ले, ऐसा दुरूद जिसकी कोई इन्तिहा ना हो - ना जिसके लिए कोई मीआद मुकर्रर हो और ना वो इख्तिताम पजीर, तेरे वो दुरूद जो तू ने उनपर भेजे हैं और ऐसा दुरूद जो बारगाहे नबुव्वत में पेश किया जाता है जो बारगाहे आ'ला में मक़बूल भी है और नबी मुकर्रम को प्यारा भी है ऐसा दुरूद जो तेरे दवाम के साथ दाईमी रहे और तेरे बका के साथ बाकी रहे तेरे इल्म के बग़ैर उसकी कोई इन्तिहा ना हो (इलाही) ऐसा दरूद जो तुझे राज़ी कर दे, जो तेरे हबीब को खुश कर दे और उसकी बरकत से तू हम पर भी राज़ी हो जाए, ऐसा दुरूद जिससे ज़मीन पुर हो जाए और आसमान लबरेज हो जाए, ऐसा दुरूद जिसकी बरकत से तू हमारी दुआएँ कबूल फरमा से और हमारे आलूदा नुफूसों को पाक कर दे और हमारे मुर्दा दिलों को ज़िंदा कर दे, जिसकी बरकत से तू हमारे अक्दों को हल कर दे और आलाम व मशाइब को दूर कर दे, जिसके तुफ़ैल तेरा लुत्फ मेरे काम और सारे मुसलमानों कामों में कार फरमा रहे, इलाही बरकतें दे हमें दवामी और हमसे दरगुजर फरमा, हमें राहे रास्त पर साबित कदम रख और हमारी मदद फरमा और हमें अम्न से रख हमारे दिलों और जिस्मों की राहत व आराम के लिए, हमारे लिए हमारे उमूर आसान कर दे, हमारे दीन में हमारी दुनिया में और हमारी आखिरत में हमें सलामती और आफ़ियत मरहमत फरमा हमारी वफ़ात किताब व सुन्नत पर हो किसी सख़्त अज़ाब में मुबतिला किए बग़ैर तू हमें अपने अपने हबीब के

साथ जन्नत में इकट्ठा कर दराँ हालीका (उस हाल में, उस सूरत में, हाँलांकि) तू हम पर राज़ी हो नाराज़ ना हो अपनी मेहरबानी से बग़ैर किसी तकलीफ़ के खैर व आफ़ियत के साथ हम सबका ख़ातमा कर, ऐ हबीब! आपका रब जो इज़्ज़त वाला रब है उन तमाम खुराफ़ात से पाक है जो कुफ्फार व मुश्रिकीन बयान करते हैं और सलाम हो अल्लाह के पैग़म्बरों पर, सब तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं जो मालिक सारे जहांनों का, रहम फरमा ज़्यादा रहम फ़रमाने वाले सब रहम फ़रमाने वालों से।

17 दुरूदे अकसीर आ'जम

ये दुरूद शरीफ़ हज़रत गौश पाक शेख़ सय्यद अब्दुल कादिर जिलानी रदी अल्लाहु अन्हु ने हुजूर पूर नूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शान में लिखा और इसका नाम अकसीर आ'जम रखा, इसका ये नाम यानी अकसीर (कीमिया, वो रसायन जिससे ताँबे को सोना बनाया जाता है, लाजमी असर करने वाली दवा, पारस) इसलिए रखा गया के जैसा कि पारस धातु को सोना बना देता है, ऐसे ही ये दरूद शरीफ़ अपने पढ़ने वालों को जाहिरी और बातिनी लिहाज़ से सोने की मानिंद कर देता है। हुजूर गौश पाक रदी अल्लाहु तआला अन्हु को ये दुरूद शरीफ़ बहुत पसन्द था और आप ने अपने मा'मुल में इसे अक्सर पढ़ा। इसलिए सिलसिला कादिरीया के अक्सर असहाबे तरीकत ने इसे पढ़ा है और इसके बेपनाह फुयूज व बरकात पाये हैं। अगर कोई शख़्स हुशूले (हासिल करना) रूहानियत की गरज़ से इस दुरूद शरीफ़ को बाद नमाज़े-फज्र एक बार और बाद नमाज़े-इशा एक बार पढ़े तो उस पर माअरिफत की राहें खुल जाएगी, अगर उसे कोई मुर्शिद कामिल ना मिला हो तो इस दुरूद शरीफ की बरकत से मुर्शिद कामिल मिल जाएगा। उसके नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की हजूरी नसीब हो जाएगी और आख़िर उसका शुमार अल्लाह के ख़ास बंदों में हो जाएगा और जो शख़्स इसे हफ़्ता में एक बार पढ़ लिया करे उसकी मुरादें पूरी हों के तमाम आफ़त से महफूज रहेगा, रिज़्क में इज़ाफ़ा होगा, गुरबत का ख़ातमा हो जाएगा, अजाबे-कब्र से निजात मिलेगी, कारोबार में बरकत होगी, दिल को तस्कीन रहेगी, अज़ीज़ व अकारिब

और अपने पराए हमेंशा इज़्ज़त करेंगे। अगर कोई शख़्स क़ैद में इसे कसरत से पढ़े तो उसे क़ैद से ख़लासी मिलेगी। अगर कोई सिफा-ए-अमराज (बीमारियों से सिफा) की निय्यत से इसे पढ़े तो उसे सिफा हासिल होगी।

۱۷ درود اکسیر اعظم

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِهِ الۡكَرِيۡمِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰی سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَقۡبَلُ بِهَا دُعَآئَنَا
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَسۡمَعُ
بِهَا اِسۡتِغَاثَتَنَا وَنِدَآءَ نَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَاوَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُسَلِّمُ بِهَا اَيۡمَانَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی
سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُقَوِّیۡ بِهَا اِيۡقَانَنَا اَللّٰهُمَّ
صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَغۡفِرُ بِهَا

ذُنُوۡبَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً
تَسۡتُرُ بِهَا عُيُوۡبَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی
سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَحۡفَظُنَا بِهَا مِنۡ
اِكۡتِسَابِ السَّيِّئَاتِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُوَفِّقُنَا بِهَا لِعَمَلِ الصّٰلِحٰتِ اَللّٰهُمَّ
صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُفۡلِحُ بِهَا
عَمَّا يُرۡدِيۡنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ
صَلٰوةً تَكۡسِبُ بِهَا مَا يُنۡجِيۡنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی
سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُجَنِّبُ بِهَا عَنَّا
الشَّرَّ كُلَّهٗ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ
صَلٰوةً تَمۡنَحُنَا بِهَا الۡخَيۡرَ كُلَّهٗ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُحَسِّنُ
بِهَا اَخْلَاقَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُصْلِحُ بِهَآ اَحْوَالَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَعْصِمُنَا
بِهَا عَنِ الْمَعْصِيَةِ وَالْغَوَايَةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا
وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَرْزُقُنَا بِهَا اِتِّبَاعَ السُّنَّةِ
وَالْجَمَاعَةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ
صَلٰوةً تُبَعِّدُنَا بِهَا مِنْ اِقْتِرَانِ الْاٰفَاتِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكْلَئُنَا بِهَا عَنِ
الزَّلَّاتِ وَالْهَفَوَاتِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُحَصِّلُ بِهَآ اٰمَالَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى

سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُخَلِّصُ بِهَا لَكَ
اَعْمَالَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ
صَلٰوةً تَجْعَلُ بِهَا التَّقْوٰى زَادَنَا اَللّٰهُمَّ
صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَزِيْدُ بِهَا فِىْ
دِيْنِكَ اِجْتِهَادَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَرْزُقُنَا بِهَا الْاِسْتِقَامَةَ فِىْ طَاعَتِكَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَمْنَحُنَا
بِهَا الْاُنْسَ بِعِبَادَتِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا
وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُحَسِّنُ بِهَا نِيَّتَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَمْنَحُنَا بِهَا اُمْنِيَّتَنَا
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُجِيْرُنَا

بِهَا مِنْ شَرِّ الْاِنْسِ وَالْجَآنِّ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُعِيْذُنَا بِهَا مِنْ شَرِّ
النَّفْسِ وَالشَّيْطَانِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَحْفَظُنَا بِهَا مِنَ الذِّلَّةِ وَالْقِلَّةِ اَللّٰهُمَّ
صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُعِيْذُنَا بِهَا مِنَ
الْقَسْوَةِ وَ الْغَفْلَةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَحْفَظُنَا بِهَا عَمَّا يَشْغَلُنَا عَنْكَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُوَفِّقُنَا
بِهَا لِمَا تُقَرِّبُنَا مِنْكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَجْعَلُ بِهَا سَعْيَنَا مَشْكُوْرًا وَّ عَمَلَنَا
مَقْبُوْلًا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ

صَلٰوةً تَمْنَحُنَا بِهَا عِزًّا وَّقُبُوْلًا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَقْطَعُ بِهَا عَمَّنْ سِوَاكَ
اِحْتِيَاجَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ
صَلٰوةً تُدِيْمُ بِهَا بِنَعْمَآئِكَ ابْتِهَاجَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنُ بِهَا فِيْ
جَمِيْعِ اُمُوْرِنَا وَكِيْلًا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنُ بِهَا لِقَضَآءِ حَوَآئِجِنَا كَفِيْلًا
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُعِيْذُنَا
بِهَا مِنْ جَمِيْعِ الْبَلَايَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَمْنَحُنَا بِهَا جَزِيْلَ الْعَطَايَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَرْزُقُنَا بِهَا عَيْشَ

الرُّغَدَآءِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ
صَلٰوةً تَمْنَحُنَا عَيْشُ السُّعَدَآءِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُسَهِّلُ بِهَا عَلَيْنَا جَمِيْعَ
الْاُمُوْرِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً
تُدِيْمُ بِهَا بَرْدَالْعَيْشِ وَالسُّرُوْرِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُبَارِكُ بِهَا فِيْمَآ
اَعْطَيْتَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ
صَلٰوةً تَمْنَحُنَا بِهَا الرِّضَآءَ بِمَآ اٰتَيْتَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُزَكِّىْ بِهَا عَنِ
الْهَوٰى نُفُوْسَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُطَهِّرُ بِهَا عَمَّنْ سِوَاكَ قُلُوْبَنَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُصَغِّرُ
بِهَا الدُّنْيَا فِىْ عُيُوْنِنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُعَظِّمُ بِهَا جَلَالَكَ فِىْ قُلُوْبِنَا اَللّٰهُمَّ
صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُرْضِيْنَا بِهَا
بِقَضَآئِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ
صَلٰوةً تُوْزِعُنَا بِهَا شُكْرَنَعْمَآئِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُصَحِّحُ بِهَا تَوَكُّلَنَا
وَاعْتِمَادِنَاعَلَيْكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُحَقِّقُ بِهَا وُثُوْقَنَا
وَالْتِجَآئِنَا اِلَيْكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُرْضِيْكَ وَتُرْضِيْهِ وَتَرْضٰى بِهَا عَنَّا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُجِيْرُ
بِهَا مَافَاتَ مِنَّا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُعِيْذُنَا بِهَا مِنَ الْعُجْبِ وَالرِّيَآءِ اَللّٰهُمَّ
صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَحْفَظُنَا بِهَا
مِنَ الْحَسَدِ وَالْكِبْرِيَآءِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا
وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُكَسِّرُ بِهَا شَهَوَاتِنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُجْزِئُ بِهَا عَادَاتِنَا
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً
تَصْرِفُ بِهَا عَنِ الدُّنْيَا وَلَذَّاتِهَا قُلُوْبَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَجْمَعُ بِهَا
فِيالْاِشْتِيَاقِ اِلَيْكَ هُمُوْمُنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا

وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُوْحِشُنَا بِهَا عَمَّنْ سِوَاكَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُؤْ
نِسُنَا بِهَا بِقُرْبِ وَلَآئِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا
وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُقِرُّ بِهَا فِيْ
مُنَاجَاتِكَ عُيُوْنَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُحَسِّنُ بِهَا بِكَ ظُنُوْنَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَشْرَحُ بِهَا
بِمَعْرِفَتِكَ صُدُوْرَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُدِيْمُ بِهَا فِيْ ذِكْرِكَ وَفِكْرِكَ
سُرُوْرَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ
صَلٰوةً تَرْفَعُ بِهَا عَنْ قُلُوْبِنَاالْحُجُبَ وَالْاَسْتَارَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَمْنَحُنَا
بِهَا شُهُوْدَكَ فِىْ جَمِيْعِ الْاٰثَارِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَقْطَعُ بِهَا حَدِيْثَ
نُفُوْسِنَا بِاَعْلَامِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُبَدِّلُ بِهَا هَوَاجِسَ قُلُوْبِنَا بِاِلْهَامِكَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُفِيْضُ
بِهَا عَلَيْنَا جَذَبَاتِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَشْمِلُنَا بِهَا بِنَفَحَاتِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُحِلُّنَا بِهَا مَنَازِلَ
السَّاتِرِيْنَ اِلَيْكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَرْفَعُ بِهَا مَنْزِلَتَنَا

وَمَكَانَتَنَا لَدَيْكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَسْحَقُ بِهَا بِهَا فِىْ اِرَادَتِكَ اٰمَالُنَا
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَمْحَقُ
بِهَا فِىْ اَفْعَالِكَ اَفْعَالُنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا
وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَفْنِىْ بِهَا فِىْ صِفَاتِكَ صِفَاتِنَا
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً
تَمْحُوْ بِهَا فِىْ ذَاتِكَ ذَوَاتِنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُحَقِّقُ بِهَآ اِلَيْكَ لِقَآءَ
نَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً
تُدِيْمَ بِهَا بِتَوَاتُرِ اَنْوَارِكَ صَفَآئَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً

تَسْلُكُنَا بِهَا مَسْلَكَ اَوْلِيَآئِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُرْوِيْنَا بِهَا مِنْ شَرَابِ
اَصْفِيَآئِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ
صَلٰوةً تُوْصِلُنَا بِهَآ اِلَيْكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا
وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُدِيْمُ بِهَآ حُضُوْرَنَا اِلَيْكَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُهَوِّنُ
بِهَا عَلَيْنَا سَكَرَاتِ الْمَوْتِ وَ غَمَرَاتِهٖ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُجِيْرُنَا بِهَا مِنْ
وَحْشَةِ الْقَبْرِ وَكُرْبَتِهٖ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا
وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَمْلَأُ بِهَا قُبُوْرَنَا بِاَنْوَارِ الرَّحْمَةِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَجْعَلُ

بِهَا قُبُوْرَنَا رَوْضَةً مِّنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَحْشُرُنَا بِهَا مَعَ
النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَبْعَثُنَا بِهَا مَعَ الشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَمْنَحُنَا
بِهَا قُرْبَهٗ وَ شَفَاعَتَهٗ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُفِيْضُ بِهَا عَلَيْنَا بَرَكَاتِهٖ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَحْفَظُنَا بِهَا مِنْ
كُلِّ سُوْٓءٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا
مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَشْمَلُنَا يَوْمَ الْجَزَآءِ بِالرَّحْمَةِ
وَالْكَرَامَةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ

صَلٰوةً تُثَقِّلُ بِهَا مِيْزَانَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا

وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُثَبِّتُ بِهَا عَلَى الصِّرَاطِ

اَقْدَامَنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ

صَلٰوةً تُدْخِلُنَا بِهَا جَنّٰتِ النَّعِيْمِ بِلَا

حِسَابٍ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ

صَلٰوةً تُبِيْحُ لَنَا بِهَا النَّظْرَ اِلٰى وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ مَعَ

الْاَحْبَابِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا

مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَنْحَلُنَا بِهَا حُبَّ اٰلِهٖ وَ اَصْحٰبِهٖ

اَجْمَعِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِسَيِّدِ

الْمُرْسَلِيْنَ وَشَفِيْعِ الْمُذْنِبِيْنَ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَشَفِيْعِ

الْاُمَّةِ اَللّٰهُمَّ بِحُرْمَتِهٖ عِنْدَكَ وَبِقَدْرِهٖ

لَدَيْكَ نَسْاَلُكَ الْفَوْزَ عِنْدَ الْقَضَآءِ وَنُزُوْلَ

الشُّهَدَآءِ وَعَيْشَ السَّعَدَآءِ وَالنَّصْرَ عَلَى الْاَعْدَآءِ

وَمُرَافَقَةَ الْاَنْبِيَآءِ وَنَحْنُ عِبَادُكَ الضُّعَفَآءُ لَا

نَعْبُدُ سِوَاكَ وَلَا نَطْلُبُ اِذَا مَسَّنَا الضُّرُّ اِلَّآ اِيَّاكَ

فَاٰمِنْ رَوْعَاتِنَا وَاَجِبْ دَعْوَاتِنَا وَاقْضِ حَاجَاتِنَا

فَاغْفِرْ ذُنُوْبَنَا وَاسْتُرْ عُيُوْبَنَا يَا رَحِيْمُ يَا كَرِيْمُ يَا حَلِيْمُ

وَارْحَمْنَآ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ط ٥

وَبِالْاِجَابَةِ جَدِيْرٌ ط ٥ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ط ٥

يَا عَلِيُّ يَا عَظِيْمُ يَا عَلِيْمُ يَا حَكِيْمُ اَللّٰهُمَّ اِنَّا عَبِيْدُكَ

وَجُنْدٌ مِّنْ جُنُوْدِكَ مُتَعَلِّقُوْنَ بِجَنَابِ نَبِيِّكَ

مُتَشَفِّعُوْنَ اِلَيْكَ بِحَبِيْبِكَ يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ

وَيَـآاَرْحَـمَ الـرَّاحِـمِيْـنَ وَصَـلَّـى اللّٰـهُ عَـلٰـى

سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍخَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَاِمَامِالْمُرْسَلِيْنَ

وَارْضَ عَـنْ اٰلِـهٖ وَصَـحْبِـهٖ اَجْمَعِيْنَ ط۵ سُبْـحَانَ

رَبِّکَ رَبِّ الْـعِـزَّـةِ عَـمَّـا يَـصِـفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى

الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ☆

17 दुरूदे अकसीर आ'जम

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्लि अला रसूलिहिल-करीम अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सलातन तकबलो बिहा दुआअना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तसमऊ बिहा इसतिगा-सतना व निदाअना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदीना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुस्लिमु बिहा अयमानना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदीना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुकव्वी बिहा ईकानना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदीना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तगफिरु बिहा ज़ुनूबना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तसतुरु बिहा उयूबना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तहफजुना बिहा ईकतिसाबि-स्सयिआति अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुवफ्फिकु ना बिहा लिअमलि-श्शालिहाति अल्लाहुम्म सल्लि अला

सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुफ लिहु बिहा अम्मा युरदीना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तक् सिबु बिहा मा युनजीना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुजन्निबु बिहा अन्नाश्श-र्र-कुल्लहू अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तमनहुना बिहाल-खयर कुल्लहू अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुहस्सिनू बिहा अखलाकना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुसलिहु बिहा अहवालना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तअशिमुना बिहा अनिल -मअशीय्यिति वल गवायति अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तरजुकु ना बिहा इत्तिबाअ-स्सुन्नति वल-जमाअति अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुबअइदुना बिहा मिन इक्तिरानिल- आफाति अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तकलउना बिहा अनिज़ल्लाति वल-हफवाति अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुहश्शिलु बिहा आमालना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुखल्लिशु बिहा लका अअमालना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तजअलु बिहा-त्तकवा ज़ादना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तजीदु बिहा फ़ी दीनिका इजतिहादना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तरजुकु ना बिहा-लइस्तिकामत फ़ी ताअति-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तमनहुना बिहा-लऊ न-स बिइबादति-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुहस्सिनु बिहा निय्यतना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तमनहुना बिहा उमनीय्यतना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुजीरुना बिहा मिन सर्रीलइन्सि वलजान्नि अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुइजुना बिहा मिन सर्रि-न्नफ्सि व-श्शयतानि अल्लाहुम्म सल्लि अला

सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तहफज़ुना बिहा मिन-ज्जिल्लति वल-किल्लति अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुईज़ुना बिहा मिनल- कसवति वल-गफलति अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तहफज़ुना बिहा अम्मा यसगलुना अन-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुवफ्फिकुना बिहा लिमा तुकर्रिबुना मिन-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन ताज़अलु बिहा साअयना मसकूरंव्वअमलना मकबूलान अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तमनहुना बिहा ईज़्ज़ंवकुबूलान अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तकतउ बिहा अम्मन् सिवा-क इहतियाजना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुदीमु बिहा बिनअमाइकब्तिहा जना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन ताकूनु बिहा फ़ी जमीइ उमूरिना वकीलन अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तकूनु बिहा लिकदाइ हवाइजिना कफीलन अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुइज़ुना बिहा मिन जमीइलबलाया अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तमनहुना बिहा जज़ीलल-अताया अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तरजुकूना बिहा अयशर्रु-गदाइ अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तमनहुना बिहा अयशूस्सअदाइ अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुसह्हिलु बिहा अलयना जमीअलउमूरि अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तदीमुव बिहा बर्दल अय्शि वस्सुरूरि अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुबारिकु बिहा फीमा अअतयतना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तमनहुना बिहर्रिदाअ बिमा आतयतना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुज़क्की बिहा अनिलहवा नुफूसना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुतह्हिरु बिहा अम्मन

सिवा-क कुलूबना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुशग्गिरु बिहा-द्दुन्या फ़ी उयूनिना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुअज्जिमु बिहा जलाल-क फ़ी कुलूबना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुरदीना बिहा बिकदाइ-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तूज़िउना बिहा शुक्-र नअमाइ-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुशह्हिहु बिहा तवक्कुलना वअतिमादिना अलय-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुहक्किकु बिहा वुशूकना व ईल्तिजाइना इलय-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुरदी-क व तुरदीहि व तरदा बिहा अन्ना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुज़ीरु बिहा माफा-त मिन्ना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुईज़ुना बिहा मिनल-उजबि वर्रियाइ अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तहफज़ुना बिहा मिनल-हसदि वल-किब्रियाइ अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुकस्सिरु बिहा शहवातिना तुज़्ज़ीउ बिहा आदातिना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तशरिफु बिहा अनिद्दुन्या व लज़्ज़ातिहा कुलूबना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तजमओ बिहा फिलइश्तियाकि इलय-क हुमूमुना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुहिशुना बिहा अम्मन सिवा-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुनिसुना बिहा बिकूरबि वलाइक अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुकिर्रु बिहा फ़ी मुनाजातिक उयूनना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुहस्सिनु बिहा बिक जुनूनना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तशरहु बिहा बिमअरिफति-क शुदूरना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुदीमु बिहा फ़ी ज़िक्रि-क व

फिक्रि-क सुरूरना तरफओ बिहा अन कुलूबिनल-हुजु-ब वल्
अस्ता-र अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन
सलातन तम्नहुना बिहा शुह्वद-क फ़ी जमीइल् आसारि अल्लाहुम्म
सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तकतओ
बिहा हदी-स नुफ़ूसिना बिअअलामि-क अल्लाहुम्म सल्लि अला
सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तबद्दिलु बिहा हवाजि-स
कुलूबिना बिइल्हामि-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व
नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुफ़ीदु बिहा अलयना जज़बाति-क
अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन
तश्मिलुना बिहा नफखाति-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व
नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुहिल्लुना बिहा मनाज़िलस्सातिरीना
इलय-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन
सलातन तरफओ बिहा मन्जिलतना व मकानतना लदय्-कअल्लाहुम्म
सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तसहकु
बिहा फ़ी इरादति-क आमालुना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व
नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तमहकु बिहा फ़ी अफआलि-क
अफआलुना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना
मुहम्मदीन सलातन तफ्नी बिहा फ़ी शिफाति-क शिफातिना
अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन
तमहू बिहा फ़ी ज़ाति-क ज़वातिना अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना
व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुहक्किकु बिहा इलयक लिकाअना
अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन
तुदीम बिहा बितवातुरि अनवारि-क शफाउना अल्लाहुम्म सल्लि अला
सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तसलुकुना बिहा
मस्ल-क अवलियाइ-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व
नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन नुज़्वीना बिहा मिन सराबि
अश्फियाइ-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना
मुहम्मदीन सलातन तूशिल्ना बिहा इलय-क अल्लाहुम्म सल्लि अला
सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुदीमु बिहा हुज़ूरना
इलय-क अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन
सलातन तुहव्विनु बिहा अलयना सकरातिल-मवति व गमरातिही
अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन

तुजीरुना बिहा मिन वह्शतिल- कब्रि व कूरबतिही अल्लाहुम्म
सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तमलओ
बिहा कुबूरना बिअन्वारिरह्मति अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व
नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तजअलो बिहा कब्वरना रव्दतम्मिन
रियादिल जन्नति अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना
मुहम्मदीन सलातन तहशुरुना बिहा मअन्नबीयीन वस्सिद्दीकी-न
अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन
तब्अशुना बिहा मअश्शुहदाइ वस्सालिही-न अल्लाहुम्म सल्लि अला
सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तमनहुना बिहा कूरबहू
व शफाअतहू अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना
मुहम्मदीन सलातन तुफ़ीदु बिहा अलयना बरकतिही अल्लाहुम्म
सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तहफजुना
बिहा मिन कुल्लि सूइन् यवमल- कियामति अल्लाहुम्म सल्लि अला
सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तशमलुना यवमल-
जज़ाइ बिर्रह्मति वल- करामति अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना
व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुशक्किलु बिहा मीज़ानना
अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन
तुशब्बितु बिहा अलश्शिराति अकदामना अल्लाहुम्म सल्लि अला
सय्यिदिना व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुदखिलुना बिहा
जन्नातिन्नईम बिला हिसाबिन् अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व
नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तुबीहु लना बिहा-न्नज-र इला
वजहिकल- करीमि मअलअहबाबि अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना
व नबीय्यिना मुहम्मदीन सलातन तनहलुना बिहा हब्ब आलिही व
असहाबिही अजमई-न अल्लाहुम्म इन्ना नतवस्सलु इलय-क
बिसय्यिदिल- मुरशली-न व शफीइल- मुज़निबी-न नबीय्यिर्रह्मति व
शफीइल- उम्मति अल्लाहुम्म बिहुरमतिही इन्द-क व बिकद्रिही
लदय-क नसअलुकल- फव-ज इन्दल- कदाइ व नुजूलश्शुहदाइ व
अयशस्सुअदाइ वन्नस्-र अलल्अअदाइ व मुराफकतल- अम्बियाइ व
नहनु इबादकद्दुअफाउ लानअबुदु सिवाकु वला नतलुबु इजा
मस्सनाद्दुरु इल्लाअ इय्या-क फआमिन रवआतिना व अजीब
दअवातिना वाक्दि हाजातिना फग्फिर जुनूबना वस्तुर् उयूबना
यारहीमु याकरीमु याहलिमु वरहम्ना इन्न-क अला कुल्लि सयइन

कदीरुन। वबिल्इजाबति जदीरुन। निअमल- मवाला व निअमन्नसीरुन। या अलीय्यु या अजीमु या अलीमु या हकीमु अल्लाहुम्म इन्ना अबीदु-क व जुन्दुंमिन जुन्दि-क मुतअल्लिकु- न बिजनाबि नबिय्यि-क मुतशफिक्कुना इलय-क बिहबीबि-क या रब्बल- आलमी-न व या अरहमर राहिमी-न व सल्लल्लाहु अला सय्यिदिना नबीय्यिना मुहम्मदीन खातमिन्नबीय्यी-न व इमामिल- मुरसली-न वर-द अन आलिही वसह्बिही अजमई-न। सुब्हा-न रब्बिक रब्बिल- इज्जति अम्मा यशिफू-न व सलामुन अलालमूरसली-न वलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल- आलमी-न।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। तारीफ़ करते हैं हम अल्लाह की और दुरूद भेजते हैं उसके रसूल बुज़ुर्ग पर। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले कबूल करे तू हमारी दुआ, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले तू सुने हमारी फ़रियाद व हमारी पुकार, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से सलामत रखे तू ईमान हमारा, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से कवी (मज़बूत) यक़ीन हमारा, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू बख़्श दे गुनाह हमारे, ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से छुपा दे तू ऐब (दोष, दुर्गुण) हमारे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दरूद जिसके वसीले से हिफ़ाज़त करे तू हमारी गुनाह करने से, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तौफीक दे तू हमें नेक काम करने की, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा

दुरूद जिसके वसीले से ख़लासी दे हमें उस चीज़ से जो हलाक करे हमें, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से नसीब करे तू हमें वो जो निजात दे हमको, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू दुर कर दे हमसे तमाम शर (दुष्टता) को, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू नसीब करे हमें तमाम भलाइयाँ, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू अच्छे कर दे अख़लाक (नेक आदत, अच्छा स्वभाव) हमारे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू नेक कर दे अहवाल (हालात) हमारे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू हमें बचाए गुनाह और गुमराही से, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू नसीब करे इत्तिबा (पैरवी) सुन्नत व जमात की, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से दुर कर दे तू हमको नज़दीक होने से आफ़तों से, ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू बचाए हमको लग्ज़िशों से और खताओं से,ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू मयश्शर कर दे आरजूएँ हमारी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू खालिश कर दे तेरे लिए अमल हमारे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू उसके सबब से कर दे तकवा (परहेज़गारी) को जादे राह

(सफ़र का सामान) हमारा, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू बढ़ा दे दीन में कोशिश हमारी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से नसीब करे तू इस्तिकामत हमें अपनी इबादत में, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से नसीब करे तू उलफत तेरी इबादत में, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से अच्छी कर दे तू नीयत हमारी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से पूरी करे तू आरजूएँ हमारी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू बचाए हमें इंसानों और जिन्नों के शर से, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से पनाह दे तू हमें नफ्स और शैतान के शर से, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से हिफ़ाज़त करे तू हमारी ज़िल्लत और ख़्वारी से, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से पनाह दे तू हमें सख्ती-ए-दिल और ग़फ़लत से, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से हिफ़ाज़त करे तू हमारी उस चीज से जो बाज रखे तुझसे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तौफीक दे तू हमें उस चीज की जो तेरे करीब करे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िलफरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से करे तू हमारी कोशिश को मश्कूर और अमल हमारा मक़बूल, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा

हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से दे तू हमको इज़्ज़त और कबूलीयत, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदारव हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू कतअ (काटना disconnection) करे अपने सिवा से मोहताजी हमारी, ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से हमेंशा करे तू अपनी नेअमतें वाफर (ज़्यादा) हम पर, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू हो तमाम उमूर (काम) में कारसाज़ हमारा, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू हो जा हाजतें हमारी पूरी करने का ज़ामिन, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू पनाह दे हमको तमाम बलाओं से, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू अता करे हमें बड़ी अताएँ, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दरूद जिसके वसीले से तू नसीब करे हमें ताज़ा रिज़्क, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू दे हमको रोज़ी नेकबख्तों की, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू आसान कर दे हम पर तमाम काम, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू हमेंशा रखे ठन्डक तू ऐश ओर खुशी की, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से बरकत दे तू उसमें जो तूने हमें अता किया, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद

जिसके वसीले से नसीब करे तू हमको रजा (राज़ी) उसमें जो तूने हमको दिया, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से पाक करे तू हमारी ख्वाहिशात नफ्सानी,ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से पाक कर दे तू अपने सिवा से दिल हमारे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से हक़ीर कर दे तू दुनिया को हमारी आँखों में (नज़र में), ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू बड़ी कर दे अपनी अज़मत को हमारे दिलों में, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से तू राज़ी करे हमको साथ तेरी क़ज़ा के, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से, करें हम शुक्र तेरी नेअमतों का, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से सही (दुरुस्त) करे तू तवक्कुल और एतमाद हमारा तेरे ऊपर, ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से साबित करे तू हमारा अहद और इल्तिजा हमारी तेरी तरफ़, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से जो राज़ी करे तुझको और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को और तू राज़ी हो हमसे, ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से पूरा दे (भरपाई) तू वो जो फ़ौत हुआ हमसे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दरूद जिसके वसीले से बचाए तू हमको तकब्बुर और रियाकारी (दिखावे) से, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि

व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से हिफ़ाज़त करे तू हमारी हसद और फख्र (बड़ाई मरना, गुरुर करना) करने से, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से खत्म कर दे तू ख्वाहिसातें हमारी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से उम्दा कर दे तू आदतें हमारी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से फेर दे तू दुनिया और उसकी लज़्ज़तों से दिल हमारे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से जमा हो जाएँ तेरे इश्तियाक (तमन्ना, आरज़ू) में कश्द (इरादे, मन्शा नीयत)हमारे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से डराये तू हमको अपने सिवा से, ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से उन्स (मुहब्बत) पैदा करे हमारी तू साथ तेरी कुर्ब (समीपता, नज़दीकी) की मुहब्बत, ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से ठन्डी हों तेरी मुनाजात में आँखें हमारी, ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से अच्छा करे तू तेरे साथ गुमान हमारे (तेरे बारे में जो गुमान रखते हैं), ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से खोल दे तू तेरी मआरिफत (पहचान) में दिल हमारे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से कर दे तू अपने ज़िक्र व फिक्र में सुरूर हमारा, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से उठा दे तू हमारे दिलों से हिजाब व परदे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे

नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से नसीब करे हमें तू हुजूरी अपनी तमाम आसार में. ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से कत्अ करदे बात हमारे नफ़्सों की, साथ अपने निशानों के, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से बदल दे तू ख्वाहिशात हमारे दिलों की अपने इलहाम से, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से शुरू करदे तू हम पर जज़्बात अपने, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से शामिल करे तू हमको तेरी रजा में, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से खोल दे हमारे लिए तू मरातिब (मरतबे) अपने हमराज़ों के, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से बुलन्द करे तू मनाजिल (मंज़िलें, मुकाम) और मरतबे हमारे अपने नज़दीक, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से गुम हो ज़ाए तेरे में इरादे हमारे आरज़ूएँ हमारी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से मिट जाएँ तेरे कामों में काम हमारे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से फना हो जाएँ सिफात (अच्छे गुण) तेरी में सिफात हमारी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से मिट ज़ाए तेरी जात में जात हमारी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से साबित करे तू अपनी तरफ मिलना हमारा, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से हमेंशा करे तू पै दर पै के साथ अपने अनवार के सफाई हमारी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से चलाए तू हमें अपने औलीया के मसलक पर, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से सैराब करे तू हमको शराबे-अश्फिया से(पाक बातिन लोगों की शराब), ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से पहुँचाए तू हमको अपनी तरफ़, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से हमेंशा करे तू हमारी हाज़िरी अपनी तरफ़, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से आसान करे तू हम पर सख़्ती मौत की और तंगी उसकी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से पनाह दे तू हमें क़ब्र के ख़ौफ़ और सख़्ती उसकी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से भर दे तू क़ब्र हमारी अनवारे-रहमत से, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से करदे तू हमारी क़ब्रों को बाग़ जन्नत के बागों से, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से हश्र करे तू हमारा नबीयों और सिद्दीकों के साथ, ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दरूद जिसके वसीले से उठाए तू हमको साथ शहीदों और नेकों के, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से नसीब करे तू हमको कुर्ब और शफाअत उनकी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से करे तू ज़्यादती हम पर अपनी बरकतों की, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से हिफाजत करे तू हमारी हर बुराई से क़यामत के दिन, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से घेर ले हमको क़यामत के दिन साथ रहमत और बुजूर्गी के, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से भारी करे तू मीज़ान हमारी, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से साबित रखे तू पुलसिरात पर कदम हमारे, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से दाख़िल करे तू बहिश्त में (जन्नत) बग़ैर हिसाब के, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से मुबाह करे तू हमारे लिए तेरी बुजूर्गी (करीमी) की तरफ़ नज़र करना दोस्तों के साथ, ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार व हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दुरूद जिसके वसीले से करें मुहब्बत उनके आल (वंशज) से असहाब तमाम से, ऐ अल्लाह! हम वसीला पकड़ते हैं तेरी तरफ़ हमारे सरदार और रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का और जो सफीअ है गुनाहगारों के, नबी हैं रहमत के और सफाअत करने वाले उम्मत के, ऐ अल्लाह! आपकी उस इज़्ज़त केसाथ जो तेरे नज़दीक है और आपके उस कद्र की जो तेरे नज़दीक है, हम माँगते हैं कामयाबी फ़ैसले के वक्त और नुजूल (उतरना) शहीदों का और जिन्दगी नेंको वाली और मदद दुश्मनों पर और रिफाकत नबीयों की और हम बंदे तेरे हैं कमज़ोर, नहीं करते इबादत हम तेरे सिवा किसीकी और नहीं माँगते हम जब छुए हमको तकलीफ मगर तुझसे पस (तो बस) अमन दे हमारी घबराहट को और कबूल कर दुआएँ हमारी और पूरी कर हाजतें हमारी पस बख़्श दे गुनाह हमारे और छुपा ले ऐब हमारे ऐ रहम वाले ऐ बुज़ुर्ग ऐ बुर्दबार और रहम कर हम पर बेशक तू हर शै पर कादिर है। और साथ कबूल

करने के लायक है। बेहतर है दोस्त तू और बेहतर है मददगार तू, ऐ बुलंद ऐ अज़ीम ऐ इल्म वाले ऐ हिकमत वाले ऐ अल्लाह हम तेरे आजिज़ बंदे हैं और लश्कर हैं तेरे लश्करों से तआल्लुक वाले हैं तेरे नबी की जनाब में शफाअत लाते हैं तेरी तरफ़ तेरे हबीब की, ऐ पालने वाले जहानों के ऐ रहम करने वाले रहम करने वालों से, और दुरूद नाज़िल फरमा अल्लाह हमारे सरदार और नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो खात्मिन्नबीयीन (सिलसिला-ए-नुबूव्वत का ख़त्म करने वाले) हैं और इमाम हैं रसूलों के और राजी हो जा उनकी आल पर और असहाब तमाम पर। पाकी है तुम्हारे रब को इज़्ज़त वाले रब को उनकी बातों से, और सलाम है पैग़ाम्बरों पर और सब खूबियाँ अल्लाह को जो सारे जहान वालों का रब है।

18 दुरूदे फ़ाज़िल

ये दुरूद जियारतुन्नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के लिए बहुत मुजर्रब है, जो शख्स जुमेरात की सब इस दुरूद शरीफ़ को मुहब्बत के साथ पढ़ने का मा'मुल बना ले वो इन्शाअल्लाह जियारत से सरफयाब होगा। बाद नमाज़ें जुमआ इस दुरूद शरीफ़ को बारह (१२) बार पढ़ने से दिली मुराद पूरी होती है, इसके अलावा कर्ज़ हो तो वो भी अदा होगा। इस दुरूद पाक के विर्द से अज़मत और इज़्ज़त में भी इज़ाफ़ा होगा। मरने के बाद क़ब्र में राहत नसीब होगी।

जो कोई इतवार के दिन सौ (१००) बार पढ़े तो बग़ैर हिसाब व किताब जन्नत में दाख़िल होगा। रिवायत है मुहम्मद बीन अब्बास रदीअल्लाहु अन्हु से कि मैं त्रेसठ (६३) बरस हजरत इमाम हुसैन रदीअल्लाहु तआला अन्हु की क़ब्र के पास रहा, हर जुमेरात को क़ब्र के अन्दर से इस दुरूद शरीफ़ के पढ़ने की आवाज़ आती थी। अगर किसी का अज़ीज़ गुम हो गया हो तो पीर (सोमवार) से जुमेरात तक इस दुरूद शरीफ़ को रोज़ाना बारह (१२) बार पढ़े तो जल्द ही लापता आदमी का पता चल जाएगा। सफ़र पर निकले ने से पहले इस दुरूद शरीफ़ को पढ़कर सफ़र पर चलें तो सफ़र में तकलीफ, मुसीबत या

परेशानी से मेहफुज़ रहेगें।

इस दुरूद शरीफ़ को लिखकर अगर कफ़न में रख दिया तो रोज़े क़यामत शफाअत पाएगा, अल्लाह तआला फ़रिश्तों को हुक्म करेगा की इस शख्स को हर क़िस्म की सख़्ती से सलामत रखो।

۱۸ درُود فاضل

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ
الْمُرْسَلِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
سَيِّدِالْمُجَاهِدِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الشَّاهِدِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْخَآئِفِيْنَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ
الطَّالِبِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
سَيِّدِ التَّآئِبِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
سَيِّدِ الْعَابِدِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا

مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْحَامِدِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الصَّالِحِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ
عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَكْرَمِيْنَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
سَيِّدِالْمُنْذِرِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُبَشِّرِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الطَّيِّبِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِالْعَالِمِيْنَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الزَّكِيِّ
النَّقِيِّ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ
الرَّاكِعِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
سَيِّدِ السَّاجِدِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْقَآئِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى

سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْقَاعِدِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ
عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُتَّقِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ
عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُسْتَغْفِرِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِالنَّادِمِيْنَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
سَيِّدِالشَّاكِرِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْحَافِظِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِالذَّاكِرِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ
عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْعَاقِلِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِالْمُحْسِنِيْنَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ
الْقَرَشِيِّ الْهَاشِمِيِّ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰىسَيِّدِنَامُحَمَّدِنِ
الْمَدَنِيِّ الْعَرَبِيِّ الْمُكَرَّمِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ

وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ اَهْلِ الْجَنَّةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَاحِبِ الْمَقَامِ
الْمَحْمُوْدِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍصَاحِبِ الصِّرَاطِ الْمُسْتَقِيْمِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ اَفْضَلِ الْاٰخِرِيْنَ اَللّٰهُمَّ
صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى جَمِيْعِ
الْاَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى جَمِيْعِ الْمَلٰٓئِكَةِ
الْمُقَرَّبِيْنَ وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ مِنْ اَهْلِ
السَّمٰوٰتِ وَاَهْلِ الْاَرْضِيْنَ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ اَجْمَعِيْنَ
بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ اَجْمَعِيْنَ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ط

18 दुरूदे फ़ाज़िल

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल मुरसली-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल मुजाहिदी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिस्साहिदी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल खाइफी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदित्तालिबी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदित्ताइबी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल आबिदी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल हामिदी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिश्शालिही-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल अकरमी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल मुनजिरी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल मुबस्सिरी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदित्तय्यिबी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल आलिमी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिन्नबीय्यिज्जकीय्यन्नकि य्यि अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिर्राकिइ-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिस्साजिदी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल काइमी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल काइदी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल मुत्तकी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल मुस्तगफिरी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिन्नादिमी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिस्साकिरी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल हाफिजी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन

सय्यदिज्जाकिरी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल आकिली-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदिल मुहसिनी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदीनिल- करसिय्यील- हाशिमीय्यी अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीनिल मदनीय्यील- मुकर्रिमी यवमल कियामति अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदीन सय्यदि अहलिल जन्नति अल्लाहुम्म सल्लि वसल्लिम अला मुहम्मदीन साहिबील मकामिल महमूदि अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन साहिबीश्शिरातील- मुस्तकीमि अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदीन अफ़ज़लिल- आखिरी-न अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्व- अला जमीईल- अम्बियाइ वल मुरसली-न व अला जमीईल- मलाइकतील मुकर्रबी-न व अला ईबादिल्लाहिश्शालिही-न मिन अहलिस्सामावाति व अहलिल- अरदी-न व अलयना मअहुम अजमइ-न बिरहमतिक या अरहमर्राहिमी-न व सल्लल्लाहु अला सय्यिदीना मुहम्मदींव्व अला आलिही व असहाबिही व सल्लम अजमई-न सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम्।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं रसूलों के, ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुजाहिदों के, ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं साहिदीन के, ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं खाइफीन के (वो जो खुदा का ख़ौफ़ रखते हैं), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तालिबीन के (दीनदार, अल्लाह को चाहने वाले), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं

ताईबीन के, ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं आबिदीन के (इबादत गुजारों के), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं हामिदीन के (वो जिनकी तारीफ़ की गई), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं सालिहीन के (नेक और परहेजगारों के), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं अकरमीन के (बहुत बख़्शने वालों के, बहुत करम फ़रमाने वालों के), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुनजरीन के, ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुबस्सिरीन के (बसारत देने वाला, ख़ुश खबरी देने वाला), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं तय्यबीन के (पाकीज़ा लोगों के,), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं आलिमीन के (आलिमों के), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो नबी, जकीयि (तेज़फहम, जहीन) और नकीयि (पाक, खालिश) हैं, ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं राकेईन के (रुकूअ करने वालों के), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं साजिदीन के (सज़्दा करने वालों के) ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार है काइमीन के कयाम करने वालों के), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं काईदीन के (क़रीने वाले, क़ायदे वाले. दस्तुर बनाने वाले), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुत्तकीयों के (परहेज़गारों के), ऐ

अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुस्तगफिरीन के (इस्तिगफार करने वालों के), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं नदामत करने वाले के, ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं शाकिरीन के (शुक करने वालों के), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं हाफिजीन के (कुरआन का हाफ़िज़, हिफ़ाज़त करने वाला), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं जाकिरीन के (खुदा का ज़िक्र करने वालों के) ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं आकिलीन के (दानिशमंदों के), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं मुहसिनीन के (एहसान करने वालों के), ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम और बरकत नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो कुरैशी हैं हाशिमी हैं, ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो मदनी जो अरबी और मुकर्रम हैं क़यामत के दिन के, ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम और बरकत नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो सरदार हैं अहले जन्नत के ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो साहिबे मकामे महमूद हैं, ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो साहिबे सिराते-मुस्तकीम हैं, ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो अफ़ज़ल हैं आखिरीन में ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और तमाम अंम्बिया व मुरसलीन पर और तमाम मलाईका (फ़रिश्तों) मुकर्रबीन पर और तमाम अल्लाह के इबादत गुजारों पर व तमाम नेक बंदो पर जो तमाम आसमानों और

जमीनो में हैं और उनके साथ तमाम पर ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले रहम करने वालों में व दुरूद व सलाम नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और उनकी औलाद पर और उनके सहाबा पर सलाम नाज़िल फरमा मजमूई तौर पर अल्लाह का दुरूद हो उन पर और सलाम।

19 दुरूदे रिफाई

ये दुरूद शरीफ़ हजरत सय्यद अहमद कबीर रिफाई रहमतुललाहि अलयहि का है जिसे उन्होंने अपनी किताब 'अलमआरूफ अलमुहम्मदिया' में तहरीर किया है आप इस दुरूद पाक को कसरत से पढ़ा करते थे, इसी बिना पर आपको कुतूबे जमाँ का बुलंद मकाम हासिल हुआ। इस दुरूद पाक के बारे में फ़रमाया है कि ये दुरूद शरीफ़ असरार व मआरिफत हासिल करने के लिए बेहतरीन वसीला है। रोज़ाना हर नमाज़ के बाद जो इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़े उसके ईमान में इस्तकामत पैदा होगी और वह दुनिया से साहबे ईमान जाएगा यानी उसका दिल ईमान से मुनव्वर हो जाएगा। जो इस दुरूद शरीफ़ को हमेंशा कसरत से पढ़ता रहे तो इसे सआदतें अज़्मा हासिल होगी और उसकी हर दुआ फौरन मुस्तजाब (कबूल) होगी, वसवसों से, बुराइयों से और मुसीबतों से निजात मिलेगी, बग़ैर हिसाब-व-किताब जन्नत में दाख़िल होगा।

यह दुरूद शरीफ़ बिला नागा इक्तालीस (४१) दिन तक एक बार रोज़ाना पढ़ें तो तमाम बूरी आदतों से और गुनाहों से बच जाएँगे और पढ़ने वाले को अल्लाह नेक आमाल की तौफीक अता करेगा। इस दुरूद पाक का एक और फ़ायदा है कि इसे पढ़ने से सुकून और इत्मीनाने कल्ब नसीब होता है और इबादत में खूब दिल लगने लगता है और लुत्फ हासिल होता है। अगर कोई हज़ की ख्वाहिश रखता हो मगर इसकी इस्तताअत (ताकत) ना रखता हो तो हर जुमेरात को लगातार ग्यारह (११) जुमेरात तक इस दुरूद पाक को सौ (१००) बार पढ़कर अल्लाह के हुजूर दुआ करे तो अल्लाह तआला बेहतर जरीया से सबब बना देगा।

۱۹ درود رفاعی

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى نُوْرِكَ الْاَسْبَقِ وَ
صِرَاطِكَ الْمُحَقَّقِ مَنْ اَبْرَزْتَهٗ رَحْمَةً شَامِلَةً
لِوُجُوْدِكَ وَاَكْرَمْتَهٗ بِشُهُوْدِكَ وَ اَصْطَفَيْتَهٗ
لِنُبُوَّتِكَ وَرِسَالَتِكَ وَاَرْسَلْتَهٗ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّدَاعِيًا
اِلَيْكَ بِاِذْنِكَ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا نُقْطَةِ مَرْكَزِ بَآءِ
الدَّآئِرَةِ الْاَوَّلِيَةِ وَسِرِّ اَسْرَارِ الْاَلِفِ الْقُطْبِيَّةِ الَّذِىْ
فَتَقْتَ بِهٖ وَثْقَ الْوُجُوْدِ وَخَصَّصْتَهٗ بِاَشْرَفِ
الْمَقَامَاتِ الْمَوْهِبِ الْاِمْتِنَانِ وَالْمَقَامِ الْمَحْمُوْدِ
وَاَقْسَمْتَ بِحَيٰوتِهٖ فِىْ كَلَامِكَ الْمَشْهُوْدِ لِاَهْلِ
الْكَشْفِ وَالشُّهُوْدِ فَهُوَ سِرُّكَ الْقَدِيْمُ السَّارِىْ
وَمَآءُ جَوْهَرِ الْجَوْهَرِيَّةِ الْجَارِى الَّذِىْ اَحْيَيْتَ بِهٖ

الْمَوْجُوْدَاتِ مِنْ مَعْدَنٍ وَّ حَيَوَانٍ وَّنَبَاتٍ فَهُوَ قَلْبُ

الْقُلُوْبِ وَرُوْحُ الْاَرْوَاحِ وَعَلَمُ الْكَلِمَتِ الطَّيِّبَاتِ

الْقَلَمُ الْاَعْلٰى وَالْعَرْشُ الْمُحِيْطُ رُوْحُ جَسَدِ

الْكَوْنَيْنِ وَبَرْزَخُ الْبَحْرَيْنِ وَثَانِىَ اثْنَيْنِ وَ

فَخْرُ الْكَوْنَيْنِ اَبُو الْقَاسِمِ سَيِّدُنَا مُحَمَّدُبْنُ عَبْدِ

اللّٰهِ بْنِ عَبْدِالْمُطَّلَبِ عَبْدُكَ وَنَبِيُّكَ وَرَسُوْلُكَ

النَّبِىُّ الْاُمِّىُّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا بِقَدْرِ

عَظْمَتِ ذَاتِكَ فِىْ كُلِّ وَقْتٍ وَّحِيْنٍ سُبْحٰنَ

رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى

الْمُرْسَلِيْنَ ○

وَالْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ☆

19 दुरूदे रिफाई

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक अला नूरिकल्-

असबकि व सिरातिकल्- मुहक्ककि मन अबरजतहु रहमतन शामिलतन लिवुजूदि-क व अकरम्तहु बिशुहूदि-क व वश् तफयतहू लिनुबूव्वति-क व रिसालति-क व अरसल्तहू बशीरंवव- नजीरंव्व- दाईयन इलय-क बिइज़नि-क व सिराजंम- मुनीरन नुकतति मरकजि बाइद्दाइरतिल्- अव्वलिय-त व सिरिं असरारिल्- अलिफि ल्- कुतबीय्यतिल्- लजी फतक्त बिही वश्कल्- वुजूदि व खश्शश्तहू बिअसरफिल- मकामातिल्- मवहिबील- इम्तिनानि वल् मकामील्- महमूदि व अक्साम-त बिहयातिही फी कलामिकल्- मश्हूदि लिअहलील्- कश्फि वश्शुहूदि फहुव सिर्रुकल्- कदीमुस्सारी वमाओ जवहरील्- जवहरिय्यातिल्- जारील्- लजी अहयय्त बिहील्- मव्जूदाति मिन् मअदनींव्- वहयवानींव्- वबातीन फहुव कल्बुल् कुलूबि व रुहूल् अरवाहि व अलमुल् कलिमातित्- तय्यिबातिल्- कलमुल्- अअला वल्- अरशुल्- मुहीतु रुहू जसदिल्- कव्नयनि व बर्जुखूल्- बहरयनि व सानी असनयनि व फखरूल्- कवनयनि अबूल् कासिमि सय्यिदुना मुहम्मदुब्नु अब्दिल्लाहिब्नि अब्दील्- मुत्तलबि अब्दु-क व नबीय्यु-क व रसूलुकन्नबीय्यूल्- उम्मीय्यु व अला आलिही व सहबिही व सल्लिम तसलीमन् बिकद्रि अज़्मति जाति-क फी कुल्लि वक्तिंव् वहीनीन सुबहा-न रब्बि-क रब्बिल्- इज्जति अम्मा यशिफू-न व सलामुन अलल्- मुरसली-न् ० वल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमी-न् ।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। ऐ अल्लाह दुरूद व सलाम व बरकत नाज़िल फरमा अपने नूरे अव्वलीन पर और सीधे रास्ते पर जो साबीत कदम हैं उन पर, जिसको तूने ज़ाहिर किया रहमतन जो रहमत शामिल हैं तेरे वजूद में जिसको इज़्ज़त दी तूने अपने शहूद की (अहले तसव्वुफ की इस्तलाह में वह दर्जा जिसमें जल्वा-ए-हक बल्कि हर शय अयने हक नज़र आये) और चुन लिया तूने उनको तेरी नबूव्वत और रिसालत के लिए और भेजा उनको बशारत देनेवाला और डर सुनाने वाला और बुसाने वाले तेरी तरफ़ तेरे इज्न से और चिराग़ रोशन नुक्त-ए-मरकज़ बा दायरा अवलिया का और अल्फे कुतबीयत के भेदों का भेद खोल दिया जिसने खोलदी बंदिश वुजूद की और मुशर्रफ किया तूने उनको बेहतरीन मकामात से

किया अता-ए-अहसान और मकामे महमूद और क़सम दी ज़िक्र के साथ आप की हयात की अपने कलामे पाक में जिसकी गवाही देते हैं अहले कश्फ और शहूद पश तेरे कदीम शरायत करने वाले भेद हैं और पानी जौहरियत के जौहर का जो जारी है जिससे जिन्दा किया तूने मवजूदात को चाहे वो मअदनी हों (खान से निकला हुआ) हैवानी हों (नफ्सानी, पशु तुल्य, पाशवीक) नबाती हों (घांस पात का) पश वो कल्बों के कल्ब व रूहों के रूह अलामत हैं, कलामाते तय्यब (पाक साफ़) की कलम आअला हैं अर्शे मुहीत, रूह कौनैन के जिस्म की बरजख दोनों समन्दरों का और दो का दूसरा और फख्र हैं कौनैन के, अबूलकासिम सरदार हमारे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) पर जो तेरे बन्दे और तेरे नबी और रसूल नबी-ए-उम्मी हैं और आपकी आल पर और सहाबा पर और सलाम हो बकद्रे तेरी जात की अज़मत के हर वक्त और हर आन में पाकी तेरे रब्ब रब्बुल इज़्ज़त की जो बयान की जाती है और सलाम हों सब रसूलों पर। तमाम तारीफ़ उसकी जो पालने वाला है सारे जहानों का।

20. दुरूदे जुम्आ

ये दुरूद जुम्आ के रोज पढ़ने के लिए खास तौर पर मखशुश है। नमाज़ें जुम्आ के बाद खड़े होकर ये दुरूदे पाक सौ (१००) बार पढ़ने पर इन्शाअल्लाह बेशुमार फुयूज व फवायद व बरकात हासिल होंगे। अगर कोई औरत पढ़ना चाहे तो जुम्आ के रोज़ बाद नमाज़ें जोहर घर पर पढ़े। इस दुरूद शरीफ़ के फ़ायदों के बारे में बयान किया जाता है कि इसके पढ़ने वाले पर अल्लाह तआला तीन हज़ार रहमते उतारता है, उस पर दो हज़ार बार अपना सलाम भेजता है, पाँच हज़ार नेकियाँ उसके नामा-ए-आमाल में लिखता है, उसके पाँच हज़ार गुनाह माफ़ करता है, उसके पाँच हज़ार दरजात बुलंद करता है, उसके माथे पर लिख देगा कि ये मुनाफिक नहीं और माथे पर तहरीर फ़रमाएगा के ये दोज़ख़ से आज़ाद है, अल्लाह उसे क़यामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा, उसके माल में तरक्की देगा, उसकी औलाद और औलाद की औलाद में बरकत रखेगा, दुश्मनों पर ग़लबा देगा, सबसे अफ़ज़ल बात

ये कि ख़्वाब में हुजूर पूर नूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के दीदार से मुशर्रफ होगा, ईमान पर खात्मा होगा, क़यामत में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम उससे मुशाफा करेंगें, हुजूर पूर नूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की सफाअत उसपे वाजिब होगी। इस दुरूद शरीफ़ की एक और खास बात ये है कि आअला हजरत अहमद रजा खाँ फाजिले बरैली रहमतुललाहि अलयहि ने तमाम सुन्नीयों को इसकी इजाज़त फ़रमाई है।

۲۰ دُرُود جمعہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمْ صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ

صَلٰوةً دَآئِمَةً مَقْبُوْلَةً تُؤَدِّىْ بِهَا عَنَّا وَ عَنْ اَهْلِ

هٰذَاالْبَيْتِ حَقَّهُ الْعَظِيْمَ وَ تَزِيْدُ بِهَا عَلَيْنَا وَ عَلٰى

اَهْلِ هٰذَا الْبَيْتِ فَضْلَهُ الْعَظِيْمَ وَصَلِّ عَلٰى

الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

اَلْاَحْيَآءِ مِنْهُمْ وَالْاَمْوَاتِ ط يَا رَبَّ مُحَمَّدٍ صَلِّ

عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَ وَصَحْبِهٖ وَاَوْلِيَآئِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ اَللّٰهُمَّ

اجْعَلْ بِقِرَأتِهَا وَكِتَابَتِهَا فِىْ هٰذَا الْبَيْتِ رَحْمَةً وَّ

رَاحَةً وَّشِفَآءً وَّعَافِيَةً وَرِزْقًا حَسَنًا وَّخَيْرًا كَثِيْرًا

وَّسَلَامًا وَارْفَعْ بِقِرَأتِهَا وَكِتَابَتِهَا عَنْ هٰذَا

الْبَيْتِ وَاَهْلِ هٰذَاالْبَيْتِ كُلَّ بَلَآءٍ وَّ وَبَاءٍ وَّفِتْنَةٍ وَّ

فَسَادٍ وَفَقْرٍ وَّكُفْرٍ وَّكَافِرٍ وَّكُلِّ شَرٍّ اَللّٰهُمَّ

نَسْئَلُكَ بِمَا عَفْوًا وَّعَافِيَةً اِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلُكَ

الْحَقُّ اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِىْ بِىْ يَارَبِّ مُحَمَّدٍ صَلِّ

عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَ اَوْلِيَآئِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ كَمَا

هُوَ اَهْلُهٗ وَكَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ وَعَلَيْنَا وَعَلٰى

اَهْلِ هٰذَا الْبَيْتِ مَعَهُمْ وَاجْعَلْنَا اَهْلًالِذٰلِكَ اَللّٰهُمَّ

كُلَّ يَوْمٍ وَّ كُلَّ لَيْلَةٍ وَكُلَّ سَاعَةٍ وَّ كُلَّ لَمْعَةٍ صَلٰوةً

تَتَوَالٰى وَتَدُوْمُ بِدَوَامِ الْمَلِكِ الْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ط

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا

لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا رَبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزَاتِ

الشَّيَاطِيْنِ وَاَعُوْذُبِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنَ رَبِّ

اَعُوْذُبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ سَلَامٌ

عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ سَلَامٌ عَلٰى مُوْسٰى وَ هَارُوْنَ سَلَامٌ

عَلٰى اِلْيَاسِيْنَ سَلَامٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ سَلَامٌ

عَلٰى الْمُرْسَلِيْنَ سَلَامٌ قَوْلًامِّنْ رَّبِّ الرَّحِيْمِ سَلَامٌ

هِىَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ☆

20. दुरूदे जुम्आ

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

सल्लल्लाहु अलन्नबीय्यील- उम्मीय्यी व आलेही सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम सलातंव्- वसलामन अलयक या रसूलल्लाहि अल्लाहुम्म सलातन दाइमतन मकबूलतन तुअद्दी बिहा अन्ना व अन अहलि हाजलबयति हक्कहुल- अज़्-म व तजीदु बिहा अलयना व अला अहली हाजलबयति फज़्लहुल्- अज़ी-म व सल्लि अलल मूअमिनी-न वलमूअमिनाति वलमुस्लिमी-न वल मुस्लिमातिल्- अहयाइ मिनहुम वल्अमवाति। या रब्ब मुहम्मदीन सल्लि अलयहि व आलिही वसहबिही व अवलियाइही वबारिक् वसल्लिम् अल्लाहुम्मज्अल बिकिरातिहा व किताबतिहा फीहाजल्बयति रहमतंव्- व राहतंव्- व

शिफाअंव्- व आफियतन् व रिज्कन हसनंव्- व खयरन कसिरंव्- व सलामन वर्फअ बिकिरातिहा व किताबतिहा अन् हाजल्बयति व अहलि हाजल्बयति कुल्ला बलाइंव् व वबाइंव्- व फीत्नतींव्- व फसादीन व फकरींव्- व कुफ्रींव्- व काफिरींव्- कुल्लि शरिं अल्लाहुम्म नसअलु-क बिमा अफवंव्- व आफियतन इन्न-क कुल-त व कवलुकल्- हक्कु अना ईन्द ज़न्नी अब्दी बी या रब्बि मुहम्मदीन सल्लि अलयहि व आलिही वसहबिही व अवलियाइही व बारिक् व सल्लिम् कमा हुव अहलुहू व कमा तुहिब्बु व तरदा लहू व अलयना व अला अहलि हाजल्बयति मअहुम् वजअलना अहलन लिजालि-क अल्लाहुम्म कुल्ल यवमींव्- व कुल्ल लयलतीन व कुल्ल साअतीनंव्- व कुल्ल लम्अतीन सलातन ततवाला व तदूमु बिदवामिल्- मलिकिल् हय्यील्- कय्यूमि। रब्बना हबलना मिन् अज़वाजिना व ज़ुर्रीय्यातिना कुर्रत अअयुनींव्- वजअलना लिलमुत्तकी-न इमामा रब्बि अंय्यहजुरू-न रब्बि अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्- ताम्माति मिन सरिं माखल-क सलामून अला इब्राही-म सलामून अला मूसा व हारून सलामून अला इल्यासीनि सलामुन अला नूहीन फील्- आलमी-न व सलामुन अलल्- मूरसली-न सलामुन कवलंम्- मिंर्रब्बिर्रहीमि सलामुन हिय हत्ता मत्लइल्- फज्रि।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। दुरूद नाज़िल फरमा ऐ अल्लाह अपने नबी-ए-उम्मी पर और उनकी आल (औलाद) पर दुरूद भेज उन पर ए अल्लाह और सलाम, ऐ अल्लाह के रसूल आप पर दरूद और सलाम हो, ऐ अल्लाह दुरूद भेज जो दाएमी हो और तेरी बारगाह मे मकबूल हो कसरत के साथ उन पर और उनकी अहले- बैत पर अज़ीम हक के साथ और ज़्यादा फरमा उसके साथ हम पर और उनकी अहले- बैत पर अपने फज़्ले- अज़ीम के साथ और रहमत नाज़िल फरमा मोमीनीन पर और मोमीनात पर और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतों पर जो जिन्दा हैं और मरे हुओं पर। ऐ रब्ब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के उन पर दुरूद भेज और उनकी आल पर और आपके सहाबा पर और आपके औलिया पर और बरकत व सलाम, ऐ अल्लाह करदे तू उस घर में जिसमें पढ़ा जाता है और लिखा जाता है रहमत व राहत व शिफ़ा व आफ़ियत व

रिज्के- हस्ना, व ख़ैर ज़्यादा व ठन्डक व सलामती व दूर कर साथ पढ़ने और लिखने के उस घर से और उस घर के अहल से (रहने वाले) तमाम आफ़तें और वबाएं और अज़माइश और फ़साद और गुरबत और कुफ़्र और क़ाफ़िर के और तमाम शर से (बुराई), ऐ अल्लाह हम सवाल करते हैं तुझसे अफ्व और आफ़ियत का, बेशक तेरा कौल व फैल हक है जो मैं तेरा बंदा होने की सूरत में गुमान करता हुँ, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के रब्ब उन पर दुरूद भेज और उनकी आल पर आपके सहाबा पर आपके अवलिया पर व बरकत और सलामती हो जैसा कि वो उनके लायक हैं और जैसी की तेरी मुहब्बत और रजा है और हम पर और जो उन घरों में हैं करदे हमें उनके अहल जैसा के वो है, ऐ अल्लाह तमाम दिन और तमाम रात व तमाम साअत (घड़ियाँ) व तमाम लम्हात दरूद भेज ऐ जिन्दा और कायम रहने वाले मालिक हमेंशा हमेंशा। ऐ हमारे रब्ब हमारी अज़वाज और औलाद को हमारी आखों की ठंडक कर दे और इमाम बना हमें परहेज़गारों का, ऐ हमारे रब्ब हम पनाह माँगते हैं तेरी वसवसे डालने वाले शैतानों से और पनाह माँगते हैं तेरी कि जब हाज़िर किये जाएँ ऐ अल्लाह तेरी पनाह माँगते हैं साथ हमेंशा रहने वाले अल्लाह, उन कलिमात से जो बुराई में से हैं, सलाम हो हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर सलाम हो हजरत मुसा अलयहिस्सलाम व हारून अलयहिस्सलाम पर सलाम हो हजरत इलयास अलयहिस्सलाम पर सलाम हो हजरत नूह अलयहिस्सलाम पर दोनों जहानों में और सलाम हो मुरसलीन (रसूलों) पर सलामती हो रब्बे रहीम के कौल पर और सलामती हो फ़जर होने तक।

21 दुरूदे हबीब

ये दुरूद आशिकाने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का खुशूशी वज़ीफ़ा है और उसके लिए पनाह फुयूजो बरकात है, इसे पढ़ने से बेपनाह अल्लाह की रहमत हासिल होती है गुनाह मुआफ़ होते है भूली हुई चीज़ें याद आ जाती है हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की कूरबत नसीब होती है दुनिया के गमों से निजात मिलती है। आअमाल नामे में कसरत से नेकियाँ लिखी जाती है। ये दुरूद शरीफ़

पढ़ने वालों पर अल्लाह राजी हो जाता है, ये दरूद शरीफ़ क़ब्र की रोशनी है। ये दरूद शरीफ़ हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शफाअत का बेहतरीन ज़रिया है, लिहाज़ा हर दुआ के आगाज़ और इखतिताम (आख़िर में) पर ये दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिए। हर नमाज़ के बाद ये दुरूद शरीफ़ पढ़ना बेहद मुफ़ीद है। वाअज और तकरीर के शुरू व आख़िर में, हज्ज के मनासिक अदा करते वक्त गोया कि जिस वक्त भी मौका पाएँ इस दरूद पाक को कसरत से पढ़ें इन्शाअल्लाह दुनिया व आखिरत में कामयाबी हासिल होगी।

---

۲۱ درُود حبیب

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہِ وَعَلٰی

اٰلِکَ وَاَصۡحَابِکَ یَاحَبِیۡبَ اللّٰہِ ط

21 दरूदे हबीब

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अस्सलातु वस्सलामु अलय-क या रसूल्लल्लाहि व अला आलि-क व असहाबि-क या हबीब-अल्लाह।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम आप पर सलाम हो और ऐ अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम आपकी आल पर और असहाब पर भी दुरूद और सलाम हो।

22. दुरूदे मुस्तजाबुद्दाअवात

ये दुरूद शरीफ़ अल्लाह का रहम व करम हासिल करने के लिए बहुत बड़ा वसिला है जो शख्स इसे बाद नमाज़ें फ़जर व बाद नमाज़ें इशा सौ (१००) बार पढ़े वो जिन्दगी भर मुअज़्ज़िज़ व मुकर्रम रहे, अगर तन्गदस्ती व मुफलिसी दुर करने की नीयत से पढ़े तो बहुत जल्द अल्लाह उस पर करम करेगा उसके रिज़्क में इज़ाफ़ा हो जाएगा। जो शख्स रोज़ाना कम से कम ग्यारह (११) बार इस दुरूद शरीफ़ को पढ़े तो इसकी बरकत से इज़्ज़त, दौलत व बरकत जैसी अज़ीम नेअमतों से मालामाल हो जाएगा। जो रिज्के हलाल खाए और नौ (९) दिन तक रोज़ाना सोते वक्त यह दुरूद शरीफ़ ग्यारह सौ (११००) बार पढ़े वो इन्शाअल्लाह ज्यारते रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से मुशर्रफ होगा।

---

۲۲ درُود مستجاب الدعوات

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

صَلَّی اللّٰہُ عَلَی النَّبِیِّ الۡاُمِّیِّ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَ

اَصۡحَابِہٖ وَسَلَّمَ ط

22 दुरूदे मुस्तजाबुद्दाअवात

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

सल्लल्लाहु अलन्नबीय्यील्- उम्मीय्यील्- करीमि व अला आलिही व असहाबिही व सल्लम्।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। दुरूद नाज़िल फरमा ऐ अल्लाह उम्मी व करीम नबी पर और उनकी

औलाद पर और उनके सहाबा पर एवं सलामती नाज़िल फरमा।

23 दुरूदे अव्वल व आख़िर

जिसने जवानी ग़फ़लत में बीताई और अल्लाह को भूला रहा और जवानी का अधिकतर हिस्सा गुनाहों में गुज़ारा फिर जब उम्र के आख़िरी दौर में गुनाहों की कसरत, मौत, क़ब्र और हश्र का ख़ौफ़ दामनगीर हो तो ऐसे शख्स ने चाहिए कि इस दुरूद शरीफ़ को दिन रात कसरत से पढ़ना शुरू करदे इन्शाअल्लाह हक सुब्हानहू तआला उसके तमाम गुनाहे कबीरा और गुनाहे सगीरा मुआफ़ कर देगा और बकीया जिन्दग़ी में उसे नेक आअमाल करने की तौफीक देगा। इस दुरूद पाक को पढ़ने वाले को अल्लाह बेअन्दाज़ कूव्वत अता कर देता है इसलिए इसके अमल से दुश्मन हमेंशा मगलूब हो जाता है, लिहाज़ा जब दुश्मन का ख़ौफ़ हो या बिला वजह तंग करता हो तो इस दुरूद शरीफ़ को सात (७) जुम्आ तक बाद नमाज़ें जुम्आ एक सौ ग्यारह (१११) बार पढ़े इन्शाअल्लाह दुश्मन मगलूब होगा।

۲۳ درود اوّل و آخر

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى حَبِيْبِهٖ اَكْرَمِ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ

وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلَّمْ ط

23 दुरूदे अव्वल व आख़िर

सल्लल्लाहु अला हबीबिही अक्रमील् अव्वली-न वल्-आखिरी-न व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक् व सल्लम्।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला

है। दुरूद नाज़िल फरमा ऐ अल्लाह अपने मुअज़्ज़िज हबीब (प्यारे) पर जो अव्वलीन व आखिरीन हैं और उनकी औलाद पर व उनके सहाबा पर और बरकत व सलामती।

24 दुरूदे मुस्तफा

इस दुरूद शरीफ़ का आमिल नेक शिफात हो जाता है। कसरत से इस दुरूद शरीफ़ को पढ़ने वाला हुजूर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की मुहब्बत मह्व रहेगा। जो शख्स सुबह शाम इस दुरूद शरीफ़ की तिलावत करता रहे वो जिल्लत से निकलकर अज़मत में आ जाएगा, अदना से आअला मरतबे तक पहुँच जाएगा, अगर किसी हाकिम या अफसर के पास जाएगा तो इज़्ज़त पाएगा। इस दुरूद शरीफ़ को कसरत से पढ़ने वाले का दिल रोशन हो जाता है और उसे सच्चे ख़्वाब आने लगते हैं, ख़्वाब में बुजुर्गान और जलीलुलकद्र हस्तीयों की जियारत नसीब होगी। इस दुरूद शरीफ़ को सदीद क़िस्म के बीमार के सिरहाने सौ (१००) बार पढ़ा ज़ाए और फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के वसीले से अल्लाह के हुजूर बीमार की सेहतयाबी के लिए दुआ माँगी ज़ाए तो अल्लाह कबूल फ़रमाएगा और इन्शाअल्लाह बीमार सेहत याब होगा।

۲۴ درود مصطفٰی

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى حَبِيْبِكَ الْمُصْطَفٰى

وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ ☆

24 दरूदे मुस्तफा

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक अला हबीबिकल्-मुस्तफा व अला आलिही व सल्लिम्।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। ऐ अल्लाह दुरूद व सलामती और बरकत भेज अपने हबीबे मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और उनकी औलाद पर और सलामती।

25 दुरूदे बातिन

इस दुरूद शरीफ़ की खासियत ये है कि इसे मुर्शीद की इजाज़त और हिदायत के मुताबिक़ पढ़ने वाला साहिबे-कश्फ (जिसे बातिनी इल्म हो) हो जाता है, उसका ज़ाहिर व बातिन पाकीज़ा हो जाता है। उसकी हर नेक दुआ बारगाहे रब्बूल इज़्ज़त में कुबूल होती है। अगर कोई शख्स नमाज़ें जुम्आ के बाद मदीना शरीफ़ की तरफ़ मुँह करके खड़े होकर इस दुरूद शरीफ़ को एक सौ ग्यारह (१११) बार पढ़े तो वो दिन व दुनिया में फलाह पाएगा। जो शख्स लफ़्ज़ उम्मी के साथ सिफ़त बयान करे तो अल्लाह उसके बदले में पढ़ने वाले को अपने इल्मे गैब से मुत्तला फ़रमाता है यानी उस पर असरार और इल्में बातिन बजरिया कश्फ खुलने लगता है।

۲۵ درُودِ باطن

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الۡاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ صَلٰوةً وَّ

سَلَامًا عَلَيۡكَ يَا رَسُوۡلَ اللّٰهِ ؕ

25 दुरूदे बातिन

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

सल्लल्लाहु अलन्नबीय्यील्- उम्मीयी व आलिही व सल्ल-म सलातंव्- व सलामन अलय-क या रसूलल्लाहि।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। दुरूद नाज़िल फरमा ऐ अल्लाह अपने नबी-ए-उम्मी पर और उनकी औलाद पर और सलामती ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम आप पर सलात और सलाम।

26 दरूदे मुज्तबा

यह दुरूद शरीफ़ भी अकसर मशाइखे किराम का पसंदीदा दुरूद है। और दुरूद शरीफ़ की तरह इसके भी फुयूजो बरकात बेशुमार हैं।

۲۶ درُودِ مجتبیٰ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمۡ وَبَارِكۡ حَبِيۡبِكَ الۡمُجۡتَبٰى وَ

رَسُوۡلِكَ الۡمُرۡتَضٰى وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصۡحَابِهٖ اَجۡمَعِيۡنَ

O

26 दुरूदे मुज्तबा

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक् हबीबिकल्- मुज्तबा व रसूलिकल्- मुर्तजा व अला आलिही व असहाबिही अजमइ-न।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। ऐ अल्लाह रहमत, सलाम और बरकत भेज हबीबे-मकबूल पर और अपने बरगुजीदा रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और आपकी औलाद पर और सहाबा पर।

27 दुरूदे तआल्लुक

हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर कसरत और मुतवातर, मुसलसल ये दुरूद शरीफ़ पढ़ने से हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के साथ एक खास तआल्लुक व राब्ता पैदा हो जाता है, हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फ़रमाया है, 'वो शख्स मुझे बहुत पसन्द है जो मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़े' इस तरह मुतवातर दुरूद शरीफ़ के वविर्द से हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जाते अकदस के साथ एक खास निस्बत पैदा हो जाती है, क्युँकि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पढ़ने वाले के दुरूद को सुनते और देखते और फिर नज़रें शफकत फ़रमाते है, लिहाज़ा जो शख्स इस दुरूद पाक को हमेशा पढ़ेगा वो हुजूर की निगाह पूर नूर की बदौलत जाहिरी और बातिनी तौर पर पाकीज़ा हो जाएगा और सबसे बढ़कर खुशक़िस्मती ये है कि मैदाने महशर में वो हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के साथ होगा।

۲۷ درُود تعلّق

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمۡ وَبَارِكۡ عَلٰى رَسُوۡلِكَ

الۡمَبۡعُوۡثِ رَحۡمَةً لِّلۡعَالَمِيۡنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصۡحَابِهٖ

27 दुरूदे तआल्लुक

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक् अला रसूलिकल्- मबऊसि रहमतंल्लील् आलमी-न व अला आलिही व असहाबिही अजमई-न।

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। ऐ अल्लाह दुरूद (रहमत) व सलाम और बरकत नाज़िल फरमा अपने रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जिन्हें तूने रहमतुल्लील्आलमीन बनाकर मबऊस (भेजना) फ़रमाया और आपकी औलाद पर और सहाबा तमाम पर।

28 दरूदे कश्फ्

यह दुरूद शरीफ़ साहिबे कश्फ बनने की कुन्जी है, लिहाज़ा जो शख्स साहिबे कश्फ बनना चाहे उसे चाहिए कि इस दुरूद शरीफ़ को तीन (३) साल तक रोज़ाना सुबह ग्यारह सौ (११००) बार व सोते वक्त ग्यारह सौ (११००) बार पढ़े इनशाअल्लाह साहिबे कश्फ हो जाएगा और उस पर बातिनी व पोशीदा राज़ खुल जायेंगे, इसके अलावा कोई रोजाना बिलानागा चन्द बार भी ये दुरूद शरीफ पढ़ने की आदत बनाले अल्लाह तआला उसपर अपनी रहमत की बारिश फरमायेगा, उसके गुनाह मुआफ फरमायेगा, उसके रिज़्क व दौलत में खैरो बरकत अता फरमयेगा, उसे खात्मा बिलखैर इमान नसीब होगा, रोजे कयामत हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शफाअत नसीब होगी, मीजान में उसकी नेकीयों का पल्ला भारी रहेगा और आखिर दुरूद शरीफ की बदौलत जन्नत नसीब होगी और बुलन्द मरतबा पायेगा।

۲۸ درود کشف

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى نَبِيِّ الرَّحْمَةِ شَفِيْعِ الْاُمَّةِ كَاشِفِ

الْغُمَّةِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَ بَارِكْ وَسَلِّمْ ☆

28 दरूदे कश्फ़

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

सल्लल्लाहु अलन्नबीयीर्रहमति शफीईल्- उम्मति काशिफुल्-गुम्मति व अला आलिही व असहाबिही व बारिक् व सल्लिम्।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। दुरूद नाजिल फरमा ऐ अल्लाह नबी-ए-रहमत उम्मत की शफाअत करने वाले पोशीदा भेदों के खोलने वाले पर और आपकी औलाद पर आपके सहाबा पर बरकत व सलामती भेज।

29 दुरूदे हुसूले रहमत

ये दुरूद शरीफ अल्लाह को राजी करने के लिए बहुत बेहतर है, जो शख्स रोजाना पढ़ने का माअमुल बनाले अल्लाह इससे राजी होगा, उसे नेअमतों से और रहमतों से मालामाल कर देगा, अल्लाह तआला उसे ऐसा नेक काम करने सरअंजाम की तौफीक देगा जो ताकयामत रहेगा जिससे उसका नाम हमेंशा हमेंशा जिन्दा रहेगा। ये दुरूद शरीफ दिल के मैल कुचैल को इसी तरह धो डालता है जिस तरह साबुन कपड़े को धोकर साफ कर देता है।

۲۹ درود حصولِ رحمت

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ صَلٰوةً دَآئِمًا وَّ سَلِّمْ سَلَامًا اَبَدًا عَلٰى

حَبِيْبِكَ وَ سَيِّدِ النَّبِيِّكَ وَ اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ

اَجْمَعِيْنَ فَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ☆

29 दुरूदे हुसूले रहमत

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि सलातन् दाईमंव्- व सल्लिम् सलामन् अबदन् अला हबीबि-क व सय्यिदिल नबीय्यी-क व आलिही व असहाबिही अज़मई-न फल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल् आलमी-न्।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा ऐसा दुरूद जो दाइमी हो और सलामती जो भेज जो अबदी हो अपने हबीब और नबीयों के सरदार पर उनकी औलाद पर और उनके सहाबा तमाम पर पस (तो) तमाम तारीफें अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहानों का।

30 दुरूदे दीदार

ये दुरूद शरीफ हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के दीदार के लिए बहुत अलरदार है, क्युँकि 'जज़्बुल कुलूब' में लिखा है कि जो शख्स पाकीज़गी और तहारत के साथ इस दुरूद शरीफ को हंमेंशा तीन सौ तेरह (३१३) बार रोजाना पढ़ा करेगा अल्लाह तआला उसे ख्वाब में हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की

जियारत से मुशर्रफ फरमायेगा, अगर कोई ये ना कर सके तो जुम्आ के रोज़ बाद नमाज़े जुम्आ मदीना मुनव्वरा की तरफ मुँह करके हजार (१०००) बार पढ़ने का माअमूल बनाले तो उसे ख्वाब में हुजूर सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जियारत नसीब होगी। इस दुरूद शरीफ की सबसे अहम खासियत ये है कि इसे कसरत से पढ़ा हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की मुहब्बत का हुसूल है, और जिसके दिल इस्के रसूल पैदा हो जाये हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम उस पर मेहरबान हो जाते हैं और इससे बढ़कर सआदत और क्या होगी। अगर कोई शख्स रोजाना तीन (३) साल तक इक्तालिस सौ (४१००) बार इस दुरूद शरीफ की दाअवत पढ़े तो उसे मकामे हुजूरी (बारगाहे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम में हाजिरी) हासिल हो जायेगी। 'मज़रउल हस्नात' में दर्ज़ है की अगर कोई शख्स इस दुरूद शरीफ को पढ़े तो सत्तर (७०) फरिश्ते एक हजार (१०००) दिन तक उसके नामा-ए-आअमाल में नेकीयाँ लिखते रहेंगे।

---

۳۰ درود دیدار

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا

مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَ تَرۡضَاهُ لَهٗ ☆

---

30 दुरूदे दीदार

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन कमा तुहिब्बु व तरदाहु लहू।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलयहि व सल्लम पर और उनकी औलाद पर जिस तरह तुझे महबूब है और पसन्द है (जिसमें तेरी रजा है)

31 दुरूदे हलल मुश्किलात

ये दुरूद शरीफ मुश्किलों को आसान व हल करने के लिए बहुत असरदार है, इसलिए इसे दुरूदे हलल मुश्किलात कहा जाता है। इब्ने आबिदीन रहमतुल्लाहि अलयहि ने अपनी किताब 'फतवा सामी' में लिखा है कि एक दफा दमिश्क के मुफ्ती हामिद आफ्तदी रहमतुल्लाहि अलयहि सख्त मुश्किल गिरफतार हो गये, वहाँ का वजीर उनका दुश्मन हो गया आप बेहद परेशान हुए रात को जब आँख लग गई तो ख्वाब में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम तशरीफ लाए और उन्होंने तसल्ली दी और ये दुरूद शरीफ शिखाया कि तु जब ये दुरूद शरीफ पढ़ेगा तो अल्लाह तआला तेरी मुश्किल आसान कर देगा। जब आप बेदार हुए तो आपने ये दुरूद पाक पढ़ा तो अल्लाह तआला ने मुश्किल आसान करदी। इब्ने आबिदीन रहमतुल्लाह अलयहि ने कहा है कि मैने एक फित्ना अजीम में इस दुरूद शरीफ को पढ़ना शुरू किया अभी मैने दो सौ बार ही पढ़ा था कि एक शख्स ने आकर मुझे इत्तलाअ दी के फित्ना खत्म हो गया, उन्होंने आगे कहा कि मुझे ये दुरूद शरीफ शेख अब्दुल करीम रहमतुल्लाह अलयहे की किताब से मिला।

इसके पढ़ने का तरीका ये है कि नमाज़े ईशा के बाद ताजा वुजू करके दो रकअत नमाज़े नफल पढ़ें, पहली रकअत में सूरत फातिहा के बाद सूरत काफिरून और दुसरी रकअत में सूरत फातिहा के बाद सूरत इखलाश पढ़ें फारिग होने के बाद किब्ला की तरफ मुँह करके उसी जगह पर बैठें जहाँ सोजाना हो (बिस्तर पर) और सिदक दिल से तौबा करते हुए एक हजार (१०००) बार तौबा में ये पढ़ें 'अस्तगफिरुल्लाहुल्-अजीम' इसके बाद दो जानूं बड़े ही अदब व एहतराम के साथ किब्ला रुख बैठकर ये तसव्वूर बाँध लें हुजूर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के हुजूरी में हाजिर हुँ और अर्ज़ कर रहा हुँ (हाजत का तसव्वूर करें), इस तरह ये दुरूद शरीफ सौ बार या दो सौ बार या तीन

सौ बार जब तक नींद पूरी तरह आँखों में हावी ना हो तब तक पढ़ें फिर उसी जगह किब्ला की तरफ सर करके सो जाएं, फिर जब रात के पिछले पहर जागें तो फिर उसी जगह उसी तरह दो जानूं मुअद्दबाना बैठकर सुबह की नमाज़ (नमाज़े फज्र) तक ये दुरूद शरीफ पढ़ते रहें और पढ़ते वक्त अपनी हाजत का तसव्वूर करें इन्शाअल्लाह एक रात में या तीन रातों में हाजत पूरी हो जाएगी। आखिरी रात जुम्आ की हो तो ज्यादा बेहतर है। इसके अलावा किसी भी वक्त ये दुरूद शरीफ हजार (१०००) पढ़ना बहुत मुजर्रब है।

۳۱ درود حل المشکلات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

قَدْ ضَاقَتْ حِيْلَتِىْ اَدْرِكْنِىْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ☆

31 दुरूदे हलल मुश्किलात

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदीन कद्जाकत् हीलती अद्रिकनी या रसूलल्लाहि।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। ऐ अल्लाह दुरूद व सलाम व बरकत नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर मेरी सिफारीश कीजिए, मेरा हिला व कोशीश तंग आ चुके हैं या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व

सल्लम।

32 दुरूदे आली

दुरूदे आली दीनी व दुन्यवी हाजतें पूरी करने का गन्जीना (खजाना) है। हुसूले इज्जत व अज़मत के लिए ये दुरूद बहुत अकसीर है, लिहाजा अगर किसी को किसी काम में फतह या नूशरत चाहिए तो चालीस दिन तक बाद नमाज़े ईशा इस दुरूद शरीफ को सौ (१००) बार पढ़े इन्शाअल्लाह चाहत के मुताबिक हर काम में फतहयाबी नसीब होगी। इसी तरह मुकद्दमे में कामयाबी के लिए मुकद्दमें की हर तारीख वाले रात को तहज्जुद के वक्त सात सौ (७००) बार इस दुरूद शरीफ को पढ़ें इन्शाअल्लाह मुकद्दमें में कामयाबी नसीब होगी।

۳۲ درود عالی

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ

النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ عَالِى الْقَدْرِ عَظِيْمِ الْجَاه

وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ ☆

32 दुरूदे आली

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम् व बारिक् अला सय्यिदिना मुहम्मदीनिन्नबीय्यील्- उम्मीयील्- हबीबि आलील्- कद्रि अजीमील्- जाहि व अला आलिही व सहबिही व सल्लिम्।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला

है। ऐ अल्लाह दुरूद सलामती और बरकत भेज हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो तेरे हबीब आली कद्र अजीम मरतबे वाले हैं और आपकी औलाद पर और सहाबा पर सलामती अता फरमा।

33 दुरूदे कुरआनी

दुरूदे कुरआनी के बेहिसाब फायदे हैं। उन सब को इस छोटी सी किताब में लिख पाना मुमकिन नहीं। मुख्तसरन इतना कि इसके पढ़ने से रहमते रब्ब के बादल तुरंत छाया करते हैं और रहमत की बारिश शुरु हो जाती है। ये पढ़ने पर ईश्के मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से दिल छलक उठता है। इस दुरूद शरीफ के एक बार पढ़ने से फ़रिश्ते आसमान पर और इंसान ज़मीन पर, अल्लाह की रहमत कितनी तादाद में बरसी इसका हिसाब लगाने बैठें तो उसका एक छोटा हिस्सा भी ना लगा पाएँ। इसे पढ़ना बहुत ही फ़ायदेमंद है। सुबह और शाम तीन तीन मर्तबा पढ़ने से दिन और दुनिया की कामयाबी मीलती है, और घर में आपस में इत्तफाक रहता है।

अगर बारिस ना होती हो तो इलाके के लोग मस्जिद में जमा होकर इज्तिमाई तौर पर में सवा लाख (१२५०००) बार इस दुरूद शरीफ को पढ़ें और उसके बाद बारिश की दुआ माँगें इन्शाअल्लाह बारगाहे रब्बुल इज्जत मे दुआ कबूल होगी और रहमते रब्बी के बादल आसमान छाकर बरसना शुरु कर देंगें।

जो शख्स इस दुरूद शरीफ को कुरआन पाक की तिलावत के शुरु में और आखिर में सात सात (७) बार पढ़े वो हमेंशा खुशहाल व पूरशुकून रहेगा।

۳۳ درُودقرآنی

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍوَّ اٰلِہٖ وَ اَصۡحَابِہٖ بِعَدَدِمَا فِیۡ

جَمِیۡعِ الۡقُرۡاٰنِ حَرۡفًا حَرۡفًاوَّ بِعَدَدِ کُلِّ حَرۡفٍ اَلۡفًا اَلۡفًا☆

33 दुरूदे कुरआनी

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींव्- व आलिही व असहाबिही बिअददि मा फी जमीईल्- कुरआनि हरफन् हरफंव्- व बिअददि कुल्लि हरफीन अलफन् अलफन्।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और आल और उनके सहाबा पर कुरआन मजीद के हर हर हुरूफ के तादाद के मुताबिक और हर हुरूफ के अदद का एक एकहजार गुना।

34 दरूदे मुहम्मदी ﷺ

ये दुरूद शरीफ हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के इश्म गिरामी के साथ मन्सुब है। ये दुरुद शरीफ हर काम मे अजीम ताकत मुहैया करता है। दुरुदे मुहम्मदी का का राज अब तक कोई पाश न कर सका है।

हुजूर पूर नूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के उम्मत पर करोड़ों एहसान है। हम बदकार और गुनाहगार हो कर सुस्ती और आलसी ज़िंदगी बीता रहे हैं। लेकिन हमारे आका व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम हर लम्हा अल्लाह की बारगाह मे अपनी गुनाहगार उम्मत को बख्शवाने की कोशिश करते रहते हैं। ऐसे आला मोहसीन पर जो हम दिन भर मे एक बार भी ये दुरुद शरीफ पढ़ लें तो अल्लाह त्आला का वादा है कि, वो ईस दुरूद शरीफ के पढ़ने वाले पर दस रहमतें नाज़िल फरमाएगा और दस गुनाह मुआफ फरमाएगा- इतना ही नहीं उसे दस नेकियाँ अता फरमाएगा ओर उसके

दस दर्जे बुलंद फरमाएगा

इस किताब मे जीतने भी दुरूद शरीफ दीये गये हैं उन सब दुरूदों का ये दुरुद शरीफ सरदार है। अल्लाह त्आला के अलावा इस दुरूद शरीफ के तमाम फायदों को कह पाना किसी के बस की बात नहीं। अगर इस पूरी किताब को इसके फजाईल बयान करने के लिए वक़्फ़ कर दिया ज़ाए तो सिर्फ़ एक फज़ाईल का एक चौथाई हिस्सा भी बयान कर पाना मुमकिन ना होगा। इस दुरुद शरीफ का मायना भी पुरी तरह से लिख पाना मुमकिन नहीं इसीलिए इस दरुद शरीफ को आरीफों ने 'दुरूदे आ'जम' का नाम दीया है।

जो कोई ये चाहता हो कि उसके तमाम गुनाह मुआफ हो जाएँ, रोजे कयामत कोई मरतबा नसीब हो और फकीरी बल्कि कलन्दरी मुफ्त मिल ज़ाए तो उसे चाहिए कि इस दुरूद शरीफ को ज्यादा से ज्यादा पढ़ा करे। कहीं भी काम ना बनता हो, कामयाबी के निशान भी नज़र ना आते हों, कोई दवा या वजाईफ से काम ना होता हो तो इस दुरूद शरीफ का वीर्द शुरू कर दे, ईन्शाअल्लाह हर नामुमकिन काम मुमकिन हो जाएगा। इस दुरूद शरीफ को लगातार चालीस दिन में सवा लाख बार पढ़ना हर किस्म की मुश्किल का हल है।

ये दुरूद नही बल्कि ये एक ताकत है, ऐसी ताकत है जिसे अल्लाह त्आला के अलावा कोई दूसरा बयान नहीं कर सकता। अगर इसे हर काम का आखरी इलाज कहा ज़ाए तो ज्यादती ना होगी।

'दुरूदे मुहम्मदी' अल्लाह त्आला की तरफ से बन्दो पर एक खास नेअमत है, और ईस नेअमत का फायदा उठाना भी आसान है। अगर सिर्फ़ एक बार भी पढ़ लिया ज़ाए तो इंसान रहमतों से सराबोर हो जाता है। अल्लाह त्आला का फज़्लो करम जिस पर हो वो ये दुरूद शरीफ पढ़ता है। पेश है 'दुरूदे मुहम्मद'।

۳۴ درود محمدی صلی اللہ علیہ وسلم

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا

مُحَمَّدٍ عَبۡدِکَ وَرَسُوۡلِکَ النَّبِیِّ الۡاُمِّ بِعَدَدِ اَنۡفَاسِ

الۡخَلَآئِقِ صَلٰوۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ خَلۡقِ اللّٰہِ☆

34 दुरूदे मुहम्मदी

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आले सय्यिदिना मुहम्मदीन् अब्दी-क व रसुलिकन्नबीय्यील् उम्मी बिअददि अन्फासील् खलाईकि सलातन् दाईमतन् बिदवामी खल्कि ल्लाह्।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। या अल्लाह दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल औलाद पर हमारे आका हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे और रसुल हैं (खबर देने वाले) नबी-ए-उम्मी हैं, इतनी तादाद में जीतना मख्लुक साँसें लेती है, दुरूद इतना- जब तक कायम रहे ऐ अल्लाह तेरी मख्लूक।

35 दरूदे कमालिया

दुरूदे कमालिया पढ़ने से अहले तरीकत को रूहानियत में कमाल हासिल होता है, इसलिए इसे दुरूदे कमालिया कहा जाता है। अगर इस दुरूद शरीफ को दस बार हर नमाज़ के बाद पढ़ें तो अल्लाह के महबूब बन्दों मे शुमार हो जाओगे। नमाज़े फज्र और नमाज़े इशा के बाद सौ सौ बार (१००) पढ़ने से रुहानी असरार खुल जायेंगे और बेपनाह सवाब हासिल होगा। इस दुरूद शरीफ के पढ़ने की बदौलत निसयान (भुलने) की बीमारी से शिफा मिलती है और हाफिजा दुरुस्त हो जाता है।

۳۵ درُود کمالیہ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمۡ وَبَارِکۡ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ

النَّبِیِّ الۡکَامِلِ وَعَلٰی اٰلِہٖ کَمَا لَا نِھَایَۃَ

لِکَمَالِکَ وَعَدَدَ کَمَالِہٖ ○

35 दुरूदे कमालिया

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम् व बारिक् अला सय्यिदिना मुहम्मदीनिन्नबीयील्- कामिलि व अला आलिही कमालन् निहाय-त लिकमालि-क व अद-द कमालिही।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद व सलामती व बरकत नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो नबी-ए-कामिल हैं और आपकी आल पर ऐसी के जैसी तेरे कमाल की इन्तिहा नहीं और नबी पाक के कमाल की इन्तिहा नहीं।

36 दुरूदे सआदत (दरूदे दवामी)

इस दुरूद शरीफ के पढ़ने से दीन व दुनिया सआदत हासिल होती है इसलिए इसे दुरूदे सआदत कहते हैं और दाएमी अल्फाजों के साथ कहा गया होने की वजह से इसे दुरूदे दवामी भी कहा जाता है। अल्लामा हजरत सय्यद अहमद दहलान रहमतुल्लाहि अलयहि ने इस दुरूद शरीफ के बारे में फरमाया है कि इसे खुलूश दिल से पढ़ेने से छह (६) लाख दुरूद शरीफ पढ़ने का सवाब मिलता है।

۳۶ درُود سعادت (دوامی)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا

مُحَمَّدٍ عَدَدَمَافِیۡ عِلۡمِ اللّٰہِ صَلٰوۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ

مُلۡکِ اللّٰہِ ☆

36 दुरूदे सआदत (दरूदे दवामी)

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदींव् व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन अदद मा फी इल्मील्लाहि सलातन दाइमतंम्- बिदवामी मुल्कील्लाह।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और उनकी औलाद पर इस तादाद के मुताबिक जो ऐ अल्लाह तेरे इल्म में है - दुरूद दाईमी जब तक अल्लाह तेरा मुल्क कायम रहे।

37 दरूदे कुतुब

हजरत शैख सय्यद अहमद बदवी रहमतुल्लाहि तआला अलयहि बहुत माअरुफ बुजूर्ग गुजरे हैं। आपको हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलेही व सल्लम की जाते-गिरामी से बेपनाह इश्क था और इसी इश्क में आप जो दुरूद पढ़ा करते थे वो दुरूदे बदवी के नाम से मशहूर है (आगे के सफहात में दर्ज़ है)। आपका ये दुरूद शरीफ अन्वारे इलाही के हुसूल का सबब है, क्योंकि इसे पढ़ने से बहुत से असरार का इन्किशाफ

(भेद, रहस्य का खुलना) होता है। इस दुरूद शरीफ के पढ़ने से जियारते नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम हासिल होने के बाद हुजूरी का मकाम हासिल होता है हत्ताकि इसके विर्द के जारी रखने पर कुत्बीयत हासिल हो जाती है। इसलिए इसको दुरूदे कुतुब कहा जाता है।

इस दुरूद शरीफ के मुताल्लिक अकसर बुजूर्गों का कहना कि इसका तीन बार पढ़ना 'दलाइलुल खैरात' की किरअत के बराबर है, मगर दुरूदे पाक की किरअत के वक्त अपने दिल में नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की अज़मतो- अनवार का तसव्वूर करना जरूरी है और ये ख्याल करें कि बिला शुब्हा हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम हर भलाई के पहुँचने में अजीम सबब और वास्ता-ए-अजीम हैं, साथ ही तहारत का ख्याल रखना जरूरी है। जो शख्स चालीस (४०) दिन तक रोजाना एक सौ (१००) बार इस दुरूद शरीफ को पढ़े तो उसे बेपनाह अन्वाराते- इलाहीया हासिल होगा। इसके अलावा अगर आप चाहते हैं कि नेक काम की तौफीक मिले तो इस दुरूद पाक को रोजाना नमाज़े फज्र के बाद तीन बार व नमाज़े मग़रीब के बाद तीन बार पढ़ें इन्शाअल्लाह मर्जी के मुताबिक तौफीके इलाही मिल जायेगी।

इस दुरूदे पाक की एक सिफत ये भी है कि इसे पढ़ने रिज़्क में इजाफा होता है। लिहाजा जो शख्स चाहे कि इसकी रोजी में बेशबहा (ज़्यादा और अच्छी) बरकत हो तो उसे चाहिए कि फज्र की सुन्नत अदा करने के बाद और फर्ज अदा करने से पहले यानी सुन्नत और फर्ज के दरम्यान इक्तालीस (४१) बार इस दुरूद पाक को पढ़ा करे इन्शाअल्लाह रोज़ी में बेपनाह बरकत होगी।

۳۷ درود قطب

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى نُوْرِ الْاَنْوَارِ وَ سِرِّ الْاَسْرَارِ وَتِرْيَاقِ

الْاَغْيَارِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ الْمُخْتَارِ وَ اٰلِهِ الْاَطْهَارِ

وَاَصْحَابِهِ الْاَخْيَارِ عَدَدَ نِعَمِ اللّٰهِ وَاَفْضَالِهٖ ☆

37 दुरूदे कुतुब

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला नूरिल्- अन्वारि व सिर्रील्- असरारि व तीरयाकील्- अग्यारि सय्यिदिना मुहम्मदिनील्- मुख्तारि व आलिहील् अतहारि व अस्हाबिहील्- अख्यारि अदद निअमील्लाहि व अफ्दालिही (या पढ़ें अफ्जालिही)

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल हो नूरे अन्वार और अस्रार के राज खोलने वाले और अगियार (दुश्मन, बेगाने) के तिरयाक (दवा, जहर की दवा) हमारे सरदार सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो इस सबके मुख्तार (जिसे अधिकार प्राप्त हो) हैं और उनकी आल पर जो बहुत पाक हैं और उनके सहाबा पर जो अखियार (भले लोग) हैं अल्लाह की नेअमतों के जितना और फज़ल के जितना।

38 दुरूदे नूरी

दुरूदे नूरी से मुराद वो दुरूद शरीफ जिसे पढ़ने से दिल में नूर पैदा हो और ये दरूद शरीफ ऐसा एक दुरूद है जिसे पढ़ने से इन्सान के गुनाह मुआफ हो जाते हैं और दिल पाकिजा हो कर अल्लाह तआला के नूर की आमाज़गाह बन जाता है, बल्कि कसरत से पढ़ने पर उसका शुमार औलिया अल्लाह में होने लगता है। मन्सबे विलायत के ख्वाहिशमन्द को चाहिए कि इस दुरूद शरीफ को बहुत ज्यादा पढ़ा करे तो फिर असरारे इलाही खुल जायेंगे और अश्याअ (चीजें) व काइनात की वह हकीकत जो जाहिरी आंखों से पोशीदा (छुपा हुआ) हैं वह खुलकर सामने आ जायेगी और अल्लाह अल्लाह तआला की नूरानी तजल्लियात का जल्वा नज़र आने लगेगा लिहाजा ये कहना बेजा ना

होगा कि इस दुरूद शरीफ के एक एक हुरुफ (अक्षर) में नूर का समन्दर समाये हुए है।

अल्लाह तआला अगर चाहे तो इस दुरूद पाक के पढ़नेवाले को एक ही दिन अबरार (परहेज़गार, नेकोकार, औलिया अल्लाह) बना दे यानी ये अल्लाह की मर्जी है की वो जितनी बड़ी से बड़ी रहमत से नवाज़ दे और इसीलिए इस दुरूद शरीफ को पढ़नेवाला कभी रहमते खुदावन्दी से महरूम नहीं रहता, लिहाज़ा हर शख्स को चाहिए की इस दुरूद शरीफ को खासतौर पर कसरत से पढ़े। सुबह व शाम ग्यारह ग्यारह (११) बार पढ़ने से दिन व दुनिया में फलाह हासिल होगी। इस दुरूद शरीफ को रोजाना हर नमाज़ के बाद एक बार हमेंशा पढ़ने से आँखों की बीमरी से महफूज रहोगे। अपने नफ्स की इसलाह के लिए इस दुरूद शरीफ को बाद नमाज़े फज्र सात (७) बार पढ़ना मुजर्रब है।

۳۸ درودِ نوری

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَـانُـوْرُ صَـلِّ عَـلٰـى سَيِّـدِنَـا مُـحَـمَّـدٍ نُّـرِ الْاَنْـوَارِ

وَسِـرِّ الْاَسْـرَارِ وَسَيِّـدِ الْاَبْـرَارِ وَعَـلٰـى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ

الْـمُـنَـوَّرِيْـنَ رَبَـارِكْ وَسَـلِّمْ اَللّٰهُمَّ نَوِّرْ بِهَا سِرِّىْ

وَسَرِيْرَتِىْ وَ بَصَرِىْ وَبَصِيْرَتِىْ وَدُنْيَا ىَ وَ اَهْلِىْ

وَعَيَالِىْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ☆

38 दुरूदे नूरी

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

या नूरु सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदीन- नूरिल्- अनवारि व सिर्रील् असरारि व सय्यिदील्- अबरारि व अला आलिही व सहबिहील्- मुनव्विरी-न व बारिक् व सल्लिम् अल्लाहुम्म नव्विर् बिहा सिर्री व सरीरति व बसरी व बशीरती व दुन्याय व अहली व अयाली इला यवमिल्- कियामति।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान, बहुत रहम वाला है। ऐ नूर (अल्लाह का एक नाम) दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो नूरों के नूर हैं असरारों (भेदों) के सरदार जो अबरारों के सरदार हैं और उनकी आल पर और साहबा पर जो मुनव्वर हैं और बरकत व सलाम हो, ऐ अल्लाह मुनव्वर करदे मेरी रूह और जिस्म को मेरी नज़र और दानाई (अक्लमन्दी) को और मेरे दीन को और दुनिया को और मेरे अहलो- अयाल (परीवार रिश्तेदार) को रोजे- कयामत तक।

39 दुरूदे नक्शबन्दीया

ये दुरूद शरीफ सिलसिला-ए-नक्शबन्दीया में पढ़ा जाता है क्यँकि इस सिलसिले के कुछ बुजूर्गान ने इस दुरूद शरीफ को अपने मामूलात में बतौर दुरूद पढ़ा। इसके बेशुमार रूहानी असरात व आसार पाये जाते हैं। ये दुरूद दिल की सफाई के लिए बहुत मुजर्रब है। इस दुरूद शरीफ के पढ़ने से तसखिरे- खल्क (खल्क का ताबेअ, आधीन होना, काबू में आता है। खल्क इन्सान, जानवर, परिन्दे, पेड़ पौधे सब इसमें शामिल हैं) बहुत होती है और इसके लिए एक साल तक रोजाना एक सौ ग्यारह (१११) बार पढ़ना होगा। मुरीदों को इस दुरूद शरीफ के पढ़ने से बेपनाह फ्युजो- बरकात हासील होते हैं। तज़्किया-ए-नफ्स (नफ्स को पाक करने का काम) के लिए इस दुरूद शरीफ को एक सौ बीस (१२०) दिन तक बाद नमाज़े इशा सौ(१००) बार पढ़ने से इन्शाअल्लाह नफ्स को पाकिज़गी हासिल हो जाएगी। बाद नमाज़े फ़ज्र ग्यारह (११) बार रोजाना ये दुरूद शरीफ पढ़ना शरारते- नफ्स और शैतान से महफूज़ रखता है।

۳۹ درودِ نقشبندیہ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَسۡئَلُکَ اَنۡ تُصَلِّیَ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ

نِبۡرَاسِ الۡاَنۡبِیَآءِ وَ نَیِّرِ الۡاَوۡلِیَآءِ وَزَبۡرِقَانِ الۡاَصۡفِیَآءِ وَ

نُوۡرِ الثَّقَلَیۡنِ وَ ضِیَآءِ الۡخَافِقَیۡنِ ☆

39 दुरूदे नक्शबन्दीया

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म इन्ना नसअलुक अन् तुसल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन निब्रासिल्- अम्बियाइ व नय्यिरील्- अवलियाइ व ज़ब्रिकानील्- अश्फियाइ व नूरीश्शकलयनि व जियाइल्- खाफिकयनि।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह हम तुझसे इल्तिजा करते हैं दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर जो चिराग़ हैं अम्बिया के, और जो आफताब हैं औलिया के और सूरज हैं और अश्फिया (बरगुजीदा बन्दे) के माहे-दरख्शाँ (चमकता हुआ चाँद) हैं और दोनों जहान के नूर हैं और जिया (रौनक) हैं मग़रिब व मश्रिक के।

40 दुरूदे शाज़ली

ये दुरूद शरीफ हजरत अबीलहसन शाज़ली रहमतुल्लाहे

तआला अलयहे के वजाइफ में से है, उनका कहना है कि अगर कोई इस दुरूद पाक को एक बार पढ़े तो उसे एक लाख दुरूद का सवाब मिलेगा अलावा इसके इस दुरूद शरीफ को पढ़ने से बातिनी अनवारात हासिल होते हैं और कसरत से वजीफा के तौर पर पढ़ने से आलमे-बाला का रूहानी मुशाहिदा होता है इसलिए तरीका शाज़लीया में ये दुरूद शरीफ कसरत से पढ़ा जाता है। मुश्किल या हाजत में पाँच सौ (५००) बार पढ़ने से अल्लाह ताआला मुश्किल हल कर देगा हाज़त पूरी कर देगा। अगर कोई नूरे मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) जानना चाहे तो उसे चाहिए की चालीस दिन तक दुनिया से अलग हो जाये और दिन के वक्त रोजा रखे और इस दुरूद पाक को खलवत में (एकान्त में, अकेले में) बैठकर पढ़ना शुरु करे और चालीस दिन तक दिन रात पढ़ता रहे और रात को शबबेदारी (रात का जागना) करे इन्शाअल्लाह उस पर नूरे मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) की हकीकत जाहिर होगी।

۴۰ درُودِ شاذلی

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ النُّوۡرِ الذَّاتِیِّ

السَّارِیۡ فِیۡ جَمِیۡعِ الۡاٰثَارِ وَالۡاَسۡمَآءِ وَالصِّفَاتِ

وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحۡبِہٖ وَسَلِّمۡ ☆

40 दुरूदे शाज़ली

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिनिन्नूरिज्-

जातीस्सारी फी जमीईल्- आसारि वल्- अस्माई वश्शिफाति व अला आलिही व सहबिही व सल्लिम।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद भेज हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो जाते-नूर का असर रखते हैं तमाम आसार व अस्माअ (नामों में) व शिफात में और उनकी आल पर और असहाब पर सलाम भेज।

41 दुरूदे अफ़ज़ल

अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलयहे ने अपनी किताब 'अलकौलुल बदीअ' में एक रिवायत दर्ज़ की है कि एक मर्तबा हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने जौजा मोहतरमा उम्मूल मो'मिनीन हजरत जुवेरिया बिन्ते अलहारिस रदीयअल्लाहो अन्हा को फरमाया कि अगर कोई शख्स ये हलफ उठाले कि मैं हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर अफ़्ज़लतरीन दुरूद भेजुँगा तो उसे चाहिए कि ये दरूद शरीफ पढ़ेऔर इसीलिए इसे अफज़ल दुरूद कहा जाता है, अगर कोइ हर रोज इक्तालीस (४१) बार पढ़े तो अल्लाह की रहमत उसपर हमेंशा रहे।

۴۱ درود افضل

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَ

رَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَزْوَاجِهٖ وَ

ذُرِّيَّتِهٖ وَ سَلِّمْ عَدَدَ خَلْقِكَ وَ رِضَآءَ نَفْسِكَ

وَزِنَةَ عَرْشِكَ وَمِدَادَ كَلِمَاتِكَ☆

41 दुरूदे अफ़ज़ल

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिन अब्दी-क व नबीय्यी-क व रसूलिकन्नबीय्यील-उम्मीय्यी व अला आलिही व अज़वाजिही व जुर्रीय्यातिही व सल्लिम अदद खलकि क व रिजाअनफ्सिक व जिन-त अर्शि-क व मिदा-द कलिमाति-क।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद भेज हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाह अलयहि व सल्लम पर जो तेरे बंदे और तेरे नबी और रसूलिक नबी-ए-उम्मी हैं और आपकी आल पर और आपकी अज़वाज (बीवीयों) पर और आपके रिश्तेदारों पर खिलकत (दुनियाओं) के बराबर और अपनी जात की रज़ा के मुताबिक और अपने अर्श के वजन के मुताबिक कलमों के स्याही के मुताबिक सलाम हो।

42 दुरूदे दवामी

दुरूदे दवामी पढ़ने वाले को अनगिनत नेकीयों का सवाब मिलता है। जो शख्स इस दुरूद पाक को कसरत से पढ़े उसे अपनी कौम, रिश्तेदारों और अपने इर्द गिर्द के लोगों में बेपनाह सोहरत और इज्जत मिलेगी, जो इसे पढ़कर किसी हाकिम के सामने जाए तो हाकिम उसकी इज्जत करेगा। जो शख्स इस दुरूद शरीफ को रोजाना इक्कीस बार (२१) ताजिन्दगी (उम्रभर) पढ़े अल्लाह उसके तमाम गुनाह मुआफ करदेगा और उसकी नेकीयों में बारिश के कतरों के बराबर इजाफा कर देगा और उसका नाम ताकयामत जिन्दा रहेगा हत्ताकि उसपर अल्लाह अपनी रहमत के इतने दरवाजे खोल देगा कि जो वह अल्लाह से माँगे वो पाएगा।

۴۲ درُوددوامی

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلَیۡھِمۡ صَلٰوۃً دَآئِمَۃً مُّسۡتَمِرَّۃَ الدَّوَامِ

عَلٰی مَرِّ اللَّیَالِیۡ وَالۡاَیَّامِ مُتَّصِلَۃَ الدَّوَامِ لَاانۡقِضَآءَ

لَھَا وَلَاانۡصِرَامَ عَلٰی مَرِّاللَّیَالِیۡ وَ الۡاَیَّامِ عَدَدَ کُلِّ

وَابِلٍ وَّطَلٍّ☆

42 दरूदे दवामी

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अलयहीम सलातन दाइमतम-मुस्तमिर्रत्दवामि अला मरिल्लयाली वल् अय्यामि मुत्तासिलत-दवामि लानकिदाअ लहा वलानसिरा-म अला मरिं लिल्लयाली वल् अय्यामि अद-द कुल्लि वाबिलींव्-वतल्लिन।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद भेज उनपर ऐसा दुरूद जो दाइमी हो जिनका दवाम जारी रहनेवाला हो गर्दिशे लयल व नहार के साथ (दिन और रात की गर्दिश) और उसका दवाम लगातार रहनेवाला हो जिसकी कोई निहायत ना हो और जिसका कोई इन्कताअ ना हो (ना कटना) गर्दिशे लयल व नहार के साथ बेशुमार बारिश और शबनम के हर कतरे के।

43 दुरूदे कौशर

दुरूदे कौशर से मुराद वो दुरूद है जिसे पढ़ने से आखिरत में हौजे कौशर का पानी मिलेगा, लिहाजा जिसे तमन्ना हो कि कयामत के रोज़ शाकी-ए-कौशर हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के हाथ से हौज़े कौशर का जाम मिले तो उसे चाहिए कि वह इस दुरूद शरीफ को कसरत से पढ़े जिसकी बिना पर जन्नत का हकदार बन जाएगा, कितना बड़ा एअजाज़ होगा कि कयामत रोज जब लोग प्यास की शिद्दत से बिलबिला रहे होंगे तो उसे हौजे कौशर का ठन्डा मशरूब मयस्सर आयेगा। इसलिए ये दुरूद शरीफ हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की कुरबत हासिल करने का सबसे असरदार जरिया है।

हज़रत ख्वाजा हसन बसरी रहमतुल्लाह अलयहे जो सुफिया के जद्दे-आअला हैं उन्होंने इस दुरूद शरीफ के बारे में फरमाया है कि कोई इन्सान ये तमन्ना रखता हो कि खुदा का कुर्ब हासिल हो तो उसे चाहिये कि दुरूदे कौशर को कसरत से पढ़े, इन्साअल्लाह इसकी बदौलत बहुत जल्द अल्लाह उसे हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम का कुर्ब हासिल फरमायेगा। इस दुरूद शरीफ का एक फायदा ये भी है कि इसे पढ़नेवाला दुनिया के नज़रों में हमेंशा बाइज़्जत हो जाता है और अल्लाह तआला इस दुरूद शरीफ की बदौलत ऐसी इज़्जत से नवाज़ता है कि उसे कोई छीन नहीं सकता।

۴۳ درود کوثر

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الۡاَوَّلِیۡنَ وَصَلِّ

عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الۡاٰخِرِیۡنَ وَ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا

مُحَمَّدٍ فِی النَّبِیِّیۡنَ وَ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ

فِيالْمُرْسَلِيْنَ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْمَلَا
الْاَعْلٰى اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنَ ☆

43 दुरूदे कौशर

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदीन फील-अव्वली-न व सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदी-न फील-आखिरि-न व सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदीन फीन्नबीय्य-न व सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदीन फील- मुरसली-न सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदीन फील- मलाईल- अआला इला यवमीद्दीनि।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद भेज हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर अव्वलीन के दरम्यान, और दुरूद भेज हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर आखिरीन के दरम्यान, और दुरूद भेज हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाह अलयहि व सल्लम पर नबीयों के दरम्यान, और दरूद भेज हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर रसूलों के दरम्यान, और दुरूद भेज हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर मलाइल-अआला में कयामत के दिन तक।

44 दुरूदे कब्रस्तान रुही

ये दुरूद शरीफ अमुमन कब्रस्तान में पढ़ा जाता है। इसीलिए इसे दुरूदे कब्रस्तान भी कहते हैं। क्युँकी ईसकी बरकत से रुहों को अज़ाब से निजात मीलती है और ईसकी बरकत से कयामत तक रुहों को आराम मीलता है। ईस दुरूद शरीफ को जीतना ज्यादा पढ़ा जाए उतना ज्यादा सवाब मीलता है। दुरूद पढ़ कर ईसका सवाब मरहुम माँ-बाप को बख्शा, तो जाने के उनके सारी उम्र के हक अदा कर दिये। ईससे ईतना दर्जा मीलता है की फरीश्ते भी कब्र की ज़ियारत को आते

हैं।

۴۴ درُود قبرستان (رُوحی)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّادَامَتِ الصَّلٰوةُ وَصَلِّ
عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّادَامَتِ الرَّحْمَةُ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ
مَّادَامَتِ الْبَرَكَاتُ وَصَلِّ عَلٰى رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِى
الْاَرْوَاحِ وَصَلِّ عَلٰى صُوْرَةِ مُحَمَّدٍ فِى الصُّوَرِ
وَصَلِّ عَلٰى اِسْمِ مُحَمَّدٍ فِى الْاَسْمَآءِ وَصَلِّ عَلٰى
نَفْسِ مُحَمَّدٍ فِى النُّفُوْسِ وَصَلِّ عَلٰى قَلْبِ مُحَمَّدٍ
فِى الْقُلُوْبِ وَصَلِّ عَلٰى قَبْرِ مُحَمَّدٍ فِى الْقُبُوْرِ
وَصَلِّ عَلٰى رَوْضَةِ مُحَمَّدٍ فِى الرِّيَاضِ وَصَلِّ عَلٰى
جَسَدِ مُحَمَّدٍ فِى الْاَجْسَادِ وَصَلِّ عَلٰى تُرْبَةِ
مُحَمَّدٍ فِى التُّرَابِ وَصَلِّ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِكَ

سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ

وَذُرِّيَّاتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَاَحْبَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ ☆ بِرَحْمَتِكَ

يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ☆

44 दुरूदे कब्रस्तान रुही

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन मा दामतिस्सलातु व सल्लि अला मुहम्मदिम मा दामतिर्रहमतु व सल्लि अला मुहम्मदिम मा दामतिल बरकातो व सल्लि अला मुहम्मदिन फील अरवाहि व सल्लि अला मुहम्मदिन फीस्सुरे व सल्लि अला मुहम्मदिन फील अस्माए व सल्लि अला मुहम्मदिन फीत्तोफुसे व सल्लि अला मुहम्मदिन फील कोलुबे व सल्लि अला मुहम्मदिन फील कुबुरे व सल्लि अला मुहम्मदिन फीर्रीयाज़े व सल्ले अला जस्दि मुहम्मदिन फील अजसादि व सल्लि अला तुरबते मुहम्मदिन फीत्तुराबे व सल्लि अला खैरेखल्केही सय्यदेना मुहम्मदिंव व अला आलेही व अस्हाबेही व अजवाजिही व जुर्रीयातिही व अहले बैतिही अहबाबेही अजमइ-न. बिरहमतिका याअरहमर्राहेमी-न.

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। या ईलाही दुरूद नाजील फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जब तक रहे नमाज। और दुरूद नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जब तक रहमत हो। और दुरूद नाजील फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जब तक बरकत रहे। और दुरूद नाजील फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर रुहों के दरम्यान। और दुरूद नाजील फरमा सुरते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर सुरतों के दरम्यान। और दुरूद नाजील फरमा नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर नामों के दरम्यान। और

दुरूद नाजील फरमा दिल-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दिलों के दरम्यान। और दुरूद नाजील फरमा नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और दुरूद नाजील फरमा कब्रे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर कब्रों के दरम्यान। और दुरूद नाजील फरमा रोज-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर बागों के दरम्यान। और दुरूद नाजील फरमा जीस्मे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जीस्मों के दरम्यान। और दुरूद नाजील फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की मीट्टी पर मीट्टी के दरम्यान। और दुरूद नाजील फरमा मख्लुक मे बेहतर हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर, उनकी आल पर और उनके अस्हाब और उनकी पाकीजा बीवीयों पर, उनकी औलाद पर और घरवालों व दोस्तो पर, अय रहम फरमानेवाले रहम फरमानेवालों के।

45 दुरूदे हजरत गौशुल अआजम

ये वो दुरूदे है जिसपर पीराने-पीर गौशुल अआजम हजरत सय्यद अब्दुल कादिर जिलानी ने अपने अवराद व वजाइफ को खत्म किया है, ये दुरूद बहुत बाबरकत है पढ़नेवाले की गैब से मदद होती है और हर मुश्किल आसान हो जाती है।

इस दुरूद शरीफ के मुताअल्लिक बहुत से बुजूर्गाने- दीन और अवलीया किराम का इरशाद है कि जो शख्स इस दुरूद शरीफ को रोजाना दस (१०) बार सुबह और दस (१०) बार शाम को पढ़े उसे अल्लाह तआला को कुर्ब हासिल हो जायेगा और बारगाहे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम में उसे दाइमी हुजूरी हासिल हो जायेगी इस दरूद पाक का एक और फायदा ये भी है कि पढ़नेवाला अल्लाह तआला की रहमतों से मालामाल हो जाता है और हर बुराई से महफुज़ रहता है।

जो शख्स आशिके- रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम बनना चाहे तो उसे चाहीये कि इस दुरूद पाक को अपनी जिन्दगी में एक करोड़ बार पढ़े इन्शाअल्लाह उसका शुमार आशिके- रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम में हो जायेगा।

۴۵ درود حضرت غوث الاعظم

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ السَّابِقِ لِلْخَلْقِ
نُوْرُهٗ وَرَحْمَةٍ لِّلْعَالَمِيْنَ ظُهُوْرُهٗ عَدَدَ مَنْ مَّضٰى مِنْ
خَلْقِكَ وَمَنْ بَقِيَ وَمَنْ سَعِدَ مِنْهُمْ وَمَنْ شَقِيَ
صَلٰوةً تَسْتَغْرِقُ الْعَدَدَ وَتُحِيْطُ بِلُحَدِّ
صَلٰوةً لَّا غَايَةَ وَّلَا مُنْتَهٰى وَلَا انْقِضَآءَ صَلٰوةً دَآئِمَةً
بِدَوَامِكَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ
تَسْلِيْمًا مِّثْلَ ذٰلِكَ ☆

45 दुरूदे हजरत गौशुल अआजम

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदीन्नीसाबिकि लील्खल्कि नूरुहू व रह्मतीन-लील्आलमी-न जुहूरुहू अद-द मंम्मदा मीन् खल्कि-क व मंम्बकि-य व मन् सइ-द मीन्हुम व मन् शकि-य सलातन तस्तग्रिकु ल्-अद-द व तुहीतु बील्हद्दि सलातंल्-लगायतंव्वला मुन्तहा वला-नकिदाअ सलातन् दाइमतंम- बिदवामि-क व अला आलिही व असहाबिही व सल्लिम् तस्लीमं-म्मीस्ल जालि-क।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। इलाही रहमत नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि

व सल्लम पर जिनका नूर सारी मखलूक से पहले पैदा हुआ और उनका जुहूर तमाम काइनात के लिये रहमत ठहरा है, शुमार में तमाम तेरी अगली और पिछली मख्लूक के बराबर और हर एक नेकबख्त और बदबख्त की गिनती के बराबर ऐसा दुरूद जो शुमार में ना आ सके (बेशुमार, अनगिनत) और तमाम हुदूद का अहाता करे, जिस दुरूद की कोई गायत (जमा) ना हो और ना इन्तिहा और ना इख्तिताम (तमाम होने के करीब) हो, ऐसा दुरूद जो हमेंशा रहे तेरे दवाम के साथ और उनकी औलाद और सहाबा पर और उसी तरह उनपर खूब खूब सलाम नाजिल फरमा।

46 दुरूदे अव्वल

दुरूदे अव्वल को अल्लाह त्आला ने सबसे ज्यादा फ़ैज़ वाला बनाया है। इस दुरूद शरीफ को पढ़ने वाला, ईन्साअल्लाह रहमते खुदा से महरुम नहीं रहेगा। इस दरुद शरीफ का विर्द करने वाले के लिए ये दावा किया जा सकता है कि वो कभी नाकमयाब ना होगा। इस दुरूद शरीफ को पढ़ने से अल्लाह त्आला हर बीमारी से नीजात फरमाता

ईस दुरूद शरीफ का बड़ा फायदा तो ये है कि पढ़ने वाला हर बुराई से बचा रहता है। उसे इबादत में लुत्फ मीलता है और वो आबीद व परहेजगार बन जाता है। अगर कीसीको दीन में तरक्की करने की, दौलत बगैर बादशाह बनने की, आखीरत को आबाद करने की तमन्ना हो तो उसे चाहिए कि बहुत ही ज्यादा इस दुरूद शरीफ का विर्द करे, ईन्साअल्लाह सौ फीसदी कामयाब रहेगा। दीन मे मरतबे की तमन्ना रखने वाले की इस दुरूद शरीफ की बरकत से मंज़िलें जल्द तय हो जाएगी। ये दुरूद बावुजू पढ़ना बेहद जरुरी है। ये बिजली से भी ज्यादा तेजी से कबूल होता है। ये अल्लाह त्आला के खास बंदों का वज़ीफ़ा है। अगर कोई मोमिन अल्लाह का खास बंदा बनना चाहता हो तो इस दुरूद शरीफ को कसरत से पढ़े। इसी वजह से इसका नाम 'दुरूदे अव्वल' रखा गया है। जो इसे पढ़ते है वो अल्लाह त्आला के नजदिक अल्लाह के हबीब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के सदके 'अव्वल सफ' मे दाख़िल हो जाता है। ये दरूद शरीफ इस्मे-अआजम का दर्जा रखता है।

۴۶ درود اوّل

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ اَفْضَلِ اَنْبِيَآئِكَ

وَاَكْرَمِ اَصْفِيَآئِكَ وَمَنْ فَاضَتْ مِنْ نُّوْرِهٖ جَمِيْعُ

الْاَنْوَارِ وَ صَاحِبِ الْمُعْجِزَاتِ وَصَاحِبِ الْمَقَامِ

الْمَحْمُوْدِ سَيِّدِ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ☆

46 दुरूदे अव्वल

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यिदना मुहम्मदीन अफजले अम्बीयाए-क व अकरमि अस्फियाइ-क मीन नुरिही जमीईल अन्वारि व साहीबील मुअज़िजाति व साहिबील मकामीम महमुदि सय्यिदिल अव्वली-न वल आखिरी-न।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। या अल्लाह दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर अम्बीया में बुजुर्गतर और बुजुर्गतर तेरे माने हुओं मे है. जिनके नूर से ज़ाहिर हुए तमाम नूर, और मोअज्जात वाले, मकामे महमुदवाले है. सरदार हैं तमाम अव्वलीन और आख़िर वालों के।

(इस 'दुरूदे अव्वल' को कम से कम ३१३ मर्तबा पढ़ना चाहिए। इतनी बार पढ़ने के बाद जो दिल में हो दुआ माँगी ज़ाए पुरी होगी कोई दुआ खाली ना लौटेगी, ईन्शाअल्लाह।)

47 दरूदे आबिदीन

ये दुरूद शरीफ मशहुर बुजूर्ग हजरत मआरुफ करखी रहमतुल्लाहि अलयहि का वजीफा-ए-खास है। आप उठते बैठते हर वक्त ये दुरूदे आबिदीन पढ़ते रहते थे और उन्होंने इस दुरूद शरीफ के बेशुमार असरार देखे इसलिए वो अपने मुरीदीन को ये दुरूद शरीफ को पढ़ने की अकसर तलकीन फरमाते।

अगर कोई शख्स अपने जहन में खास हाजत रखकर इस दुरूद शरीफ को इक्तालीस (४१) दिन तक रोजाना ग्यारह (११) बार बार पढ़े तो इन्शाअल्लाह उसकी हाजत पूरी हो जायेगी और मन माफिक उसका काम हो जायेगा। कोई शख्स साहिबे कश्फ बनना चाहे तो उसे चाहिए कि तहज्जुद की नमाज़ के बाद इस दुरूद शरीफ को कसरत से पढ़े इन्शाअल्लाह उसपर कमालाते कश्फ खुल जायेंगे और रुहानी दरजात में बुलंदी होगी। मस्जिद में बैठकर इसे ग्यारह (११) बार रोजाना पढ़ने से दिल गुनाहों से पाकीज़ा हो जायेगा। हर किस्म की कामयाबी के लिए इस दुरूद शरीफ को हर नमाज़ के बाद इक्कीस (२१) बार चालीस दिन तक पढ़ा जाये इन्शाअल्लाह जैसा भी इम्तिहान या मकसद होगा उसमें कामयाबी होगी।

۴۷ درود العابدین

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ مِّلْاَءَ

الدُّنْيَا وَمِلْاَءَ الْاٰخِرَةِ وَارْحَمْ مُحَمَّدٍ وَ اٰلِ مُحَمَّدٍ

مِّلْءَ الدُّنْيَا وَ مِلْءَ الْاٰخِرَةِ وَاجْزِ مُحَمَّدًا وَاٰلِ

مُحَمَّدٍ مِّلْءَ الدُّنْيَا وَمِلْءَ الْاٰخِرَةِ وَسَلِّمْ عَلٰ

ى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ مِّلْءَ الدُّنْيَا وَمِلْءَ

الْاٰخِرَةِ ☆

47 दुरूदे आबिदीन

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मींव्-व अला आलिही मुहम्मदीम-मील्अद्दुन्या व मील्अल् आखिरति वरहम्- मुहम्मदींव्- व आलि मुहम्मदीम्- मील्अद्दुन्या व मील्अल् आखिरति वज़्ज़ि मुहम्मदन व आलि मुहम्मदींम्-मील्अद्दुन्या व मील्अल् आखिरति व सल्लीम अला मुहम्मदींव्-व अला आलि मुहम्मदीम्-मील्अद्दुन्या व मील्अल् आखिरति।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह रहमत नाजिल फरमा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और उनकी आल (औलाद) पर इतनी रहमत कि दुनिया और आखिरत भर जाये और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और उनकी आल को इतनी जज़ा दे कि दुनिया और आखिरत भर जाये और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और उनकी आल पर इतनी सलामती अताकर कि दुनिया व आखिरत (दोनों जहां) भर जाये।

48 दुरूदे कल्बी

अगर कोई शख्स ऐसी तमन्ना रखता हो कि उसकी हर दुआ कबूल हो और हर एक जायज़ हाजत अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ पूरी हो

तो उस के लिए ये लाजवाब दुरूद है। उसे चाहिए के वो अपनी हर दुआ में इस दुरूद शरीफ को पढ़ा करे। ईन्शाअल्लाह इस दुआ की बरकत से उसकी हर दुआ कबूल होगी। दुरूदे कल्बी अल्लाह त्आला के फज्लो करम से दिल को मुनव्वर करता है और कामयाबी देता है। खासकर जब भी दुआ में पढ़ा जाता है तो उस दुआ को अल्लाह त्आला ज़रूर कबूल फरमाता है।

۴۸ درُود قلبی

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى شَفِيْعِ الْمُذْنِبِيْنَ سَيِّدِنَا وَ مَوْلَانَا

وَمُرشِدِنَا وَرَاحَةِ قُلُبِنَا وَ طَبِيْبِ ظَاهِرِنَا وَبَاطِنِنَا

مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ

وَاَوْلِيَآءِ اُمَّتِهٖ وَاَهْلِ طَاعَتِكَ اَجْمَعِيْنَ اِلٰى يَوْمِ

الدِّيْنِ ☆

48 दुरूदे कल्बी

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला शफीईल् मुज़निबीना सय्यिदिना व मौलाना व मुरशिदिना व राहति कोलुबिना व शफी-ए-जोनुबिना व तबीबि जाहिरिना व बातिनिना मुहम्मदींव व अला आलिही व अस्हाबिही व अज़वाजिही व अहलि बयतिही औलीया-ए-उम्मतिही व अहलि ताअति-क अजमईना ईला यौमिद्दीन।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। या अल्लाह रहमत नाज़िल फरमा हम गुनाहगारों शफीअ हमारे सरदार और मौला व मुर्शीद जो हमारे दिलों की राहत व गुनाहों के शफीअ हैं और हमारे ज़ाहिर व बातीन के तबीब है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और रहमत नाज़िल फरमा आपकी औलाद व अस्हाब और अज़वाज और अहले बैत पर और आपकी उम्मत के औलीया और उनकी इताअत (फरमाबरदारी करने वाले) करने वाले तमाम पर क़यामत के दिन तक।

49 दुरूदे शिफा-ए-कुलूब

दुरूद शिफा पढ़ने से रुहानी व जिस्मानी बीमारीयों से शिफा मिलती है, खासकर जिस शख्स को शैतानी वसवसा बहुत तंग करता हो और नेक कामों पर माइल होने में नफ्स रुकावट डालता हो तो इस दुरूद शरीफ को पढ़ने से सब वसवसे खत्म हो जायेंगे। ऐसी जिस्मानी बीमारी जिसका तबीबों से इलाज़ ना होता हो उसके लिए इस दुरूद शरीफ को चालीस दिन (४०) तक रोजाना सौ (१००) बार पढ़ें इन्शाअल्लाह बेहतरी नसीब होगी। इसके अलावा ये दुरूद पाक दिल के बीमारीयों के लिए बहुत अक्सीर है, लिहाज़ा दिल के किसी मर्ज़ में मुब्तिला शख्स को चाहिए कि तीन सौ पन्द्रह (३१५) बार ग्यारह (११) दिन तक बाद नमाज़े फजर पढ़े इन्शाअल्लाह दिल की हर किस्म की बीमारी से निजात मिल जायेगी और इसी लिए इस दुरूद शरीफ को दुरूदे शिफा-ए-कुलूब कहा जाता है।

۴۹ درُود شفائی قُلوب

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ طِبِّ الْقُلُوْبِ

وَدَوَآئِهَا وَعَافِيَةِ الْاَبْدَانِ وَشِفَآئِهَا وَنُوْرِ الْاَبْصَارِ

وَضِيَآئِهَا وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ ☆

49 दुरूदे शिफा-ए-कुलूब

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदीन तिब्बील्-कुलूबि व दवाइहा व आफियतील्-अब्दानि व शिफाइहा व नूरील्-अबसारि व दियाइहा व अला आलिही व सह्बिही व सल्लीम्।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो दिलों के तबीब (इलाज़ करनेवाले) और उसकी दवा हैं और जिस्म की आफीयत (सलामती) और उसकी शिफा हैं और आँखों का नूर और उसकी चमक हैं और आपकी औलाद और सहाबा पर दुरूद और सलामती नाजिल फरमा।

50 दुरूदे निजाते वबा

दुरूदे निजाते वबा पढ़ने से वबाओं (viral deases, हवा की खराबी से फैलने वाली बीमारी जैसे हैजा, प्लेग, बुखार वगैरह) से निजात मिलती है। अगर किसी मकाम पर ऐसी वबा फैल जाये जिसका इलाज या हल ना हो रहा हो तो उस सूरत में इस दुरूद शरीफ को सवा लाख बार पढ़ने से वबा से निजात मिलेगी। इस दुरूद शरीफ के मुताअल्लिक कहा जाता है कि एक दफा मौलाना शम्सुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे के वतन में एक वबा फूट पड़ी और बहुत से लोगों की मौत हो गई, एक रात उन्हें ख्वाब में सरवरे काइनात हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जियारत नसीब हुई तो मौलाना ने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की बारगाह में अर्ज़ किया कि हुजूर इस इलाके में वबा फैल गई है इसपर हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने उन्हें ये

दुरूद शरीफ बतलाया और फरमाया कि वबा फैलने की सूरत में इस दुरूद पाक को पढ़ें तो अल्लाह तआला उस इलाके को वबा से महफूज करेगा। चुनान्चे मौलाना मौशुफ ने ये दुरूद शरीफ कसरत से पढ़ा तो अल्लाह तआला ने उस इलाके से वबा को खत्म कर दिया इसी लिए इसे दुरूदे निजाते वबा कहा जाता है।

۵۰ درُود نجات وبا

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا

مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ کُلِّ دَآءٍ وَّدَوَآءٍ وَّبِعَدَدِ کُلِّ عِلَّۃٍ

وَّشَفَآءٍ ☆

50 दुरूदे निजाते वबा

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्-व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदींम् बिअददि कुल्लि दाईव्-व दवाईव्-व बिअददि कुल्लि इल्लतींव्-व शफाइन।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर बमुताबिक तादाद बीमरीयों की दवा के और तमाम इल्लत (रोग) व शिफा (तन्दरुस्ती) की तादाद के बराबर।

51 दुरूदे महमूद

हजरत अब्दुल्लाह बीन मसउद रदीयअल्लहु तआला अनहु से हदीस रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया कि 'जब तुम लोग दुरूद पढ़ो तो खूब अच्छे तरीके से दुरूद भेजो सिर्फ इसलिए कि वो मुझे पेश किया जायेगा लिहाजा तुम्हे अच्छी तरह दरूद पढ़ना चाहिए क्योंकि तुम नहीं जानते कि वो मुझे पेश किया जाता है' और मुन्दर्जा जैल (निम्नलिखीत) दुरूद शरीफ पढ़ने की तरगीब दी।

ये दुरूद खैर व बरकत के लिए बहुत अक्सीर है। बाद नमाज़े फज्र इस दुरूद शरीफ को रोजाना ग्यारह (११) बार पढ़ने वाले के माल, जान, घरबार औलाद वगैरह में अल्लाह तआला खैरो-बरकत व रहमत अता करता है। रात सोने से पहले सौ (१००) बार पढ़ने से अल्लाह तआला माल व जान और औलाद हमेंशा हिफाजत में रखता है। कर्ज़ की अदायगी की नीयत से ग्यारह दिन तक बाद नमाज़े इशा तीन सौ तेरह (३१३) बार पढ़ें बहुत जल्द कर्ज़ से निजात मिलेगी। तकलीफ में मुब्तिला शख्स इस दुरूद शरीफ को सात (७) दिन तक बाद नमाजे इशा एक सौ ग्यारह (१११) बार पढ़े तो इन्शाअल्लाह तकलीफ दुर हो जायेगी, कोई ज़हनी परेशानी हो तो फौरन खत्म हो जायेगी। अगर कोई शख्स इस दुरूद शरीफ को सौ (१००) बार पढ़कर किसी काम के लिए हाकिम के पास जाए तो वो मेहरबान हो जायेगा।

۵۱ درُود محمود

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ اجۡعَلۡ صَلٰوتَکَ وَرَحۡمَتَکَ وَبَرَکَاتِکَ

عَلٰی سَیِّدِالۡمُرۡسَلِیۡنَ وَاِمَامِ الۡمُتَّقِیۡنَ وَخَاتَمِ النَّبِیِّیۡنَ

عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ اِمَامِ الْخَیْرِ وَقَآئِدِ الْخَیْرِ

وَرَسُوْلِ الرَّحْمَةِ اَللّٰهُمَّ ابْعَثْهُ الْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ

الَّذِیْ یَغْبِطُهٗ بِهِ الْاَوَّلُوْنَ وَالْاٰخِرُوْنَ☆

51 दुरूदे महमूद

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मज्अल् सलात्-क व रहमत्-क व बरकात्-क अला सय्यिदील्- मुर्सलीन व इमामील् मुत्तकीन व खातमीन्नबीय्यीन अब्दि-क व रसूलि-क इमामील्- खयरिवकाइदील्- खयरि व रसूलीर्रहमति अल्लाहुम्मब्-असहुल्- मकामल्- मह्मूदल्लजी यगबितुहू बिहील् अव्वलून वल्- आखिरून।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह अपनी सलात व रहमत और बरकत भेज रसूलों के सरदार व मुत्तकीयों के इमाम व खातिमीन्नबीय्यीन पर जो तेरे बन्दे तेरे रसूल हैं खैर के इमाम व खैर पहुँचानेवाले और रसूले-रहमत हैं, और उनको मकामे महमूद अता फरमा जिसपर (जिस मकाम पर) रश्क करते हैं अगले और पीछले सब।

52 दुरूदे हुब्बे रसूल सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम

रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की मुहब्बत दीने-इस्लाम की बुनियाद है, लिहाजा जो शख्स ये चाहे कि उसके दिल रसूले अकरम सल्लल्लहो अलयहे व सल्लम की बेपनाह मुहब्बत पैदा हो जाये तो उसे चाहिए कि ये दुरूद शरीफ कसरत से पढ़े, इस दुरूद

शरीफ के पढ़ने से हर चीज की मुहब्बत तर्क होकर नबी करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की मुहब्बत बहुत ज्यादा हो जायेगी इसके अलावा हुजूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की ज्यारत का भी शर्फ हासिल होगी।

हजरत इब्ने मसउद रदीअल्लाहो तआला अन्हो से हदीस है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम ने इरशाद फरमाया है कि 'कयामत के दिन लोगों में सबसे ज्यादा मुझसे करीब दुरूद पढ़ने वाला होगा।' क्या इससे ज्यादा भी किसी बन्दे के लिए और कोई शआदत की बात हो सकती है?

۵۲ درود حُبِّ رسول علیہ وسلم صلی اللہ علیہ وسلم

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَحَبِیْبِنَا وَمَحْبُوْبِنَا وَمَوْلَانَا

مُحَمَّدٍ وَّ بَارِکْ وَسَلِّمْ☆

52 दुरूदे हुब्बे रसूल सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व हबीबिना व महबूबिना व मौलाना मुहम्मदींव्- व बारीक व सल्लीम।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार व हमारे हबीब व हमारे महबूब और हमारे मौला मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर और बरकत और सलामती।

53 दुरूदे तिरयाके अमराज

'नुजहतुल मजालिस' में लिखा है कि बाज सुलहा में एक साहब ने आरिफ अल्लाह हजरत शैख शहाबुद्दीन इब्न अरसलान रहमतुल्लाह अलयहे (ये बड़े जाहिद और आलिम थे) को देखा और उनसे अपने मर्ज और तकलीफों की शिकायत की तो उन्होने फरमाया कि 'तिरयाके मुजर्रब' से कहाँ गाफिल हो ये दुरूद शरीफ पढ़ा करो। जो शख्स ये दुरूद कसरत से पढ़े उसकी रुह और दिल जिन्दा हो जायेगा और उसे दुनिया में गैर फानी मकाम हासिल हो जायेगा और उसकी कब्र हमेंशा रौशन रहेगी और उसके जिस्म को कब्र में मिट्टी नहीं खायेगी। इसलिए ये दुरूद शरीफ ऐसा रुहानी नुस्खा है कि जिसे पढ़ने से आखिरत संवर जाती है, लिहाजा हर नमाज़ के बाद इस दुरूद शरीफ को एक आध बार जरुर पढ़ना चाहिये।

۵۳ درود تریاق امراض

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى رُوْحِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

فِى الْاَرْوَاحِ وَصَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى قَلْبِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

فِى الْقُلُوْبِ وَصَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى جَسَدِ مُحَمَّدٍ فِى

الْاَجْسَادِ وَصَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى قَبْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى

الْقُبُوْرِ ☆

53 दुरूदे तिरयाके अमराज

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम् व बारिक् अला रुहि सय्यिदिना मुहम्मदीन फील्-अरवाहि व सल्लि व सल्लिम् अला कल्बि सय्यिदिना मुहम्मदीन फील्-कुलूबि व सल्लि व सल्लिम् अला जसदि मुहम्मदीन फील्-अज्सादि व सल्लि अला कब्रि सय्यिदिना मुहम्मदीन फील्-कुबूरि।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद व सलामती और बरकत नाजिल फरमा रुहे-मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर रुहों के दरम्यान, और दुरूद व सलामती नाजिल फरमा कल्बे-मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर कुलूब (कल्ब की जमा दिलों) के दरम्यान और दुरूद सलमती नाजिल फरमा जिस्मे-मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर जिस्मों के दरम्यान और दुरूद व सलामती नाजिल फरमा कब्रे-मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर कब्रों के दरम्यान।

54 दुरूदे तय्यब

गुनाहों से पाकीज़गी हासिल करने के लिए दुरूदतय्यब बहुत ही असरदार है। लिहाज़ा अगर किसी शख्स की ज़िन्दगी गुनाहों और बुराईयों में गुजर गई हो तो जिस वक्त भी एहसासे नदामत हो तो अल्लाह के हुजूर तौबा करके इस दुरूद शरीफ के सुबह व शाम कसरत से पढ़ना शुरु कर दे तो इन्शाअल्लाह तमाम गुनाहों की मुआफी हो जायेगी और इस तरह पाक हो जायेगा जैसे आज ही माँ के पैट से पैदा हुआ है और बाकी जिन्दगी खुद बखुद नेकीयों की तरफ मायल रहेगी क्योंकि दुरूद तय्यब पढ़ने से ज़िन्दगी में नबी अकरम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की ताइद और तवज्जो हामिले हाल हो जाती है इसलिए पढ़नेवाले का हर काम आसानी के साथ होता चला जाता है।

शबे-बरात की रात अगर इस दुरूद शरीफ को पढ़ा जाये तो हर मुश्किल हल हो जायेगी। जुम्आ के दिन बाद नमाज़े जुम्आ इसे तीन सौ तेरह (३१३) बार पढ़ने से रिज़्क में इजाफा होगा। अगर हर

नमाज़ के बाद एक बार पढ़ा जाये तो आखिरत में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की शफाअत नसीब होगी।

۵۴ درُودطیب

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡکَ یَاشَفِیۡعَ الۡمُذۡنِبِیۡنَ سَیِّدِنَا وَمَوۡلٰنَا

اَحۡمَدِ مُجۡتَبٰی مُحَمَّدِ مُصۡطَفٰی وَعَلٰی اٰلِہٖ

وَاَصۡحَابِہٖ وَاَزۡوَاجِہٖ وَاَحۡبَابِہٖ وَذُرِّیَّاتِہٖ وَاَھۡلِ بَیۡتِہٖ وَ

اَھۡلِ طَاعَتِکَ اَجۡمَعِیۡنَ ☆

54 दुरूदे तय्यब

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

सल्लल्लाहु अलय्-क या शफीअल्-मुज़्निबी्-न सय्यिदिना व मौलाना अहमदि मुज्तबा मुहम्मदि मुस्तफा व अला आलिही व असहाबिही व अज़्वाजिही व अहबाबिही व ज़ुर्रियातिही व अहलि बैतिही व अहलि ताअति्-क अजमइ्-न।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। अल्लाह की सलात हो आप पर ऐ गुनाहगारों की शफाअत करनेवाले हमारे सरदार और आका अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर और आपकी औलाद पर व आपके सहाबा पर व आपकी अजवाज (पाक बीवीयों) पर व आपके अहबाब पर व आपके रिश्तेदारों पर व आपके अहले-बयत पर और आपकी इताअत करनेवाले

तमाम पर।

55 दुरूदे समरात

जो शख्स ये दुरूद शरीफ पढ़ेगा अल्लाह उसे दुनियावी समरात (फल, हासिल, फायदा) से नवाजेगा और उसके रिज़्क में खूब इजाफा करेगा।

अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलयहि फरमाते हैं कि रसीद अत्तार रहमतुल्लाह अलयहि ने बयान किया कि मिश्र में एक बुजूर्ग थे जिनका नाम अबू सइद ख्यात (रहमतुल्लाह अलयहि) था, लोगों से मेल जोल बिलकुल बन्द था कुछ अरसे के बाद अबू सइद ख्यात रहमतुल्लाह अलयहि को लोगों ने हजरत इब्ने रफीक रहमतुल्लाह अलयहि की मजलिस में बहुत कसरत से आते जाते देखा, लोगों को इसपर ताअज्जुब हुआ और उनसे दरयाफ्त किया उन्होंने फरमाया कि मुझे हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की ख्वाब में ज़ियारत नसीब हुई और आप सल्लल्लाहु अलयहे व सल्लम ने हुक्म फरमाया कि अपने रफीक की मजलिस में जाया करो इसलिए कि वो अपनी मजलिस में मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ पढ़ता है।

۵۵ درُودثمرات

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوۡلٰنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ اَوۡرَاقِ

الزَّیۡتُوۡنِ وَجَمِیۡعِ الثِّمَارِ☆

55 दुरूदे समरात

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदीन अदद अवराकि-ज्जयतुनि व जमीईस्सिमारि।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार व आका मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जितने ज़ैतून के पत्ते और फूल हैं इनकी अदद (गिनती) के बराबर।

56 दुरूदे इन्आम

इस दुरूद शरीफ के पढ़ने से दिन व दुनिया की बेशुमार दौलत हासिल होती है, कसरत से पढ़नेवाले पर हमेंशा अल्लाह की रहमत रहती है, पढ़नेवाला दुनियावी माल व दौलत से बेनियाज़ हो जाता है।

अगर कोई औलाद से महरुम हो तो उसे चाहिए कि हर जुम्आ बाद नमाज़ इस दुरूद शरीफ को एक सौ ग्यारह (१११) बार मस्जिद में बैठकर इस दुरूद शरीफ को पढ़े और मुकर्रा गिनती पूरी होने पर सर सज्दे में रखकर अल्लाह के हुजूर औलाद की दुआ माँगे इन्शाअल्लाह दुआ कुबूल होगी और औलाद से नवाजा जायेगा। इस दुरूद शरीफ को चालिस दिन तक रोजाना पाँच सौ बार पढ़कर मरहुम को बख्शा जाये तो कब्र में राहत मिले और उसकी कब्र को मीश्ले जन्नत बना दिया जाता है और अजाबे कब्र से महफूज रहे।

٥٦ درُودِ انعام

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ

عَلٰى اٰلِهٖ عَدَدَ اَنْعَامِ اللّٰهِ وَاَفْضَالِهٖ ☆

56 दरूदे इन्आम

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम् व बारिक् अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्-व अला आलिही अद्-द अन्आमि-ल्लाहि व अफदालिही।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद व सलामती व बरकत नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और उनकी आल औलाद पर उस तादाद के बाराबर जितना कि अल्लाह तेरे इनाम और फ़जाइल हैं।

57 दुरूदे इमाम शाफई

'अलकौलुल बदीअ फी अस्सलातु अला अलहबीब अलशफीअ' में अल्लामा सखावी रहमतुल्लह अलयहे लिखते हैं कि हजरत अल्लामा अब्दुल्लाह बिन हकम रहमतुल्लाहि अलयहि से नक्ल है कि 'मैने इमाम शाफई रहमतुल्लाहि अलयहि को ख्वाब में देखा और पूछा कि अल्लाह तआला ने आपके साथ क्या मुआमला फरमाया, इमाम साहब ने फरमाया कि मेरी मग़फिरत फरमा दी मेरे लिए जन्नत ऐसी सजाई गई जैसे दुलहन को सजाया जाता है मझपर ऐसी बखैर की गई जैसी दुलहन पर की जाती है। मैने पूछा ये रुत्बा कैसे मिला, तो फरमाया कि जो दुरूद मैने लिखा उसकी बरकत से।'

'अहयाउल उलूम' में ये तहरीर है कि एक बुजूर्ग अबूल हसन रहमतुल्लाह अलयहि को ख्वाब में हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जियारत नसीब हुई, तो अर्ज किया कि 'या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम इमाम शाफई को आपकी बारगाह से क्या इनाम मिला? (उन्होंने अपनी किताब 'अल्जसाता' में ये दुरूद शरीफ लिखा है) आप हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया उनको हमारी जानिब से ये इनाम दिया गया कि इन्शाअल्लाह बरोजे कयामत उनको (इमाम शाफई रहमतुल्लाहि अलयहि को) बिला हिसाब (बगैर

हिसाब किताब) जन्नत में दाखिल किया जायेगा।

۵۷ درود امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کُلَّمَا ذَکَرَہُ الذَّاکِرُوۡنَ

وَکُلَّمَا غَفَلَ عَنۡ ذِکۡرِہِ الۡغَافِلُوۡنَ ☆

57 दुरूदे इमाम शाफई

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन कुल्लमा ज़करहुज़्ज़ाकिरु-न व गफलअन् ज़िक्रिहील्गाफिलु-न।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर तमाम जिक्र करनेवालों के जिक्र के जितना और तमाम जिक्र से गाफिल रहनेवालों की गफलत के जितना।

हदीस हुजूर सरवरे कौनैन मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम ने फरमाया सारी नेकीयाँ, सब इबादतें और सारी दुआएँ रोक दी जाती है जबतक मुझपर दुरूद पाक ना पढ़ा जाये, सुन ले अगर कोई बंदा कयामत के दिन दरबारे इलाही में सारे जहान वालों की नेकीयाँ लेकर हाजिर हो जाये और इन नेकीयों में मुझपर दुरूद पाक ना हुआ तो सारी की सारी नेकीयाँ उसके मुँह पर मार दी जायेंगी, उनमें से एक भी नेकी कबूल ना होगी। (दुर्रतुल नासिहीन)

58 दुरूदे सय्यद अहमद बदवी (रहमतुल्लाहि अलयहि)

ये दुरूद शरीफ हजरत सय्यद अहमद बदवी रहमतुल्लाहि अलयहि का है। ये दुरूद शरीफ असरार और रमूज़ (राज) का खजाना है। इसके बेशुमार जाहिरी और बातिनी असरार हैं। इसके मुताअल्लिक बहुत से आरिफीन ने कहा है कि ये हाजत के पूरा करने और मुश्किलात को दुर करने और अनवार व असरार के हुसूल के लिए बहुत असरदार है। इसके अलावा शुफीया और औलीया के मुरीदीन को अपने शेख की इजाजत से ये दरूद शरीफ जरुर पढ़ना चाहिए, क्योंकि इब्तिदाई सुलूक की मंजिलों में इसका पढ़ना मुरीदीन के लिए बहुत उम्दा है इससे मंजिले सुलूक जल्द और आसानी से तय होगी।

۵۸ درود سید احمد بدوی

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمۡ وَبَارِکۡ عَلٰی سَیِّدِنَا وَ مَوۡلَانَا

مُحَمَّدٍ شَجَرَۃِ الۡاَصۡلِ النُّوۡرَانِیَّۃِ وَلَمۡعَۃِ الۡقَبۡضَۃِ

الرَّحۡمَانِیَّۃِ وَاَفۡضَلِ الۡخَلِیۡقَۃِ الۡاِنۡسَانِیَّۃِ اَشۡرَفِ

الصُّوۡرَۃِ الۡجِسۡمَانِیَّۃِ وَمَعۡدِنِ الۡاَسۡرَارِ الرَّبَّانِیَّۃِ

وَخَزَآئِنِ الۡعُلُوۡمِ الۡاِصۡطَفَائِیَّۃِ صَاحِبِ الۡقَبۡضَۃِ

الْاَصْلِيَّةِ وَالْبَهْجَةِ السَّنِيَّةِ وَالرُّتْبَةِ الْعَلِيَّةِ مِنَ

اَنْدَرَجَتِ النَّبِيُّوْنَ تَحْتَ لِوَآئِهٖ فَهُمْ مِّنْهُ وَاِلَيْهِ

وَصَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ

عَدَدَمَا خَلَقْتَ وَرَزَقْتَ وَاَمَتَّ وَاَحْيَيْتَ اِلٰى

يَوْمِ تَبْعَثُ مَنْ اَفْنَيْتَ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا

وَّالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ☆

58 दुरूदे सय्यद अहमद बदवी (रहमतुल्लाहि अलयहि)

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम् व बारीक् अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदीन शजरतिल्- अस्लीन्नूरानीय्यति व लम्अतिल्- कब्दतिर्रहमानीय्यति व अफ्दलील्-खलीकतील्- इन्सानिय्यति अस्रफस्सूरतील्- जीस्मानीय्यति व मअदिनिल्- असरारिर्रब्बानिय्यति व खजाइनील्- उलूमील्- इस्तफाइय्यति साहिबील्- कब्दतील् अस्लीय्यति वल्बहजतीस्सनीय्यति वर्रुत्बतिल्-अलीय्यहि मनीन्दरजतीन्नबीय्यू-न तहत लिवाइहीफहुम्मीन्हु व इलयहि व सल्लि व सल्लीम् व बारिक अलय्हि व अला आलिही व सह्बिही अददमा खलक्-त व रजक्-त व अमत्त व अह्यय्-त इला यवमि तबअसु मन् अफ्नय्-त व सल्लीम् तस्लीमन् कसीरंव-वल्हम्दुलील्लाहि रब्बील्आलमी-न।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरुद व सलामती और बरकत भेज हमारे सरदार व आका मुहम्मद सल्लल्लाहि अलयहि व सल्लम पर जो असल नूरानी शजर

(रूख या दरख्त) हैं और रहमानी जुहूर की चमक हैं और इन्सानी तखलीक में सबसे अफ़जल हैं और जिस्मानी सूरत में सबसे अफ़जल हैं और अल्लाह के असरार का खजाना हैं और बरगुजीदा उलूम (इल्म की जमा) के खजाने हैं असली जुहूर वाले हैं और रौशन ताअत और बुलन्द मरतबा पर हैं जिनके झन्डे के निचे तमाम अम्बीया इकराम अलयहीमुस्सलाम होंगे और सब नबी आपसे फैजयाब हैं और दुरूद सलाम और बरकत हो आपकी आल पर और आपके सहाबा इकराम पर उस तादाद के मुताबीक जो तुने मखलूक पैदा की और रिज़्क दिया और मौत दी जिन्दगी बख्शी उस दिन के जिन्दा करेगा जिसको मुर्दा किया और खूब सलाम भेज और तमाम हम्दोशना अल्लाह ही के लिए है।

हिकायत- एक बुजूर्ग फरमाते हैं 'मैं मौसमे बहार में बाहर निकला और युँ कहा, या अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा अपने हबीब सल्ललाहु अलयहि व सल्लम पर दरख्तों के बराबर, या अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा अपने नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर फूलों और फूलों की गिनती के बराबर, या अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा अपने रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर समन्दर के कतरों के बराबर, या अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहे व सल्लम पर रेगिस्तान की रेत के जर्रों (कणों) के बराबर, या अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा अपने हबीब सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर उन चीजों की गिनती के बराबर जो समन्दरों और खुश्कीयों में है।

तो हातिफ से आवाज आई ऐ बन्दे! तुने नेकीयाँ लिखनेवाले फरिश्तों को कयामत तक थका दिया है और तु रब्बे करीम की बारगाह से जन्नते अदन का हकदार हुआ और वो बहुत अच्छा घर है।' (नज़हतूल मजालिस - जिल्द २ सफहा १०९)

59 दुरूदे एज़ाज

'सआदत दारैन' में है कि हजरत शरीफ नौमानी रदीअल्लाहु तआला अनहु जो हजरत शेख मुहम्मद रदीअल्लाहु तआला अनहु के

मुतवस्सलीन में से थे , फरमाया मैंने ख्वाब में सय्यदे दो आलम सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम को देखा एक बड़े मजमा में जल्वागर हैं और उम्मत के औलीया इकराम हाजिर होकर एक के बाद एक सलाम अर्ज कर रहे हैं और कोई कह रहे हैं कि ये फुलाँ वली अल्लाह है और फुलाँ है और आनेवाले हजरात सलाम अर्ज करके एक जानिब बैठते जाते है।

यहाँ तक की बहुत सारे लोग जमा हुए फिर निदा देनेवाला कह रहा है, ये मुहम्मद हनफी आ रहे हैं और जब वो सय्यदुल आलमीन अकरमुल अव्वलीन व आखिरीन सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम की खिदमते अकदस में हाजिर हुए तो आका-ए-दो जहाँ सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने उन्हें पास बिठा लिया फिर सय्यदे दो आलम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम सय्यदना सिद्दीके अकबर और फारूके आजम रदीअल्लाहु तआला अन्हुम से मुतवज्जे हुए और 'फरमाया मैं इससे मुहब्बत करता हुँ मगर इसकी पगड़ी जो कि बगैर शमले के है' और मुहम्मद हनफी की तरफ इशारा फरमाया। ये सुनकर सय्यदना सिद्दीके अकबर रदीअल्लाहु तआला अनहु ने अर्ज की 'या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) इजाज़त हो तो मैं उसके सर पर पगड़ी बाँध दुँ?' फरमाया 'हाँ' तो सिद्दीके अकबर रदीअल्लाहु तआला अनहु ने अपना अमामा मुबारक लेकर हजरत मुहम्मद हनफी के सर पर बाँध दिया और बांये जानिब शमला छोड़ दिया।

और जब ये ख्वाब हजरत शेख शरीफ नौमानी रदीअल्लाहु तआला अनहु ने मुहम्मद हनफी रदीअल्लाहु तआला अनहु को सुनाया तो वो और उनके हमनशीन सब आबदीदा (आँखे नम होना) हो गये- फिर हजरत मुहम्मद हनफी रदीअल्लाहु तआला अनहु ने हजरत शेख शरीफ नौमानी रदीअल्लाहो तआला अनहो से फरमाया 'आइन्दा जब आपको सय्यदे दो आलम सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम की जियारत से नसीब हो तो आप अर्ज करें कि मुहम्मद हनफी के कौन से अमल की वजह से ये नजरे इनायत है।'

फिर कुछ दिनों के बाद शेख शरीफ नौमानी रदीअल्लाहु तआला अन्हु जियारत की नेमत से सरफराज़ हुए और वो अर्ज पेश कर दी रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम ने फरमाया वो जो दुरूदे पाक हर रोज मुझपर मगरिब के बाद पढ़ता है, जो युँ है -

۵۹ درود اعزاز

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ

وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ عَدَدَ وَمَاعَلِمْتَ وَزِنَةَ مَا عَلِمْتَ

وَمِلْءَ مَا عَلِمْتَ ☆

59 दुरूदे ऐज़ाज़

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन्न-नबीय्यील्- उम्मीय्यि व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लीम् अद-द व मा अलीम्त व ज़िन्-त मा अलीम्-त व मील्अ मा अलीम्-त।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद भेज मुहम्मद नबी-ए-उम्मी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और आपकी आल पर और सहाबा पर सलाम भेज इतनी तादाद में जिनका शुमार तेरे अन्दाजे और इल्म के मुताबिक हो।

60 दुरूदे वसीला

हजरत अबू हुरैरा रदीअल्लाहु तआला अनहो से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि 'तुम जब भी मुझपर दुरूद पढ़ा करो तो मेरे लिए वसीला भी मांगा करो', 'किसी ने अर्ज किया कि हुजूर (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) वसीला क्या

है?' तो आपने फरमाया 'जन्नत का आ'ला दरजा यानी मकामे महमूद है' और इस दुरूद पाक में मकामे महमूद का जिक्र है। लिहाजा जो शख्स ये दुरूद शरीफ पढ़े उसे अल्लाह तआला हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शफाअत का वसीला अता करेगा इसके अलावा उसके दर्जात बुलन्द करेगा और सबसे बढ़कर ये कि उसे रजा-ए-इलाही हासिल होगी। जो शख्स किसी नेक महफिल में बैठकर एक मरतबा इस दुरूद शरीफ को पढ़े दूसरे उसकी इज्जत करेंगे। कोई उंचे ओहदेदार या आफीस में जाते वक्त एक मरतबा इस दुरूद शरीफ को पढ़कर जायें, इन्शाअल्लाह काम मन्शा के मुताबिक होगा।

٦٠ درُودوسیلہ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَمَآ اَحَاطَ بِہٖ

عِلۡمُکَ وَاَحۡصَاہُ کِتَابُکَ صَلٰوۃً تَکُوۡنُ لَکَ

رِضًی وَّلِحَقِّہٖ اَدَآءً وَّاَعۡطِہِ الۡوَسِیۡلَۃَ وَالۡفَضِیۡلَۃَ

وَالدَّرَجَۃَ الرَّفِیۡعَۃَ وَابۡعَثۡہُ اللّٰھُمَّ الۡمَقَامَ الۡمَحۡمُوۡدَ

الَّذِیۡ وَعَدۡتَّہٗ وَاجۡزِہٖ عَنَّا مَا ھُوَاَھۡلُہٗ وَعَلٰی جَمِیۡعِ

اِخۡوَانِہٖ مِنَ النَّبِیّٖنَ وَالصِّدِّیۡقِیۡنَ وَالشُّھَدَآءِ

وَالصَّالِحِیۡنَ ☆

60 दुरूदे वसीला

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदीन अददमा अहा-त बिही इल्मु-क व अहसाहु किताबु-क सलातन तकूनु ल्-क रिदंव्-व लिहक्कहू अदाअंव्-व अअतिहील् वसील्-त वल् फजील्-त वद्दरजतर्रफीअ्-त वब्अस्हु अल्लाहुम्मल् मकामल् महमूदल्लजी वअद्तहू वजज़िही अन्ना मा हुव अह्लुहू व अला जमीइ ईख्वानिही मिनन्नबीय्य्-न वस्सिद्दीकी्-न वश्शुहदाइ वस्सालिही्-न।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर उस अदद के जितना कि जिसका अहाता किया है तेरे इल्म ने और शुमार किया उसको तेरी किताब ने ऐसा दुरूद जो तेरी रजा का बायस (वजह) हुआ और आपके हक को अदा करदे और अता फरमा आपको वसीला और बुजूर्गी और बूलन्द दर्जा पर फाइज फरमा आपको ऐ अल्लाह मकामे महमूद पर जिसका तुने उनसे वादा किया है जज़ा दे (परीणाम, प्रतीफल) आपको हमारी तरफ से जिस जज़ा के लायक आप हैं और आपके तमाम बिरादरान (भाईयों) पर अम्बिया अलैहीसल्लाम से और सीद्दीकीन से और शहीदों से और सालिहीन से।

61 दरूदे एतसाम

मदीना मुनव्वरा में दाखिल होते वक्त ये दुरूद शरीफ पढ़ें, उसके बाद जब मस्जिद नबवी में दाखिल हों तो फिर ये दुरूद शरीफ एक बार पढ़ें, रोज-ए-रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर हाजिरी देने के बाद रियाजुल जन्ना में बैठकर रोजाना (जबतक मदीना मुनव्वरा में रहें) ग्यारह सौ (११००) बार इस दुरूद शरीफ का विर्द करें, इन्शाअल्लाह ख्वाब में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जियारत नसीब होगी। सोते वक्त इस दरूद शरीफ का एक बार पढ़ना खैरो-बरकत का बायस हे। अगर किसी पर नाहक कोई इल्जाम लग जाये तो चाहिए कि इस दुरूद शरीफ को एक सौ ग्यारह (१११) बार

ग्यारह (११) दिन तक पढ़ें इन्शाअल्लाह इल्जाम से बरी हो जायेंगे और नाहक इल्जाम लगानेवाला नुकसान उठाएगा। रोजाना हर नमाज़ के बाद इस दरूद शरीफ को एक बार पढ़ने से इमान में हद दरजे की इस्तकामत हासिल होती है।

٦١ دُرُودِ اعتصام

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ اَفْضَلِ مَمْدُوْحٍ بِقَوْلِكَ

وَاَشْرَفِ دَاعٍ لِّلْاِعْتِصَامِ بِحَبْلِكَ وَخَاتِمِ

اَنْبِيَآئِكَ وَرَسُلِكَ صَلٰوةً تُبَلِّغُنَا فِى الدَّارَيْنِ

عَمِيْمَ فَضْلِكَ وَكَرَامَةَ رِضْوَانِكَ وَوَصْلِكَ

61 दुरूदे एअतसाम

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम् व बारीक् अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्-व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन अफ्दलि ममदूहीम् बिकवलि-क व अशरफि दाइंल् लील् इअतिसामि बिहबली-क व खातिमि अम्बीयाइ-क व रसूलि-क सलातन तुबल्लिगुना फीद्दारयनि अमी-म फद्लि-क व कराम-त रीद्वानि-क व वस्लि-क।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद और सलाम भेज और बरकतें नाजिल फरमा हमारे

सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की औलाद पर जो उन सबसे अफजल है जिनकी तारीफ तुने अपने कलाम से की है और उन सबसे अफजल हैं जिन्होंने तेरी रस्सी को मजबूत पकड़ने की दावत दी है और तेरे अम्बीया व रसूल के खातिम हैं, ऐसा दुरूद कि पहुँचा दे हमें दोनों जहाँनो में तेरे इल्म फजल तक और तेरी खुशनूदी की इज़्ज़त तक और तेरे विसाल तक।

62 दुरूदे फवाइदे कसीरा

ये दुरूद पाँच सआदतों का हामिल है। १. जो शख्स ये दुरूद शरीफ कसरत से पढ़े अल्लाह उसे दुनिया व आखिरत के हर काम में कामयाबी अता फरमाता है। २. जो शख्स इसे सोते वक्त रोजाना ग्यारह बार पढ़े वो इत्तबा-ए-सुन्नत और इताअते रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम करने लगेगा। ३. रोजाना कम से कम एक बार पढ़ने पर रोजे कयामत हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के करीबी लोगों में होने का सर्फ हासिल होगा और हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की शफाअत नसीब होगी। ४. इस दुरूद शरीफ को पढ़नेवाला जन्नत में जायेगा और हौजे कौशर में से पानी पीना नसीब होगा। ५. इस दुरूद शरीफ का सबसे बड़ा फायदा ये है कि जो शख्स हर पीर (सोमवार) के रोज सौ (१००) बार पढ़कर अपने मरहूमीन (फौतशुदा) हजरात को बख्शेगा, अल्लाह इस दुरूद शरीफ की बरकत से उनकी मग़फिरत फरमायेगा।

٦٢ دُرُودِ فوائد کثیرہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ

وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ عَدَدَاَنْفَاسِ اُمَّتِهٖ اَللّٰهُمَّ بِبَرَكَةِ

الصَّلٰوةِ عَلَيْهِ اجْعَلْنَا بِصَلٰوةِ عَلَيْهِ مِنَ الْفَآئِزِيْنَ

وَعَلٰى حَوْضِهٖ مِنَ الْوَارِدِيْنَ الشَّارِبِيْنَ ٥ وَبِسُنَّتِهٖ

وَطَاعَتِهٖ مِنَ الْعَامِلِيْنَ ٥ وَلَاتَحُلْبَيْنَنَاوَبَيْنَهٗ يَوْمَ

الْقِيٰمَةِ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ ٥ وَاغْفِرْلَنَا وَلِوَالِدَيْنَا

وَلِجَمِيْعِ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ☆

62 दुरूदे फवाइदे कसीरा

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदींव- व अला आलिही व अज़्वाजिही व ज़ुर्रीयतिही अद-द अन्फासि उम्मतिही अल्लाहुम्म बिबरकतिस्सलाति अल्यहिज्- अल्ना बिस्सलाति अलय्हि मिनल्- फाइज़ी-न व अला हवादिही मिनल्- वारिदीनश्शारिबी-न। व बिसुन्नतिही व ताअतिही मिनल् आमिली-न। वला तहुल् बय्ननना व बय्नहू यव्मल्- कियामति या रब्बल्-आलमी-न। वग़्फीर्लना वलिवालिदय्ना वलिजमीईल्- मुस्लिमी-न वल्- हम्दुलील्लाहि रब्बील्- आलमी-न।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार व मौला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और आपकी औलाद पर और आपकी अज़्वाज (पाक बीवीयों) पर और उनकी नस्ल पर आपकी उम्मत की सांसों की तादाद के बराबर, ऐ अल्लाह आप पर दुरूद की बरकत से

हमको आप पर दरूद भेजने में हमें कामयाब लोगों में से फरमा और आपके हौज पर आनेवालों और पीनेवालों में फरमा, और आपकी सुन्नत पर और इताअत (फरमाबरदारी) पर अमल करनेवालों से फरमा और हमारे दरम्यान और हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के दरम्यान कयामत के दिन किसी चीज़ को हाइल (रुकावट) ना फरमा या रब्बल आलमीन। और बख्श दे हमें और हमारे वालिदैन को और तमाम मुसलमानों को सब तारिफें अल्लाह ही के लिए है जो रब है सारे जहानों का।

63 दुरूदे नुसरत

ये दुरूद शरीफ ताइदे गैबी का आइनादार है। लिहाज़ा जो इसे कसरत से पढ़ने का मा'मूल बना ले उसके हर काम में अल्लाह की गैबी इम्दाद शामिल होगी और उसका हर काम आसानी के साथ अंजाम पायेगा इसलिए कारोबारी हजरात के लिए इसका विर्द बहुत मुफीद है, लिहाजा उन्हें चाहिये कि अपने कारोबार के मकाम पर रोजाना ग्यारह (११) बार इस दुरूद शरीफ का विर्द करें तो उनके करोबार में बेहद मुनाफा होगा और खैरो बरकत में इजाफा होगा। इस दुरूद शरीफ का पढ़ने वाला हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शफाअत का मुश्तहिक होगा और जन्नत मिलेगी और जन्नत में सबसे आ'ला मकाम पर आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम तशरीफ फरमा होंगे और वहाँ हौजे कौशर होगा, दुरूद पढ़नेवाला हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के पास पहुँचेगा और हौजे कौशर के पानी से सैराब होगा जो बहुत बड़ा ऐजाज होगा।

٦٣ درُودنصرت

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مَنْ خَتَمْتَ بِهِ الرِّسَالَةَ وَاَيَّدْتَهٗ

بِالنَّصْرِ وَالْكَوْثَرِ وَالشَّفَاعَةِ ☆

63 दरूदे नुसरत

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मन् खतम्-त बिहीरिंसाल-त व अय्यदत्हू बीन्नस्रि वल् कवसरि वश्शफाअति।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दरूद भेज उस जात पर जिसके साथ तुने रिसालत को खत्म किया और ताईद फरमाई उसकी अपनी मदद से और कौशर और शफाअत से।

64 दुरूदे सादिकीन

ये दुरूद शरीफ अनवार और असरार और मारिफत की कुन्जी (चाबी) है। जो शख्स इस दुरूद शरीफ को पढ़ेगा उसपर असरारे रब्बानी की राहें खुल जायेगी। ये दुरूद एक किस्म का इस्मे आजम है। इसे पढ़नेवाले को अल्लाह मकामे सदाकत से नवाजता है, यानी जो बात उसके मुँह से निकलती है उसे पूरा कर देता है। शबे-कद्र को अगर कोई इस दुरूद शरीफ को सारी रात पढ़कर अल्लाह तआला से उपने गुनाहों की माफी तलब करे तो अल्लाह तआल उसे माफ कर देगा , क्योंकि ये दुरूद एक लिहाज से गुनाहों का कफ्फारा भी है। जो शख्स इस दुरूद शरीफ को एक बार सुबह और एक बार शाम पढ़ने का मामूल बना ले, अल्लाह तआला उसके दुनिया व आखिरत के तमाम कामों का जिम्मा खुद ले लेता है। इससे बढ़कर भला सआदत और क्या होगी?

۶۴ درُود اصّادقین

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ نَّبِيِّ الْحُكْمِ
وَالْحِكْمَةِ السِّرَاجِ الْوَهَّاجِ الْمَخْصُوْصِ بِالْخُلُقِ
الْعَظِيْمِ وَخَتْمِ الرُّسُلِ ذِى الْمِعْرَاجِ وَعَلٰى اٰلِهٖ
وَاَصْحَابِهٖ وَ اَتْبَاعِهِ السَّالِكِيْنَ عَلٰى مَنْهَجِهِ الْقَوِيْمِ
فَاَعْظِمِ اَللّٰهُمَّ بِهٖ مِنْهَا جَ نُجُوْمِ الْاِسْلَامِ وَمَصَابِيْحِ
الظَّلَامِ الْمُهْتَدٰى بِهِمْ فِىْ ظُلْمَةِ الشَّكِّ الدَّآجِّ
صَلٰوةً دَآئِمَةً مُّسْتَمِرَّةً مَاتَلَاطَمَتْ فِى
الْاَبْحُرِ الْاَمْوَاجُ وَطَافَ بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ مِنْ كُلِّ
فَجٍّ عَمِيْقٍ نِ الْحُجَّاجِ وَاَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْمِ
عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَصَفْوَتِهٖ مِنَ
الْعِبَادِ وَشَفِيْعِ الْخَلَآئِقِ فِى الْمِعَادِ صَاحِبِ الْمَقَامِ
الْمَحْمُوْدِ وَالْحَوْضِ الْمَوْرُوْدِ النَّاهِضِ بِاَعْبَآءِ

الرِّسَالَةِ وَالتَّبْلِيْغِ الْاَعَمِّ وَالْمَخْصُوْصِ بِشَرَفِ

السِّعَايَةِ فِى الصَّلَاحِ الْاَعْظَمِ ☆

64 दुरूदे सादिकीन

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदीन-नबीय्यील्- हुक्मे वल् हीकमतिस्सिराजील्- वह्हाजील्- मखसूसि बील्खुलुकिल्- अजीमि व खत्मीर्रुसुलि ज़ील्- मिअराजि व अला आलिही व अस्हाबिही व अत्बाइहीस्सालिकी-न अला मन्हजिहील् कवीमि। फअ'जमि अल्लाहुम्म बिही मीन्हा जनुजूमील्- इस्लामि व मसाबीहीज्जाल्-मील्- मुहतदा बिहीम् फी जुल्मतिश्शाक्कीद्दाज्जि सलातन् दाईमतंम्मुस्तमीर्रतन् मातलातमत् फील् अब्हुरील्- अम्वाजु व ता-फ बील्बय्तिल्- अतीकि मीन् कुल्लि फज्जीन अमीकिनील्- हुज्जाजि व अफदलुस्सलाति वत्तस्लीमि अला सय्यिदीना मुहम्मदीन रसूललिहील्- करीमि व सफ्वतिही मिनल्- इबादि व शफीइल् खलाइकि फील्- मीआदि साहिबील् मकामील् महमूदि वल्हवदील् मव्रूदिन्नाहिदि बिअ'बाइर्रिसालति वत्तबलीगील्- अअम्मि वल्- मख्सूसि बिसरफीस्सिआयति फीस्सलाहील्- अअजमि।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद भेज हमारे सरदार व मौला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहे व सल्लम पर हुक्म और हिकमत के नबी हैं, जो रौशन चिराग हैं और मख्सुस (खास) किये गये हैं खुल्के अजीम के साथ, नबीयों के खातिम हैं, मे'राज वाले हैं और आपकी आल पर और असहाब पर जो आपके नक्शे कदम पर चलनेवाले (पैरोकार, बताइ हुई राह पर चलना) हैं आपके सीधे रास्ते पर चलने वाले हैं। तो मुअज्जम करदे ऐ अल्लाह आपकी बरकत से रास्ता इस्लाम के सितारों का और अन्धेरों के चिरागों का जिन से हिदायत हासिल की जाती है शक की अन्धेरी रात की तारीकी में ऐसा दुरूद जो हमेंशा पै दर पै रहनेवाला हो जब तक तलातुम (समन्दरी तुफान) है, समन्दरों में लहरें है और तवाफ करते रहें का'बा शरीफ का तमाम दुर दराज़ घाटी से आनेवाले हाजी और

अफजल तरीन दुरूद व सलाम हो हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो रसूले करीम हैं और तेरे बन्दों में से चूने हुए हैं और जो सारी मखलूक के शफी हैं कयामत के दिन और साहिबे मकामे महमूद हैं और उस हौज के मालिक हैं जिस पर सब लोग आयेंगे, जो उठानेवाले हैं रिसालत और तबलीगे आम के बार हाए गिराँ (तकलीफ देह बोझ) को और मखसूस हैं उस कोशीस के सरफ से जिसमें लोगों की बड़ी भलाई है।

65 दुरूदे हुसूले इज़्ज़त

ये दुरूद शरीफ हुसूले इज्जत व अजमत के लिए बहुत अकसीर है। जो शख्स इस दुरूदे पाक को रोजाना फज्र व इशा की नमाज़ के बाद पढ़े अल्लाह उसकी इज़्ज़त में इजाफा फरमा देता है, हर शख्स उसे एहतराम की नजर से देखता है। दिल की पाकीज़गी के लिए तिलावते कुरान शरीफ के शुरू और आखिर में पढ़ना बहुत मुफीद है। अगर किसी के खिलाफ मुकद्दमा हो तो हर तारिख पर जाते हुए इस दुरूद शरीफ को पढ़े और जब जज के सामने हाजिर हो तब भी दिल में इसे पढ़ता रहे इन्शाअल्लाह मुकद्दमे में कामयाबी होगी। दौराने मुलाजमत अगर कोई शख्स तंग करता हो तो अपनी आफिस में पहुँच कर अपनी जगह पर बैठकर काम शुरू करने से पहले इस दुरूद शरीफ को इक्कीस (२१) बार पढ़ें और ये अमल इक्तालिस (४१) दिन तक जारी रखें, इन्शाअल्लाह तंग करनेवाला मेहरबान हो जायेगा।

٦٥ درُود حصول عزّت

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ

عَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ الرَّفِیْعِ مَقَامُهُ الْوَاجِبِ

تَعْظِیْمُهُ وَاِحْتِرَامُهُ صَلٰوةً لَّاتَفْتَطِعُ اَبَدًاوَّ لَاتَفْنٰی

سَرْمَدًاوَّ لَاتَنْحَصِرُ عَدَدًا ☆

65 दुरूदे हुसूले इज़्ज़त

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीनिर्रफीइ मकामुहुल्- वाजिबि ता'जीमुहू व इह्तिरामुहू सलातंल्ला- तफकतिउ अबदंव्- व लातफदा सर्मदंव्- व लातन्हसिरु अददन्।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद व सलाम और बरकतें नाजिल फरमा हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर जिनका मुकाम बहुत बुलन्द है, जिनकी ताजीम और एहतराम फर्ज है, ऐसा दुरूद जो मुनकता (कटना) ना हो और कभी फना ना हो और जिसकी गिनती भी ना की जा सके।

66 दुरूदे अल्-जाहिदीन

ये दुरूद पाक जाहिद मुत्तकी परहेज़गार हज़रात का मुस्तमिल दरूद शरीफ है, क्योंकि इसका पढ़नेवाला तकवा की राह पर गामजन रहता है और ज्यों ज्यों दुरूद शरीफ की कसरत करता है खादिमें सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम बन जाता है और हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की खास तवज्जो हो जाती है, और जिसपर हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की खास तवज्जो हो जाये उसकी दुनिया व आखिरत संवर जाती है। इस दुरूद शरीफ को कसरत

से पढ़नेवाला जुहद और तकवा में बेमिशाल हो जायेगा।

٦٦ دُرُودُالزَّاهِدِیْن

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ

عَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ اَکْرَمِ الْکُرَمَآءِ مِنْ عِبَادِکَ

وَاَشْرَفِ الْمُنَادِیْنَ لِطُرُقِ رَشَادِکَ وَسِرَاجِ

اَقْطَارِکَ وَبِلَادِکَ صَلٰوةً لَّاتَفْنٰی وَلَا تَبِیْدُ تُبَلِّغُنَا

بِهَا کَرَامَةَ الْمَزِیْدِ ☆

66 दुरूदे अल्-जाहिदीन

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदीन व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन अक्रमील्- कुरमाइ मीन् इबादि-क व अश्रफील्- मुनादीन लितुरुकि रशादि-क व सिराजि अक्तारि-क सलातंल्ला- तफ्ना वला तबीदुन् तुबल्लिगुना बिहा करामतल्- मजीदि।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद व सलाम और बरकतें नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर जो तेरे बन्दों में बुजुर्गतरीन

लोगों से बुजूर्गतर हैं और पुकारनेवालों में से अशरफ हैं जो तेरी हिदायत के रास्तों की तरफ बुलाते हैं और तेरे मुल्कों और शहरों का आफताब हैं, ऐसा दुरूद जो ना फना हो और ना खतम हो, पहुँचा तु हमें उसकी बरकतों से मजीद (ज्यादा) इज़्ज़त तक।

67 दुरूद अल्तालिबीन

ये दुरूद शरीफ तालिबीने हक का तौशा (सफर का सामान) है। इस दरूद शरीफ को कसरत से पढ़नेवाले को अल्लाह तआला तीन अनमोल तोहफों से नवाजता है। पहला तोहफा - अल्लाह उसे अपनी खुसूसी रहमत से मालामाल कर देता है। दूसरा तोहफा - अल्लाह उसपर अपना रुहानी फज़ल व करम फरमाता है और दुरूद शरीफ पढ़नेवाला हुसूले रुहानीयत की राह पर गामजन हो जाता है। तीसरा तोहफा - अल्लाह उसे अपनी शफकत से नवाजता है और वो आलमे रुहानीयत में तरक्की पाता जाता है। इसके अलावा सत्तर (७०) बार रोजाना इक्तालीस (४१) दिन तक पढ़ना हाजत पूरी होने के लिए बहुत मुजर्रब है।

٦٧ درود الطالبین

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضَاءَ

نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ وَكَمَا هُوَ اَهْلُهٗ

وَكُلَّمَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَغَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ

الْغَافِلُوْنَ وَعَلٰى اٰلِ بَيْتِهٖ وَعِتْرَتِهِ الطَّاهِرِيْنَ وَسَلَّمَ

تَسْلِيْمًا ٥

67 दुरूद अल्तालिबीन

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

सल्लल्लाहु अला सय्यिदिना मुहम्मदीन अदद खल्किही व रिदाअ नफ्सिहीव ज़िन-त अर्शिही व मिदा-द कलिमातिही व कमा हुव अहलुहू व कुल्लमा ज़कर रहुज्जाकिरू-न व गफअ-ल अन् ज़िक्रिहील्- गाफिलू-न व अला अहलि बयातिही व इत्रतिहीत्ताहिरी-न व सल्लम तस्लीमन।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। दुरूद हो ऐ अल्लाह हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर बेशुमारअपनी मखलूक की मिकदार और खूशनूदी तेरी जाती और तेरे अर्श के वजन जितना और तेरे कलाम की स्याही की मिकदार और जिस तरह वो उनके शायाने शान हैं और जिक्र करनेवालों के जिक्र के जितना और गाफिल रहें तेरे जिक्र से जितना गफलत बरतने वाले और आपकी अहले बैत पर और आपकी पाक औलादों पर सलाम हो मुकम्मिल ।

68 दुरूदे मदनी

ये दुरूद शरीफ इफलास (मोहताजी) और गुरबत (गरीबी) दूर करने के लिए बहुत असरदार है, तो वो शख्स जो खुद और उसका परिवार फाकाकशी का शिकार हों उसे चाहिए की इस दुरूद पाक को बाद नमाज़े फज्र रोजाना सौ (१००) बार पढ़े इन्शाअल्लाह बहुत जल्द तंगदस्ती से निजात पाकर गनी और दौलतमंद हो जायेगा। जो शख्स इस दुरूद शरीफ को जुम्आ की रात (जुमेरात और जुम्आ की दरम्यानी रात) को तहज्जुद के वक्त तीन सौ तेरह (३१३) बार पढ़े और ये अमल

सात जुमेरात तक जारी रखे तो उसकी हर हाजत पूरी होगी। अगर कोई परेशान हाल व गमजदा शख्स बाद नमाज़े जुम्आ सौ बार पढ़े तो उसकी परेशानी दूर हो जायेगी।

۶۸ درود مدنی

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمۡ وَبَارِکۡ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ

النَّبِیِّ الۡاُمِّیِّ وَ اَزۡوَاجِہٖ اُمَّھَاتِ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ وَ ذُرِّیَّتِہٖ

وَاَھۡلِ بَیۡتِہٖ صَلٰوۃً وَّ سَلَامًا لَّایُحۡصٰی عَدَدُ ھُمَا وَ

لَایَقۡطَعُ مَدَدُھُمَاo

68 दुरूदे मदनी

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लीम् व बारिक् अला सय्यिदिना मुहम्मदीन-नीन्नबीय्यील्- उम्मीय्यी व अज़वाजिही उम्महातील्-मु'मिनी-न व ज़ुर्रीयातिही व अहलि बयतिही सलातंव्- व सलामंल्ला युहसा अददु हुमा वला यक्तऊ मददुहुमा।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद व सलाम व बरकतें नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर नबीए उम्मी हैं और आपकी अज़वाज (बीवीयाँ) पर जो मुसलमानों की माँए हैं और उनकी औलाद पर और उनके अहले बैत पर ऐसा दुरूद व सलाम कि ना शुमार किया जा सके उनका अदद और ना खत्म हो उनकी अधीकता।

69 दुरूदे मुकर्रम

ये दुरूद शरीफ बेहतरीन फायदों का हामिल है। जो शख्स रुहानियत हासिल करने की नियत से बाद नमाज़े इशा ग्यारह बार पढ़ने का मामूल बनाये उसे मुर्शिदे कामिल मिल जायेगा जो उसे रुहानीयत की मन्जिलों पर गामजन कर देगा।

۶۹ درود مکرّم

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِہٖ بَحۡرِ

اَنۡوَارِکَ وَمَعۡدِنِ اَسۡرَارِکَ لِسَانِ حُجَّتِکَ

وَعُرُوۡسِ مَمۡلَکَتِکَ وَ اِمَامِ حَضۡرَتِکَ وَخَاتِمِ

اَنۡبِیَآئِکَ صَلٰوۃً تَدُوۡمُ بِدَوَامِکَ وَتَبۡقٰی بِبَقَآئِکَ

صَلٰوۃً تُرۡضِیۡکَ وَتُرۡضِیۡہِ وَتَرۡضٰی بِھَا عَنَّا یَآاَرۡحَمَ

الرَّاحِمِیۡنَ o اَللّٰھُمَّ رَبَّ الۡحِلِّ وَالۡحَرَامِ وَرَبَّ

الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الْبَيْتِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الرُّكْنِ

وَالْمَقَامِ اَبْلِغْ لِسَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ مِّنَّا السَّلَامُ ☆

69 दुरूदे मुकर्रम

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आलिही बहरि अन्वारि-क व मअदिनि असरारि-क वलिसानि हुज्जति-क व रूसि मम्लुकति-क व इमामि हदरति-क व खातिमि अम्बीयाइ-क सलातन तदूमु बिदवामि-क व तबका बीबकाइ-क सलातन तुरदी-क व तूरदीहि व तदा बिहा अन्नाया अर्हमर्राहिमीन।अल्लाहुम्म रब्बल् हिल्लि वल्हरामि व रब्बल्-मश्अरील्- हरामि व रब्बल् बयतील्- हरामि व रब्बर्रुक्नि वल्मकामि अब्लीग् लिसय्यदिना व मौलाना मुहम्मदीम्मिन्नास्सलामु।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और आपकी आल पर जो तेरे अनवार का समन्दर हैं और तेरे असरार की कान (खदान) जो तेरी तौहीद की दलील की जुबान हैं और तेरी ममलिकत के दुल्हा है और तेरी बारगाहे इज्जत के इमाम हैं और तेरे अम्बीया के खातिम हैं दुरूद जो हमेंशा रहे तेरे दवाम तक और बाकी रहे तेरी बका तक ऐसा दुरूद जो राजी करदे तुझको और राजी करदे हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को और राजी हो जाये तु उसकी बरकत से हमसे ऐ सबसे ज्यादा रहम फरमाने वालों से ज्यादा रहम फरमानेवाले रहीम । ऐ अल्लाह ऐ रब्बे हील (हलाल के) और हराम के और मालिक खबर देनेवाले हराम के और मालिक बैतुल हराम के और मालिक रुक्न और मकाम के, पहुँचा हमारे सरदार और मौला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को हमारी जानिब से सलाम।

70 दुरूदे बशारत

इस दुरूद शरीफ की सबसे बड़ी खूसुसियत ये है कि अगर किसी शख्स की कोई चीज़ गुम हो गई हो तो उसे चाहिए कि रात को सोते वक्त इस दुरूद शरीफ को ग्यारह रोज तक ग्यारह सौ बार पढ़े उसे इन्शाअल्लाह ख्वाब में गुमशुदा चीज के बारे में इशारा हो जायेगा। ऐसे ही अगर कोई शख्स किसी वीराने में या गैर मुल्क में बेयारो मददगार हो तो उसे चाहिए कि इस दुरूद शरीफ को बाद नमाज़े फज्र ग्यारह सौ बार पढ़े, इन्शाअल्लाह गैब से उसकी मुश्किल हल हो जायेगी। इस दुरूद शरीफ को सवा लाखबार किसी फौतसुदा शखअस की रूह को बख्शा जाये तो उसकी कब्र रौशन हो जायेगी। इस दुरूद को कसरत से पढ़ना खूशखबरी की दलील है।

۷۰ درودِ بشارت

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا

كَانَا وَمَا يَكُوْنُ وَعَدَدَمَا اَظْلَمَ عَلَيْهِ الَّيْلُ وَاَضَآءَ

عَلَيْهِ النَّهَارُ ○

70 दुरूदे बशारत

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदीन अद-द मा कान वमायकूनु व अद-द मा अजल-म अलय्हिल्लय्लु व अदाअ अलय्हिन्नहारु।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद भेज हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर बेशुमार उसके कि जो हो चुका जो हो रहा है और जो होगा और बेशुमार उन चीजों के कि तारिक हुई उन पर रात और रौशन हुआ उन पर दिन।

71 दुरूदे नूरल्-कियामीया

अल्लाह तआला ने दुरूद शरीफ को अपने कुर्ब का जरिया बनाया है। जो शख्स इस दुरूद शरीफ को पढ़ता रहता है उसके आ'माल पाकीज़ा हो जायेंगे और दिल रोशन हो जायेगा और आखिर वस्ले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का मकाम हासिल हो जायेगा, लिहाजा इस दुरूद शरीफ को कसरत से पढ़ना चाहिए। शेख अहमद सादी रहमतुल्लाहि अलयहि ने फरमाया कि ये दुरूद शरीफ पढ़नेवाले को बकसरत नूर हासिल होता है, और इसका सवाब चौदह हजार दुरूद शरीफ के बराबर है।

۷۱ درود نور القیامیہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بَحْرِ اَنْوَارِكَ

وَمَعْدِنِ اَسْرَارِكَ وَلِسَانِ حُجَّتِكَ وَعَرُوْسِ

مَمْلَكَتِكَ وَاِمَامِ حَضْرَتِكَ وَطِرَازِ مُلْكِكَ

وَخَزَآئِنِ رَحْمَتِكَ وَطَرِيْقِ شَرِيْعَتِكَ الْمُتَلَذِّذِ

بِتَوْحِيْدِكَ اِنْسَانِ عَيْنِ الْوُجُوْدِ وَالسَّبَبِ فِىْ كُلِّ

مَوْجُوْدٍ عَيْنِ اَعْيَانِ خَلْقِكَ الْمُتَقَدِّمِ مِنْ نُوْرِ

ضِيَآئِكَ صَلٰوةً تَدُوْمُ بِدَوَامِكَ وَتَبْقٰى بِبَقَآئِكَ

مُنْتَهٰى لَهَا دُوْنَ عِلْمِكَ صَلٰوةً تُرْضِيْكَ

وَتُرْضِيْهِ وَتَرْضٰى بِهَا عَنَّا يَارَبَّ

الْعٰلَمِيْنَ ۝

71 दुरूदे नूरल्-कियामीया

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदीन बहरि अनवारि-क व मअदिनि असरारि-क व लिसानि हुज्जति-क व अरूसि ममलुकति-क व इमामि हद्रति-क व तिराजि मुल्कि-क व खजाइनि रह्मति-क व तरीकि शरीअतिकल्- मुतलज्जीज़ बितव्हीदि-क इन्सानि अय्निल्- वुजूदि वस्सबबि फी कुल्लि मव्जूदीन अयानि अअयानि खल्किकल्- मुतकद्दिमि मीन् नूरिजियाइ-क सलातन तदूमु बिदवामि-क व तब्का बिबकाइ-क लामुन्तहा लहादू-न इल्मि-क सलातन तुरदी-क व तूरदीहि व तदा बिहा अन्ना या रब्बल्-आलमी-न।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर समन्दर हैं तेरे अनवार के जो कान (खदान) हैं तेरे असरार की और जो जबान हैं तेरी रौशन दलील की और जो दुल्हा हैं तेरी ममलिकत के (मुल्क) और जो इमाम हैं तेरी बारगाह के और जो जीनत हैं तेरे मुल्क के और खजाने हैं तेरी रहमत के और जो रास्ता (तर्ज, ढ़ंग) हैं तेरी शरीअत के और जो लज़्ज़त पानेवाले हैं तेरी तौहीद से जो आँखों की पुतली हैं इन्सानी वुजूद की और जो सबब हैं तमाम मौजूद के और जो आँख हैं हकीकत मे तेरी मखलूक के बरगुजीदा बन्दों के और जाहिर होने वालों में मुकद्दम हैं तेरी जात की तजल्ली के नूर ऐसा दुरूद हो जो हमेंशा रहे तेरे दवाम के साथ और इन्तहा ना हो उसकी सिवा तेरे इल्म के ऐसा दुरूद जो खुश करदे तुझे और खुश करदे आपको और खुश हो जाये इसके सबब हम से ऐ रब्ब तमाम जहानों के।

72 दुरूदे मकीन

इस दुरूद शरीफ को रोजाना घर में एक बार पढ़ने से घर में खुशहाली और शुकून रहता है। अगर कोई रिश्तेदार, बीवी या औलाद किसी मश'ले में तंग करते हों तो इस दुरूद शरीफ को पढ़कर पानी में दम करके उनको पिला दें हर तरफ से माहौल मुवाफिक हो जायेगा। हजरत ख्वाजा हसन बसरी रदीअल्लाहु तआला अनहु का इरशाद है कि जो शख्स चाहता हो कि उसे हौजे कौशर से भर भर कर जाम पिलाये जायें तो उसे दुरूद शरीफ पढ़ना चाहिये।

۷۲ درودِ مکین

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِهٖ

وَاَصْحَابِهٖ وَاَوْلَادِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ

وَاَصْحَارِهٖ وَاَنْصَارِهٖ وَاَشْيَاعِهٖ مُحِبِّيْهِ وَاُمَّتِهٖ وَ عَلَيْنَا

مَعَهُمْ اَجْمَعِيْنَ يَآاَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ☆

72 दुरूदे मकीन

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आलिही व असहाबिही व अवलादिही व अज़्वाजिही व ज़ुर्रिय्यतिही व अहलि बय्तिही व असहारिही व अन्सारिही व अश्याईही व मुहिब्बीही व उम्मतिही व अलय्ना मअहुम् अजमईन या अर्हमर्राहिमीन।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और आपकी आल पर और सहाबा पर औलाद पर बीवीयों पर आपकी जुर्रीय्यात पर और अहले बैत पर असहार (वो रिश्तेदार जिनसे शरीअतन शादी नाजायज़ है) और अन्सार (मददगार) पर और आपके फरमांबरदारों पर और मुहब्बत करनेवालों पर आपकी सारी उम्मत पर और हम पर भी उन तमाम के साथ ऐ रहम फरमाने वालों से ज्यादा रहम फरमाने वाले।

73 दुरूदे हिफाजत

जो शख्स इबादत और यादे इलाही में मशगूल होता है तो उसपर फितने और आज़माइशें बकसरत वारिद होती है लेकिन इस दुरूद शरीफ का विर्द करने वाले पर फितना व आजमाईश नही आती

और हिफाजते इलाही शामिले हाल हो जाती है इसलिए जब भी जिक्र करने बैठें तो एक बार इस दुरूद शरीफ का जिक्र करलें तो बेहतर है।

۷۳ درودِ حفاظت

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا

مُحَمَّدٍ عَدَدَمَا اَحَاطَ بِهٖ عِلْمُكَ وَجَرٰى بِهٖ

قَلَمُكَ وَسَبَقَتْ بِهٖ مَشِيْئَتُكَ وَصَلَّتْ عَلَيْهِ

مَلٰٓئِكَتُكَ صَلٰوةً دَآئِمَةً بِدَوَامِكَ بَاقِيَةً

بِفَضْلِكَ وَاِحْسَانِكَ اِلٰى اَبَدِالْاَبَدِ اَبَدًا لَّا نِهَايَةَ

لِاَبَدِيَّتِهٖ وَلَا فَنَآءَ لِدَيْمُوْمِيَّتِهٖ ☆

73 दुरूदे हिफाजत

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन अददमा अहातबिही इल्मु-क व जराबिही कल्म-ुक व सबकत् बिही मशीअत-ुक व सल्लत् अलय्हि मलाइ-कत-ुक सलातन दईमतंम् बिदवामि-क बाकियतन् बिफद्लि-क व इह्सानि-क इला अबदील्अबदि अबदंल्ला निहाय-त इला बदीय्यतिही व लाफनाअलिदय्मूमीय्यतिही।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर उस तादाद के जिसको तेरे इल्म ने अहाता (घेरा) किसा हुआ है और बेशुमार उसके कि तेरी कलम ने लिखा है और बेशुमार उसके कि पहले हो चुका है साथ उसके कि इरादा तेरा और बेशुमार उसके कि दुरूद भेजा है आंहजरत सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर तेरे फरिश्तों ने, ऐसा दुरूद जो हमेंशा रहने वाला है तेरे दवाम के साथ बाकी रहने वाला है तेरे फजल व एहसान से अबदल-आबाद (जब से कायनात है और जब तक रहेगी) तक कि जिसकी अब्दीय्यत की कोई हद नहीं और जिसके दवाम को फना नहीं।

74 दुरूदे बुलन्दी-ए-दरजात

ये दुरूद शरीफ बुलन्दी-ए-दरजात का बेहतरीन जरीया है जो शख्स ये दरूद पाक पढ़ता है अल्लाह तआला उसपर अपनी खास रहमत नाजिल करता है और उसके गुनाह मुआफ कर देता है और उसके दरजात बुलन्द कर देता है। जो शख्स इस दुरूद शरीफ को रोजाना ग्यारह (११) बार पढ़ने का मा'मूल बना ले तो अल्लाह तआला उसके हर काम में आसानी पैदा करता जाता है और अवाम में उसे इज़्ज़त से नवाज़ता है।

۷۴ درودِ بلندی درجات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ

عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ اَكْرَمِ خَلْقِكَ وَسِرَاجِ

اُفُقِکَ وَاَفْضَلِ قَآئِمٍ بِحَقِّکَ الْمَبْعُوْثِ

بِتَیْسِیْرِ کَوْرِفُقِکَ صَلٰوۃً یَّتَوَالٰی تَکْرَارُھَا

وَتَلُوْحُ عَلٰی الْاَ کْوَانِ اَنْوَارُھَا ☆

74 दुरूदे बुलन्दी-ए-दरजात

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन अक्रमि खल्कि क व सिराजि उफुकि-क व अफ्दलि काईमीन बिहक्किकल्- मबऊसि बितय्सीरि-क व रिफ्कि-क सलातंय्यतवाला तक्रारुहा व तलूहु अलल् अक्वानि अन्वारुहा।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद व सलाम व बरकत नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर जो तेरी सब मखलूक से मुअज़्ज़िज हैं और तेरे उफक के आफताब (सूरज) हैं और तेरे हक को कायम करने वालों से अफजल हैं और भेजे गये आसानी और नरमी के साथ ऐसा दुरूद जो पै दर पै दोहराया जाता रहे और चमकें सब मखलूक को उसका अन्वार।

75 दुरूदे मुनीर

हजरत इमाम फखरुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलयहि का इरशादे गिरामी है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दुरूद शरीफ पढ़ने का हुक्म इसलिए दिया गया है कि इन्सान की रूह जो कि जबली (पहाड़) तौर पर जईफ (कमजोर) अल्लाह तआला के

अनवार की तजल्लीयात कबूल करने की इस्तअदाद (काबिलीयत) हासिल करे, जिस तरह सूरज की किरणें मकान के रोशनदान से अन्दर झाँकती है तो उससे मकान के दरो दिवार रोशन नहीं होते लेकिन अगर उसी मकान के अन्दर पानी का तस्त या आइना रख दिया जाये और आफताब की किरणें उसपर पड़े तो उसके अक्स से मकान की छत और दरो दिवार चमक उठेंगे युँ ही उम्मत की रूहें अपनी फितरी कमजोरी की वजह से जुलमत कदा में पड़ी हुई हैं और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के रूहे अनवारात से रोशनी हासिल करके अपने बातिन को चमका लेती है और ये इस्तफादा (फायदा) सिर्फ दुरूद शरीफ से होता है इसलिए जो शख्स अपने बातिन को रोशन करने का ख्वाहिशमन्द हो तो उसे चाहिए कि इस दुरूद शरीफ का विर्द करे क्योकि इसका विर्द इन्सान के बातिन को रोशन कर देता है।

۷۵ دُرُودِ منیر

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی

سَیِّدِنَا اِبْرَاھِیْمَ وَبَارِکْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی

اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا

اِبْرَاھِیْمَ فِی الْعٰلَمِیْنَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ عَدَدَ

خَلْقِکَ وَرِضَا نَفْسِکَ وَزِنَۃَ عَرْشِکَ وَمِدَادَ

كَلِمَاتِكَ وَعَدَدَمَا ذَكَرَكَ بِهٖ خَلْقُكَ فِيْمَا

مَضٰى وَعَدَدَمَا هُمْ ذَاكِرُوْنَكَ بِهٖ فِيْمَا بَقِىَ فِىْ

كُلِّ سَنَةٍ وَّ شَهْرٍ وَّ جُمُعَةٍ وَّ يَوْمٍ وَّ لَيْلَةٍ وَّ سَاعَةٍ مِّنَ

السَّاعَاتِ وَ شَمٍّ وَّ نَفَسٍ وَّ طَرْفَةٍ وَّ لَمْحَةٍ مِنَ الْاَبَدِ

اِلَى الْاَبَدِ وَاٰبَادِ الدُّنْيَا وَاٰبَادِالْاٰخِرَةِ وَ اَكْثَرَ مِنْ

ذٰلِكَ لَايَنْقَطِعُ اَوَّلُهٗ وَلَا يَنْفَدُ اٰخِرُهٗ ☆

75 दुरूदे मुनीर

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदीन कमा सल्लय-त अला सय्यिदिना ईब्राही-म व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आलिसय्यिदिना मुहम्मदीन कमा बारक्-त अला आलि सय्यिदिना ईब्राही-म फील्- आलमी-न इन्न-क हमीदुम्- मजीदुन अद-द खल्कि-क व रिदा नफ्सि-क व जिन-त अर्शि-क व मिदा-द कलिमाति-क व अददमा जकरक बिही खल्कु-क फीमा मदा व अददमा हुम जाकिरुन-क बिही फीमा बकिय फी कुल्लि सनतींव्- व शहरींव्- व जुमुअतींव्- व यव्मींव्- व लयलातींव्- व साअतीम्मनस्साआति व शम्मींव्- व नफसींव्- व तर्फतींव्- व लम्हतीन् मिनल्अबदिइलल् अबदि व आबादिद्दुन्या व आबादिल् आखिरति व अक्सर मीन् जालि-क लायन्क तिऊ अव्वलुहू वला यन्फदु आखिरुहू।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलयहि व सल्लम पर जिस तरह दुरूद भेजा है तुने हमारे सरदार इब्राहीम अला नबीय्यना अलयहीस्सलाम पर और बरकतें नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर जिस तरह बरकतें नाजिल फरमाई है तुने हमारे सरदार इब्राहीम अला नबीय्यना अलयहीस्सलाम की औलाद पर सारे जहानों में बेशक तुंही खुबीयों से सराहा गया बुजूर्ग है बेशुमार अपनी मखलुकात के और अपनी जात की रजा के और अपने अर्श के वजन के और अपने कलिमात की स्याही के और बेशुमार उनके जिन्होंने तेरा जिक्र किया तेरी मखलूक से गुजिस्ता जमाना में और बेशुमार उनके जो तेरा जिक्र करनेवाले हैं आईंदा हर साल में और हर महीना में हर जुम्आ हर दिन और रात हर घड़ी में सब घड़ीयों से और हर सुंघने में और सांस लेने में आँख झपकने में हर लम्हा में इब्तदाए जमाना से आखिर तक और दुनिया के सारे जमानों और आखिरत के सारे जमानों बल्कि उससे भी ज्यादा जो मुन्कता (रोक टोक) ना हो उसकी इब्तदा और ना खत्म हो उसकी इन्तहा।

76 दुरूदे मुकाशिफा

ये दुरूद साहिबे कश्फ बनने के लिए बहुत असरदार है, क्योंकि इसे पढ़ने से कश्फ होना शुरु हो जाता है। इसके पढ़ने का तरीका ये है कि पहले मुर्शीद (पीर) से तलब करें इजाजत मिलने पर इस दुरूद शरीफ की चालीस दिन तक दावत पढ़ें किसी खिलवत (एकांत) के मुकाम पर बैठकर ये दुरूद शरीफ तीन हजार एक सौ पच्चीस (३१२५) बार रोजाना पढ़े दिन में रोज़ा रखें, ज्युँ ज्युँ दिन गुजरते जायेंगे त्यों त्यों तसव्वुर पुख्ता होता चला जायेगा आखिरकार पैगम्बरों की जियारत होगी बल्कि जिस रूह की भी जियारत को दिल चाहेगा वही जियारत हो जायेगी। अगर कोई शख्स हज के दिनों में मकामें इब्राहीम पर इस दरूद शरीफ को रोजाना सौ (१००) बार ग्यारह दिन तक पढ़े तो उसकी हजरत इब्राहीम अला नबीय्यना अलयहीस्सलाम से मुलाकात होगी।

۷۶ درود مکاشفہ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمۡ وَبَارِکۡ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ

نَبِیِّکَ وَرَسُوۡلِکَ وَ سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ خَلِیۡلِکَ

وَصَفِیِّکَ وَسَیِّدِنَا مُوۡسٰی کَلِیۡمِکَ وَ نَجِیِّکَ وَ

سَیِّدِنَا عِیۡسٰی رُوۡحِکَ وَ کَلِیۡمَتِکَ وَعَلٰی جَمِیۡعِ

مَلٰٓئِکَتِکَ وَرُسُلِکَ وَ اَنۡبِیَآئِکَ حِیَرَتِکَ مِنۡ

خَلۡقِکَ وَاَصۡفِیَآئِکَ وَ خَآصَّتِکَ وَ اَوۡلِیَآئِکَ

مِنۡ اَھۡلِ اَرۡضِکَ وَ سَمَآئِکَ ☆

76 दरूदे मुकाशिफा

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक् अला सय्यिदिना मुहम्मदीन् नबीयिक व रसूलि-क व सय्यिदिना इब्राही-म खलीलि-क व सफीयि-क व सय्यिदिना मूसा कलीमि-क व नजीयि-क व सय्यिदिना ईसा रूहि-क व कलिमति-क व अला जमीइ मलाइकति-क व रुसुलि-क व अम्बियाइ-क व हियरति-क मीन् खल्कि-क व अस्फियाइ-क व खास्साति-क व अवलियाइ-क मीन्

अहलि अर्दि-क व समाइ-क।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद व सलाम व बरकतें नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो तेरे नबी हैं तेरे रसूल है और हमारे सरदार इब्राहीम खलीलुल्लाह पर जो तेरे खलील (दोस्त) हैं और बरगुजीदा हैं और हमारे सरदार मूसा अलयहीस्सलाम पर जो तेरे कलीम हैं और तेरे हमराज़ हैं और हमारे सरदार ईसा अलयहीस्सलाम पर जो तेरी रूह और तेरा कलमा हैं और अपने जुमला (सभी) फरिश्तों पर अपने रसूलों पर और अपने अम्बीया-ए-इकराम पर और अपनी खुल्क से चूने हुए लोगों पर अपने बरगुजीदा बन्दों पर और अपने खासों (मखसूस) पर और अपने दोस्तों पर जो तेरी जमीन में या तेरे आसमान पर रहते हैं।

77 दुरूदे चिस्तीया

ये दुरूद शरीफ हुब्बे (मुहब्बत) रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पैदा करने के लिए बहुत अक्सीर है, और जिसे मुहब्बते रसूल मिल जाये समझ लीजीए कि दुनिया व आखिरत में उसका बेड़ा पार है। ये दुरूद शरीफ सिलसिलाए चिस्तीया निजामीया के मा'रूफ बुजूर्ग हजरत मीयाँ अली मुहम्मद बिसी शरीफ रहमतुल्लाह अलयहे के मा'मूल के वजाइफ में से हैं।आप ये दुरूद शरीफ बहुत कसरत से पढ़ा करते थे और अपने मुरीदों को भी यही दुरूद शरीफ पढ़ने की तलकीन फरमाया करते थे।

۷۷ درود چشتیہ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمۡ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوۡلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ

سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی بِاَنْ

تُصَلِّیْ عَلَیْهِ ☆

77 दुरूदे चिस्तीया

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्ली व सल्लिम् अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदींव्-व आलि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदीन कमा तुहीब्बु व तरदा बिअन् तुसल्लीअलयहे।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह सलात व सलाम नाजिल फरमा हमारे सरदार और हमारे मौला हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर जैसे तुने उन्हें महबूब किया और राजी हुआ जैसा कि उन पर दुरुद भेजने का हुक्म है।

78 दुरूदे नेअमल बदल सदका

हदीस शरीफ में है कि अल्लाह तआला के गुस्से (जलाल) को सदके के सिवा कोई चीज ठन्डा नहीं करती, यहाँ सवाल ये पैदा होता है कि अगर किसी शख्स में सदका देने की ताकत ना हो वो कया करे इससे मुता'ल्लिक हजरत अबू सइद खुदरी रदीअल्लाहु तआला अनहु की रिवायत है कि हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर किसी मुसलमान के पास सदका देने की ताकत ना हो तो वो अपनी दुआ में ये दुरूद शरीफ पढ़ा करे तो अल्लाह तआला उसे सदके का भी अज्र अता फरमायेगा इसके मुता'ल्लिक हजरत अबू हुरैरा रदीअल्लाहु तआला अनहु से भी रिवायत है कि हजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया कि मुझ पर दरूद पढ़ा करो क्युँकि ये तुम्हारे लिए सदका है। इसलिए इस दुरूद पाक को रोजाना चन्द बार

जरूर पढ़ना चाहिए।

۷۸ درود نعمل البدل صدقہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَ رَسُوْلِکَ

وَ صَلِّ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ☆

78 दुरूदे नेअमल बदल सदका

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन् अब्दि-क व रसूलि-क व सल्लि अलल् मुअमिनी-न वल् मुअमिनाति वल् मुस्लिमी-न वल् मुस्लिमाति।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो तेरे बन्दे और रसूल हैं और दुरूद नाजिल फरमा सारे मोमीन और मोमीनात पर और मुस्लिमीन और मुस्लिमात पर।

79 दुरूदे रहमत व बरकत

ये दरूद शरीफ भी दुरूदे इब्राहीमी है मगर इसमें लफ़्ज रहमत का इजाफा है और अहादीस में इन्हीं अल्फ़ाज के साथ मज़कूर हुआ है। इस दुरूद शरीफ का पढ़ना सरापा रहमत और बरकत है, लिहाजा जो शख्स अपने दुनियावी मुआमलात और दीनी जिन्दगी खैरो बरकत का

तालिब हुआ उसे चाहिये कि वो रोजाना ये दुरूद शरीफ पाँच या सात बार पढ़ने का मामूल बना ले इन्शाअल्लाह उसपर हर लिहाज से अल्लाह तआला की रहमत होगी और हर काम में बरकत रहा करेगी।

۷۹ درُودِ رحمت وبرکت

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ

بَارِکۡ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَارۡحَمۡ

مُحَمَّدًا وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیۡتَ وَبَارَکۡتَ وَ

رَحِمۡتَ عَلٰی اِبۡرَاھِیۡمَ وَ عَلٰی اٰلِ اِبۡرَاھِیۡمَ اِنَّکَ

حَمِیۡدٌ مَّجِیۡدٌ ☆

79 दुरूदे रहमत व बरकत

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व बारि-क अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन वर्हम्म- मुहम्मदंव्- व आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन कमा सल्लय्-त व बारक्-त व रहिम्-त अला सय्यिदिना इब्राही-म व अला आलि सय्यिदिना इब्राही-म इन्न-क हमीदुंम्- मजीदुन।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है।

इलाही दुरूद नाज़िल फरमा हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर और बरकत नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर और रहमत नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर जैसा कि तुने दुरूद व बरकत और रहमत नाजिल फरमाई हमारे सरदार इब्राही अलयहिस्सलाम पर और हमारे सरदार इब्राहीम अलयहिस्सलाम की आल पर बेशक तु तारीफ किया गया बुजूर्ग है।

80 दुरूदे नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम

हजरत अबू सइद खुदरी रदीअल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हमने अर्ज किया 'या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु व अलयहि व सल्लम आप पर दुरूद व सलाम भेजना तो हमें मालूम हो चुका है अब हम दुरूद किस तरह पढ़ें' तो हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया कि युँ पढ़ो और निम्नलिखीत दुरूद पाक आपने पढ़ा। (बुखारी शरीफ)

ये दुरूद शरीफ भी एक तरह से दुरूदे इब्राहीमी है जिसे हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने पढ़ने की तलकीन फरमाई है। ये दुरूद पाक की फ़ुयुजो बरकात का मम्बा है जिस तरह दुसरे दुरूद शरीफ हैं। फुयुजो बरकात और आखिरत में अन्जाम बखैर के लिए इस दुरूद शरीफ का पढ़ना बहुत अकसीर है।

۸۰ درود نبی کریم ﷺ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبۡدِکَ وَ رَسُوۡلِکَ کَمَا

صَلَّیۡتَ عَلٰٓی اِبۡرَاھِیۡمَ وَ بَارِکۡ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓی

اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکۡتَ عَلٰی اٰلِ اِبۡرَاھِیۡمَ ☆

80 दुरूदे नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन अब्दि-क व रसूलि-क कमा सल्लय-त अला आलि इब्राही-म व बारि-क अला मुहम्मदींव्- व अला आलि मुहम्मदीन कमा बारक्-त अला आलि इब्राही-म।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहो अल.हे व सल्लम पर जो तेरे बन्दे व रसूल हैं जैसा कि तुने हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम की औलाद पर दुरूद नाजिल फरमाया और बरकत नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर जैसा तुने हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम की औलाद पर।

81 दुरूदे साहिबे लौलाक सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम

ये दुरूद शरीफ भी दुरूदे इब्राहीम है और हुजूर सल्लल्लाहु अलयहे व सल्लम ने सहाबा किराम को पढ़ने की तलकीन फरमाई है। एक बुजूर्ग का कौल है कि इस दुरूद शरीफ को कसरत से पढ़ना फाका, इफलास और गुरबत को दूर करता है, दुनिया व आखिरत में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम उसके हामी व नासिर होंगे और आपकी शफाअत से दुरूद पढ़नेवाला जन्नत में दाखिल होगा।

۸۱ درود صاحب لولاک ﷺ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اَھۡلِ بَیۡتِہٖ کَمَا صَلَّیۡتَ

عَلٰٓی اِبۡرَاھِیۡمَ اِنَّکَ حَمِیۡدٌ مَّجِیۡدٌ ط اَللّٰھُمَّ صَلِّ

عَلَیۡنَا مَعَھُمۡ اَللّٰھُمَّ بَارِکۡ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓی اَھۡلِ

بَیۡتِہٖ کَمَا بَارَکۡتَ عَلٰی اِبۡرَاھِیۡمَ اِنَّکَ حَمِیۡدٌ مَّجِیۡدٌ

اَللّٰھُمَّ بَارِکۡتَ عَلٰی اِبۡرَاھِمَ اِنَّکَ حَمِیۡدٌ مَّجِیۡدٌ

اَللّٰھُمَّ بَارِکۡ عَلَیۡنَا مَعَھُمۡ صَلَوَاتُ اللّٰہِ وَ صَلٰوتُ

الۡمُؤۡمِنِیۡنَ عَلٰی مُحَمَّدِ النَّبِیِّ الۡاُمِّیِّ ☆

81 दुरूदे साहिबे लौलाक सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींव्- व अहलि बय्तिही कमा सल्लय्-त अला इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्- मजीदुन। अल्लाहुम्म सल्लि अलय्ना मअहुम् अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदींव्- व अला अहलि बय्तिही कमा बारक्-त अला इब्राह-ीम इन्न-क हमीदुम् मजीदुन। अल्लाहुम्म बारिक अलय्ना मअहुम सलवातुल्लाहि व सलवातुल्- मुअमिनी-न अला मुहम्मदीनीन्- नबीय्यील् उम्मीय्यी।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर और आपके घरवालों (अहले बैत) पर जैसा तुने हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर दुरूद नाजिल फरमाया बेशक तु तारीफ किया गया बुजुर्ग है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा उनके साथ हम पर भी ऐ अल्लाह बरकत नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और आपके घर वालों पर जैसी तुने बरकत नाजिल फरमाई हजरत इब्राही अलयहिस्सलाम पर बेशक तु तारीफ किया गया बुजूर्ग है। ऐ अल्लाह बरकत नाजिल फरमा उनपर साथ हमपर, अल्लाह तआला के बकसरत दुरूद हो और मुमिनीन के बकसरत दुरूद हो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर जो नबीए उम्मी है।

82 दुरूदे अहले बैत

हजरत अबू हुरैरा रदीअल्लाहु तआला अनहो से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया है कि 'जिस शख्स को ये पसन्द हो कि उसे पूरा सवाब मिले तो उसे चाहिए कि हमारे साथ अहले बैत को भी दुरूद भेजे।' (अबू दाउद, जिल्द अव्वल) इस दरूद पाक में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर दुरूद भेजने के साथ उम्महातुल मु'मिनीन औलाद और अहले बैत का खासतौर पर जिक्र

फरमाया गया है इसलिए जो ये दुरूद शरीफ पढ़े तो अल्लाह तआला हुजूर की अजवाजे मुत्तहरात औलाद व अहले बैत के सदके उसके अहले खानदान और औलाद पर अपनी रहमत की बारिश फरमायेगा और फज्ल व करम से नवाजेगा।

۸۲ درود اہل بیت

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ وَاَزْوَاجِهٖ

اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ ذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ

عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ط اَللّٰهُمَّ

بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا

مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَهِيْمَ اِنَّكَ

حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ☆

82 दुरूदे अहले बैत

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदीनी-न्नबीय्यि व अजवाजिही उम्महातिल्- मुअमिनी-न व ज़ुर्रीय्यतिही व अहलि

बय्तिही कमा सल्लय्-त अला सय्यिदिना इब्राही-म इन्न-क हमीदुंम्-मजीदुन। अल्लाहुम्म बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन् कमा बारक्-त अला सय्यिदिना इब्राही-म इन्न-क हमीदुंम्- मजीदुन।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो नबी हैं और आपकी अजवाज (बीवीयों) पर जो मो'मीनों की माँएं है और आपकी औलाद पर आपकी अहले बैत पर जिस तरह दुरूद भेजा तुने हमारे सरदार इब्राहीम अलहिस्सलाम पर बेशक तु तारीफ किया गया बुजूर्ग है। ऐ अल्लाह बरकतें नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की औलाद पर जिस तरह बरकतें नाजिल फरमाई तुने हमारे सरदार इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर बेशक तु तारीफ किया गया बुजूर्ग है।

83 दुरूदे सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम

इब्न हब्बान और हाकिम में अब्दुल्लाह बीन मसऊद अन्सारी रदीअल्लाहो तआला अन्हों से एक रिवायत युँ मरवी है कि 'एक शख्स आया और हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के सामने बैठ गया और हम भी आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की बारगाह में बैठे हुए थे फिर वो शख्स कहने लगा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम आप पर दुरूद भेजना तो हमें पता चला मगर नमाज़ में आप पर किस तरह दुरूद भेजें' हजरत अब्दुल्लाह बीन मसऊद रदीअल्लाहु तआला अन्हु का कहना है कि 'आप हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम खामोश हो गये यहाँ तक की हमने ख्याल किया कि ये शख्स सवाल ना करता तो अच्छा होता, फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम ने फरमाया कि जब तुम मुझ पर दुरूद भेजो तो युँ कहो' और इस दुरूद शरीफ की तलकीन फरमाई। (हस्ने हसीन, स. १३७)

۸۳ درُود سرورکائنات علیہ وسلم صلی اللہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ عَلٰٓى

اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ

اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ط وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا

مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا

اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ☆

83 दुरूदे सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

अल्लाहुम्म सल्लि सय्यिदिना मुहम्मदीनी-न्नबीय्यील्- उम्मीय्यि व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन कमा सल्लय्-त अला सय्यिदिना इब्राही-म इन्न-क हमीदुंम्- मजीदुन। व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदीनी-न्नबीय्यिल्- उम्मीय्यि कमा बारक्-त अला सय्यिदिना इब्राही-म इन्न-क हमीदुंम्- मजीदुन।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो नबीए उम्मी हैं और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर जिस तरह

दुरूद नाजिल फरमाया तुने हजरत इब्राहीम अलयहिस्सालाम पर बेशक तु सब खुबीयों से सराहा गया बुजूर्ग है। और बरकत नाजिल फरमा हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर जो नबीए उम्मी हैं जिस तरह बरकत नाजिल फरमाई तुने हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर बेशक तु सब खुबीयों से सराहा गया बुजूर्ग है।

84 दुरूदे हबीबे खुदा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम

हजरत अब्दुल्लाह बीन मसऊद रदी अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी दुरूद शरीफ के अल्फाज जो निसाई शरीफ में है उसे मुअल्लीफे दलाइलुल खैरात ने युँ बयान फरमाया है। (जो निचे दर्ज है, बमुताबिक निसाई शरीफ, जिल्द अव्वल, दलाइलुल खैरात) इस दरूदे पाक के अल्फाज भी दुरूदे इब्राहीमी जैसे हैं और इसके फयुजो बरकात भी दुरूदे इब्राहीमी के हैं।

۸۴ درود حبیب خدا صلی اللہ علیہ وسلم

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِهٖ

كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ

عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا وَ

مَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا

وَمَوْلٰنَا اِبْرَاهِيْمَ فِى الْعٰلَمِيْنَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

84 दुरूदे हबीबे खुदा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदींव्- व अला आलिही कमा सल्लय-त अला सय्यिदिना व मौलाना इब्राही-म व बारिक अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदींव्- व अला आलि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदीन कमा बारक्-त अला आलि सय्यिदिना व मौलाना इब्राही-म फील्- आलमीन इन्न-क हमीदुंम्-मजीदुन।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद भेज हमारे सरदार व मौला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और आपकी आल पर जिस तरह दुरूद भेजा तुने हमारे सरदार इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर और बरकतें नाजिल फरमा हमारे सरदार व मौला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार व मौला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर जिस तरह बरकतें नाजिल फरमाई तुने हमारे सरदार व मौला हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर तमाम जहानों में बेशक तु ही तारीफ किया गया बुजूर्गी वाला है।

85 दुरूदे जामे इब्राहीमी

ये दुरूदे इब्राहीमी है जो जामे अल्फाज में है, जिसे आरिफे कामिल हजरत मुहम्मद बीन सुलेमान अल्जौजी रहमतुल्लाहि अलयहि ने दलाइलुल खैरात में लिखा है। ये दुरूद शरीफ जामे फवाइद का हामिल है, क्युँकि इसे पढ़ने से दुनिया व आखिरत में भलाई हासिल होगी, अजाबे दोजख से छुटकारा मिलेगा, हर किस्म की खताएं माफ हो जाएगी, उसका खात्मा बिलखैर होगा, इबादत के जौक व शौक में

इजाफा होगा, लोगों मे मुअज़्ज़ीज़ और मुकर्रम हो जायेगा, अल्लाह तआला इत्तबाए सुन्नत की तौफीक देगा। लिहाजा हर शख्स को चाहिए कि दिन में एक बार ये दुरूद शरीफ जरुर पढ़े।

۵۸ درُود جامع ابراہیمی

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا
مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیۡتَ عَلٰی سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ وَعَلٰی اٰلِ
سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ اِنَّکَ حَمِیۡدٌ مَّجِیۡدٌ o اَللّٰھُمَّ
بَارِکۡ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا
مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکۡتَ عَلٰی سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ وَ عَلٰی
اٰلِ سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ اِنَّکَ حَمِیۡدٌ مَّجِیۡدٌo اَللّٰھُمَّ
وَتَرَحَّمۡ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا
مُحَمَّدٍ کَمَا تَرَحَّمۡتَ عَلٰی سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ وَ عَلٰی
اٰلِ سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ اِنَّکَ حَمِیۡدٌ مَّجِیۡدٌ o اَللّٰھُمَّ

تَحَنَّنۡ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ
کَمَا تَحَنَّنۡتَ عَلٰی سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ وَ عَلٰی اٰلِ
سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ اِنَّکَ حَمِیۡدٌ مَّجِیۡدٌ o اَللّٰھُمَّ وَ سَلِّمۡ
عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ کَمَا
سَلَّمۡتَ عَلٰی سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ وَعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا
اِبۡرَاھِیۡمَ اِنَّکَ حَمِیۡدٌ مَجِیۡدٌ ☆

85 दरूदे जामे इब्राहीमी

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन् कमा सल्लय्-त अला सय्यिदिना इब्राही-म व अला आलि सय्यिदिना इब्राही-म इन्नक हमीदुंम्- मजीदुन्। अल्लाहुम्म बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन् कमा बारक्-त अला सय्यिदिना इब्राही-म व अला आलि सय्यिदिना इब्राही-म इन्न-क हमीदुंम्- मजीदुन्। अल्लाहुम्म व तरह्हम् अला सयियदिना मुहम्मदींव्- व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन् कमा तरह्हम्-त अला सय्यिदिना इब्राही-म व अला आलि सय्यिदिना इब्राही-म इन्न-क हमीदुंम्- मजीदुन्। अल्लाहुम्म तहन्नन् अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन् कमा तहन्नन्-त अला सय्यिदिना इब्राही-म व अला आलि सय्यिदिना इब्राही-म इन्न-क हमीदुंम्- मजीदुन्। अल्लाहुम्म व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदींव्- व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदीन् कमा

सल्लम-त अला सय्यिदिना इब्राही-म व अला आलि सय्यिदिना इब्राही-म इन्न-क हमीदुंम्- मजीदुन्।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का आल पर जिस तरह दुरूद नाजिल फरमाया तुने हमारे सरदार इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर बेशक तु ही तारीफ किया गया बुजूर्गी वाला है। ऐ अल्लाह बरकतें नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर जिस तरह तुने बरकत नाजिल फरमाई हमारे सरदार इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर और हमारे सरदार इब्राहीम अलयहिस्सलाम की आल पर बेशक तु तारीफ किया गया बुजूर्गी वाला है। अल्लाहुम्म रहमत नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर जिस तरह तुने रहमत नाजिल फरमाई हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर और हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम की आल पर बेशक तु ही तारीफ किया गया बुजूर्गी वाला है। ऐ अल्लाह मेहरबानी फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर जिस तरह तुने मेहरबानी फरमाई हमारे सरदार इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर और हमारे सरदार इब्राहीम अलयहिस्सलाम की आल पर बेशक तु ही तारीफ किया गया बुजूर्गी वाला है। ऐ अल्लाह और सलाम भेज हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आल पर जिस तरह तुने सलाम भेजा हमारे सरदार इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर और हमारे सरदार इब्राहीम अलयहिस्सलाम की आल पर बेशक तु ही तारीफ किया गया बुजूर्गी वाला है।

86 **दुरूदे सय्यदुल मुरसलीन** सल्लल्लाहु अलयहि व

सल्लम

रिवायात में मजकूर (जिक्र होना) है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने ये दुरूद पाक भी पढ़ा है और सहाबा किराम को पढ़ने की तलकीन फरमाई है, लिहाज़ा जो शख्स ये दुरूद शरीफ सुबह व शाम पढ़ेगा सआदत-दारैन हासिल करेगा, क्युँकि इस दुरूद शरीफ के अल्फ़ाज दीनी व दुनियावी फलाह के लिए बहुत असरदार हैं।

٨٦ درود سید المرسلین صلی اللہ علیہ وسلم

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ

الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ

عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنُ لَكَ رِضًى وَّلَهٗ

جَزَآءً وَّلِحَقِّهٖ اَدَآءً وَّ اَعْطِهِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ

وَالْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ وَاُجْزِهٖ عَنَّا مَاهُوَ

اَهْلُهٗ وَاجْزِهٖ اَفْضَلَ مَازَيْتَ نَبِيًّا عَنْ قَوْمِهٖ وَ رَسُوْلًا

عَنْ اُمَّتِهٖ وَصَلِّ عَلٰى جَمِيْعِ اِخْوَانِهٖ مِنَ النَّبِيِّيْنَ

وَالصّٰلِحِيْنَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ☆

86 दुरूदे सय्यदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीन् अब्दि-क व रसूलिकन्-नबीय्यील्- उम्मीय्यि व अला आलि मुहम्मदीन् अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीनंव्- व अला आलि मुहम्मदीन् सलातन् तकूनु ल-क रीदंव्- व लहू जजाअंव्- व लिहक्किही अदाअंव्- व अअतिहिल्- वसील-त वल्- फदील-त वल्- मकामल्- महमूदल्लजी व अद्तहू व उजज़िही अन्ना माहुवा अहलुहू वजज़िही अफ्द-ल मा जाज़य-त नबीय्यन् अन् कवमिही व रसूलन् अन् उम्मतिही व सल्लि अला जमीइ इखवानिही मिनन्नबीय्यी-न वस्सालिही-न या अरहमर्राहिमी-न।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ए अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा तेरे (बरगुजीदा) बन्दे और तेरे रसूले नबी-ए-उम्मी और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की औलाद पर, ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और औलादे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा दरूद नाजिल फरमा जो तेरी रजा का जरीया हो और हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के लिए पूरा बदला हो और आपके हक की अदायगी हो और आपको वसीला व फजीलत और मकामे महमूद अता हो जिसका तुने वादा किया है और हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को हमारी तरफ से ऐसी जज़ा अता फरमा जो आपकी शाने आ'ला के लायक हो और आपको उन सबसे अफजल बदला अता फरमा जो तुने किसी नबी को उसकी कौम की तरफ से और किसी रसूल को उसकी उम्मत की तरफ से अता फरमाया और दुरूद नाजिल फरमा हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के तमाम बिरादरान अम्बीया और परहेजगारों पर ऐ रहम फरमाने वालों से ज्यादा रहम फरमाने वाले।

87 दुरूदे आशिकीन

कुल अम्बीया व मूरसलीन और कुल कायनात से बेहतर और अफ़जल हमारे प्यारे पाक नबी हजरत अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाह अलयहि व सल्लम हैं। आप खिलकत में सबसे अव्वल और कायनात की अस्ल हैं। आपका वजूद ना होता ये कायनात हरगीज़ ना होती ज़मीन व आसमान लौह व कलम और कुर्सी इन सबसे पहले आका-ए-नामदार हजरत रसूले मकबूल सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम के नूर का जुहूर हो चुका था। तमाम अम्बीया अलहिस्सलाम हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम की नुबूव्वत की निस्बत से आपकी उम्मत में दीखिल हैं हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम पर पैगम्बरी खत्म हो गयी। हजरत ईसा अलयहिस्सलाम का जुहूर होगा तो वो भी हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम की उम्मत के एक फर्द की हैसीयत से इस दुनिया में तशरीफ लायेंगे और दीने मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) की तबलीग़ करेंगे। हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम जब मे'राज को तशरीफ ले गये तो सबके सब अम्बीया अलयहिमुस्सलाम के सरदार बनकर नमाज़ पढ़ाई। सबके सब अम्बीया अलयहिमुस्सलाम आप पर इमान ला चुके हैं और आप पर दुरूद शरीफ पढ़ते हैं और आपसे मुहब्बत करते हैं और आप उनके भी सरदार हैं, वो सब हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम के दीने इस्लाम पर हैं।

जिसने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम की इताअत की उसने खुदा की इताअत की, हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम से मुहब्बत खुदा की मुहब्बत है, हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम से इश्क ऐन अल्लाह से इश्क है, और आशिक वो हस्ती है जिसपर अल्लाह तआला रसूल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम के बाद उस आशिक पर सलाम भेजता है और हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम के बाद अल्लाह को सबसे ज्यादा आशिके अल्लाह और आशिके रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम प्यारा है। इश्क एक अजीब ताकत है और इश्क हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से हो तो भला फिर उसका मुकाबला कौन करे? खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व

सल्लम ने फरमाया है कि जो जिससे मुहब्बत करता, कयामत के दिन उसके साथ होगा।

आशिके रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम इन्शाअल्लाह बगैर हिसाबो किताब के जन्नत में जायेगा। अब जरा देखें आशिकों की शान! हजरत अबूबक्र सीद्दीक रदीअल्लाहु तआला अनहु यारे गार थे, हजरत उमर बीन खत्ताब रदीअल्लाहु ताआला अनहो खास खलीफा थे जिनके बारे में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम ने फरमाया था, कि अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो वो उमर (रदीअल्लाहो तआला अनहों) होता, हजरत उस्मान गनी रदीअल्लाहु तआला अनहु दामाद थे, हजरत अली अल मुर्तजा करमल्लाहु वजहुल करीम छोटे भाई थे, इन सबकी ऐसी खुसूसियात के बावजूद आका-ए-ने'मत हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम ने अपना खिरका मुबारक सिर्फ आशिके सादिक उवैश करनी रदीअल्लाहो तआला अनहो को मरहमत फरमाया और इस अजीम तोहफे को हजरत उमर और हजरत अली रदीअल्लाहु तआला अनहुम खुद लेकर हजरत उवैश करनी रदीअल्लाहु तआला अनहु के पास गये, हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम ने ना सिर्फ ये तोहफा भेजा बल्कि इससे भी ज्यादा उनकी इज्जत की और कहला भेजा कि उवैश (रदीअल्लाहु तआला अनहु) से कहना कि उम्मते मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) की निजात के लिए दुआ करें। उवैश करनी रदीअल्लाहो तआला अनहों आशिके रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम थे, सुबहानल्लाह! देखा ये है शाने आशिके रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम। आशिक की दुआ फौरन कबूल हो जाती है।

इश्क हो भी जाता है और किया भी जाता है, अगर किया जाये तो इश्क का आसान तरीका दुरूदे आशिकीन का कसरत से विर्द है। इश्क वही है जो हकीकी और बामुराद हो और दुरूदे आशिकीन हकीकी आशिकों की मे'राज है, उनका ताज और उनके दरजात बुलन्द करने का रास्ता है। इस दुरूद को पढ़नेवाला आशिके बामुराद और आशिके सादिक हो जाता है।

۸۷ درود العاشقین

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَحْبُوْبِنَا وَمَوْلَانَا

مُحَمَّدِبْنِ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَبْدِالْمُطَّلِبِ الْهَاشِمِيِّ

الْقُرَشِيِّ الذَّكِيِّ الْمَدَنِيِّ الْعَرَبِيِّ وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا

وَحَبِيْبِنَا مُحَمَّدِبْنِ عَبْدُ اللّٰهِ بْنَ عَبْدِ الْمُطَّلِبُ النَّبِيِّ

الْاُمِّيِّ الْحِجَازِيِّ الْحَرَمِيِّ بِقَدْرِ حُسْنِهٖ وَجَمَالِهٖ ☆

87 दुरूदे आशिकीन

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला व सल्लिम अला सय्यिदिना व महबूबिना व मौलाना मुहम्मदिब्नि अब्दिल्लाहिबनि अब्दिल्-मुत्तलिबल्- हाशिमीय्यिल्- कुर्शिय्यिज्जकीय्यिल्- मदनीय्यिल्-अरबीय्यि व अला आलि सय्यिदिना व हबीबिना मुहम्मदिब्नि अब्दुल्लाहिब्नि अब्दिल्- मुत्तलिब् अन्नबीय्यील्- उम्मीय्यिल्-हिजाज़ीय्यिल् हरमीय्यि बिकद्रि हुस्निही व जमालिही।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद व सलाम नाजिल फरमा हमारे सरदार और हमारे महबूब और हमारे मौला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम बीन अब्दुल्लाह बीन अब्दुल मुत्तलीब हाशमी कुरैशी पाक मदनी अरबी पर और हमारे सरदार व हबीब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम बीन

अब्दुल्लाह बीन अब्दुल मुत्तलीब नबी-ए-उम्मी हिजाजी हरमी (हरम के रहने वाले) की औलाद पर आपके हुश्न व जमाल के मुताबिक।

88 दुरूदे दाफए शरा'रा

इस दुरूद शरीफ के पढ़ने से इन्सान दुश्मनों के शर (शरारत, पाजीपन, दुष्टता) से महफूज रहता है, अगर कोई शख्स दुश्मन की दुश्मनी से बहुत तंग आ गया हो और तरह तरह की परेशानी में मुब्तिला हो तो उसे चाहिए कि इस दुरूद शरीफ को रोजाना सौ (१००) बार बाद नमाज़े इशा पढ़ना शुरू करे और हमेंशा पढ़ता रहे इन्शाअल्लाह दुश्मन से निजात मिलेगी। अगर किसी दुश्मन ने जादु के जोर से या काले इल्म की बीना पर रोजी के जरिये को वक्ती तौर पर रोक रखा हो तो इस दुरूद शरीफ को चालिस दिन तक बाद नमाज़े फज्र सौ बार पढ़ें इन्शाअल्लाह दुश्मन के किए हर जादु व इल्म का असर खत्म हो जायेगा और रोजी के जरिये खुल जायेंगे।

۸۸ درُود دافع شراعرا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَامُذِلَّ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰنَا

مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ اَللّٰهُمَّ اقْهَرْ

بِهَا عَلٰى اَعْدَآئِنَا وَاَلْزِمْهُمْ وَعَجِّلْ اِلَيْهِمْ مَا قَصَدُوْ

نِىْ بِهٖ فِىْ اَمْوَالِهِمْ وَعِزَّتِهِمْ وَاٰمَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ☆

88 दुरूदे दाफए शरा'रा

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

या मुज़िल्लु कुल्लु जब्बारीन अनीदीन सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदींव्- व आलिही व सहबिही व बारिक् व सल्लिम् अल्लाहुम्मक्हर् बिहा अला अअदाईना व अल्जिम्हुम् व अज्जिल् इलयहिम् मा कसदूनी बिही फी अम्वालिहीम् व इज्जातिहीम व आमालिहीम व अन्फुसिहीम।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ जलील करनेवाले हर मआइन्द (सरकश) पर जब्र (जोरावरी) रखनेवाले दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार व मौलाना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और उनकी औलाद पर और सहाबा पर और बरकत व सलाम नाजिल फरमा, ऐ अल्लाह मेरे दुश्मनों पर इस दुरूद बीना पर कहर फरमा और उनकी तरफ जल्दी पहुँचा दे वो चीजें जो वो मेरे लिए चाहते हैं उनके माल और इज्जत और उनके आमाल में और उनकी जानों में वो उनपर लाज़िम करदे।

हिकायत - नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शफाअत के मुताअल्लिक एक वाकिया ये है कि एक दफा एक शख्स पर एक जालिम बादशाह का जुल्म वारिद हुआ तो वो खौफ के मारे जंगल की तरफ भाग गया, एक मकाम पर जाकर अपने जहन में नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के रोज ए अकदस का तसव्वूर करके एक हजार बार दुरूद शरीफ पढ़कर बारे इलाही में ये दुआ की या अल्लाह मैं नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलयह व सल्लम की जाते अकदस को तेरे दरबार में शफी बनाता हुँ तु मुझे इस जालिम बादशाह के खौफ से अमन अता फरमा। हातिफ से निदा आई, जा हमने तेरे दुश्मन को हलाक कर दिया है। जब वो वापस आया तो पता चला कि जालिम बादशाह मर गया है। (नुजहतुल मजालिस)

89 दुरूदे अल्फातेह

दुरूदे अलफातेह ऐसा दुरूद शरीफ है जिससे हर काम में फतह हासिल होती है, इसलिए इसे दुरूदे फातेह कहा जाता है। मौलाना अबूल मकारिब शेख शम्सुद्दीन बीन अबूल हसन अबू अल बक्री रहमतुल्लाहि तआला अलयहि फरमाते हैं कि ये दुरूद शरीफ हजरत अबूबक्र सिद्दीक रदीअल्लाहु तआला अनहु के मा'मूल में था और उनके तरीके में था। इस दुरूद शरीफ की बदौलत अल्लाह ने आपको सिद्दीक का दरजा अता फरमाया अल्लाह तआला की माअरिफत के दरजे तय हुए और इसी दुरूद शरीफ की बदौलत आपको मकामे सिद्दीकीयत हासिल हुआ कुछ एक हजरात फरमाते हैं कि इस दुरूद शरीफ का एक बार का पढ़ना चार हजार बार पढ़ने के बराबर है। हजरत अबू मकारिब रहमतुल्लाह तआला अलहे फरमाते हैं कि इस दुरूद शरीफ को चालीस दिन तक पढ़ा जाए तो अल्लाह तआला पढ़नेवाले के जितने गुनाह है बख्श देगा।

शैखुल मशाइख हजरत मुहम्मद बकरी रहमतुल्लाहि तआला अलयहि फरमाते हैं कि इस दुरूद शरीफ का जिन्दगी में एक बार भी सिदक दिल से पढ़ना आखिरत में दोजख की आग से निजात दिला सकता है। (सुबहानल्लाह)

हजरत सय्यद अहमद हलान रहमतुल्लाहि अलयहि फरमाते हैं कि ये दुरूद शरीफ गौसुल आजम पीराने पीर शेख अब्दुल कादिर जिलानी रदीअल्लाहु तआला अनहु को पसन्द था और उनका ये खासुल खास अजायबात और राजे मआरिफत का हामिल है, इसे पढ़ने से नूर के परदे खुलते हैं और वो नूर पैदा होता है जिसकी कद्रदानी अल्लाह तआला के सिवा कोई भी नहीं कर सकता लिहाजा इसे सौ बार रोजाना पढ़ना चाहिए। हजरत युसुफ बीन इस्माईल रहमतुल्लाहि तआला अलयहि फरमाते हैं कि ये दुरूद शरीफ करामात का मोती है। सय्यद मुहम्मद अलबकरी रदीअल्लाहु तआला अनहु फरमाते हैं कि दुरूदे फातेह एक ऐसा अजीब दुरूद है जिसको मैने एक बरस पढ़ा हज को गया और आकाए नामदार सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की कब्र मुबारक की जियारत नसीब हुई, और जब मैं मिम्बर शरीफ रौजा मुबारक के बीच के वाले हिस्से में बैठ गया तो वहाँ हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व आलिही व सल्लम की जियारत नसीब हुई और हुजूर

सल्लल्लाहु अलहि व आलिही व सल्लम ने शफाअत का वादा फरमाया और फरमाया कि अल्लाह तआला तुमको इस दुरूद शरीफ के विर्द के बायस बरकत दे और तुम्हारी औलाद की औलाद को बरकत दे।

۸۹ درود الفاتح

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَ سَلِّمْ وَ بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ

الْفَاتِحِ لِمَا اُغْلِقَ وَ الْخَاتِمِ لِمَا سَبَقَ وَ النَّاصِرِ

الْحَقِّ بِالْحَقِّ وَ الْهَادِىْ اِلٰى صِرَاطِكَ

الْمُسْتَقِيْمِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ

حَقَّ قَدْرِهٖ وَمِقْدَارِهِ الْعَظِيْمِ ☆

89 दुरूदे अल्फातेह

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम् व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिनील्- फातिहि लिमा उगलि-क वल् खातिमि सबक वन्नासिरील्- हक्कि वल् हादी इला सिरातिकल् मुस्तकी-म सल्लल्लहु अलयहि व अला आलिही व अस्हाबिही हक्क क द्रिही व मिक्दारिहिल्-अजीमि।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद और सलाम और बरकतें नाजिल फरमा हमारे सरदार

मुहम्मद सल्लल्लाह अलयहि व सल्लम पर जो हर बन्द चीज़ को खोलने वाले हैं और हर साबिका (हर अव्वलीन) की इन्तिहा हैं और आप हक की हक के साथ मदद करनेवाले हैं और आप सिराते मुस्कीम की हिदायत करनेवाले हैं ऐ अल्लाह उनपर और उनकी आल पर और उनके सहाबा पर अजीम कद्र व मन्जिलत के मुताबीक दुरूद नाजिल फरमा।

90 दुरूदे हुजूरी

हुजूर पूर नूर आका-ए-दो जहाँ सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की आलमे रुहानियत में एक मजलिस लगी रहती है जिसे मजलिसे मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) कहते हैं इस मजलिस में सहाबा किराम और औलीया ए इजाम की रुहें हाजिर होती हैं और मुकामे जाहिरी हयात में ये सरफ उन औलीया को हासिल होता जिन्हें मकामें हुजूरी मिलता है। ये मुकाम हासिल करने के लिए दुरूदे हुजूरी बड़ा असरदार जरिया है, जो शख्स रोजाना ग्यारह सौ (११००) बार ये दुरूद शरीफ पढ़ता रहे उसे बड़ी जल्दी जियारते हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के बाद मुकामे हुजूरी हासिल हो जाती है इसीलिए इस दुरूद शरीफ को दुरूदे हुजूरी कहा जाता है।

हजरत शेख अब्दुल्लाह बीन नौमान रहमतुल्लाह अलयहे ने एक मरतबा ख्वाब में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जियारत की तो अर्ज किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम मैं कौनसा दुरूद पढ़ुं जो आपको सबसे ज्यादा पसन्द हो तो हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने फरमाया कि ये दुरूद पढ़ा (दुरूदे हुजूरी) करो चुनान्चे उसके बाद हजरत अब्दुल्लाह बीन नौमान अपनी बाकी जिन्दगी में यही दुरूद शरीफ पढ़ते रहे।

۹۰ درُودحضوری

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ الَّذِیْ مُلَاتْ

قَلْبُہٗ مِنْ جَلَالِکَ وَعَیْنُہٗ مِنْ جَمَالِکَ فَاَصْبَحَ

فَرِحًا مَّسْرُوْرًامُّؤَیَّدًا مَنْصُوْرًا وَّ عَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ

وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا ☆

90 दुरूदे हुजूरी

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिनील्लजी मुल्अत् कल्बुहू मिन् जलालि-क व अय्नुहू मिन जमालि-क फअस्बह फरिहंम्मस्रुरंम्मुअय्यदन मन्सूररंव्- व अला आलिही व असह्बिही व सल्लिम् तस्लीमन्।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऐसा कि जिससे उनका दिल तेरे जलाल और उनकी आँखें तेरे जमाल में तर रहे फिर सुरुरे ताईद और फतह से सुबह कर और आपकी आल पर और आपके सहाबा पर सलामती नाजिल फरमा मुकम्मल।

91 दरूदे मुकर्रब

हजरत रदीफअ बीन साबीत रदीयअल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि जो शख्स दुरूदे मुकर्रब पढ़े इसे आखिरत में नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शफाअत लाजिमन नसीब होगी, लिहाजा जो शख्स ये चाहे कि कयामत के रोज उसे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शफाअत नसीब हो तो उसे चाहिए कि ये दुरूद शरीफ रोजाना बाद नमाज़े फज्र इक्तालीस (४१) मरतबा पढ़े।

۹۱ درُودمقرب

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اَنۡزِلۡہُ الۡمَقۡعَدَ الۡمُقَرَّبَ

عِنۡدَکَ یَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ☆

91 दुरूदे मुकर्रब

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदींव्- व अन्जिलहुल्- मक्अदल्- मुकर्रब इन्द-क यवमल कियामति।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और कयामत के दिन उन्हें बुलन्द मकाम पर बैठा जो तेरे नज़दीक मुकर्रब हो।

92 दुरूदे दुआ व दवा

ये दुरूद शरीफ दुआ भी है और दवा भी है, लिहाज़ा इस दुरूद पाक को पढ़ने से हर मर्ज से शिफा होगी और जो दुआ इस दुरूद के पढ़ने के बाद माँगी जाए इन्शाअल्लाह कुबूल होगी। हकीम सहिबान या डाक्टर हजरात ये चाहें की उनकी दवा में शिफाए- इलाही शामिल हो जाए तो उन्हें चाहिए कि दवा देते वक्त एक बार ये दुरूद शरीफ पढ़े इन्शाअल्लाह जिस मरीज को इस दुरूद शरीफ के तवस्सूल से दवा देंगें वो शिफायाब होगा।

अल्लामा इब्ने मुश्तमर रहमतुल्लाह अलयहि का कहना है कि जो शख्स ये चाहता हो कि अल्लाह तआला की ऐसी हम्द करूँ जो सबसे अफज़ल हो और अब तक किसी मखलूक ने ना की हो जो अव्वलीन और आखिरीन और मुकर्रबीन आसमान वालों और जमीन वालों से अफज़ल हो तो उसे ये दुरूद शरीफ पढ़ना चाहिए।

۹۲ درُودُعا و دَوا

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰھُمَّ لَکَ الۡحَمۡدُ کَمَآ اَنۡتَ اَھۡلُہٗ فَصَلِّ عَلٰی

مُحَمَّدٍ کَمَآ اَنۡتَ اَھۡلُہٗ وَافۡعَلۡ بِنَامَآ اَنۡتَ اَھۡلُہٗ

فَاِنَّکَ اَنۡتَ اَھۡلُ التَّقۡوٰی وَاَھۡلُ الۡمَغۡفِرَۃِ ○

92 दुरूदे दुआ व दवा

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म लकल्- हम्दु कमा अन-त अहलुहू फसल्ली अला

मुहम्मदीन कमा अन्-त अहलुहू व अफअल् बिनामा अन्-त अहलुहू फइन्न-क अन्-त अहलुत्तक्वा व अहलुल्- मग़फिरति।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह तेरे ही लिए हम्द जो तेरी शान के मनासिब है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर दुरूद भेज जो तेरी शान के मनासिब है और मेरे साथ भी वो मुआमला कर जो तेरी शायाने शान जैसा हो बेशक तु ही इसका मुस्तहीक है कि तुझसे डरा जाये और तु मग़फिरत करने वाला है।

93 दरूदे सवाब

ये एक ऐसा दुरूद शरीफ है जिसका सवाब लामहदुद है, लिहाजा जो शख्स ये दरूद शरीफ कसरत से पढ़ेगा उसे लामहदुद सवाब मिलेगा और उसकी इज्जत में इजाफा होगा, अहले खाना उसके फरमांबरदार होंगे। नाफरमान औलाद के लिए बाद नमाजे जुम्आ ये दुरूद शरीफ सौ (१००) बार पढ़ेइन्शाअल्लाह औलाद हयाते मुतीअ और फरमांबरदार हो जायेगी। इसके मुताअल्लिक हजरत अबू हुरैरा रदीअल्लाहु तआला अनहु ने रिवायत की है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलयहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस शख्स को ये बात पसन्द हो कि वो हमारे घर आने पर दुरूद भेजे और उसका सवाब बहुत बड़े पैमाने में मापा जाये तो उसे चाहिए कि ये दुरूद शरीफ पढ़े।

۹۳ درود ثواب

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ اَزْوَاجِهٖ

اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ ذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ

عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ☆

93 दुरूदे सवाब

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीनिन्नबीय्यील्- उम्मिय्यी व अज़वाजिही उम्महातिल्- मुअमिनि-न व जुर्रियातिही व अहिल बय्तिही कमा सल्लय-त अला इब्राही-म व आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुंम्- मजीदुन्।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे नबी ए उम्मी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और उनकी अजवाजे मुत्तहरात (पाक बीवीयाँ) मोमीनों की माँओं पर और उनकी अजीजों पर और अहले बैत पर जैसा कि तुने दुरूद नाजिल फरमाया हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर और उनकी आल पर बेशक तु तारीफ किया गया बुजुर्ग है।

94 दुरूदे इब्ने कसीर

हजरत खालिद इब्ने कसीर रहमतुल्लाह अलयहि का जब विसाल का वक्त आया तो लोगों ने उनके सिरहाने कागज़ का एक पर्चा लिखा हुआ पाया और उसपर लिखा था कि 'ऐ खालिद इब्ने कसीर तुम्हें दोजख से निजात है' इस कागज़ के पर्चे को देखते ही लोगों को बड़ा ताअज्जुब हुआ सबके सब फौरन उनके घर वालों के पास जमा हुए और उनकी सब खूबी मालूम करने लगे हर एक हैरान था कि ये क्या बात है तो फिर घरवालों ने बताया कि खालिद इब्ने कसीर (रहमतुल्लाह तआला अलयहि) हर जुमेरात की रात को हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर दस हजार बार बड़े अदब व इखलास के साथ ये दुरूद शरीफ पढ़ते थे तो उसके बदले में अल्लाह तआला ने उनकी बख्शीश व मगफिरत फरमाई और इस पर्चे के जरिये अहले दुनिया को खबर दे दी, लिहाजा आज भी अगर कोई चाहे कि इसका खात्मा बील इमान हो और उसकी निजात हो तो उसे चाहिए कि जुमेरात और जुम्आ की दरम्यानी रात में इस दुरूद शरीफ को दस हजार बार पढ़े इन्शाअल्लाह खात्मा

बील इमान होगा और अल्लाह का खास फजल् व करम होगा कि अहले दुनिया हैरान रह जायेगी।

۹۴ درود ابن کثیر

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الطَّاهِرِ

الْمُطَهَّرِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ☆

94 दुरूदे इब्ने कसीर

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदीनिन्नबीय्यील्-उम्मीय्यीत्ताहिरील्- मुतह्हरि व अला आलिही व असह्बिही व बारिक व सल्लीम्।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ए अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर जो नबी ए उम्मी हैं पाक हैं पाक किये गये हैं और उनकी आल पर और उनके सहाबा पर दुरूद व बरकत और सलामती नाजिल फरमा।

95 दुरूदे बरकाते कसीरा

ये दुरूद शरीफ बरकाते कसीरा और बहुत फजीलत का हामिल है और बाज (कुछ) बुजूर्गान के मामूलात में से है जो शख्स इस दुरूद शरीफ को सिदक दिल से रोजाना एक सौ (१००) बार पढ़े कयामत के रोज वो सालिहीन और शोहदा के गिरोह में शामिल होगा ये दुरूद

शरीफ सवाब के लिहाज़ से भी बेशुमार नेकियों का हामिल है इसके एक एक लफ्ज के बदले में हजार हजार नेकी मिलेगी। इस दुरूद शरीफ के तुफैल पढ़ने वाले के तमाम गुनाह मुआफ कर दिये जाते हैं बीमारी की हालत में अगर ये दुरूद शरीफ कसरत से पढ़ा जाये तो अल्लाह तआला सेहत बहाल कर देगा कब्र में ये दुरूद शरीफ मुन्कीर नकीर के सवाल व जवाब के वक्त बहुत काम आयेगा।

۹۵ درود برکات کثیرہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى رَسُوْلِكَ

الْمُصْطَفٰى وَ نَبِيِّكَ الْمُرْتَضٰى وَ عَلٰى اٰلِهٖ

وَاَصْحَابِهٖ بِعَدَدِ كُلِّ ذَرَّةٍ مِّائَةَ اَلْفَ اَلْفَ مَرَّةٍ ☆

95 दुरूदे बरकाते कसीरा

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक अला रसूलिकल्-मुस्तफा व नबीय्यीकल्- मुर्तजा व अला व आलिही व असहाबिही बिअददि कुल्लि जर्रतीम्- मीअति अल्-फ अल्-फ मर्रतीन।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद सलामती और बरकत नाजिल फरमा अपने चुने हुए रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और पसंदीदा नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और आपकी आल पर और आपके सहाबा पर हर एक जर्रे के एवज दस करोड़ बार।

96 दुरूदे शफाअत

ये दुरूद शरीफ भी दुसरे तमाम दुरूद पाक की तरह हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शफाअत के लिए बहुत मुजर्रब (आजमाया) है, लिहाजा जो शख्स हर नमाज़ बाद इसे ग्यारह बार पढ़े इसके एवज रोजे कयामत को हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शफाअत वाजिब हो जायेगी। कोई शख्स सबे बरात में इस दुरूद शरीफ को इक्कीस हजार (२१०००) बार पढ़े तो उसके रिज़्क में इजाफा होगा। कोई जियारते नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के लिए इस दुरूद शरीफ को सवा लाख (१२५०००) बार चालीस दिन के अन्दर पढ़े तो वो इन्शाअल्लाह जियारत से मुशर्रफ होगा।

۹۶ درُود شفاعت

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى حَبِيْبِكَ شَفِيْعِ

الْمُذْنِبِيْنَ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ ☆

96 दुरूदे शफाअत

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक अला हबीबि-क शफीइल्- मुजनिबी-न व अला आलिही व असहाबिही अजमई-न।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद सलाम और बरकत नाजिल फरमा अपने हबीब शफीईल मुजनबीन (गुनाहगारों की शफाअत करने वाले) सल्लल्लाहु

अलयहि व सल्लम पर और आपकी आल पर और आपके सहाबा तमाम पर।

97 दुरूदे मुशाहिदा

मुशाहिदा अल्लाह तआला का एक खुशूसी इनाम है और इसका मतलब चश्मे-बातिन से गैबी अशया (चीज) को देखना है, और ये मुजाहीदा से हासिल होता है लिहाजा जो शख्स साहिबे मुशाहिदा बनना चाहे वो इस दुरूद पाक पर जुहद करे यानी इस फर्ज इबादत के बाद बहुत कसरत से पढ़े ज्युँ ज्युँ पढ़ने की तादाद में इजाफा होगा वैसे इसे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का कुर्ब हासिल होता जायेगा, बिल आखिर वो मुकाम आ जायेगा कि मुशाहिदा होने लगेगा। इसके अलावा इस दुरूद शरीफ को रोजाना एक सौ ग्यारह (१११) बार पढ़ने से रहमते इलाही के दरवाजे खूल जाते हैं और जो शख्स इसे चालीस दिन तक रोजाना तीन हजार एक सौ पच्चीस (३१२५) बार उसकी हर जायज हाजत पूरी होगी।

۹۷ درُود مشاہدہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى حَبِيْبِهٖ رَحْمَةً لِّلْعَالَمِيْنَ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ

وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ☆

97 दुरूदे मुशाहिदा

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

सल्लल्लाहो अला हबीबिही रहमतंल्लिल्आलमी-न व अला

आलिही व असहाबिही अजमई-न।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। दुरूद नाजिल फरमा ऐ अल्लाह अपने हबीब रहमतुल्लिल आलमीन पर और आपकी आल पर और आपके सहाबा तमाम पर।

98 दुरूदे फक्री

ये दुरूद शरीफ बेपनाह अनवार व बरकात का हामिल है, इसे सिदक दिल से व इखलास से पढ़ने वाला अल्लाह की तरफ रुजूअ हो जाता है और आमाल नामे में व नेकीयों में इजाफा होता है और हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की कुरबत हासिल होगी। जाहिर व बातिन में पाकीज़गी पैदा होगी। बाद नमाज़े फज्र एक सौ (१००) बार बिला नागा पढ़नेवाला हर तरह के फैजान से मुस्तफीद व मुस्तफीज होगा, और जो शख्स बाद नमाज इशा ग्यारह सौ बार दीनी या दुन्यावी हाजत रवाई की गरज से पढ़े इन्शाअल्लाह उसके दिल की मुराद पूरी होगी और अल्लाह की मदद व रहमत से इसकी मुश्किल हल हो जायेगी। अगर रोजाना ग्यारह बार पढ़ा जाये तो अल्लाह की ताइद व मदद शामिले हाल रहेगी। गमजदा पढ़े तो गम दूर हो जाये, सफर मे पढ़ा जाये सफर बखैरियत गुजरे, आमतौर पर पढ़ने से शैतान के शर और दुश्मन से हिफाजत रहेगी, अगर कोई चालीस रात बाद नमाज़ तहज्जुद तीन हजार एक सौ पच्चीस बार पढ़े तो जो अल्लाह से मांगे वही मिले, अगर जियारत की गरज से पढ़े तो जियारत से मुशर्रफ होगा। रमजानुल मुबारक में कसरत से पढ़ना बारगाहे महबूबे खुदा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम तक पहुँचने का बेहतरीन वसीला है और अल्लाह तआला की खुशनूदी व रजा और कुर्ब हासिल करने का आसान तरीन जरिया है, इस दुरूद शरीफ को हमेंशा मामुल के मुताबीक पढ़नेवाला मुस्तजाबुद्दावात (जिसकी हर दुआ कुबूल होती है) हो जाता है।

۹۸ درُودفقری

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى اَفۡضَلِ حَبِيۡبِكَ النَّبِيِّ الۡعَظِيۡمِ

مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِهٖ وَاَصۡحَابِهٖ وَسَلِّمۡ ☆

98 दुरूदे फक्री

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला अफदलि हबीबि-क न्नबीय्यील्-अजीमि मुहम्मदींव्-व अला आलिही व असहाबिही व सल्लिम।

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। ऐ अल्लाह दुरूद नाजिल फरमा अपने अफजल हबीबे अजीम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर और आपकी आल पर और आपके सहाबा पर और सलामती भेज।

कसीदा बूरदा शरीफ

ये कसीदा अरबी कसीदों में बहुत मशहूर है। कसीदा के मानी होता है मिदह सराई, तारीफ करना, बूरदा के मानी होता है चादर। इस कसीदे में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की मुख्तलीफ अन्दाज में तारीफ की गई है। इस कसीदा के मुसन्नीफ हजरत इमाम सरफुद्दीन मुहम्मद बीन सईद बूसयरी रहमतुल्लाह अलयहि हैं, जो अपने जमाने के आशिके रसूल थे उनका ये कसीदा भी इश्के रसूले अकरम सल्लल्लाहु

अलयहि व सल्लम का जिन्दा व जावेद सबूत है। जवानी के आलम में वो अमीरों और सुलतानों के कसीदे लिखते रहे मगर बाद में इसे तर्क करके हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की मिदह सराई में मशगूल हो गये। एक दफा आपको अचानक फालिज (लकवा) हो गया, बहुत इलाज किया मगर कोई फायदा ना हुआ और बीमारी जब तुल पकड़ गई तो दोस्त अहबाब सब साथ छोड़ गये यहाँ तक की अजीज व अकारीब भी बेजार हो गये, और ये बीमारी का आलम करीब पन्द्रह साल रहा। आखिर एक रोज दिल में ख्याल पैदा हुआ कि क्यूँ ना हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के वसीले से दुआ माँगी जाये चुनान्चे आपने निहायत ही बेबसी के आलम में ये नातीया कसीदा कहा और बारगाहे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम में अकीदतमंदी के फुल पेश किये। अब अकसर उनका वक्त इसे कसीदे को पढ़ते गुजरता। एक रात रोते रोते सो गये, ख्वाब में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जियारत नसीब हुई और ख्वाब में आका ने फरमाया की वो कसीदा सुनाओ इमाम बुसयरी ने आका सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम को वही कसीदा सुनाया और हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने खुश होकर अपना दस्त (हाथ) मुबारक इमाम बूसयरी पर फेरा और अपनी चादर मुबारक इमाम बूसयरी को ओढ़ा दी। सुबह हुई तो आपने अपने जिस्म में वही चादर हाजिर पाई और जिस्म भी तंदरुस्त हो गया था। इस चादर की वजह से ही इसका नाम कसीदा बुरदा शरीफ हो गया वरना इसके मुसन्नीफ हजरत इमाम बूसयरी ने इसका नाम 'अल-कसीदतुल मुहम्मदीया' (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) रखा था। ये खवाब की बात थी शायद अयां ना होती मगर आप इमाम बूसयरी उसी सुबह जब बाजार में निकले तो एक फकीर मज्जुबे कामिल ने आपको आवाज लगाई जब आप करीब पहुँचे तो कहा की ऐ बुसयरी रात वाला कसीदा हमें भी सुना दो, तो इमाम बूसयरी ने कहा ये आपको कैसे पता तो उन्होंने कहा कि रात जब आप हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को ये कसीदा सुना रहे थे तब दुर खड़े खड़े हम भी इसे सुन रहे थे। अल्हमदु लिल्लाहे रब्बिल आलमीन। इस तरह ये कसीदा अवामुन्नास में अयाँ हुआ।

इस कसीदा में एक तरह के दुरूद शरीफ जैसी खुसुसीयात है लिहाजा जो शख्स इसे खुलूस दिल से पढ़ता रहे उसमें इश्के रसूल

सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पैदा हो जाता है उसकी दीनी व दुनियावी हाजात पूरी हो जाती है और रोजे महशर हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शफाअत नसीब होगी।

इस कसीदा बुरदा शरीफ के कुल एक सो छाँसठ (१६६) असआर जो मुझे मयस्सर हुए उतने यहाँ तरतीब दे रहा हुँ।

قسیدہ بُردہ شریف

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ مُنۡشِی الۡخَلۡقِ مِنۡ عَدَمٍ

ثُمَّ الصَّلٰوۃُ عَلَی الۡمُخۡتَارِ فِی الۡقَدَمِ

مَوۡلَایَ صَلِّ وَ سَلِّمۡ دَآئِمًا اَبَدًا

عَلٰی حَبِیۡبِکَ خَیۡرِ الۡخَلۡقِ کُلِّھِمِ

اَمِنْ تَذَكُّرِ جِيْرَانٍ م بِذِىْ سَلَمِ
مَزَجْتَ دَمْعًا جَرٰى مِنْ مُّقْلَةٍ بِدَمِ
اَمْهَبَّتِ الرِّيْحُ مِنْ تِقَآءِ كَاظِمَةٍ
اَوْمَضَ الْبَرْقُ فِى الظُّلَمَآءِ مِنْ اِضَمِ
فَمَا لِعَيْنَيْكَ اِنْ قُلْتَ اكْفُفَا هَمَتَا
وَمَا لِقَلْبِكَ اِنْ قُلْتَ اسْتَفِقْ يَهِمِ
اَيَحْسَبُ الصَّبُّ اَنَّ الْحُبَّ مُنْكَتِمٌ
مَا بَيْنَ مُنْسَجِمٍ مِّنْهُ وَمُضْطَرَمِ
لَوْلَا الْهَوٰى تُرِقْ دَمْعًا عَلٰى طَلَلٍ
وَّلَآ اَرِقْتَ لِذِكْرِ الْبَانِ وَالْعَلَمِ
فَكَيْفَ تُنْكِرُ حُبًّا بَعْدَ مَا شَهِدَتْ

بِهٖ عَلَيْكَ عُدُوْلُ الدَّمْعِ وَالسَّقَمِ
وَاَثْبَتَ الْوَجْدُ خَطَّىْ عِبْرَةٍ وَّضَنًى
مِثْلَ الْبَهَارِ عَلٰى خَدَّيْكَ وَالْعَنَمِ
نَعَمْ سَرٰى طَيْفُ مَنْ اَهْوٰى فَاَرَّقَنِىْ
وَالْحُبُّ يَعْتَرِضُ اللَّذَّاتُ بِالْاَلَمِ
يَا لَآئِمِىْ فِى الْهَوٰى الْعُذْرِىِّ مَعْذِرَةً
مِنِّىْٓ اِلَيْكَ وَلَوْ اَنْصَفْتَ لَمْ تَلُمِ
عَدَتْكَ حَالِىَ سِرِّىْ بِمُسْتَتِرٍ
عَنِ الْوُشَاةِ وَلَا دَآئِىْ بِمُنْحَسِمِ
مَحَّضْتَنِى النُّصْحَ لٰكِنْ لَّسْتُ اَسْمَعُهٗ
اِنَّ الْمُحِبَّ عَنِ الْعُذَّالِ فِىْ صَمَمِ

اِنِّی اتَّهَمْتُ نَصِیْحَ الشَّیْبِ فِیْعَذَلِیْ
وَالشَّیْبُ اَبْعَدُ فِیْ نُصْحٍ مِّنَ التُّهَمِ

اَلْفَصْلُ الثَّانِیْ فِیْ مَنْعِ هَوَی النَّفْسِ

فَاِنَّ اَمَّارَتِیْ بِالسُّوْٓءِ مَا اتَّعَظَتْ
مِنْ جَهْلِهَا بِنَذِیْرِ الشَّیْبِ وَالْهَرَمِ
وَلَآ اَعَدَّتْ مِنَ الْفِعْلِ الْجَمِیْلِ قِرٰی
ضَیْفٍ اَلَمَّ بِرَاْسِیْ غَیْرَ مُحْتَشَمِ
لَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ اِنِّیْ مَا اُوَقِّرُهٗ
كَتَمْتُ سِرًّا بَدَالِیْ مِنْهُ بِلْكَتَمِ

مَنْ لِّیْ بِرَدِّ جِمَاحٍ مِّنْ غَوَایَتِهَا
كَمَا یُرَدُّ جِمَاحُ الْخَیْلِ بِاللُّجُمِ
فَلَا تَرُمْ بِالْمَعَاصِیْ كَسْرَ شَهْوَتِهَا
اِنَّ الطَّعَامَ یُقَوِّیْ شَهْوَتَ النَّهِمِ
وَالنَّفْسُ كَالطِّفْلِ اِنْ تُهْمِلْهُ شَبَّ عَلٰی
حُبِّ الرِّضَاعِ وَاِنْ تَفْطِمْهُ یَنْفَطِمِ
فَاصْرِفْ هَوَاهَا وَحَاذِرْ اَنْ تُوَلِّیَهٗ
اِنَّ الْهَوٰی مَا تَوَلّٰی یُصْمِ اَوْ یَصِمِ
وَرَاعِهَا وَهِیَ فِی الْاَعْمَالِ سَآئِمَةٌ
وَّاِنْ هِیَ اسْتَحْلَتِ الْمَرْعٰی فَلَا تُسِمِ
كَمْ حَسَّنَتْ لَذَّةً لِّلْمَرْءِ قَاتِلَةٌ

مِّنْ حَيْثُ لَمْ يَدْرِاَنَّ السَّمَّ فِى الدَّسَمِ

وَاخْشَ الدَّسَائِسَ مِنْ جُوْعٍ وَّمِنْ شَبَعٍ

فَرُبَّ مَخْمَصَةٍ شَرٌّ مِّنَ التُّخَمِ

وَاسْتَفْرِغِ الدَّمْعَ مِنْ عَيْنٍ قَدِامْتَلَاَتْ

مِنَ الْمَحَارِمِ وَالْزَمْ حِمْيَةِ النَّدَمِ

وَخَالِفِ النَّفْسَ وَالشَّيْطَانَ وَاعْصِهِمَا

وَاِنْ هُمَا مَحَّضَاكَ النُّصْحَ فَاتِّهِمِ

وَلَا تُطِعْ مِنْهُمَا خَصْمًا وَّلَا حَكَمًا

فَاَنْتَ تَعْرِفُ كَيْدَ الْخَصْمِ وَالْحَكَمِ

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ مِنْ قَوْلٍ بِلَا عَمَلٍ

لَقَدْ نَسَبْتُ بِهٖ نَسْلًا لِّذِىْ عَقَمِ

اَمَرْتُكَ الْخَيْرَ لٰكِنْ مَّا اْتَمَرْتُ بِهٖ

وَمَا اسْتَقَمْتُ فَمَا قَوْلِىْ لَكَ اسْتَقِمِ

وَلَا تَزَوَّدْتُّ قَبْلَ الْمَوْتِ نَافِلَةً

وَلَمْ اُصَلِّ سِوٰى فَرَضٍ وَّلَمْ اَصُمِ

اَلْفَصْلُ الثَّالِثُ فِىْ مَدْحِ النَّبِىِّ ﷺ

ظَلَمْتُ سُنَّةَ مَنْ اَحْيَ الظَّلَامِ اِلٰى

اَنِ اشْتَكَتْ قَدَمَاهُ الضُّرَّ مِنْ وَّرَمِ

وَشَدَّ مِنْ سَغَبٍ اَحْشَآءَهٗ وَطَوٰى

تَحْتَ الْحِجَارَةِ كَشْحًا مُّتْرَفَ الْاَدَمِ

وَرَاوَدَتْهُ الْجِبَالُ مَاشُمَّ مِنْ ذَهَبٍ

عَنْ نَفْسِهٖ فَاَرَاهَا اَيَّمَا شَمَمِ

وَاَكَدَّتْ زُهْدَهٗ فِيْهَا ضَرُوْرَتُهٗ

اِنَّ الضَّرُوْرَةَ لَا تَعْدُوْا عَلَى الْعِصَمِ

وَكَيْفَ تَدْعُوْآ اِلَى الدُّنْيَا ضَرُوْرَةُ مَنْ

لَوْلَاهُ لَمْ تَخْرُجِ الدُّنْيَا مِنَ الْعَدَمِ

مُحَمَّدٌ سَيِّدُ الْكَوْنَيْنِ وَالثَّقَلَيْنِ

وَالْفَرِيْقَيْنِ مِنْ عَرَبٍ وَّمِنْ عَجَمِ

نَبِيُّنَا الْاٰمِرُ النَّاهِيْ فَلَآ اَحَدُ

اَبَرَّ فِيْ قَوْلٍ لَامِنْهُ وَلَا نَعَمِ

هُوَالْحَبِيْبُ الَّذِيْ تُرْجٰى شَفَاعَتُهٗ

لِكُلِّ هَوْلٍ مِّنَ الْاَهْوَالِ مُقْتَحِمِ

دَعَا اِلَى اللّٰهِ فَالْمُسْتَمْسِكُوْنَ بِهٖ

مُسْتَمْسِكُوْنَ بِحَبْلٍ غَيْرِ مُنْفَصِمِ

فَاقَ النَّبِيِّيْنَ فِيْ خَلْقٍ وَّفِيْ خُلُقٍ

وَلَمْ يُدَانُوْهُ فِيْ عِلْمٍ وَّلَا كَرَمِ

وَكُلُّهُمْ مِّنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ مُلْتَمِسٌ

غَرْفًا مِّنَ الْبَحْرِ اَوْ رَشْفًا مِّنَ الدِّيَمِ

وَوَاقِفُوْنَ لَدَيْهِ عِنْدَ حَدِّهِمِ

مِنْ نُّقْطَةِ الْعِلْمِ اَوْمِنْ شَكْلَةِ الْحِكَمِ

فَهُوَ الَّذِىْ تَمَّ مَعْنَاهُ وَصُوْرَتُهٗ

ثُمَّ اصْطَفَاهُ حَبِيْبًا بَارِئُ النَّسَمِ

مُنَزَّهٌ عَنْ شَرِيْكٍ فِىْ مَحَاسِنِهٖ

فَجَوْهَرُالْحُسْنِ فِيْهِ غَيْرُ مُنْقَسِمِ

دَعْمَااادَّعَتْهُ النَّصَارٰى فِىْ نَبِيِّهِمْ

وَاحْكُمْ بِمَا شِئْتَ مَدْحًا فِيْهِ وَاحْتَكِمْ

فَانْسُبْ اِلٰى ذَاتِهٖ مَاشِئْتَمِنْ شَرَفٍ

وَانْسُبْ اِلٰى قَدْرِهٖ مَا شِئْتَ مِنْ عِظَمٍ

فَاِنَّ فَضْلَ رَسُوْلِ اللّٰهِ لَيْسَ لَهٗ

حَدٌّ فَيُعْرِبُ عَنْهُ نَاطِقٌ بِفَمِ

لَوْ نَاسَبَتْ قَدْرَهٗ اٰيَاتُهٗ عِظَمًا

اَحْىَ اَسْمُهٗ حِيْنَ يُدْعٰى دَارِسَ الرِّمَمِ

لَمْ يَمْتَحِنَّا بِمَا تَعْىَ الْعُقُوْلُ بِهٖ

حِرْصًا عَلَيْنَافَلَمْ نَرْتَبْ وَلَمْ نَهِمِ

اَعْىَ الْوَرٰى فَهْمُ مَعْنَاهُ فَلَيْسَ يُرٰى

لِلْقُرْبِ وَالْبُعْدِ فِيْهِ غَيْرُ مُنْفَحِمِ

كَالشَّمْسِ تَظْهَرُ لِلْعَيْنَيْنِ مِنْ بُعُدٍ

صَغِيْرَةً وَّتُكِلُّ الطَّرْفَ مِنْ اَمَمِ

وَكَيْفَ يُدْرِكُ فِىْ الدُّنْيَا حَقِيْقَتَهٗ

قَـرْمٌ نِيَـامٌ تَسَـلُّـوْا عَـنْـهُ بِـالْـحُـلُـمِ

فَـمَبْـلَـغُ الْـعِـلْـمِ فِيْـهِ اَنَّـهٗ بَشَـرٌ

وَّاَنَّـهٗ خَيْـرُ خَـلْـقِ الـلّٰـهِ كُـلِّهِـمِ

وَكُـلُّ اٰيٍ اَتَـى الـرُّسُـلُ الْـكِـرَامُ بِهَـا

فَـاِنَّـمَـا اتَّـصَـلَـتْ مِـنْ نُّـوْرِهٖ بِهِـمِ

فَـاِنَّـهٗ شَـمْـسُ فَـضْـلٍ هُمْ كَـوَاكِبُهَـا

يُـظْهِـرْنَ اَنْـوَارَهَـا لِـلنَّـاسِ فِى الظُّلَـمِ

حَتّٰـى اِذَا لَـطَّـلَـعَـتْ فِى الْـكَـوْنَيْـنِ عَمَّ هُـدًا

هَـاالْـعٰـلَـمِيْـنَ وَاَحْيَـتْ سَـآئِـرَالْاُمَـمِ

اَكْـرَمُ بِـخَـلْـقِ نَبِـيٍّ زَانَـهٗ خُـلُـقٌ

بِـلْـحُـسْـنِ مُسْتَـهِـلٍ بِـلْبَشْـرِ مُتَّسِـمِ

كَـالـزَّهْـرِ فِـىْ تَـرَفٍ وَّالْبَـدْرِ فِـىْ شَرَفٍ

وَالْبَـحْـرِ فِـىْ كَـرَمٍ وَّالدَّهْـرِ فِـىْ هِـمَـمِ

كَـاَنَّـهٗ وَهُـوَ فَـرْدٌ فِـىْ جَلَا لَتِـهٖ

فِـىْ عَسْـكَـرٍ حِيْـنَ تَـلْـقَـاهُ وَفِـىْ حَشَمِ

كَـاَنَّـمَـا الـلُّـؤْلُـؤُالْـمَـكْـنُـوْنُ فِـىْ صَدَفٍ

مِـنْ مَـعْـدَنَـىْ مَـنْـطَـقٍ مِّـنْـهُ وَمُبْتَسَمِ

لَا طِيْـبَ يَـعْـدِلُ تُـرْبًـا ضَـمَّ اَعْـظُـمَـهٗ

طُـوْبٰـى لِـمُـنْتَشِـقٍ مِّـنْـهُ وَمُـلْتَثِـمِ

اَلْفَصْلُ الرَّابِعُ فِیْ مَوْلِدِهٖ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ

اَبَانَ مَوْلِدُهٗ عَنْ طِیْبِ عُنْصُرِهٖ
یَا طِیْبَ مُتَدَأِّمِنْهُ وَمُخْتَتَمِ

یَوْمٌ تَفَرَّسَ فِیْهِ الْفُرْسُ اَنَّهُمْ
قَدْ اُنْذِرُوْا بِحُلُوْلِ الْبُؤْسِ وَالنِّقَمِ

وَبَاتَ اَیْوَانُ کِسْرٰی وَهُوَ مُنْصَدِعٌ
کَشَمْلِ اَصْحَابِ کِسْرٰی غَیْرَ مُلْتَئِمِ

وَالنَّارُ خَامِدَةُ الْاَنْفَاسِ مِنْ اَسَفٍ
عَلَیْهِ وَالنَّهْرُ سَاهِیَ الْعَیْنِ مِنْ سَدَمِ

وَسَآءَ سَاوَةَ اَنْ غَاضَتْ بُحَیْرَتُهَا
وَرُدَّ وَارِدُهَا بِالْغَیْظِ حِیْنَ ظَمِی

کَاَنَّ بِالنَّارِ مَا بِالْمَآءِ مِنْ بَلَلٍ
حُزْنًا وَّبِالْمَآءِ مَا بِالنَّارِ مِنْ ضَرَمِ

وَالْجِنُّ تَهْتِفُ وَالْاَنْ وَارُسَاطِعَةٌ
وَالْحَقُّ یَظْهَرُ مِنْ مَّعْنًی وَّمِنْ کَلَمِ

عَمُوْا وَصَمُّوْا فَاعِلَانُ الْبَشَآئِرِ لَمْ
تُسْمَعْ رَبَارِقَةُ الْاِنْذَارِ لَمْ تُشَمِ

مِنْ م بَعْدِ مَآاَخْبَرَ الْاَقْوَامَ کَاهِنُهُمْ
بِاَنَّ دِیْنَهُمُ الْمُعْوَجَّ لَمْ یَقُمِ

وَبَعْدَ مَاعَا يَنُوْا فِىْ الْاُفُقِ مِنْ شُهُبٍ

مُّنْقَضَّةٍ وَّفْقَ مَا فِىْ الْاَرْضِ مِنْ صَنَمٍ

حَتّٰى غَدَا عَنْ طَرِيْقِ الْوَحْيِ مُنْهَزِمٌ

مِّنَ الشَّيَا طِيْنَ يَفْقُوْا اِثْرَ مُنْهَزِمٍ

كَاَنَّهُمْ هَرَبًا اَبْطَالُ اَبْرَهَةٍ

اَوْعَسْكَرٌ م بِالْحَصٰى مِنْ رَّاحَتَيْهِ رُمِ

نَبْذًا بِهٖ بَعْدَ تَسْبِيْحٍ م بِبَطْنِهِمَا

نَبْذَا لْمُسَبِّحِ مِنْ اِخْشَآءِ مُلْتَقِمِ

اَلْفَصْلُ الْخَامِسُ فِىْ

مُعْجِزَتِه عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ

جَآئَتْ لِدَعْوَتِهِ الْاَشْجَارُ سَاجِدَةً

تَمْشِىْٓ اِلَيْهِ عَلٰى سَاقٍ م بِلَاقَدَمِ

كَاَنَّهَا سَطَرٌ تُسَطِّرًا لِّمَا كَتَبَ

فُرُوْعُهَا مِنْ بَدِيْعِ الْخَطِّ فِىْ اللَّقَمِ

مَثَلُ الْغَمَامَةِ اَنّٰى سَارَ سَآئِرَةً

تَقِيْهِ حَرَّ وَطِيْسٍ لِّلْهَجِيْرِ حَمِ

اَقْسَمْتُ بِالْقَمَرِ الْمُنْشَقِّ اِنَّ لَهٗ

مِنْ قَلْبِهٖ نِسْبَةً مَّبْرُوْرَةَ الْقَسَمِ

وَمَا حَوَى الْغَارُ مِنْ خَيْرٍ وَّمِنْ كَرَمٍ

وَكُلُّ طَرْفٍ مِّنَ الْكُفَّارِ عَنْهُ عَمِ

فَالصِّدْقِ فِى الْغَارِ وَالصِّدِّيْقُ لَمْيَرَمَا

وَهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا بِالْغَارِ مِنْ اِرَمٍ

ظَنُّوا الْحَمَامَ وَظَنُّوا الْعَنْكَبُوْتَ عَلٰى

خَيْرِ الْبَرِيَّةِ لَمْ تَنْسَجْ وَلَمْ تَحُمِ

وِقَايَةُ اللّٰهِ اَغْنَتْ عَنْ مُّضَاعَفَةٍ

مِنَ الدُّرُوْعِ وَعَنْ عَالٍ مِّنَ الْاُطُمِ

مَاسَامَنِى الدَّهْرُ ضَيْمًا وَّاسْتَجَرْتُبِهٖ

اِلَّا وَنِلْتُ جِوَارًا مِّنْهُ لَمْ يُضَمِ

وَلَا الْتَمَسْتُ غِنِىَّ الدَّارَيْنِ مِنْيَدِهٖ

اِلَّا اسْتَلَمْتُ النَّدٰى مِنْ خَيْرِ مُسْتَلِمِ

لَاتُنْكِرُ الْوَحْىَ مِنْ رُؤْيَاهُ اِنَّ لَهٗ

قَلْبًا اِذَا نَامَتِ الْعَيْنَانِ لَمْ يَنَمِ

وَذَاكَ حِيْنَ بُلُوْغٍ مِّنْ نُّبُوَّتِهٖ

فَلَيْسَ يُنْكَرُ فِيْهِ حَالُ مُّحْتَلِمِ

تَبَارَكَ اللّٰهُ مَا وَحْىٌ بِمُكْتَسِبٍ

وَلَا نَبِىٌّ عَلٰى غَيْبٍ بِمُتَّهَمِ

كَمْ اَبْرَاَتْ وَصِبًا بِاللَّمْسِ رَاحَتُهٗ

وَاَطْلَقَتْ اَرِبًا مِّنْ رِّبْقَتِ الْلَمَمِ

وَاَحْيَتِ السَّنَةَ الشَّهْبَآءَ دَعْوَتُهٗ
حَتّٰى حَكَتْ غُرَّةً فِى الْاَعْصُرِ الدُّهُمِ
بِعَارِضٍ جَادَاَوْخَلَتِ الْبِطَاحَ بِهَا
صَيْبًامِّنَ الْيَمِّ اَوْ سَيْلً مِّنَ الْعَرِمِ

اَلْفَصْلُ السَادِسُ فِىْ شَرَفِ الْقُرْاٰنِ وَمَدْحَهٗ

دَعْنِىْ وَوَصْفِىَ اٰيَاتٍ لَهٗ ظَهَرَتْ
ظُهُوْرَ نَارِ الْقِرٰى لَيْلًا عَلٰى عَلَمِ
فَالدُّرُّ يَزْدَادُ حُسْنًاوَّ هُوَ مُنْتَظِمٌ

وَلَيْسَ يَنْقُصُ قَدْرًا غَيْرُ مُنْتَظِمِ
فَمَاتَطَاوُلُ اٰمَالُ الْمَدِيْحِ اِلٰى
مَا فِيْهِ مِنْ كَرَمِ الْاَخْلَاقِ وَشِيَمِ
اٰيَاتُ حَقٍّ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثَةٌ
قَدِيْمَتٌ صِفَةُ الْمَوْصُوْفِ بِالْقِدَمِ
لَمْ تَقْتَرِنْ بِزَمَانٍ وَّهْيَتُخْبِرُنَا
عَنِ الْمَعَادِ وَعَنْ عَادٍ وَّعَنْ اِرَمِ
دَامَتْ لَدَيْنَا فَفَاقَتْ كُلَّ مُعْجِزَةٍ
مِّنَ النَّبِيِّيْنَ اِذْجَآءَتْ وَلَمْتَدُمِ
مُحْكَمَاتٌ فَمَا يُبْقِيْنَ مِنْ شُبَهٍ

لِـذِىْ شِـقَـاقٍ وَّلَا يَبْـغِيْـنَ مِـنْ حَـكَـمِ

مَـاحُـوْرِبَـتْ قَـطُّ اِلَّا عَـادَمِـنْ حَـرَبٍ

اَذَى الْاَعَـادِىْ اِلَيْهَـا مُـلْـقِـى السَّـلَـمِ

رَدَّتْ بَلَاغَتُهَـا دَعْـوٰى مَـعَـارِضِهَـا

رَدَّالْـغُيُـوْرِ يَدَ الْجَاتِىْ عَنِ الْحَرَمِ مَعًا

لَهَـا مَـعَـانٍ كَـمَـوْجِ الْبَحْـرِ فِـىْ مَدَدٍ

وَفَـوْقَ جَـوْهَـرِهٖ فِـى الْـحُسْـنِ وَالْقِيَمِ

فَلَا تَـعُـدُّ وَلَاتَـحْـصٰـى عَـجَـآئِبُهَـا

وَلَا تُسَـامُ عَـلَـى الْاِكْثَـارِ بِـلسَّـامِ

قَـرَّتْ بِهَـا عَيْـنُ قَـارِيْهَـا فَقُلْـتُ لَـهٗ

لَـقَـدْ ظَـفَـرْتَ بِـحَبْـلِ الـلّٰـهِ فَـاعْتَصِمِ

اِنْ تَتْـلُهَـا خِيْـفَةً مِّـنْ حَـرِّنَـارِ لَـظٰـى

اَطْـفَـاْتَ حَـرَّلَـظٰـى مِنْ وِّرْدِ هَـا الشِّيَمِ

كَـاَنَّهَـا الْـحَـوْضُ تَبْيَـضُّ الْـوَجُوْهُ بِـهٖ

مِـنَ الْـغُـصَـا۔ةِ وَقَدْ جَـآءُوْهُ كَـالْحُمَمِ

وَكَـالـصِّـرَاطِ وَكَـالْـمِيْـزَانِ مَعْدِلَةً

فَـالْقِسْطُ مِنْ غَيْـرِ هَـافِـىْ النَّـاسِ لَمْ يَقُمِ

لَاتَـعْـجَبَـنْ لِـحُسُـوْدٍ رَاحَ يُـنْـكِـرُهَـا

تَـجَـاهُلًا وَّهُـوَعَيْـنُ الْـحَـاذِقِ الْـفَهِمِ

تَدْ تُنْكِـرُ الْعَيْنُ ضَوْءَ الشَّمْـسِ مِنْ رَّمَدٍ

وَّ يُـنْـكِـرُ الْـفَمُّ طَعْمَ الْمَـآءِ مِنْ سَقَمِ

اَلفَصْلُ السَّابِعُ فِىْ اَسْرَائِهٖ وَ مِعْرَاجِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ

يَـا خَيْـرَ مَـنْ يَّـمَمَ الْعَـافُوْنَ سَـاحَتَـهٗ

سَـعْيًـا وَّفَـوْقَ مُتُـوْنِ الْاَيْـنِـقُ الـرُّسُـمِ

وَمَـنْ هُـوَالْاٰيَةُ الْـكُبْـرٰى لِـمُـعْتَبِـرٍ

وَّمَـنْ هُـوَالـنِّـعْمَةُ الْعُظْمٰى لِمُغْتَنَمِ

سَـرَيْـتَ مِـنْ حَـرَمٍ لَّيْلًا اِلٰـى حَـرَمٍ

كَـمَـا سَـرَى الْبَدْرُ فِىْ دَاجٍ مِّنَ الظُّلَمِ

وَبِـتَّ تَـرْقٰـىَ اِلٰـى اَنْ نِّـلْـتَ مَـنْـزِلَةً

مِـنْ قَـابَ قَـوْسَيْـنِ لَمْ تُدْرَكْ وَلَمْ تُـرَمِ

وَقَـدَّ مَتْكَ جَـمِيْـعُـالْاَنْبِيَـآءِ بِهَـا

وَالـرُّسُلِ تَقْدِيْمع مَخْدُوْمٍ عَلٰى خَدَمِ

وَاَنْـتَ تَـخْتَـرِقُ السَّبْعَ الـطِّبَـاقَ بِهِمْ

فِـىْ مَـوْكِبٍ كُنْتَ فِيْـهِ صَاحِبَ الْعَلَمِ

حَتّٰـى اِذَا الَـمْ تَـدَعْ شَـاءً وَّ الْـمُسْتَبِـقِ

مِـنَ الـدُّ نُـوِّوَلَا مَـرْقًـى لِّـمُسْتَـلِـمِ

حَـفَـضْـتَ كُـلَّ مَـقَـامٍ بِلَاضَـا فَةٍ اِذْ

نُوْدِيْتَ بِالرَّفْعِ مِثْلَ الْمُفْرَدِ الْعِلَمِ

كَيْمَا تَفُوْزُ بِوَصْلٍ اَيِّ مُسْتَنِزٍ

عَنِ الْعُيُوْنِ وَسِرٍّ اَيِّ مُكْتَتَمِ

فَخَرْتَ كُلَّ فَخَارٍ غَيْرَ مُشْتَرَكٍ

وَجُزْتَ كُلَّ مَقَامٍ غَيْرَ مُزْدَحَمِ

وَجَلَّ مِقْدَارُ مَا وُلِّيْتُ مِنْ رُّتَبٍ

وَعَزَّ اِدْرَاكُ مَا اُوْلِفْتَ مِنْ نَعَمِ

يُسْرٰى لَنَا مَعْشَرَ الْاِسْلَامِ اِنَّ لَنَا

مِنَ الْعِنَايَةِ رُكْنًا غَيْرَ مُنْهَدِمِ

لَمَّا دَعَى اللّٰهُ دَاعِيْنَا لِطَاعَتِهٖ

بِاَكْرَمِ الرُّسُلِ كُنَّا اَكْرَمَ الْاُمَمِ

اَلْ فَصْلُ الثَّامِنُ فِيْ جِهَادِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم

رَاعَتْ قُلُوْبَ الْعِدٰى اَنْبَآءُ بِعْثَتِهٖ

كَنَبْأَةٍ اَفَلَتْ غُفْلًا مِّنَ الْغَنَمِ

مَازَالَ يَلْقَاهُمْ فِيْ كُلِّ مُعْتَرَكٍ

حَتّٰى حَكَوْ بِالْقَنَا لَحْمًا عَلٰى وَضَمِ

وَدُّوا الْفِرَارَ فَكَادُوْ يَغْبِطُوْنَ بِهٖ

اَشْلَآءَ شَالَتْ مَعَ الْعِقْبَانِ وَالرَّخَمِ

تُمْضِي اللَّيَالِيْ وَلَا يَدْرُوْنَ عِدَّتَهَا

مَا لَمْ تَكُنْ مِنْ لَيَالِي الْاَشْهُرِ الْحُرُمِ

كَاَنَّمَا الدِّيْنُ ضَيْفٌ حَلَّ سَاحَتَهُمْ

بِكُلِّ قَوْمٍ اِلٰى لَحْمِ الْعِدٰى قَرِمِ

يَجُرُّ يَخْرَخَمِيْسٍ فَوْقَ سَابِحَةٍ

يَرْمِيْ بِمَوْجٍ مِّنَ الْاَبْطَالِ مُلْتَطِمِ

مِنْ كُلِّ مُنْتَدِبٍ لِلّٰهِ مُحْتَسِبٍ

يَسْطُوْا بِمُسْتَاصِلٍ لِلْكُفْرِ مُصْطَلِمِ

حَتّٰى غَدَتْ مِلَّةُ الْاِسْلَامِ وَهِيَ بِهِمْ

مِنْ بَعْدِ غُرْبَتِهَا مَوْصُوْلَةَ الرَّحِمِ

مَكْفُوْلَةً اَبَدًا مِّنْهُمْ بِخَيْرِ اَبٍ

وَخَيْرِ بَعْلٍ فَلَمْ يَتَمْ وَلَمْ تَئِمِ

هُمُ الْجِبَالُ فَسَلْ عَنْهُمْ مَصَادِمَهُمْ

مَاذَا رَاٰ مِنْهُمْ فِيْ كُلِّ مُصْطَدَمِ

وَسَلْ حُنَيْنًا وَّسَلْ بَدْرًا وَّسَلْ اُحُدًا

فَصُوْلُ حَتْفٍ لَّهُمْ اَذْهٰى مِنَ الْوَخَمِ

اَلْمُصْدَرِي الْبِيْضِ حُمْرًا بَعْدَمَا وَرَدَتْ

مِنَ الْعِدٰى كُلِّ مُسْوَدٍّ مِّنَ اللِّمَمِ

وَالْكَاتِبِيْنَ بِسُمْرِ الْخَطِّ مَا تَرَكَتْ

اَقْلَا مُهُمْ حَرْفَ جِسْمَ غَيْرَ مُنْعَجِمِ

شَاكِي السِّلَاحِ لَهُمْ سِيمَا تُمَيِّزُهُمْ

وَالْوَرْدُ يَمْتَازُ بِاسِّيمَا مِنَ السَّلَمِ

تُهْدِيٓ اِلَيْكَ رِيَاحُ النَّصْرِ نَشْرَهُمْ

فَتَحْسَبُ الزَّهْرَفِي الْاَكْمَامِ كُلَّ كَمِيْ

كَاَنَّهُمْ فِيْ ظُهُوْرِ الْخَيْلِ نَبْتُ رُبًا

مِنْ شِدَّةِ الْحَزَمِ لَا مِنْ شِدَّةُ الْحُزُمِ

طَارَتْ قُلُوْبُ الْعِدٰى مَنْ يَاسِهِمْ فَرَقًا

فَمَا تُفَرِّقُ بَيْنَ الْبَهْمِ وَالْبُهَمِ

وَمَنْتَكُنْ بِرَسُوْلِ اللّٰهِ نُصْرَتُهُ

اِنْتَلْقَهُ الْاُسْدُ فِيٓ اٰجَامِهَا تَجِمِ

وَلَنْ تَرٰى مِنْ وَّلِيٍّ غَيْرَ مُنْتَصِرٍ

بِهٖ وَلَامِنْ عَدُوٍّغَيْرَ مُنْقَصِمِ

اَحَلَّ اُمَّتَهُ فِيْ حِرْزِ مِلَّتِهٖ

كَاللَّيْثِ حَلَّمَعَ الْاَشْبَالِ فِيٓ اَجَمِ

كَمْ جَدَّلَتْ كَلِمَاتُ اللّٰهِ مِنْ جَدَلٍ

فِيْهِ وَكَمْ خَصَمَ الْبُرْهَانَ مِنْخَصَمِ

كَفَاكَ بِالْعِلْمِ فِي الْلُمِّيِّ مُعْجِزَةً

فِي الْجَاهِلِيَّةِ وَالتَّادِيْبِ فِي الْيُتَمِ

اَلْفَصْلُ التَّاسِعُ فِی التَّوَسُّلُ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمْ

خَدَمْتُهٗ بِمَدِیْحٍ اَسْتَقِیْلُ بِهٖ
ذُنُوْبَ عُمْرٍ مَّضٰی فِی الشِّعْرِ وَالْخَدَمِ

اِذَاقَلَّدَا نِیَ مَا تَخْشٰی عَوَاقِبُهٗ
کَاَنَّنِیْ بِهِمَا هَدْیٌ مِّنَ النَّعَمِ

اَطَعْتُ غَیَّ الصِّبَا فِی الْحَالَتَیْنِ وَمَا
حَصَّلْتُ اِلَّا عَلَی الْاٰثَامِ وَالنَّدَمِ

فَیَا خَسَارَةَ نَفْسِیْ فِیْتِجَارَتِهَا
لَمْ تَشْتَرِلَّذِیْنَ بِالدُّنْیَا وَلَمْ تَسُمِ

وَمَنْ یَّبِعْ اَجِلًا مِّنْهُ بِعَاجِلِهٖ
یَبِنْ لَّهُ الْغَبْنُ فِیْ بَیْعٍ وَّفِیْ سَلَمِ

اِنْ اٰتِ ذَنْبًا فَمَا عَهْدِیْ بِمُنْتَقِضٍ
مِنَ النَّبِیِّ وَلَاحَبْلِیْ بِمُنْصَرِمِ

فَاِنَّ لِیْ ذِمَّةً مِّنْهُ بِتَسْمِیَتِیْ
مُحَمَّدًا وَّهُوَاَوْفَی الْخَلَقِ بِالذِّمَمِ

اِنْ لَّمْ یَکُنْ فِیْ مَعَادِیْ اٰخِذًابِیَدِیْ
فَضْلًا وَّاِلَّا فَقُلْ یَازَلَّةَ الْقَدَمِ

اَلْفَصْلُ الْعَاشِرُ فِى الْمُنَاجَاتِ وَعَرَضُ الْحَالْ

يَـااَكْـرَمُ الْـخَـلْقِ مَـالِـىْ مَنْ اَلُـوْذُبِـهٖ
سِـوَاكَ عِـنْـدَ حُـلُـوْلِ الْحَـادِثِ الْعَمَمِ
وَلَـنْ يُّـضِيْـقَ رَسُـوْلَ اللّٰـهِ جَـا هُكَ بِىْ
اِذَا الْـكَـرِيْـمُ تَـجَـلّٰـى بِـاسْـمِ مُنْتَقِمِ
فَـاِنَّ مِـنْ جُـوْدِكَ الـدُّنْيَـا وَضَـرَّتَهَـا
وَمِـنْ عُـلُـوْمِكَ عِـلْـمَ الـلَّـوْحِ وَالْـقَـلَمِ
يَـانَـفْـسُ لَاتَـقْـنَطِىْ مِنْ زَلَّةٍ عَظُمَتْ

حَـاشَـاهُ اَنْ يُّـحْـرِمَ الرَّاجِىْ مَكَـارِمَـهٗ
اَوْيَـرْجِـعَ الْـجَـارُ مِـنْـهُ غَيْـرَ مُحْتَـرَمِ
وَمُـنْـذُ اَلْـزَمْـتُ اَفْـكَـارِىْ مَدَآئِحُـهٗ
وَجَـدْتُّـهٗ لِـخَلَاصِـىْ خَيْـرَ مُـلْتَـزِمِ
وَلَـنْ يَّـفُـوْتُ الْـغِـنٰـى مِـنْـهُ يَدًا تَرِبَتْ
اِنَّ الْـحَيَـا يُـنْبِـتُ الْاَزْهَـارَ فِـى الْاَكَمِ
وَلَـمْ اُرِدْ زَهْـرَةَ الـدُّنْيَـا الَّتِىْ اقْتَطَفَتْ
يَـدَازُ هَيْـرٍ بِـمَـا اَثْـنٰـى عَـلٰـى هَـرَمِ

اِنَّ الْكَبَآئِرَ فِى الْغُفْرَانِ كَاللَّمَمِ

لَعَلَّ رَحْمَةَ رَبِّىْ حِيْنَ يَقْسِمُهَا

تَاْتِىْ عَلٰى حَسَبِ الْعِصْيَانِ فِى الْقِسَمِ

يَارَبِّ وَاجْعَلْ رَجَآئِىْ غَيْرَ مُنْعَكِسٍ

لَدَيْكَ وَاجْعَلْ حِسَابِىْ غَيْرَ مُنْخَرِمِ

وَالْطُفْ بِعَبْدِكَ فِى الدَّارَيْنِ اِنَّ لَهٗ

صَبْرًا مَّتٰى تَدْعُهُ الْاَهْوَالِ يَنْهَزِمِ

وَاْذَنْ لِّسَحْبِ صَلٰوةٍ مِّنْكَ دَآئِمَةً

عَلَى النَّبِىِّ بِمُنْهَلٍ وَّمُنْسَجِمِ

ثُمَّ الرِّضَا عَنْ اَبِىْ بَكْرٍ وَّعَنْ عُمَرٍ

وَّعَنْ عَلِىٍّ وَّعَنْ عُثْمَانَ ذِى الْكَرَمِ

وَالْاٰلِ وَالصَّحْبِ ثُمَّ التَّابِعِيْنَ لَهُمْ

اَهْلِ التُّقٰى وَالنُّقٰى وَالْحِلْمِ وَالْكَرَمِ

مَارَنَّحَتْ عَذَبَاتِ الْبَانِ رِيْحُ صَبًا

وَاَطْرَبَ الْعِيْسَ حَادِى الْعِيْسِ بِالنَّغَمِ

فَاغْفِرْ بَنَا شِرِهَا وَاغْفِرْ لِقَارِئِهَا

سَاَلْتُكَ الْخَيْرَ يَا ذَاالْجُوْدِ وَالْكَرَمِ

कसीदा बुरदा शरीफ

बिस्मील्लाह हिर्ररहमानिर्ररहीम

अलह म्दु लिल्लाहि मुन्शील्खल्कि मीन् अद मी
सुम्मस्सलातु अलल्- मुख्तातारि फील् कदमी
मौलाया सल्लि व सल्लिम् दाईमन् अबदन्

अला हबीबिक खयरिल्- खल्कि कुल्लिहिमी

सब तारीफें अल्लाह की है जो पैदा करने वाला है मखलूक का अदम से ऐ अल्लाह रहमत नाजिल फरमा नबी-ऐ-उम्मी पर दायमी और अबदी, दरुद हो उसपर जो तेरा हबीब है जो खैर हें खल्क के।

अमिन् तजक्कुरि जीरानींम बि जीसलमी
मज़ज्-त दम्अन् जरा मिंम्मुक्लतीन् बिदमी

जीसलम के हमसायगान की याद में तेरी आखों से आँसू बह रह हैं जिनमें खून मिला हुआ है

अम्हब्बतिर्रीहु मिन् तिल्काइ काजिमतीन्
अव् अव् मदल्- बरकु फीज्जुलमाइ मिन् इदमी

काजिमा यानी मदीना मुनव्वरा की तरफ से दिलकश हवा चल पडी है या अंधेरी रात को बादल से बिजली चमकी है

फमा लिअय्नय्-क इन् कुल्-तक्फुफा हमता
वमा लिकल्बि-क इन् कुल्तस् -तफिक् यहिमी

तेरी आँखों को क्या हुआ कि तु उन्हें आँसू रोकने को कहता है मगर
ये बे इख्तियार आँसू बहाए जा रही है अस लिए ही तेरे दिल को क्या हुआ कि वो सम्भालने कि बजाए और गमनाक हो रहा है

अयह् सबुस्सब्बु अन्नल्- हुब्बा मुन्कतिमुन्
माबय्-न मुन्साजिमींम्मिनहु व मुद्तारमी

क्या मुहब्बत में रोने वाला आशिक ये ख्याल करता है कि बहते हुए आँसूओं और सुखता दिल की आड़ में इसकी मुहब्बत का राज़ छिप जायेगा हरगिज़ इस तरह छिप नहीं सकता

लव् लाल् हवा लम् तुरिक् दमअन् अला तललीन्
व ला अरिक्त लिज़िक्रिल्-बानि वल्-अलमी

अगर तु हुजूर (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) का आशिक नहीं तो खंडहरात यानी मक्का मुकर्रमा के आसारात पर क्युँ आँसू बहा रहा है ऐसे ही मुहब्बत में दरख्त, जान और कोह अज़म की याद में क्युँ रातों को जागता रहता है

फकय्फ तुन्किरु हुब्बंम्- बअ्-द मा शहिदत
बिही अलय्-क उदूलुद्दम्इ वस्साकमी

तेरी मुहब्बत पर तेरे आँसू और तेरी बीमारी गवाही दे रही है, ये दोनों पक्के और सच्चे गवाह हैं तो फिर तु अपने इश्क से किस तरह इन्कार कर सकता है

व अस्बतल्- वजदु खत्तय् इबरतींव्- वदनंयामिस्लल्-
बहारि अला खद्दय्-क वल्अनमी

और दर्दे मुहब्बत ने तेरे रुख्सारों पर आँसू और लागरी (कमजोरी) के बाइस ज़र्द गुलाब और गुलनार की मानिन्द गम के नुमायां आसार पैदा कर दीये हैं

नअम् सारा तय्फु मन् अहवा फअर्कनी
वल्हुब्बु यअतरिदुल्लज़्ज़ातु बिल्अलमी

रात मुझे मुहब्बत का ख्याल आ गया जिसके कारण मैं रात भर जागता रहा हुँ, मुहब्बत दुनियावी लज़्ज़तों को गम की वजह से फना कर देती है या इसमें माइल हो जाती है

या लाइमी फील्- हवल्- उजरिय्यी मअज़िरतन्

मिन्नी इलय्क वलव् अन्साफ्त लम् तालुमी

ऐ मेरे इष्क पर मलामत करने वाले मेरा इश्क बनी अज़रा के जवानों जैसा है जो कभी खत्म नहीं होता लिहाजा मेरी माअज़रत कबूल कीजीये

अदत्क हालिय सिर्री बिमुस्ततिरीन्
अनील्- वुशाति वलादाई बिमुन्खसिमी

मेरे इश्क का तज़किरा दुसरों तक भी पहुँच चुका है अब ना तो मेरा राजे मुहब्बत छिप सकता है और ना मेरा मर्ज़ रफा हो सकता है

महहद्तानीन्नुस्ह लाकिन्ल्लस्तु अस्मउहू
इन्नल्- मुहिब्ब अनील् उज़्ज़ालि फी सामी

ऐ नसीहत करनेवाले बेशक तु खुलूस से मुझे नसीहत करता है लेकिन मैं इसे कतअन नहीं सुनता हुँ क्युँकि आशिक मलामत करनेवालों की मलामत से बेनियाज़ हो जाता हुँ

इन्नीत्ताह म्तु नासीह श्शय्बि फी अज़ाली
वश्शय्बु अबाअदु फी नुसाहीम्मीनत्तुह मी

ऐ नासेह (नसीहत करनेवाले) हर चंद कि मैं अपनी पीरी को भी अपनी मलामत के बारे में मवरिदे इल्जाम ठहर चुका हुँ हालाँकि पीरी नसीहत करने के ऐतबार से किस्मत का इल्जाम लगाने से बहुत दुर है

अल्फसलुस्सानी फी मन्इ हवन्नफ्सी

दुसरी फसल - बाज रखने ख्वाहिशे-नफसानी से अपने को

फिइन्न अम्मा रती बीस्सुइ मात्तअजत्
मीन् जह्लिहा बिनजीरीश्शय्बि वल् हरमी

बिला शुब्हा मेरे नफ्से अम्मारा ने जो मुझे बुराई की दावत देता रहता है मैंने अपनी नादानी से डराने वाले बुढ़ापे की नसीहत को कबूल ना किया

वला अअद्त्तु मीनल्- फीअलिल् जमीलि किरा
दय्फीन् अलम्म बिरासी गय्-र मुह्ताशमी

और इस मेहमान के लिए जो अचानक मेरे सर पर आ गया मेरे नफ्से अम्मारा ने नेक उमूर (कामों से) से इसकी कोई मेहमान नवाजी ना की

लव् कुन्तु अअलमु अइन्नी मा उवक्किरुहू
कताम्तु सिर्रम् बदाली मीन्हु बील् कतमी

अगर मैं जानता होता कि मैं इस मेहमान की इज़्ज़त नहीं करुँगा तो मैं राजे पीरी को यानी सफेद बालों को वस्मा (खिजाब) में छुपा लेता

मंल्ली बिरद्दि जिमाहीम्मीन् गवायतिहा
कमा युरद्दु जिमाहुल् खय्लि बिल्लुजुमी

कौन है जो मेरे गुमराह नफ्स को सरकशी से रोकने का जिम्मा ले, जिस तरह कि सरकश घोड़ों को लगाम डालने से रुक जाता है

फला तरुम् बिल् मआसी कस्र शह्व तिहा
इन्नत्तआम युकव्वी शह्वतन्नहिमी

सरकश नफ्स की ख्वाहिशात को गुनाहों से खत्म करने का इरादा मत कर क्युँकि खाना ज़्यादा खाने वाले की ख्वाहिश को मजीद खाने का आदी बना देता है

वन्नफ्सु कात्तिफ्लि इन् तुह्मील्हु शब्ब अला

हुब्बीर्रि- दाइ व इन् तफ्तिम्हु यन्फतिमी

नफ्स की मिशाल दुध पीने वाले बच्चे की तरह है जिसे दुध पीने पर खुली छुट दे दी जाये तो वो दुध की मुहब्बत ही में जवान होगा और अगर उसे दुध छुड़ा दिया जाये तो वो छोड़ देगा

फास्रिफ् हवाहा व हाजिर् अन् तुवल्लियहू इन्नल्- हवा मा तवल्ला युस्मि अव् यसिमी

इस नफ्स को अपनी ख्वाहिश से रोक दे और खूब बाखबर रह कि कहीं तो उसे अपना हाकिम ना ले क्युँकि ख्वाहिशे नफ्स जिस पर गलबा पा लेती है तो उसे हलाक़ कर देती या काबिल बना देती है

व राइहा व हिय फील्- अअमालि साइमतुन् व इन् हियस्ताख्लतील्- मरआ अफला तसिमी

अपने नफ्स की पूरी तरह हिफाजत कर जबकि वो आ'माल में चर रहा हो और अगर इस चारागाह को अच्छा तसव्वूर करे तो मत चरने दे

कम् हस्सनत् लज़्ज़तंल्लिल्- मरइ कातिलतुन् मीन् हयसु लम् रिअन्नस्सम्म फीद्दसमी

नफ्स कई बार अपनी ख्वाहिशों को बना संवार कर पेश करता है जो उसके लिए नुकसानदेह होती है वो उन्हें जानता कि बाज दफा मजेदार खाने में जहर मिला होता है

वख्शद्द- साइस मिन् जुइंव्व मिन् शबइन् फरुब्बा मख्मसातीन् शर्रुम्मिनत्तुखमी

फाकामस्ती और पेट भर कर खाने के खुफीया नुकसान से डरता रह

क्युँकि बाज अवकात भूख पेट भर कर खाने से ज्यादा नुकसान करती है

वस्तफ्रिगिद्दम्अ मिन् अयनिन् कदिम्तलअत् मिनल् महारिमि वल्जम् हिम्यतिन्नदमी

अपनी आँखों को जो फित्ना में मुबतिला है खूब रो रोकर पाकीज़ा करे और गुनाहों पर नादिम होकर तौबा करे फिर उस तौबा पर कायम हो जा

वखालिफिन्नफ्स वश्शयतान वअसिहिमा व इन् हुमा मह्हदाकन्नुसह फइत्तिहिमी

नफ्स और शैतान की हर तरह मुखालिफत कर और उनके कहने पर बिलकुल ना चल अगर वो बतरीके इखलास भी कोई नसीहत करे तो भी उसे छोड़ना ख्याल कर

वला तुतीअ मिन्हुमा खस्मंव्-वला हकमन् फअन्त तअरिफु कयदल्- खस्मि वल्- हकमी

उन दोनों यानी नफस और शैतान की किसी हालत में भी इताअत ना कर ख्वाह वो मुखालिफत करें या आदिल बनकर इन्साफ करें उनके मक्र व फरेब से खूब बाखबर रह

अस्तग़फिरुल्लाह मिन् कव्लिन बिला अमलीन् लकद् नसब्तु बिही नसलंल्लिज़ी अकुमी

बेअमल गुफ्तगू से मैं अल्लाह की पनाह माँगता हुँ क्युँकि बेअमल कौस कहना बिला शुब्हा बाँझ औरत की तरफ औलाद मन्सूब करना है

अमर्तुकल्- खय्र लाकिंम्माअ तमर्तु बिही
वमास्तकम्तु फमा कवली लकस्- तकिमी

दुसरों को नेकी का हुक्म देता हुँ लेकिन मैं खूद उसपर अमल नहीं करता, तो जब मैं खूद सीधे रास्ते पर नहीं चलता तो मेरा ये कहना कि तु सीधी राह पर चल आखिर कैसे तुझपर असर अन्दाज़ हो सकता है

वला तजव्वद्त्तु कब्लल्- मव्ति नाफिलतन्
वलम् उसल्लि सिवा फरदींव्- व लम् अस्मी

मैने मौत से पहले नफल इबादत का कुछ भी जादेराह (सफर का सामान) तैयार नहीं किया, ना मैनें फर्ज़ नमाज़ के अलावा नफली नमाज़ पढ़ीऔरना मैनेफर्ज़रोज़ेकेअलावा नफलीरोज़ेरखे

अल् फस्लुस्सालिसु फी मदहुन्नबीय्यी सल्लल्लाहु अलय्हि व सल्लम्

तीसरी फसल - तारीफ में हुजूर नवी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की

जलम्तु सुन्नत मन् अह्यज्जलामि इला
अनिश् ताकत् कदमा- हुद्दुर मिंव्- वरमी

हाय मैने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की सुन्नत की इत्तबा नहीं की और उनकी इबादत का ये आलम था कि उन्होंने अन्धेरी रात में इतनी इबादत की कि आपके दोनों पाँव मुबारक में वरम (सुजन) आ गये

वशद्द मिन् सगबिन् अह्शाअहू व तावा
तहताल् हिजारतान् कश्हंम्मुत्रफल्- अदमी

वो जाते अकदस जिसने भूक की शिद्दत के बायस अपने पेट को कसा और अपने नाजुक पेट पर पत्थर बाँध लिया

वरा वदत्हुल्- जिबालुश्शुम्मु मिन् ज़हबिन्
अन् नफ्सिही फअरा हा अय्यामा शममी

सोने के बुलन्द पहाड़ों ने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को फुसलाने की कोशिश की मगर हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने उनकीइल्तजापर इस्तगना (बेपरवाही, बेफीक्री) का इज़हारकिया

व अकद्दत् ज़ुह्दहू फीहा जरूरतुहू
इन्नज्जरूरत ला तअदू अलल् इसमी

और दुनियावी इहतियाज (ख्वाहिशात, हाजत, चाहत) ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के जुहद व तक्वा को और भी मजबूत कर दिया, बेशक दुनियावी हाजत व असमत नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर गलबा नहीं पा सकती

व कय्फ तद् ऊ इलद्दुन्या जरुरतु मन्
लव्लाहु लम् तखरुजिद्दुन्या मिन्ल्- अदमी

दुनिया की हाजत व जरुरत ऐसी बुलन्द व बाला हस्ती को किस तरह अपनी तरफ माइल कर सकती थी बल्कि हकिकत ये है कि अगर आप ना होते तो दुनिया अदम से वुजूद ही में ना आती

मुहम्मदुन् सय्यिदुल् कव्नयनि वस्सकलयनि
वल् फरीकयनि मिन् अरबींव्- व मिन् अजमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम कौनों मकाँ और उन्स व जान के सरदार हैं और आप दोनों फरीकैन यानी अरब व अजम के भी सरदार हैं

नबिय्युनल्- आमिरुन्नाही फला अह दुन्
अबर्र फी कव्लिन् लामिन्हु वला नअमी

हमारे नबी अच्छाइयों का हुक्म देनेवाले और बुराई से रोकने वाले हैं और उनसे बढ़कर कोई रास्तगो (सच बोलनेवाले) नहीं किसी सवाल का जवाब देने में आपसे बढ़कर कोई सादिक नहीं ख्वाह जवाब हाँ में हो या ना में

हुवल्- हबीबुल्लजी तुरजा शफाअतुहू
बिकुल्लि हवलींम्मिनल्- अहवालि मुक्तहिमी

आप अल्लाह तआला के ऐसे महबूब हैं कि हर किस्म की मुसीबत और खतरे में उनकी शफाअत की उम्मीद की जा सकती ह

दआ इलल्लाहि फल्-मुस्तम्सिकुन बिही
मुस्तम्सिकुन बिहब्लीन् गय्रि मुन्फसिमी

आप (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) ने लोगों को दावत दी कि अल्लाह के दीन की तरफ आओ पस जिन लोगों ने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की दावत कूबूल कर लिया तो वो ऐसी रस्सी को थामनेवाले हैं जो कभी टुटने वाली नहीं है

फाकन्नबीय्यीन फी खल्कींव् वफीखुलूकीन्
वलम् यदानूहु फी इल्मींव्-वलाकरमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम अपनी सूरत और किरदार के ऐतबार से तमाम अंम्बिया अलयहिस्सलाम पर फौकियत रखते हैं और कोई दुसरा नबी आपके मकाम और इल्म पर नहीं पहँच सकता

व कुल्लुहुम्मिर्रसुलिल्लाहि मुल्तमिसुन्
अरफंम्मिनल्-बह्रि अव् रश्फंम्मिनद्दीयमी

तमाम अंम्बिया अलयहिस्सलाम हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के दरिया-ए-मारिफत और रहमत की बारिश से एक चुल्लू या एक कतरा हासिल करने की इल्तिमास (इल्तिजा, दरख्वास्त, गुजारीश) करते हैं

व वाकिफुन लदय्हि इन्द हद्दिहिमी
मिन्-नुक्ततिल-इल्मिअव्मिन् शक्लतिल्-हिकमी

तमाम अंमबिया अलयहिस्सलाम हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के दरबार में अपने अपने मकाम पर खड़े हैं और सब आपकी किताबे इल्म में से एक लफ्ज और किताबे हुक्म में से ऐराब (बद्दु, ग्रामीण) के जैसी हैसीयत रखते है

फहुवल्लजी तम्मा मअनाहु व सुरतुहू
सुम्मस्तफाहु हबीबन् बारीउन्नसमी

पस आपकी जाते अकदस वो है जिनकी सीरत मुकम्मिल हो गयी है फिर अल्लाह तआला ने आपको अपना हबीब बनाकर मकामे महबूबियत अता फरमा दिया है

मुनज्जहुन् अन् शरीकीन् फी महासिनिही
फजवहरुल्- हुस्नि फीहि गय्रु मुन्कसिमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के मुहासिन जामे और मुनज्जा (ऐबों से बरी, पाक) में कोई दुसरा उनका शरीक नहीं हो सकता पस जो हुस्न हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का है वो तकसिम होने वाला नहीं है

दअमाद्द अत्हुन्नसारा फी नबीय्यिहि मी
वह्कुम् बिमा शिअत मदहन् फीहि वह्तकिमी

ईसाइयों ने अपनी नबी के बारे में जो दावा किया उसे छोड़कर बाकी जो तमाम तुम्हारे दिल में आये हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की तारीफ करो और अच्छे तरीके से मिदह् सराई करो

फन्सुब् इला जातिही मा शिअत मिन् शरफीन्
वन्सुब् इला कद्रिही माशिअत मिन् इजमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जाते गिरामी के मुताल्लिक जो चाहें आ'ला निस्बत कायम करें और आपके मन्सब के मुताल्लिक जो अजमत मन्सूब करना चाहें करें

फइन्न फज्-ल रसुलिल्लाहि लय्-स लहू
हदुन् फयुअरिबु अन्हु नातिकुम्-बिफमी

पस बेशक हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की फजीलत की कोई हद नहीं कि कोई बोलनेवाला अपनी जबान से आपकी फजीलत बयान कर सके

लव्ना सबात् कदुरहू आयातुहू इजमन्
अह्य अस्मुहू हीन युद्आ दारिसिर्- रिममी

बारगाहे रब्बूल इज्जत में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का वो मरतबा है कि अगर उस मरतबे के मुताबिक मोअज्ज़ात दिए जाते तो मोअज्ज़ात की ये हद होती कि जब कभी हुजूर सल्लल्लाहु असयहि व सल्लम का नाम मुबारक बोसीदा हड्डीयों पर पढ़ा जाता तो जिन्दा हो जाती

लम् यम्तहिना बिमा ताअयल् उकुलु बिही
हिर्सन् अलय्ना फलम् नर्तब् व लम् नहिमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने अपनी शफकत की बिना पर हमें ऐसी चीजों से नहीं आज़माया कि जिनसे लोग हैरान हो जाते हैं इसलिए हम ना शक और ना वहम में पड़ें और ना हैरतज़दा होंए

अअयल्वरा फहुम् मअनाहु फलय्स युरा
लिल्कुर्बि वल बुअदि फीहि गय्रु मुन्फहिमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के फहम के कमालातने सब को हेच कर दिया पस कोई शख्स जो हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के करीब हो या दूर हो वो आपके कमालात बयान करने में आजिज़ है

कश्शम्सि तज्हरु लिल्अय्नय्नि मिम् बुउदिन्
सगीरतंव्-वतुकिल्लुत्तार्फ मिन् अममी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम सूरज की तरह हैं जो दूर से छोटा सा नजर मगर नज़दीक से आँख को आजिज़ कर देता है

वकय्फ युद्रिकु फीद्दन्या हकीकतहू
कवमुन् नियामुन् तसल्लू अन्हु बिलहुलुमी

और वो लोग समझदार नहीं वो हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की हकीकत से महरूम रहकर अपने ख्वाब व ख्याल में गुम हैं वो इस दुनिया में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की हकीकत को कैसे पा सकते हैं

फमब्लगुल्-इल्मि फीहि अन्नहु बसरुन्
व अन्नहु खय्रु खल्किल्लाहि कुल्लिहिमी

पस हमारे इल्म की इन्तिहा ये है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व

सल्लम सबसे आला बसर हैं मगर हकीकत में वो सारी मखलूक से अफजल हैं

व कुल्लु अय्यिन् अताअर्रसुलुल्- किरामु बिहा फइन्नमाअत्तासलत् मिन्नुरिही बिहिमी

और हर तरह का मुअज्जज़ा जो आपसे पहले हर नबी को मिला वो दर हकीकत हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के नूर हीसे मिला है

फइन्नहु सम्सुन् फजलिन् हुम् कवाकिबुहा युज्हिर्न अन्वारहा लिन्नासि फिज्जुलमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम आफताब हैं और दूसरे अंम्बीया इकराम सितारों की मानिन्द हैं और आफताब लोगों के लिए अन्धेरे में अपने अनवार जाहिर कर रहा है

हत्ता इजात्तलअत् फिल्कव्नय्नि अम्म हुदा हाल्आलमीन व अहयात् साइरल्-उममी

यहाँ तक कि जब ये आफताब खूब कमाल की हद तक रोशन हुआ तो इसकी रोशनी तमाम दुनिया में फैल गई और उसने गिरोहों को जिन्दा कर दिया

अक्रमु बिखल्कि नबीय्यिन् जानहु खुलुकुन् बिल् हुस्नि मुस्तमिलिम् बिल्बशरि मुत्तसिमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की जात कैसी इज्जत वाली है कि आपके अखलाक़ ने इसे और भी दोबाला कर दिया है आप हुस्ने रुख जेबा में साहबे बशारत हैं

काज्जह्रि फी तरफिव्- वल्बदरि फी शरफीन वल् बहरि फी करमिव्-वदह्रि फी हिममी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ताज़गी में शगूफे बुजूर्गी में चौदहवीं रात का चाँद सखावत में दरिया हिम्मत में बुलन्द दहर की तरह हैं

कअन्नहु व हुव फरदुन् फी जलालतिही फी अस्करिन् हीन तल्काहु व फी हशमी

गोया कि आप अपने जमाल व जलाल में यक्ता हैं जब कभी तु हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को अकेला देखेगा तो तुझे ऐसा मालूम होगा कि आपके साथ बड़े गुलाम और सिपाहियों का लश्कर है

कअन्नमाल्लूअ लूउल्- मक्नूनु फी सदफीन् मिन् मअ-द नय् मन्तकीम्-मिन्हु व मुबतसमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की बोलने की एक खजाना है और आपके तबस्सुम फरमाने की ताकत दूसरा खजाना है, जब इन दोनों खजानों से कोई बात निकलती है तो वह उस मोती के मानिन्द है जो सिप में छिपा होता है

लाती-ब यअदिलु तुरबन् ज-म अअज-ुमहु तूबा लिमुन्तशिकीम्- मिन्हु व मुल्तसिमी

कोई खुश्बू उस खाक के बराबर नहीं हो सकती जिसने आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के जिस्मे अतहर को अपने अन्दर छुपाया हुआ है, यानी रोजा-ए-अतहर की खाक हर किस्म की मिट्टी से अफजल है

अल्फस्लुर्राबिउ फी मव्लिदिही

अलयहिस्सलातु वस्सलामु

चौथी फसल - मौलूद नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के बयान में

अबान मवलिदुहू अन् तीबि उन्सुरिही यातीब मुब्तदइंम्मिन्हु व मुखातातमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के जमाना-ए-विलादत ने बसबब हुजूर की पाकी के पाकीज़गी तबा को जाहिर कर दिया, कितना पाक व पाकीज़ा आपका आगाज़ है और ऐसे ही आपका इख्तिताम पाकीज़ा है

यव्मुन् तफर्रस फीहिल्- फूरसु अन्नहुमू कद् उन्जिरू बिहुलूलिल्- बूसि वन्निकमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की विलादत का दिन वह दिन था जब अहले फारस ने अपनी फरासत से ये मालूम कर लिया कि वह अनकरीब सख्ती और अजाब के नुज़ूल से डराए जायेंगे यानी उनपर तन्गी और अज़ाब नाजिल होगा

वबात अय्वानु किस्रा वहुव मुन्सदिऊन् कशम्लि अस्हाबि किस्रा गय्र मुल्तइमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की विलादत के दिन किसरा का महल ऐसे पाश पाश हो गया जैसे नौशैरवाँ का लश्कर तितर बितर हो गया और फिर कभी वो इकट्ठा ना हो सका

वन्नारु खामिदतुल्- अन्फासि मिन् असफीन् अलय्हि वन्नहरु साहियल्- अय्नि मिन् सदमी

आतिशकदा इरान की आग और उसके शोले हमेंशा के लिए ठन्डे हो गये और नहर फुरात बसबब शरमिन्दगी अपनी असल जगह बदल के दूसरी जगह पर बहने लगी

व साअ सावत अन् गादतु बुहय्रतुहा व रुद्दवारिदु हाबिल्- गय्जि हीन जमी

सावा के रहने वाले लोग इस वजह से गमज़दा हो गये कि उनका बहैरा सावा खुश्क हो गया और उस बहयरे पर आनेवाला तिश्ना और नाकाम वापस लौटा दिया गया

कअन्न बिन्नारि मा बिल्माइ मिन् बललिन् हुज्नंव्-व बिल्माइ मा बिन्नारि मिन् जरमी

गोया आग में गम की वजह से पानी की जैसी खासियत यानी तरावट पैदा हो गई और पानी में आग की जैसी खासियत यानी तपिश पैदा हो गई

वल्जिन्नु ताहतिफु वल्अन्वारु सातिअतु वल्हक्कु यज्हरु मिंम्-मअनंव्-वमिन् कलमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की पैदाईश के वक्त जिन्नात आपकी नबूव्वत पर शहादत दे रहे हैं और आपकी नबूव्वत के अनवार चमक रहे हैं और हकीकत बातों और शहदतों से जाहिर हो रही थी

अम्मू व सम्मू फाइलानुल्- बशाइरि लम् तुस्मअ व बारिकतुल्- इन्जारि लम् तुशमी

मुन्किरे हक़ जानबूझकर अन्धे हो गये बावजूद ये कि इससे पहले मुन्जिम उन्हें ये ये खबर दे चुका था उनका झुठा दीन (मजहब) अब बाकी नहीं रहेगा

मींम्बअदि मा अख्बरल् अक्वा-म काहिनुहुम्
बिअन्न दीनहु मुल्- मुअवज्ज लम् यकु मी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के मुताअल्लिक अपने काहनों (ज्योतीषियों) से खबर मिलने के बावजूद वह अन्धे और बहरे हो गये और उन्हें यकीन हो गया था कि उनका टेढ़ा दीन ज्यादा देर कायम नहीं रह सकेगा

वबअ-द माआयनू फील्- उफुकि मिन् शुहुबीन्
मुन्कद्दतींव्-वफ्क मा फील्- अर्दि मिन् सनमी

उन्होने आसमान पर शहाब साकिब टुटते हुए देखा और उसी तरह ज़मीन पर बूतों को गिरते हुए देखा उसके बावजूद वह लोग अन्धे और बहरे रहे

हत्ता गदा अन् तरिकिल्- वह्यि मुन्हजिमुन्
मिन्श्शयातीन यफ्कू ईसर मुन्हजमी

यहाँ तक कि शैतानों पर शहाब साकिब के टुटने के इस कद्र ज्यादा टुकड़े पड़े कि वह आसमान के दरवाजे को छोड़कर एक दूसरे के पीछे भागने लगे

कअन्नहुम् हरबान् अबातालु अब्रहतीन्
अव्अस्करुम् बिल्हसा मिर्राहतयहि रुमी

शयातीन इस तरह भागे की जिस तरह अबराहा की फौज के बहादुर सिपाही बैतुल्लाह पर हमला के वक्त भागे थे या वो कुफ्फार के उस लश्कर की तरह थे कि जिस पर हुजूर पाक सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने कन्करियाँ फेंकी थी और वो भाग गये थे

नबजन् बिही बअ-द तस्बीहीम्- बिबतनिहि मा
नब्जल्- मुसब्बिहि मिन् इहशाइ मुल्तकिमी

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने कन्करियों को इस तरह फेंका था कि वह हाथों से तस्बीह पढ़ती हुई निकलीं जिस तरह कि अल्लाह तआला ने यूनुस अलहिस्सलाम को जब मछसी के पेट से बाहर फेंका तो तस्बीह पढ़ रहे थे

अल्फस्लुल् खामिसु फी मुअजिजतिही अलय्हिस्सलातु वस्सलामु

पाँचवी फसल - मोअजजाते हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के

जाअत् लिदअवतिहिल्- अश्जारुसा जिदतन्
तम्शी इलय्हि अला साकिम् बिलाकदमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के बुलाने पर दरख्त सज्दा करते हुए बगैर पाँव के अपनी पिन्डलियों पर चलते हुए हाजिर हो गया

कअन्नहा सतारत् सतारंल्लिमा कतबात्
फुरूउहा मिम् बअदीइल् खत्ति फील्लकमी

दरख्त जब आपके खिदमते अकदस में हाजिर हुए तो गोया उन दरख्तों

के आने की वजह से जमीन पर सीधी सतरें (लाइन, लकीरें) बन गईं और उन दरख्तों की शाखों ने उन सतरों के दरम्यान में खूबसूरत खत्में किताबत कर दी

मस्लुल् - गमामती अना सा-र साइरतन् ताकीहि हर्र व तीसींल्लिल हजीरिहमी

वो दरख्त उस बादल की तरह थे जो हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को जहाँ वो तसरीफ ले जाते साथ साथ चलते जाते और सरे मुबारक पर साया करते और आपको दोपहर की तेज धूप से महफूज रखते

अक्समतु बिल् कमरिल् मुन्शक्कीन् इन्न लहु मिन् कल्बिही निस्बतंम्- मबरुरतल्- क-समी

मैं शक़ होने वाले चाँद की कसम खा कर करता हुँ कि उस चाँद को हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के कल्बे मुबारक से सच्ची निस्बत थी और मेरी ये कसम सच्ची और पक्की है

वमा हवल्- गारु मिन् खय्रींव्- व मिन् करमीन् व कुल्लु तरफींम् - मिनल्- कुफ्फारि अन्हु अमी

वो गारे सोर काबिले तमसीन है जिसने खैर यानी हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और करम यानी हदरते अबूबकर सिद्दीक रदीअल्लहु तआला अनहु को छिपने के लिए इस तरह मौका फरहाम किया कि तमाम कुफ्फार की आँखें अन्धी हो गई यानी वो आपको देख ना सके

फस्सिद्कि फील्गारि वस्सिद्दीकु लम् य-रमा वहुम् यकूलून मा बिल् गारि मिन् इरमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और हजरत अबूबकर सिद्दीक

रदीअल्लाहु तआला अनहु गार में थे मगर काफिर इस तरह अन्धे हुए कि कहने लगे गार में कोई आदमी नहीं है

जन्नुवल् हमा-म व जन्नुल्- अन्कबूत अला खय्रिल् बरीय्यति लम् तन्स-ज व लम् तहुमी

कुफ्फार ने ख्याल किया कि इस गार के मुँह पर जिसमें आप दोनो छिपे थे ना कबूतरियाँ अन्डे देतीं और ना मकड़ी जाला बुनती यानी अगर हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम अन्दर होते तो ये जाल और अन्डे ना होते

विकायतुल्लाहि अग्नत् अंम्-मुजाअफतीन् मिनद्दुरूइ व अन् आलिम्-मिन्ल्- उतुमी

अल्लाह तआला की हिफाजत ने आपको दुहरी जिरहों (बख्तर, लड़ाई की पोशाक) और बूलन्द कीलों की पनाह से बेनियाज़ कर दिया था यानी अल्लाह तआला का मुहाफिज बनना बहुत मजबत था

मासा मनीद्दह्रु जय्मंव्-वस्ताजर्तु बिही इल्ला वनिल्तु जवारनंम्-मिन्हु लम् युदमी

जब से मैने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की जाते अकदस पनाह मांगी है जमाने ने मुझे भी तकलीफ दर्द नहीं दिया और हुजूर की कीदीहुईपनाह ऐसीहैकि जैसेकोईमग़लूब नहींकर सकता

वला तमस्तु गनीय्यद्दारय्नि मिन् यदिही इल्लस्तलम्तुन्- नदा मिन् खय्रि मुस्तलिमी

मैने जब कभी आपके हाथ मुबारक से दीन व दुनिया की दौलत की ख्वाहिश की तो मुझे उन बेहतरीन हाथों से जिन्हें चूमा जाता है सब कुछ मिल गया

ला तुन्किरुल्- वह्य मिन् रुअयाहु इन्नलहु
कलबान् इजानामतिल्- अय्नानि लम् यनमी

तो हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की उस वही का इन्कार ना कर जो ख्वाब की सूरत में थी क्युँकि आपका दिल जागता रहता थ जबकि आँखें सोई हुई नजर आती थी

व जा-क हीन बुलूगींम्- मिन्नुबुव्वातिही
फलय्स युन्करु फिही हालुंम्-मुहतलिमी

और उन ख्वाबों का आना उस वक्त था जबकि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम नबूव्वत की बलूगत (सूबाब पर, कमाल हद तक पहुँचा हुआ) तक पहुँच चुके थे पस उस हाल में जबकि नबूव्वत का वक्त आ पहुँचा वही का इन्कार करने की कोई वजह जवाज़ नहीं।

तबारक्ल्लाहु मा वह्यु बिमुक्तसिबीन्
वला नबीय्युअला गय्बिन् बिमुत्तहमी

अल्लाह की जात बड़ी बरकत वाली है भला वही कस्बी (अपनी कोशीश से हासिल करना) हो सकती है यानी वही कस्बी नहीं हो सकती और ना कोई नबी गैब में मुस्तहम हो सकता है यानी नबी अल्लाह ही की तरफ से गैबी बात बताता है।

कम्अब्रअत् वसिबन् बिल्लम्सि राहतुहू
वअत्लकत् अरिबंम्-मिंरिब्कतिल्-लममी

कितनी मरतबा आपके हाथों ने मरीजों को छुकर अच्छा कर दिया और दीवानों को कैदे जुनूं से रिहा कर दिया और कितनी बार गुमराहों को हिदायत मिली

व अहयति- स्सनतश्शह्बाअ दअवतुहू
हत्ता हकत् गुर्तान् फील्अअसुरिद्दुहमी

आपकी दुआ ने खुश्क साली को नई हयात बख्श दी यहाँ तक वो निहायत सर सब्ज़ ज़मानों की पेशानी में नुमाया हो गया।

बिआरिजिन् जादअव्खिल्तल्- बिताह बिहा
सय्बंम्-मिनल्यम्मि अव्सय्लंम्मिन्लअरमी

वह बादल इस कद्र जोर से बरसा यहाँ तक कि वादियाँ दरिया की मानिन्द हो गयी या ऐसा मालूम हुआ कि अरम का सैलाब यहाँ आ गया है।

अलफसलुस्सादिसु फी शरफिल्-कुरआनि वमद्हहु

छठी फसल - शराफत व बूजुर्गी के बयान में कुरान से

दअनी व वसफि-य आयातिन् लहू जहरत्
जुहूर नारिल्किरा लय्लन् अला अलमी

ऐ दोस्त मुझे हुजूर सल्लल्लाहु अलयहु व सल्लम के उन मोअजज़ात में मशगूल रहने दे कि जो इस तरह जाहिर और रौशन हैं कि जिस तरह मुहानी की आग रात के वक्त बुलन्दी-ए- कोह को रौशन होती है।

फाद्दुरू यज्दादु हुस्नंव्-वहुव मुन्तजिमुन्
वलय्स यन्कुसु कदरन् गयरु मुन्तजिमी

बिखरे हुए मोतीयों की कद्रो-कीमत फिर भी कम नहीं होती अगर उन्हीं मोतीयों को हार में पिरो दिया जाये तो उनकी जैबाईश बढ़ जाती है।

फमातताबुलु आमालुल्- मदीहि इला

मा फीहि मिन् करमिल्- अख्लाकि वश्शियमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की जाते गिरामी के अख़लाके हस्ना और शमाएल इतने अच्छे हैं कि वहाँ तक मिदह सराई की उम्मिदें रसाई हासिल नहीं कर सकता।

आयातु हक्कीम्- मिनर्रहमानि मुहदसतुन् कदीमतुन् सिफतुल्- मवसूफि बिल्कदमी

कुरआनी आयात जिन्हें अल्लाह तआला ने नाजिल फरमाया है हक है वह बिलहाज तलफ्फुज और नुजूल के हादस हैं और बाएतबार अल्लाह की सिफत के कदीम हैं।

लम् तक्तरिम्- बिजमानिंव्- वह्य तुखबिरुना अनील्- मआदि व अन् आदिंव्- व अन् इरमी

वह आयाते कुरआनी किसी जमाने से हरगिज़ मुकीद नहीं बल्कि ताबे आलमे आखिरत और कौमे आद और कबीलाए इरम की खबर देती है।

दामत् लदय्ना फफाकत् कुल्ल मुअजिजतीन् मिनन्नबीय्यीन इज्जाअत् वलम् तादुमी

ये आयते मुबारका हमेंशा के लिए हमारे पास मौजूद हैं पस वह तमाम मोअज़जो पर जो पहले पैगम्बरों को मिले थे फौकियत रखती है क्युँकि जब उनकेमोअजजेजाहिरहुएतोवोबादमेंनारहे

मुह्कमातुन् फमा युब्कीन मिन् शुबहिन् लिजी शिकाकिंव्- वला यब्गीन मिन् हकमी

वह आयात मुहकम (पायेदार, मजबूत, पक्का) हैं किसी दूसरे फरीक (फीरकों, जमाअत) के लिए शक की गुन्जाईश नहीं और ना वो बजाते खूद किसी दूसरे हुक्म की मुहताज हैं।

माहूरिबात् कत्तु इल्लाआद मिन् हरबीन् अअदल् अआदी इलय्हा मुल्कियस्सलमी

उन आयात का जब किसीने मुकाबला करना चाहा तो वह खूद ही हथियार डालने पर मजबूर हुआ, और आज़ीज़ आकर गरदन तसलीम खम हुआ (गरदन झुका दी)

रद्दत् बलागतुहा दअवा मआरिजिहा रद्दल्-गुयूरि यदल् जाती अनिल्-हरमी मअन

उन आयात की बलागत ने अपने मद मुकाबिल के दावा को इस तरह रद्द कर दिया कि जिस तरह कोई गीबतमन्द इन्सान किसी बदकिरदारको अपने हरम में दाखिल होने से रोकता है।

लहा मआनिन् कमवजिल्- बहरि फी मददिन् व फव्क जव्हरिही फील्- हुस्नि वल्कियमी

आयाते कुरआनी अपने अन्दर कई माआनी (मायने) रखती हैंजो समन्दर की लहरों की तरह एक दूसरे की मआवन (एक दूसरे के शरीक) और मददगार हैं और ये मआनी अपने हुस्न व जमालऔर कद्रो कीमत के ऐतबार से समन्दर के मोतीयों से बढ़कर है।

फला तुउद्दु वला तह्सा आजाईबुहा वला तुसामु अलल्- इक्सारि बिस्सामी

इसलिए कि इन आयाते कुरआनी के अजायेबात गिने नहीं जा सकते और ना जमा किए जा सकते हैं और कुरआनी आयात की कसरत से तिलावत करनेकेबावजूदतबीयत नहींउकताती।

कर्रत् बिहा अय्नु कारीहा फकुल्तु लहू लकद् जफर्त बिहब्लिल्लाहि फाअतसिमी

इन आयातों के पढ़ने वाले की आँखें ठन्डी हो गई तो मैनें उससे कहा कि अल्लाह तआला की रस्सी को पकड़ने में कामयाब हो गया पस इसे मजबूती से पकड़े रख।

इन् तत्लुहा खिफतंम्- मिन् हर्रिनारि लजा अत्फअत हर्रलजा मिंव्-विर्दिहाशिशयमी

अगर ति दोज़ख की आग से बचने के लिए इन आयातों को पढ़ेगा तो बेशक इन आयातों के ठन्डे असरात से दोज़ख की आग बूझ जाएगी

कअन्नहाल् हव्जु ताब्यज्जुल् वुजूहु बिही मिन्ल् उसाति व कद्जाऊहु कालहुममी

गो आयाते कुरआनीया हौजे कौशर जिससे कयामत के रोज़ गुनाहगारों के चेहरे रौशन हो जायेंगे हालांकि हौज पर आने से पहले वो कोयले की तरह काले होंगे

वकास्सिराति व काल्मीजानि मअदिलतान् फाल्किस्तु मिन् गय्रिहा फीन्नासि लम्यकुमी

कुरआनी आयात अदल करने में पुलसिरात और मीजान की मानिन्द हैं औरउनकेबगैरलोगोंमेंअदलकायमनहींहोसकता।

लाताअजबान् लिहुसूदिराह युन्किरुहा तजाहुलंव्- व हुव अय्नुल्हाजिकिल्- फह्मी

अगर कोई हसद की बिना पर जहन और फहम रखने के बावजूद इन्कार करता है तो वह जिहालत की वजह से इन्कार नहीं करता बल्कि ईनाद (दुश्मनी, सरकशी, अदावत) की बिना पर इन्कार करता है।

तद्तुन्किरुल् अय्नु जव्असश्शम्सि मिंर्मदिन् व युन्किरुल्फम्मु ताअमल्माइ मिन् साकमी

बसा अवकात आँख आशूब चश्म की वजह से सूरज की रौशनी को बूरा समझने लगती है और कभी मुँह बीमारी के बायस पानी के मजे को महसूस नहीं करता

अलफसलुस्साबिउ फी असराइही व मिअराजिही सल्लल्लाहु अलय्हि वसल्लम्

सातवाँ फसल - मेअराजे नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के बयान में

या खय्-र मंय्यममल्- आफू-न साहतहू सअयंव्- व फव्-क मुतूनिल्- अय्निकुर्रुसुमी

ऐ सबसे अच्छे सखी जिसके दरबार में अहले हाजत प्यादा और तेज रफ्तार उँटनीयों पर बैठ चले आते हैं।

वमन् हुवल्- आयतुल्- कुब्रा लिमुअतबरिन् वमन् हुवन्निअमतुल्- उजमा लिमुग्तनमी

और ऐ वो जात जो इबरत हासिल करने वाले के लिए बड़ी निशानी है औरऐवहजात जोगनीमत जाननेवालेकेलिए सबसेबड़ीनेअमत है।

सरय-त मिन् हरमिल्लय्लन् इला हरमिन् कमा सरल्बद्रु फी दाजिम्-मिनज्जुलमी

आपने रात के कुछ हिस्से में हरमे मक्का से बयतुल मुकद्दस तक सफर किया जैसा कि चौदहवीं रात का चाँद अन्धेरी रात में चलता है।

व बित्तातर्का इला अश्रिल्-त मन्जिलतन्
मिन् काब कव्सयनि लम्तुद्रक व लम् तुरमी

आप रात ही रात में उपर की तरफ परवाज़ करते गये यहाँ तक कि काब कौसैन का बुलन्द मकाम पा लिया जहाँ आज तक ना कोई पहुँचा है और ना कोई पहुँचेगा।

व कद्दमत्-क जमीउल् अंम्बियाइ बिहा
वर्रुसुलि तक्दीम मखदूमिन् अला खदमी

बयतुल मुकद्दस में तमाम नबीयों और रसूलों ने आपको अपना इमाम बनाया जिस तरह कि आका अपने खादिमों का पेशवा बनाया जाता है।

वअन्-त ताख्तारि कुस्साब्अत्तिबाक बिहिम्
फी मव्किबिन् कुन्त फीहि साहिबल्- अलमी

आपने सातों आसमानों का सफर पैगम्बरों में गुजरते हुए तय किया और आपके साथ जो फरिश्ते थे आप उन सबके सरदार थे।

हत्ता इजालम् तदउ शाअंव्-वल्- मुस्तबिकिन्
मिनद्दुनुव्वि वला मर्कं ल्लिमस्- तिलिमी

आप बढ़ते बढ़ते उस मुकाम तक पहुँचे कि किसी दूसरे आगे बढ़ने वाले के लिए कोई वजहे कुर्ब ना रहा और ना किसी और चढ़ने वाले के लिए कोई और जगह बाकी रही।

हफज्-त कुल्ल मकामिन् बिल्- इजाफति इज्
नूदीत बिर्रफ्इ मिस्लल्- मुफ्रदिल् इलमी

आपने अपने खुदादाद मकाम की वजह से तमाम अम्बिया

अलयहिमुस्सलाम के मकामात को पस्त कर दिया क्युँकि शबे मेराज में आप मिश्ले इल्म मुफर्रद (तन्हा, अकेले) पुकारे गये।

कय्मा तफूजु बिवस्लिन् अय्यि मुस्तनिजिन्
अनिल्- उयूनि व सिर्रिन् अय्यि मुक्तातमी

आप कुर्ब के इतने मुकाम पर इसलिए बुलाये गये कि नेअमत से बहरोवर हों वह लोगों की आँखों से पोशीदा है और उस राज़ से आगाह हों जिसे कोई नहीं जानता।

फखर्त कुल्ल फखारिन् गय्-र मुस्-त-रकिन्
वजुज्-त कुल्ल मकामिन् गय्र मुज् दहमी

पस आपने हर एक फजीलत बगैर किसी और की शिरकत के हासिल कर ली और हर बुलन्द मकाम से बगैर किसी मजाहमत (रोक टोक) के गुजर गये।

व जल्ल मिक्दारु मा वुल्लीतु मिर्रुतबिन्
व अजइद्राकु मा उलीत मिन् नअमी

और आप जिन मरातिब के मालिक बनाये गये वह बहुत कद्र वाले हैं और जिन नेअमतों से आप नवाजे गये उनका अदराक बहुत मुश्किल है।

बुशरा लना मअशरल्- इस्लामि इन्न लना
मिनल्- इनायति रुकनन् गय्र मुन्हदिमी

ऐ इस्लाम के गिरोह हमारे लिए बहुत बड़ी बशारत है क्युँकि अल्लाह तआला कि खास इनायत से हमें शरिअत का वह सुतून मयस्सर आ गया है जो जो कभी गिरनेवाला नहीं।

लम्माद अल्लाहु दाईना लिताअतिही

बिअक्रमिर्रुसुलि कुन्ना अक्रमल्- उममी

जब अल्लाह तआला ने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लाम को जो हमें अल्लाह की इताअत की तरफ बुलाते हैं अकरम र्रसूल कह के पुकारा तो हम अफजल उम्मत करार दिये गये।

अल् फस्लुस्सामिनु फी जिहादिन्नबीय्यि सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम्

आठवीं फसल - जिहादे नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के बयान में

राअत् कुलूबल्- इदा अंम्बाइ बिअसातिही कनबअअतिन् अज्फलत् गुफलंम्-मिनल्- गनमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की रिसालत की खबरों ने दुश्मनों के दिलों को इस तरह खौफजदा कर दिया जिस तरह कि शेर की आवाज़ बेखबर बकरियों के रेवड़ को डरा देती है।

माजाल यल्का हुम् फी कुल्लि मुअतरकिन् हत्ता बकव्बिल्कना लहमन् अला वजमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम हर एक मैदाने जंग में काफिरों से लड़ते रहे हत्ता कि वह काफिर नेजे से लगने से उस गोश्त की मानिन्द होगये जो कसाब के तख्ते पर पड़ा होता है।

वद्दूल्- फिरा-र फकादू यग्बितु-न बिही अश्लाअ शालत् मअल्- इक्बानि वर्रखमी

कुफ्फार भागने का इरादा रखते थे पस करीब था कि वो भागने की बिना पर उन कुफ्फार पर रश्क करे जिन्हें मुरदारखोर जानवर और गधे उपर ले उड़ते।

तुम्जील्लयाली वला यद्रू-न इद्दतहा मालम् तकुन् मिन् लयालील्-अश्हुरिल्- हुरुमी

जब तक हुरमत वाले महीनो की रातें ना आ जाती रातें गुजरती रहती मगर काफिर उन्हें शुमार करना नहीं जानते थे।

कअन्नमाद्दीनु जायफु हल्ला साहताहुम् बिकुल्लि कव्मिन् इला लहमिल्- इदा करिमी

गोया इस्लाम एक मेहमान है जो ऐसे बहादुरों और सरदारों को लेकर काफिरों के जिम्न में उतरा जिनमें से हर एक सरदार दुश्मनों के गोश्त खाने का ख्वाहिशमन्द था।

यजुर्रु बह्र खमीसिन् फव्-क साबिहतिन् यर्मी बिमव्जिम्-मिनल्- अब्तालि मुल्ततिमी

इस्लाम एक ऐसा लश्कर लाया जिसके बहादुर सिपाही खूश रफ्तार घोड़ों पर मैदाने जंग में आये और वह लश्कर ऐसे दुश्मनों की फौज से टकराया जैसे दरिया की मौजें आपस में टकराती हैं।

मिन् कुल्लि मुन्तदिबिन् लिल्लाहि मुह्तसिबिन् यस्तू बिमुस्ता सिलिन् लिल्कुफरि मुस्तलिमी

इस लश्कर का हर एक बहादुर अल्लाह तआला के हुक्म का ताबे है अपने जिहाद के सवाब की उम्मीद अल्लाह से रखता है वह ऐसी तलवार से हमला करता है जो कुफ्र को जड़ से काटने वाली और बरबाद करने वाली है।

हत्ता गदत् मिल्लतुल्- इस्लामि वहिय बिहिम्

मिम् बअदि गुर्बतिहा मवसूलतर्रहिमी

इस्लाम के बहादुर यहाँ तक लड़ते रहे कि मिल्लते इस्लाम जिसका वजूद इन सहाबा की वजह से था अपनी गुरबत और कमजोरी के बाद अपने गमख्वार भाईयों से मिलने वाली होगई।

मकफूलतन् अबदंम्-मिन्हुम् बिखय्रि अबिन् व खय्रि बअलिन् फलम्यतम् व लम् तइमी

मिल्लते इस्लामिया उन बहादुर सहाबा इकराम रदीअल्लाहु तआला अन्हुम की वजह से बेहतरीन बाप और बेहतरीन शौहर के जरिये से हमेंशा के लिए महफूज हो गई अब ना वो कभी यतीम होगी और ना बेवा।

हुमुल्जिबालु फसल् अन्हुम् मसादिमहुम् माजाराआ मिन्हुम् फी कुल्लि मुस्तदमी

वो सहाबा किराम पहाड़ की मानिन्द हैं उनके बारे में उनके दुश्मनों से दरियाफ्त करें कि मैदने जंग में उन्होंने उनके बारे में क्या क्या देखा।

वसल् हुनय्नंव्- वसल् बदरंव्-वसल् उहुदन् फसूलु हत्फिल्-लहुम् अद्हा मिनल् वखमी

अगर तुम्हें ऐतबार नहीं तो हुनैन, बद्र शामिल होनेवालों से पूछ से कि इन काफिरों की मौत हैजे, तावून वगैरह की बीमारी से कितनी ज्यादा शदीद थी।

अल्मुस्दरिल्- बिमय्जि हुमरन् बअद मावरदत् मिनल् इदाइ कुल्ल मुस्वदिम्- मिनल्-लममी

इस्लाम के बहादुर सहाबा किराम रदीअल्लाहु तआला अन्हुम अपनी चमकती हुई तलवारें दुश्मनों के लम्बे लम्बे स्याह बालों पर मारने के

बाद खून से रंगी हुई वापस लाते थे।

वल्कातिबीन बिसुम्रिल्खत्ति मातरकत् अक्ला मुहुम् हरफ जिस्म गय्र मुन्अजिमी

इस्लाम के बहादुर जंगजू सिपाही अपने खती नेजों से लिखते थे कि उन कलमों ने दुश्मनों के जिस्म का कोई हुरफ यानी अज्व बगैर नुक्ते के यानी जख्म के रहने नहीं दिया।

शाकीस्सलाहि लहुम् सीमा तुमय्यिजु हुम् वल्वर्दु यम्ताजु बिस्सीमा मिनस्सलमी

ये बहादुराने इस्लाम पूरी तरह मसलह (वो जगह जहाँ जानवर जिबह किये जाते हैं) थे जिनके लिए एक खास निशान था जो उन्हें दूसरों मुमताज करता था जिस तरह गुलाब कैकर के दरख्त से मुमताज होता है।

तुह्दी इलय्-क रियाहुन्नस्रि नश्रहुम् फतह्सबुज्जह्र फील्- अक्मामि कुल्ल कमी

नुसरते इलाही की वो हवा उन बहदुर मुजाहिदों की खूश्बू का तोहफा तेरी तरफ भेजते हैं पस तु ऐसा ख्याल करेगा कि हर मुजाहिद अपने गुलामों में एक तरह का शगूफा है।

कअन्नहुम् फी जुहूरिल्- खय्लि नब्तुरुबन् मिन् शिद्दतिल्- हज्मि ला मिन् शिद्दतुल्- हुजुमी

वह मुजाहिदीने इस्लाम घोड़ों की पुश्तों पर गोया टीलों की बन्जर घांस थे जिसकी वजह से वह अपनी सवारी पर होशियार थे ना कि घोड़ों की

पीठ पर जीन का खूब कसा जाना।

तारत् कुलूबुल्-इदाया मन् याअ- सिहिम् फरकन्
फमातुफर्रिकु बय्नल्- बह्मि वल्- बुहमी

दुश्मनों के दिल इन मुजाहिदीन के हमलों की वजह से खौफजदा हो गये पस वह बकरी के बच्चों और बहादुर मुजाहिदीन में तमीज़ ना कर पाते थे।

वमन् ताकुन् बिरसूलिल्लाहि नुस्रतुहू
इन् तल्कहुल्-उसदु फी आजामिहातजिमी

और जिस शख्स को हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की ताईद व नुसरत हो अगर उसके सामने जंगलों के शेर भी आ जायें तो वो खूद ब खूद खौफ की वजह से भाग जायेंगे।

वलन्तरा मिंव्-वलिय्यि गय्रि मुन्तासिरिन्
बिही वला मिन् अदुव्विन् गय्र मुन्कसिमी

और तु हरगिज़ हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का कोई दोस्त नहीं देखेगा कि जो आपकी मदद से फतहमंद ना हुआ और आपका मुखालिफ कोईऐसा नाहोगा जोशिकस्ता हाल नाहो।

अहल्ल उम्मताहू फी हिर्जि मिल्लतिही
काल्लय्सि हल्ल मअल्- अश्बालि फी अजमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने अपनी उम्मत को एक मजबूत किला में ले लिया है जिस तरह कि जंगल का शेर अपने बच्चों को अपनी हिफाजत में ले लेता है।

कम्जद्दलत् कलिमातुल्लाहि मिन् जदलिन्
फीहि व कम् खसमलबुर्हान मिन् खसमी

कुरआन पाक ने बारहा हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से झगड़नेवालों को निचा दिखाया और बाज औकात मुअज्जजात ने बदतरीन दुश्मनों को मग़लूब कर दिया।

कफा-क बिल्इल्मी फील्- उम्मिय्यि मुअजिज़तन्
फील्- जीहि लिय्यति वत्तादीबि फील्- युतमी

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का जमाना जाहिलियत में उम्मी होकर आलिम होना और यतीम रहकर साहबे अदब होना यकीनी मुअज्जजा है।

अल् फस्लुत्तासिउ फीत्तवस्सलु रसूलुल्लाहु अलय्हि व सल्लम्

नौवीं फसल - रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के वसीले से बख्शीश व शराफत तलब करने के बयान में

खदमतुहू बिमदीहिन् अस्तकीलु बिही
जुनूब ऊम्रिम्- मदा फीश्शिअरि वल् खदमी

मैंने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की खिदमते अकदस में ये नज़राना-ए-अकीदत इसलिए पेश किया है कि मैं इसके जरीये अपनी उम्र भर के उन गुनाहों को मुआफ करवाऊं जो शेरो शायरी और उमरा (अमीरों) की मुलाजमत में सरजद हुईहै।

इजा कल्लदानिय मा तख्शा अवाकिबुहू
कअन्नी बिहि मा हद्युम्-मिनन्नअमी

क्यँकि शायरी और शाही मुलाजमत ने मेरे गले में एक ऐसे अम्र को बतौर कलावा (गले का पट्टा) के डाल दिया है जिसके बूरे नताईज से

डर लगता है गोया कि मैं उन दोनों के हाथ कुरबानी का उंट हूँ।

अताअतु गय्यास्सिबा फी तिजारतिहा
लम् तश्तरिल्लजीन बिद्दुन्या वलम् तसुमी

मैं शायरी और मुलाजमत की हालत में जवानी के दौर में जिहालत के ताबे रहा और मुझे गुनाहों और शुशेमानी के सिवा कुछ ना हासिल हुआ और इससे मुझे गुनाहों और नदामत के सिवा कुछ हासिल ना हुआ।

फयाखसारत नफ्सी फी तिजारतिहा
लम् तश्तरील्ल्जीन बिद्दुन्या व लम् तसुमी

ऐ लोगों मेरे नफ्स की तिजारत के खसारे को देखो कि इसने ना तो दुनिया के एवज में दीन खरीदा और ना इसके खरीदने का इरादा किया।

व मंय्यबिअ अजिलंम्- मिनहु बिआ जिलिही
यबिल्लहुल्- गब्नु फी बय्इंव्- व फी सलमी

जिस शख्स ने अपनी आखिरत को दुनिया के बदले में बेच डाला तो कुछ शक नहीं कि उसने खरीद फरीमें बहुत बड़ा नुकसान उठाया है।

इन् आति जंम्बन् फमा अह्दी बिमुन्तकिजिन्
मिनन्नबिय्यि वला हब्ली बिमुन् सरिमी

अगरचे मैं गुनाहों का मर्तकिब (बार बार करना) हुँ ताहम मेरा जो अहद व पैमान (शर्त, इकरार) नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से है वो टुटनेवाला नहीं और ना मेरी उम्मीद की रस्सी कट जानेवाली है।

फइन्नली जिम्मतंम्-मिनहु बितस्मियती

मुहम्मदंव्- व हुव अवफल्- खलकि बिज्जिममी

बेशक मेरा नाम मुहम्मद होने की वजह से हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से एक खास निसबत वादा रखता है और आप तमाम दुनिया में सबसे ज्यादा वादा पूरा करने वाले है।

इंल्लम् यकुन् फी मआदी आखिजंम्- बियदी
फज्लंव्- व इल्ला फकुल् याजलतल्- कदमी

अगर आलमे उकबा में अज राह मेहरबानी व पैमान मुझे हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की दस्तगीरी मयस्सर ना आई तो मुझे कहना चाहिए हाय लग्ज़िशे कदम और अगर आपने मेरी दस्तगीरी की तो मुझे कहना चाहिए सबात कदम मन (साबीत कदमी, पक्का कस्द)।

हाशाहु अंय्युह्रिमर्राजी मकारि महू
अव् यर् जिअल्- जारुमिन्हु गय्र मुहतरमी

ये नहीं हो सकता कि आपकी जाते अकदस से फैज़ व करम की उम्मीद लगाने वाले महरुम रह जाये या आपके दामने रहमत में पनाह लेनेवाले बेएहतराम वापस आये।

व मुन्जु अल्जम्तु अफकारी मदाइहुहू
व जद्तुहू लिखलासी खय्र मुल्तजिमी

मैं जब से अपने अफकार (फिक्र की जमा, शेर कहनेवाले का कलाम, अश्आर) को हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की नात के लिए वक्फ कर दिया है तब से मैने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को अपनी निजात का मआदिन (जाए पनाह) पाया है।

व लंय्यफ़ूतुल्- गिना मिन्हु यदन् तरिबत्
इन्नल्- हया युंम्बितुल्- अज़्हार फील्- अकमी

और आपकी सखावत किसी मुमताद के हाथ को खाली नहीं रहने देती क्युँकि बारिश टीलों पर भी हरयाली को उगा देती है।

व लम् उरिद् जह्रतद्दुन्याल्लतीक्- ततफत्
यदाजु हय्रंम्- बिमा अस्ना अला हरमी

मैं इस कशीदे से दुनियावी माल का ख्वाहिशमन्द नहीं जो ज़हीर ने हरम बिन सनान की मिदह से हासिल किया बल्कि आखिरत में हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शफाअत का ख्वाहां हो।

अल्- फस्लुल्- आशिरु फील्- मुनाजाति व अरजुल्- हाल्

दसवीं फसल - मुनाजात व हाल अरज करने मुताअल्लिक

या अक्रमुल्- खल्कि माली मन् अलूजुबिही
सिवा-क ईन्-द हुलूलिल्- हादिसिल् अममी

ऐ सबसे मुकर्रम हादसात के वक्त मेरे पास कोई और नहीं जिसके पास जाकर पनाह लूँ यानी कयामत को आप ही के दामन में पनाह मिलेगी।

व लंय्युजी-क रसूलल्लाहि जाहु-क बी
इजल् करीमु ताजल्ला बिस्मि मुन्तकिमी

कयामत के रोज जब अल्लाह तआला मुन्तकिम (बदले लेने वाला) की सिफत में जल्वागर होगा आपके मरतबे की वुसअत मेरा जरुर ख्याल रखेगी।

फइन्न मिन् जूदिक द्दुन्या व जर्रताहा

व मिन् उलूमिक ईल्मल्लवहि वल् कलमी

दुनिया व आखिरत की बख्शिश आप ही की वजह से मर्जे वजूद मे आई और लौह व कलम का इल्म आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के इल्म का एक हिस्सा है।

या नफ्सु ला तक्नति मिन् जल्लतिन् अजुमत्
इन्नल्कबाईर फील्- गुफरानि काल्लममी

ऐ नफ्स इस ख्याल से कि तेरे गुनाह बड़े हैं नाउम्मीद ना हो क्युँकि अल्लाह तआला की बख्शिश के आगे बड़े गुनाह मिश्ल छोटे गुनाहों के हैं।

लअल्ल रह्म्-त रब्बी हीन यक्सिमुहा
ता'ती अला हस्बील्- इस्यानि फील्-किसमी

उम्मीद है की मेरे रब की रहमत जब आखिरत में तक्सीम की जायेगी तो वह जरुर गुनाहों की मिक्दार के बराबर ही हिस्से में आयेगी।

या रब्बि वज्अल् रिजाइ गय्र मुन्अकिसिन्
लदय्-क वज्अल् हिसाबी गय्र मुन्खरिमी

ऐ मेरे परवरदिगार जो उम्मीद मैने तेरे साथ वाबस्ता की हुई है उसे रद्द ना कर और मेरे यकीन को जो तेरी रहमत के मुताल्लिक है पूरा कर दे।

वल्- तुफ् बिअब्दि-क फी-द्दारय्नि इन्न लहू
सब्रनंम्मता तदउहुल्-अह्वालि यन्हजिमी

ऐ मेरे अल्लाह दोनों जहान में अपने बन्दा पर मेहरबानी कर क्युँकि सब्र व बरदास्त की तो ये हालत है कि खौफ उसे मुकाबले की दावत तो वो भाग खड़ा होता है।

वअजंल्लिसहबि सलातिम्मिन्क दाईमतन् अलन्नबिय्यी बिमुन्हल्लिव्-वमुन्सजिमी

ऐ मेरे अल्लाह अपनी रहमत के बादलों को हुक्म दे कि वो हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर रहमत की बारिश करें और हमेंशा बरसते रहें।

शुम्मार्रिदा अन् अबी-बकरिंव्-व अन् उमरिन् व अन् अलिय्यींव्- व अन् उस्मा्-न जील् करमी

फिर राजी हो अल्लाह उनसे जो हजरत अबू बक्र सिद्दीक रदीअल्लाहो तआला अन्हु हजरत उमर रदीअल्लाहु तआला अन्हु हजरत उस्मान रदीअल्लाहु तआला अन्हु हजरत अली रदीअल्लाहु तआला अनहु जो इज्जत वाले हैं।

वल् आलि वस्सहबि सुम्मत्ताबिईन लहुम् अहलित्तुका नल्लुका वल्हिल्मि वल्करमी

और रहमत के बादल हमेंशा सहाबा किराम ताबेइन अहले तक्वा और पाकबाज़ औरसाहबेइल्म व करम पर बरसतेरहें।

मारन्नहत् अजबातिल् बानि बीहु सबन् वअत्रबाल्ईस हादील्ईसि बिन्नगमी

और ये रहमत उन पर इस वक्त तक होती रहे जब तक कि दरख्ते बान की शाखें बादे सबा से मिलती रहें और हुदी ख्वान सवारी के उँटों को सुरीले नग्मों से सुरूर में लाता रहे।

फग्फिर्लना शिरिहा वग्फिर्लिकारि इहा

सअल्तुकल्- खय्र या जल्जूदि वल्करमी

ऐ अल्लाह तु साहबे जूद वकरम है तुझसे दुआ करते हैं इस कशीदे के मुसन्निफ और पढ़ने वालों को बख्श दे।

ज़ीयारते-मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम

1. 'जज़बुल कोलुब' नाम की मशहूर किताब मे है कि, जो शख्स पूरी पाकी साफी के साथ निचे दर्ज दरुद शरीफ हर रोज़ कम से कम ३१३ बार पढ़ेगा उसे ख्वाब मे अल्लाह त्आला अपने हबीब सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की ज़ियारत नसीब करेगा। वो दरुद इस तरह से है।

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदींव व आलिहि व सल्लिम कमा तुहीब्बु व तर्दा लहु.

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरु जो बड़ा महेरबान, बहुत रहमवाला है। या अल्लाह दरुद नाज़िल फरमा हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और उनकी आल पर और सलाम हो उन पर जो तुझे महबुब है।

2. 'मफाखेरुल इस्लाम' में लिखा है कि, जो शख्स जुम्आ के दिन एक हज़ार बार नीचे दर्ज दरुद शरीफ पढ़ेगा उसे सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की ख्वाब में ज़ियारत नसीब होगी या जन्नत मे अपनी जगह देख लेगा। कम से कम पाँच जुम्आ ये अमल करे

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदीनीन्नबीय्यील उम्मी.

3. 'जामेउत्तफासीर' मे लिखा है के जुम्आ की रात (जुमेरात और जुम्आ की दरम्यानी रात) को दो रकअत नमाज़ हर रकअत मे 'सुरह

फातिहा' के बाद ११बार आयतलकुर्सी' और ११बार 'सुरह ईखलास' पढ़े सलाम फेरने के बाद नीचे दर्ज दरुद शरीफ १००(सौ)बार पढ़े तो ईन्शाअल्लाहो तआला उसे तीन जुम्आ के अन्दर ज़ियारतें रसुलेपाक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम नसीब होगी।

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीनीन्नबीय्यिल उम्मी व आलिहि व अस्हाबिही व सल्लम.

4. जुम्आ की रात दो रकअत नमाज अदा करें हर एक रकअत मे 'सुरह फातिहा' के बाद २५बार सुरह ईखलास पढ़े और बाद सलाम एक हजार बार ये दरुद शरीफ पढ़ें,

बिस्मील्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीनीन्नबीय्यील उम्मी.

पाँच जुम्आ के अन्दर ही ईन्शाअल्लाह हुजूर पुरनुर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की ज़ियारत नसीब होगी। (मा'खुज)

आख़िर में बारी त्आला की आली बारगाह मे निहायत ही आजीजाना ये गुज़ारिश है कि, या अल्लाह इस किताब के नक़ल करने में तेरे इस हक़ीर, नाचीज़ और गुनाह गार बन्दे से जाने अनजाने कोई लगजीस कोई गलती रह गई हो तो उसे तू अपनी बेशुमार रहमतों और हुजुरे अकदस मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के तुफैल और वसीले से माफ फरमा दे। क्युंकि इसे नक़ल करने के पीछे पैसा कमाने का या दुन्यवी कोई फायदा हासिल करने का जर्रा बराबर भी कोई मकसद नही रहा। बस यही तमन्ना रही है कि हर खासोआम तक यह किताब पहुँचे और वो तमाम लोग ईसके फजाईलो-बरकात से खुद भी मालमाल हों और दूसरों को भी इसकी तबलीग करें।

या अल्लाह इसका जो भी सवाब तुने रखा हो वो सवाब अफताबे हुदा, गौहरे दुर्जे सफा, शाफी-ए-उम्मत, जाने ईज्तबा, शाहे ईस्तफा, सय्यदे अम्बीया, अहमदे मुजतबा, मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु

अलयहि व आलेही व अस्हाबेही व अजवाजेही, अहले बैतेही व सल्लमा तस्लीमन कसीरन कसीरा की रुहे पुर फतुह और जामेअ मोमीनीन व मोमीनात, मुस्लेमीन व मुस्लेमात कि अरवाह को सवाब पहुँचे-आमीन।।

रब्बना तकब्बल मीन्ना, ईन्नक अन्तस्समीउल अलीम. वतुब अलयना, ईन्नक अन्त त्तव्वाबुर्रहीम, बिरहमतिका या अर्हमर्राहेमीन. बी जाहीन्नबीयील-करीम अलयहीस्सलातु व तस्लीम।